झांसी की रानी—लक्ष्मीबाई

(ऐतिहासिक उपन्यास)
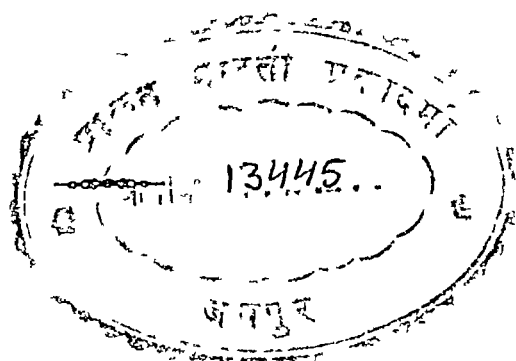
वृन्दावनलाल वर्मा

(लेखक—मृगनयनी, माधव जी सिन्धिया, अचल मेरा कोई, कचनार, हंस-मयूर, मुसाहिबजू, लगन, बिराटा की पद्मिनी, सोना, सङ्गम, प्रेम की भेंट, गढ़कुण्डार, अमरबेल, टूटे काटे, राखी की लाज, पूर्व की ओर आदि)

मयूर प्रकाशन

झांसी दिल्ली

प्रकाशक—

सत्यदेव वर्मा बी. ए., एल-एल. बी.

मयूर-प्रकाशन, झाँसी

षष्ठमावृत्ति १६५६

मूल्य—छः रुपया

मुद्रक—

स्वाधीन प्रेस, झांसी।

परिचय

दीवान आनन्दराय मेरे परदादा थे। रानी लक्ष्मीबाई की ओर से लडते लडते सन् १८५८ में मऊ की लडाई में मारे गये थे। जब मेरी परदादी का देहान्त हुआ, मैं आठ-दस वर्ष का था। तब परदादी से रानी के विषय में बहुत सी कहानियाँ सुना करता था। उन्होने रानी को देखा था।

उन कहानियो की धरोहर मेरी दादी के पास रही। वह समय-समय पर उनसे मुझको मिलती रही। जब दादी का देहान्त हुआ, मुझको वकालत आरम्भ किये छ. वर्ष के लगभग हो चुके थे।

वह धरोहर अद्भुत होते हुये भी अस्पष्ट थी और उसकी रूपरेखा धुंधली, तथा सत्य के आधार पर कम और भक्ति के ऊपर अधिक। इधर इतिहास के अध्ययन और तथ्य के अनुशीलन ने उस धरोहर के मूल्य को कम कर दिया। सामने केवल पारसनीस की पुस्तक 'रानी लक्ष्मीबाई का जीवन चरित्र' थी। वह इतिहास का कङ्काल मात्र न थी, परन्तु दादी-परदादी की बतलाई हुई परम्परा के विरुद्ध थी। पारसनीस के अन्वेषण काफी मूल्यवान होते हुये भी उनका विचार कि रानी झांसी का प्रबन्ध अङ्गरेजो की ओर से 'गदर' के जमाने में करती रही, परदादी और दादी की बतलाई हुई परम्पराओ के सामने मन में खपता नही था। तो भी मैं सोचता था, शायद ये परम्पराये जनता के इच्छा—संकल्पो (wishful thinking) का फल है, इसलिये छुटपन से जिस मूर्ति की मन में निष्ठापूर्वक पूजा करता चला आ रहा था, उसके प्रति कुछ नास्तिकता उत्पन्न हो गई।

सुनता रहता था कि रानी स्वराज्य के लिये लडी थी, पारसनीस के ग्रन्थ मे पढा कि उनका शौर्य विवशता की परिस्थिति में उत्पन्न हुआ था! मैं जब बोर्डिंग हाऊस के जीवन में था, एक रात स्वप्न देखा कि हौकी-ग्राउन्ड पर युद्ध हो रहा है और मैं रानी की तरफ से, 'स्वराज्य' के लिये लडता हुआ घायल हो गया हूं, तब जागने पर बडा अचम्भा हुआ, क्योकि खेल में उस दिन हौकी का डण्डा भी नही खाया था।

यह स्वप्न भी मुझको प्राय दिक किया करता था।

थानेदार थे। इनसे मुझको रानी के विषय में बहुत बातें मालूम हुईं — दादी परदादी की परम्पराओ की पोषक ! और अङ्गरेजो के दरोगा से !!

उन्ही दिनो झासी मे एक बुड्ढा और मिला। नाम अजीमुल्ला। यह रानी के विषय मे तुराबअली की अपेक्षा कही अधिक बातें जानता था। इसने रानी को देखा था, परन्तु वह उस समय छोटा था। तुराबअली ने तो रानी को सैकडो ही बार देखा था।

इसके उपरान्त मैने झासी के बुड्ढे-बुढियो को परेशान करना शुरू कर दिया। परन्तु वे जिस उत्साह और भक्ति के साथ रानी की बाते बतलाते थे उससे मै यह सोचता हू कि वे परेशान न हुये होगे।

सवाल था रानी स्वराज्य के लिये लडी, या अङ्गरेजो की ओर से झासी का शासन करते करते उनको जनरल रोज से विवश होकर लडना पडा ?

रानी ने बानपूर के राजा मर्दनसिह को जो चिट्ठी युद्ध मे सहायता करने के लिये लिखी थी उसमें 'स्वराज्य' का शब्द आया है। यह चिट्ठी इस प्रश्न का सदा के लिये स्पष्ट उत्तर देती है। खेद है कि मै इस सस्करण में भी उस चिट्ठी का चित्र न दे सका—बानपूर के राजा के वशज ने वह चिट्ठी या उसका फोटो मेरे हवाले नही किया, परन्तु अगले सस्करण में दे सकने की मुझको आशा है।

राजा गङ्गाधरराव का हस्ताक्षर मुझको राजा साहब कटेरा ने अपनी एक सनद दिखला कर सुलभ कर दिया। कृतज्ञ हु। सनद की नकल भी मेरे पास है। उस समय, ६५ वर्ष पहले लगभग आज ही की तरह की हिन्दी लिखी जाती थी, इस सनद से पता लगता है।

मराठी में विष्णुराव गोडशे का 'माझा प्रवास' एक छोटा सा प्रवन्ध है। गोडशे रानी के साथ किले में था, जब रोज के मुकाबले में रानी लडी। मैने अपनी पुस्तक में माझा प्रवास का भी उपयोग किया है।

मोतीबाई ऐतिहासिक है। मुझको उसका पता अकस्मात ही चला। ओर्छे दरवाजे एक मसजिद है। जिमीन का झगडा कचहरी में चला। मै मसजिद वालो की तरफ से वकील था। जिमीन का खेवट झासी में न था। ग्वालियर मे था। वहा से नकल मँगवाई। उसमें ज़िमीन की पूर्व

सन् १९३२ तक यह उथल-पुथल अर्द्ध सुपुप्त रूप में मन के किसी कोने में पडी रही।

एक दिन एक साहब ने कहा, 'जजी कचहरी की एक अलमारी में चालीस-पचास चिट्ठियाँ रक्खी हुई हैं जो १८५८ में किसी अङ्गरेज फौजी अफसर ने लैं० गवर्नर के पास झाँसी को अधिकृत करने के बाद रोज़-रोज़ भेजी थी।

मैंने उन चिट्ठियो की नकल करवाई। उनमें कोई खास बात तो नही मिली, परन्तु एक विश्वास जगह करने लगा—रानी का शौर्य विवशता की परिस्थित में उत्पन्न नही हुआ था।

कचहरी में नवाब बन्ने नाम के एक अर्ज़ीनवीस काम करते थे। वह मुझको प्रायः रोज ही कचहरी मे मिलते थे। वह राजा रघुनाथराव के लडके नवाब अलीवहादुर की लडकी के लडके निकले! मैंने सोचा, शायद इनके पास रानी सम्बन्धी कोई सामग्री हो। पूछने पर उन्होंने बतलाया कि नवाब अलीबहादुर का रोज़नामचा इत्यादि घर पर रक्खे हैं। मै उत्सुकता के मारे परेशान हो गया। रोजनामचा देखने को मिला। उसको मैंने पढवाया। नवाब अलीबहादुर कैसे थे और उनका नौकर पीरअली किस तरह का आदमी था यह तो उनके रोजनामचे से प्रकट होता ही था, परन्तु रानी लक्ष्मीबाई की विलक्षणता और तत्कालीन समाज की प्रगति और रहन-सहन का भी उससे पता चला। रोज़नामचा दीमक के हमलो से जर्जर हो चुका था, और अब तो, उसके शुरू का भाग नष्ट ही हो गया है, परन्तु मैंने नोट ले लिये।

१८५८ में नवाब अलीबहादुर ने अपनी राजभक्ति के प्रमाण में कुछ बयान दिये थे। उन बयानो में पीरअली का भी जिकिर किया था। वे बयान भी मुझको मिल गये।

इससे वढकर, मुझको एक व्यक्ति मिले—मु० तुराबअली दरोगा। ये, ८, १० वर्ष हुये तब परलोक गामी हुये ११५ वर्ष की आयु में। 'गदर' के जमाने में तुराबअली साहब अङ्गरेजो की ओर से पुलिस के

स्वामिनी निकली मोतीबाई नाटकशाला वाली। गंगाधरराव को नाटक खेलने और खिलवाने का बहुत शौक था। स्त्रियो का अभिनय स्त्रिया ही करती थी। इनमें मोतीबाई भी थी। मोतीबाई का पता लगाते लगाते जूही, दुर्गा और मुगलखा भी निगाह में आये। इन सबके सम्बन्ध की घटनाओ का सार सच्चा है।

सन् १९३२ से मैं इन अनुसन्धानो मे लगा।

एक दिन रानी लक्ष्मीबाई के भतीजे मुझको झासी में घर पर ही मिले। वे रानी के ऊपर हिन्दी मे कुछ लिखना चाहते थे। रानी क्यो लड़ी, इस समस्या पर हम दोनो एक मत थे।

फिर एक दिन डाक्टर सावरकर के एक सेक्रेटरी मुझको झासी में ही मिले। वे मराठी में 'सत्तावनी' लिख रहे थे। रानी के सम्बन्ध की जो सामग्री उनके ग्रन्थ के लिए आवश्यक थी, मैंने दी। मै सोचता था कि रानी के विषय में बहुत लोगो ने कुछ न कुछ लिखा है और लिख रहे हैं, मै क्यो कुछ और प्रयत्न करूँ? कुछ दिनो बाद मेरी यह धारणा बदल गई।

कलक्टरी में कुछ सामग्री मिली। १८५८ मे लोगो के ब्यान लिये गये थे। इनको मैंने पढा। इनको पढकर मै अपने विश्वास में और दृढ हुआ—रानी 'स्वराज्य' के लिये लडी थी।

मेरा वह स्वप्न जिसकी भूमिका हॉकी ग्राउण्ड पर थी, फिर ताजा हुआ। मैंने निश्चय किया कि उपन्यास लिखूगा, ऐसा जो इतिहास के रग-रेशे से सम्मत हो और उसके सदर्भ में हो। इतिहास के ककाल में मास और रक्त का सचार करने के लिये मुझको उपन्यास ही अच्छा साधन प्रतीत हुआ। उस साधन को मैंने जो कुछ रूप दे पाया है वह पाठको के सामने है।

यदि आनन्दराय ने रानी के लिये गोली खाई और मेरी कलम ने थोडी सी स्याही—तो इस अन्तर को पाठक अवश्य ध्यान में रखने की कृपा करें।

वृन्दावनलाल वर्मा

कृतज्ञता-ज्ञापन

कठिन परिस्थितियो में इस पुस्तक की छपाई हुई। टाईप ढालने वालो ने बेहद परेशान किया। फिर कागज वालो का नम्बर आया। इन सब हैरानियो से किसी प्रकार पार पा लिया।

मैं अपने कम्पोजिटरो, प्रेस मैन, और अन्य कर्मचारियो को किन शब्दो में धन्यवाद दूँ ? मुझे उनकी लगन को देखकर विस्मय होता था। पर वे अपनी रानी के सम्बन्ध की पुस्तक तैयार कर रहे थे। कभी कभी तो रो तक देते थे।

मेरे पुत्र चि: सत्यदेव ने जो अथक परिश्रम, अपने थोडे से साधनो के आश्रय से किया है उसके लिये क्या कहू। नया रिवाज धन्यवाद का है, परन्तु हम दोनो जरा पुरानी सस्कृति में सने हैं, इसलिये उसकी पीठ पर केवल हाथ फेरता हूँ।

श्री कालीचरण वर्मा झाँसी के होनहार चित्रकार हैं। रानी के युद्ध का उन्होने जो चित्र दिया है उस पर बहुत परिश्रम किया है। मे कृतज्ञ हूँ। हम दोनो झाँसी के हैं और वह मुझसे आयु में छोटे हैं, इसलिये वे नही चाहते कि कुछ और लिखूं।

झासी
२४ अक्टबर, १६४६

वृन्दावनलाल वर्मा

प्रस्तावना

[१]

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रतिनिधि ने झाँसी के शासक रामचन्द्रराव के पास खरीता भेजा, 'नवाव गवर्नर जनरल साहब, लार्ड विलियम वेन्टिक ने आपको आज से राजा की उपाधि दी है। कम्पनी सरकार की मित्रता के प्रतीक रूप में यूनियन-जैक झण्डा आपको भेट किया जाता है। इसके गौरव की रक्षा कीजियेगा।'

झाँसी के किले वाले महल के मैदान मे, धूमधाम और तडक-भडक के साथ जो दरबार सन् १८३२ में हुआ था उसमे उपरोक्त घोषणा सुनाई गई थी। रामचन्द्रराव ने उपाधि और पताका सहर्ष ग्रहण की। झाँसी के शासक के साथ कम्पनी की सबसे पहली सन्धि सन् १८२४ में हुई थी। उस समय पन्त प्रधान (पेशवा) बाजीराव द्वितीय की मातहती में शिवराव भाऊ झाँसी के शासक थे और वह सूबेदार कहलाते थे। यह सन्धि परस्पर मैत्री और सहायता के आधार पर की गई थी। पेशवाई निर्बल हो चुकी थी। सूबेदार सशक्त थे। बुन्देलखण्ड को अधिकृत करने के लिए अङ्गरेजो को झाँसी के सूबेदार की मित्रता अभीष्ट थी।

इस सन्धि का बुन्देलखण्ड के रजवाडो पर प्रभाव पडा।

सन् १८१७ के जून में पन्त प्रधान बाजीराव से अङ्गरेजो की अन्तिम सन्धि हुई। इस सन्धि ने पेशवा के सम्पूर्ण अधिकार, ठोस और खोखले, जो उसको बुन्देलखण्ड में प्राप्त थे, ईस्ट इन्डिया कम्पनी को दे दिये।

बाजीराव को इस सन्धि द्वारा आठ लाख रुपये वार्षिक पैन्शिन बिठूर खास की जागीर और पूना त्याग कर बिठूर का प्रवास मिला।

उसी साल नवम्बर के महीने में शिवराव भाऊ के पौत्र रामचन्द्रराव के साथ, जो उस समय नाबालिग था, दूसरी सन्धि हुई, जिसमें पेशवा का स्थानापन्न कम्पनी सरकार को मनवाया गया। एक शर्त उस सन्धि में यह भी थी कि झाँसी का राज्य रामचन्द्रराव के कुटुम्ब मे 'दवाम' के लिये रहेगा, चाहे वारिस औरस सन्तान हो, चाहे सगोत्रज हो अथवा गोद लिये हुये हो।

सन् १८३२ में रामचन्द्रराव और उसके वारिसो को राजा की उपाधि दी गई।

उस दरबार में शिवराव भाऊ के लडके रघुनाथराव और गङ्गाधर-राव भी थे। शिवराव भाऊ का जेठा लडका कृष्णराव था। उसका देहान्त हो चुका था। रामचन्द्रराव कृष्णराव का पुत्र था। शिवराव भाऊ के जेठे लडके की सन्तान होने के कारण झासी की गद्दी उसको मिली थी।

राजा की उपाधि मिलने के उपलक्ष में जो दरबार हुआ था, उसमें राज्य के छोटे—बडे सब जागीरदार पुरस्कृत किये गये। छोटे जागीरदारो मे मऊ का एक युवक आनन्दराय कायस्थ था। उसके घराने में ताम्रपत्रो की सनदो द्वारा जो माफी लगी थी, वह पुष्ट की गई। कुछ बढा भी दी गई। गायक, वादक और नर्तकियो पर भी पुरस्कार बरसाये गये।

रामचन्द्रराव की नाबालिगी के जमाने में शासनसूत्र उसकी मा सखूबाई के हाथ में था। जब वह वयस्क हो गया तब भी सखूबाई

रामचन्द्रराव ने राजा की स्थायी उपाधि पाते ही शासनसूत्र, पूरे तौर पर, अपने हाथ में ले लिया और दो-एक दिन मे ही खजाने को लगभग रीता कर दिया। सखूबाई को खजाने का खाली होना इतना नही अखरा जितना अपने हाथ से राज्य की बागडोर का चला जाना।

सखूबाई ज़रा ढली आयु की प्रचण्ड वेगमयी राजमाता थी। माथे और चेहरे की शिकने राजदण्ड के निरन्तर कठोर उपयोग और क्रोध के आवेशो के व्यवहार की कथा कहती थी। उसकी कठोरता विख्यात थी।

सखूबाई से रामचन्द्रराव का राजा होना नही सहा गया। उसने रामचन्द्रराव को मरवा डालने का षडयन्त्र रचा।

झाँसी के लक्ष्मी-फाटक के बाहर लक्ष्मी-तालाब के दक्षिण-पश्चिमी सिरे पर महालक्ष्मी का मन्दिर है। इस मन्दिर के चौपडे में सखूबाई ने अपने लडके का वध करने के लिये भाले गडवाये। रामचन्द्रराव को तैरने का बहुत शौक था—विशेषकर रात में। सखूबाई को विश्वास था कि उस रात रामचन्द्रराव चौपड़े में तैरने के लिये मुटार लगायगा—और समाप्त हो जायगा।

परन्तु लालू कोदेलकर नाम के एक मराठा युवक और मऊ के उपरोक्त आनन्दराय की सहायता के कारण रामचन्द्रराव बच गया। आनन्दराय तो अपने घर मऊ निकल भागा, पर कोदेलकर को दो दिन बाद सखूबाई ने मरवा डाला। लालू कोदेलकर के तीन दरिद्र नातेदार थे। वे झाँसी से भागे। लालू के देहान्त के कुछ समय उपरान्त इन तीनो के एक-एक लडकी हुई। इन बालिकाओ के नाम थे काशी, सुन्दर और मुन्दर। तीनो बालिकाये सुन्दर थी। परन्तु इनका लालन-पालन बडी दरिद्रता में हुआ। सखूबाई का क्रोध कोदेलकर ही तक सीमित न था, उसके नातेदार भी आतङ्कग्रस्त थे और राज्याश्रय से वञ्चित।

रामचन्द्रराव अपनी माँ के साथ, इतना सब होने पर भी, कठोर बर्ताव नही करना चाहता था। परन्तु उसके दोनो काका—रघुनाथराव

और गङ्गाधरराव—तथा दीवान, सखूबाई को स्वतन्त्र नही छोडना चाहते थे। वह कैद कर दी गई। लालू कोदेलकर के नातेदार झाँसी बुला लिये गये और मऊ के आनन्दराय को सरक्षण मिल गया।

रामचन्द्रराव सन् १८३५ मे निस्सन्तान मरा। उसकी विधवा रानी ने कृष्णराव नामक एक बालक को गोद लिया। कम्पनी सरकार ने इस गोद को नही माना। रघुनाथराव को, उत्तराधिकारी करार देकर, गद्दी दी। गङ्गाधरराव रघुनाथराव से छोटे थे।

जब शिवराव भाऊ के जेठे भाई रघुनाथ हरि (१७५६-१७६६) झाँसी के सूबेदार होकर आये तब जो लगान किसानो पर बाधा गया, ज्यादा था। सबका-सब कभी वसूल नही होता था। पूरा बीस लाख रुपया साल सखूबाई ने ही रामचन्द्रराव की नाबालिगी के समय मे वसूल करने का प्रयास किया। गाँवटी पञ्चायते हाहाकार कर उठी। परन्तु उस सामन्त युग मे, बिचारे किसान लुटेरो और बटमारो के सन्ताप के मारे कुछ कर ही नही सकते थे।

रामचन्द्रराव के राज्यकाल में लगान उत्तरोत्तर कम वसूल किया जाने लगा। खजाने मे जो कुछ रुपया था उसका एक अश सखूबाई ने दाब लिया और अधिकाश रामचन्द्रराव ने खर्च कर डाला। बाकी रघुनाथराव के शिथिल शासन में साफ हो गया।

रघुनाथराव रङ्गीली प्रकृति के रईस थे। उनकी वेश्याओ में से लच्छो नाम की एक मुसलमान वेश्या थी। इससे दो लडके और लडकियाँ हुई। बडे लडके का नाम नवाब अलीबहादुर था। जब रघुनाथराव सन् १८३५ में झाँसी के राजा हुये, अलीबहादुर की आयु २२ वर्ष की थी। लच्छो की कबर आँतिया ताल के बँध के नीचे मेहदी बाग में है।* एक समय था जब लच्छो नईबस्ती के महल में रहती थी

* झाँसी के सदर अस्पताल के अहाते में जिस गजरा वेश्या की कबर है उसको गङ्गाधरराव के पिता शिवराव भाऊ रक्खे थे, न कि रघुनाथराव या गङ्गाधरराव, जैसा कि अनेक इतिहास लेखको का भ्रम है।

और मेंहदी बाग के फूल उस पर न्योछावर होते थे—अब उसकी टूटी कबर पर घास और जङ्गली पौधे खडे हुये हैं। रघुनाथराव और लच्छो के महल खण्डहर हो गये हैं और उनमे झाँसी म्युनिस्पैलटी की कूडा-गाडियाँ रक्खी जाती हैं, बैल बांधे जाते हैं और उनके लिये घास-चारा भरा जाता है।

सखूबाई के शासनकाल मे रघुनाथराव और गङ्गाधरराव—दोनो भाइयो—की मनोवृत्तियाँ आमोद-प्रमोद की ओर झुकी, बढी और उसी मे तल्लीन हुई। लडाइयाँ लडनी नही थी कि जिस कारण प्रजा को—खास कर किसानो को—सतुष्ट रक्खा जावे।

कुराज्य था, कुशासन था। परन्तु गाँवटी पञ्चायते बनी हुई थी। पूरा लगान वसूल नही होता था। पञ्चायत की रक्षा प्रत्येक ग्रामीण को सहज ही प्राप्य थी। पञ्चायतो के अधिकार ज़ब्त होकर अदालतो के हवाले नही हुये थे। जरा-ज़रा सी सडी-गली बात के लिये राज्य के पदाधिका-रियो के घरो पर हाजिरी नही देनी पडती थी। बडे मामलो के लिये बँधे हुये-हक-दस्तूरो—रिश्वतो—के छेदो मे होकर जनता अपने नित्य के जीवन में आराम और निभाव को खीचती-घसीटती चली जाती थी।

शासन-शक्ति का केन्द्रीकरण नही हुआ था। लोगो को अपने औसान और पराक्रम का सहारा पकडने के बहुधा अवसर मिलते रहते थे। समाज में सन्तुलन यथेष्ट नही था—समानता, विषमता स्पष्ट थी। परन्तु, आर्थिक शृंखलाओ की कडियाँ मजबूती के साथ जुडी हुई थी। धन एक जगह इकट्ठा हो होकर बट-बट जाता था। एक एक आश्रय पर शत शत आश्रित टगे हुये, लिप्त और सलग्न थे। आश्रय और आश्रित सब क्रियाशील। जहाँ आश्रय श्रमहीन, प्रयत्नरहित और दुश्शील हुआ कि गया और उसका स्थान दूसरे प्रबल सबल स्थानापन्न ने ग्रहण किया। खोखला गौरव अपनी कहानी बहुत अल्प समय तक ही कह सकता था।

उस समय के इस प्रकार के वह आश्रय—रघुनाथराव—अपनी निष्क्रियता में मुश्किल से दो वर्ष टिक पाये थे कि झाँसी के अडौस-पडौस तक में लूटमार, भभ्भड और दङ्गा-फसाद होने लगा। झाँसी राज्य पर अनेक साहूकारो का बहुत कर्जा चढ गया। इसलिये सन् १८३७ में झाँसी राज्य कोर्ट कर लिया गया।

रघुनाथराव ने राज्य के कोर्ट होने के पहले ही झाँसी का बचा-खुचा खजाना भाड-भगतियों में वितरित कर दिया और अपने पुत्र नवाब अलीबहादुर को करेरा, पिछोर तथा डामरोन परगनो के ८५ गाँव जागीर में लगा दिये; जिसकी आय साढे छहत्तर हजार रुपये वार्षिक समझी जाती थी।

रघुनाथराव ने एक काम और किया—सखूबाई को कैद से मुक्त कर दिया।

सन् १८३८ में रघुनाथराव का देहान्त हो गया।

महाराजा गंगाधरराव

[२]

रघुनाथराव के उपरान्त राज्य के लिये चार मुख्य दावेदार खड़े हुये-गङ्गाधरराव (भाई) कृष्णराव (रामचन्द्रराव का कथित दत्तक पुत्र) अलीबहादुर और रघुनाथराव की विधवा रानी ।

कृष्णराव की पीठ पर सखूबाई थी । बन्दीगृह के जीवन ने सखूबाई का दमन नही कर पाया था, प्रत्युत वह अधिक सतर्क, सतेज, और सनकीली हो गई थी ।

रघुनाथराव की अन्त्येष्टि क्रियायें भी साङ्गोपाङ्ग न हो पाई थी कि सखूबाई ने किले पर अधिकार कर लिया, खज़ाने पर अपने सन्त्री बिठला दिये, तोपो पर अपने तोपचियो को और सिलहख़ाने पर अपने सिलेदारो को नियुक्त कर दिया ।

गङ्गाधरराव शहर वाले महल में थे । उनको ऐसा लगता था जैसे अपने ही घर में कैद हो ।

सखूबाई को कैद करने का निर्णय जिन लोगो ने दिया था उनमें गङ्गाधरराव भी थे । सखूबाई की प्रतिहिंसा के भय से, और साधन-हीन होने के कारण गङ्गाधरराव झाँसी से भागे और अङ्गरेज़ो के पास सीधे कानपूर पहुचे । उस समय कानपूर अङ्गरेजो की बढी हुई शक्ति का काफी बडा अड्डा था ।

अलीवहादुर ने करेरा के दुर्ग में शरण ली और वह वहा से सैन्य संग्रह करने लगे । उस समय मध्य भारत के लिये गवर्नर जनरल का एजेन्ट साइमन फ्रेज़र था—सन् १८५७ के विप्लवकाल में यह आगरे का लैफ्टिनेंट गवर्नर हो गया था ।

इस गडबड की ख़बर पाकर फ्रेजर झाँसी आया । कम्पनी सरकार के प्रबल सगठन और बल के आतक ने उसके कर्मचारियो को उद्धत बना दिया था । वह दो एक चोबदारो को लेकर सखूबाई के पास क़िले में पहुचा और उसने सखू को धमकाया ।

सखू ने कोई परवाह नही की।

मधुमास का महीना था। होली हो चुकी थी। जनता अपने रंग में मस्त थी। सखूबाई के इशारे पर फ्रेजर की किले से बाहर निकलते ही बहुत दुर्गति हुई।

फ्रेजर सेना और तोपखाना लेकर लौटा। सखूबाई किला छोड कर भाग गई। अलीबहादुर करेरा त्याग कर कम्पनी की शरण में आगये, और उनको ५००) मासिक पैन्शन देना तै हो गया। झाँसी राज्य का मामला तै करने के लिये एक कमीशन बैठा। कमीशन ने उत्तराधिकार का निश्चय गङ्गाधरराव के हक में किया।

गङ्गाधरराव कानपूर से झाँसी आ गये। धूमधाम के साथ उनका अभिषेक हुआ। परन्तु झाँसी राज्य पर कुप्रबन्ध और ऋण का इतना बोझ बढ गया था कि फिर कोर्ट हो गया। बात सन् १८३९ की है।

गङ्गाधरराव साहित्य और ललित-कलाओ के पूरे रसिक थे। सुखलाल काछी उनका चित्रकार था। पढा लिखा कम, परन्तु कमल और कूञ्ची की सही विधि, कोमलता और हथौटी का आचार्य। गायक, बादक, खास कर ध्रुवपद, वीणा और पखावज के उस्ताद और रीतिकाल तथा भक्ति-रस की ओट वाले कवि गङ्गाधरराव की महफिल को आबाद करने लगे। उन्होने दूर दूर से नाना-प्रकार के हस्त-लिखित ग्रन्थ इकट्ठे करवाये और विशाल पुस्तक भाण्डार से अपने पुस्तकालय को भर दिया। वेद, उपनिषद, दर्शन, पुरान, तन्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिष, व्याकरण, काव्य इत्यादि के इतने ग्रन्थ उनके पुस्तकालय में थे कि लोग दूर दूर से उनकी प्रतिलिपि के लिये आने लगे।

नाटको का उन्हे विशेष शौक था। वे सस्कृत नाटको का अनुवाद हिन्दी और मराठी में करवाया करते थे और उनका अभिनय भी करवाते थे। शहर के महल के ठीक पीछे पश्चिमी दिशा में नाटकशाला थी।*

---

*अब यह खंडहर है। गिरजाघर के उत्तर में केवल सडक बीच में है।

गङ्गाधरराव स्वय अभिनय करते थे। पुरुष के अभिनय से सन्तोष नही होता था, इसलिये स्त्री की भूमिका में भी आ जाते थे। स्त्रियो का अभिनय करने के लिये उन्होने बहुत सुन्दर नाचने-गाने वाली नियुक्त कर रक्खी थी। इनमें मोतीबाई बहुत प्रसिद्ध थी।*

उसका सौन्दर्य अप्सरा सा था। फूलो जैसी कोमलाङ्गी। स्वरलहरी सी मोहक और चंचल। परन्तु वेश्यापुत्री होने पर भी वह कुमारी थी और नाटकशाला के बाहर पर्दे में रहती थी। बहुत कुशल अभिनेत्री थी, परन्तु इसको भी गङ्गाधरराव अपने उदाहरण से यथावत् अभिनय सिखलाते थे।

गंगाधरराव की नाटकशाला में मोतीबाई छोटी उम्र में आगई थी। जो लोग गगाधरराव की कृपा से नाटकशाला में खेल देखने जाया करते थे वे बाहर आकर उसके रूप की, नृत्य और सगीत की, उसके हाव-भाव तथा अभिनय की प्रशसा करते नही अघाते थे।

---

* झाँसी के खेवट में वह मोतीबाई नाटकशाला वाली के नाम से विख्यात है।

[३]

झाँसी की गद्दी पर राजा गंगाधरराव को बैठे और झाँसी-राज्य के शासन को अगरेजो द्वारा चलते सात-आठ साल हो गये। नगर का शासन गंगाधरराव के हाथ में था और बाकी राज्य का कम्पनी के कर्मचारियो के हाथ मे।

चैत लग गया था। वसन्त ने पत्थरो और ककडो तक पर फुल-वाडियाँ पसार दी। टेसू के फूलो ने क्षितिज को सजा दिया और धरती पर रग-बिरंगे चौक पूर दिये। समीर और प्रभञ्जन में भी महक समा गई। रात और दिन सगीत से पुलकित हो उठे।

उस रात नाटकशाला में 'रत्नावली' का अभिनय था। हिन्दी अनुवाद द्वारा। मोतीवाई को रत्नावली का रूपक करना था। निर्देशन स्वय राजा का। गायन-वादन और नृत्य बडे उस्तादो के दिग्दर्शन मे तैयार हुये थे।

दर्शक सब निमन्त्रण पर आये थे। राजा गंगाधरराव सबसे आगे वैठे थे। उनकी आयु इस समय जीवन के लगभग बीचोबीच थी। सुन्दर, स्वस्थ और राजसी। पीछे, परन्तु पास ही उनके सगी खुदाबख्श, दीवान रघुनाथसिह, राव दूल्हाजू, दीवान जवाहरसिह इत्यादि दायें-बाये बैठे हुये थे। सब नौजवान। स्वास्थ्य और यौवन की उमगो में भरे हुये। मोतीबाई के छलकते मदमाते यौवन और सौन्दर्य को देखने के लिये आतुर। पर्दा खुला। सूत्रधार का मगल-गान हुआ। कुछ समय वाद रत्नावली की भूमिका में मोतीवाई इठलाती हुई रगमञ्च पर आई। खुदाबख्श के मुँह से यकायक 'वाह!' निकल पडा। मोतीबाई ने खुदा-वख्श को देखा। खुदाबख्श ने आँखे गडाई। जब-जब मोतीवाई रगमञ्च पर जिस-जिस दृश्य मे आई उसने दर्शको पर से दृष्टि को समेट कर खुदावख्श पर केन्द्रित किया।

मोतीवाई ने नृत्य भी बहुत मोहक किया। नृत्य के समय चितवन की कोरो को मस्ती से भरने का प्रयत्न किया। और, पलको को अनेक

बार अर्द्ध मुकुलित झपकियाँ दीं। खुदाबख्श के मुँह से फिर 'वाह !' निकली। राजा को अच्छा नहीं लगा। बोले, 'तुम मूर्ख हो। जिस रत्नावली का विवाह राजा के साथ होने वाला है उसको क्या वेश्याओं जैसा नयन मटकौअल करना चाहिये ?'

दर्शकों की सम्मति थी कि सारा नाटक सफल अभिनय और मनोहर गायन-वादन तथा नृत्य के साथ समाप्त हुआ है। दर्शक नाटकशाला के बाहर गये। राजा गङ्गाधरराव रंगमञ्च के श्रृङ्गार-कक्ष में पहुँचे। मोतीबाई ने नत-मस्तक प्रणाम किया। उसको विश्वास था कि आज सब कार्य कलाके सर्वाङ्ग सहित पूरा किया है। प्रफुल्लता के मारे उसका चेहरा दमक रहा था। राजा के मुंह से प्रशंसा के दो शब्द सुनने की ललक थी।

राजा ने कहा, 'आज क्या शराब पीकर आई थी ?'

मोतीबाई सन्नाटे में आ गई। चेहरा उतर गया। जैसे एक दम कुम्हला गई हो। धीमे, कोमल, मधुर स्वर में बोली, 'श्रीमन्त सरकार, मैंने शराब तो कभी भी नहीं पी है। आज क्या पीती ?'

'फिर आँखों को आज इतना ढाल क्यों दिया ?' राजा ने प्रश्न किया।

एक छोटी-सी आह को भीतर ही दबाकर मोतीबाई ने उत्तर दिया, 'मैं भूल गई।'

राजा कुछ शान्त हुये। बोले, 'जिस भूमिका का अभिनय करना हो उसके चरित्र को कभी न भूलो। अभिनय सफल तभी कहावेगा जब पात्र अपने को तो बिलकुल भूल जावे परन्तु अपनी भूमिका की एक-एक रेखा को अच्छी तरह स्मरण रक्खे। उसमें तन्मय हो जावे। मैंने पहले भी बतलाया है। समझी ?'

मोतीबाई के मन में एक प्रतिवाद उठा, परन्तु उसने अपने को पूरी तौर से संयत करके विनय की, 'हाँ सरकार। आगे कभी भूल न होगी।'

राजा ने कहा, 'अब की बार कालिदास का अभिज्ञान शाकुन्तल होगा। तुमको शकुन्तला का अभिनय करना है।'

मोतीबाई की उदासी चली गई। बालकों जैसी सरल प्रफुल्लता के साथ उसने कहा, 'महाराज मैं भरसक प्रयत्न करूँगी। सरकार के दिग्दर्शन का अपमान न होगा।'

राजा प्रसन्न होकर चले गये। पात्रो और पात्रियो ने जय-जयकार किया, 'श्रीमन्त सरकार महाराजा गङ्गाधरराव बहादुर की जय।'

नियुक्त तिथि और समय पर शकुन्तला नाटक का अभिनय हुआ। लगभग वे ही सब दर्शक उपस्थित हुये।

आभूषण विहीन परन्तु पुष्पो से लदी हुई मोतीबाई तपोवन की सहेलियो के साथ बेलो और लताओ को सीचते ही दर्शको के मन को मद सा वितरित करने लगी। परन्तु खुदाबख्श उस रात की रत्नावली की प्रमत्त आँख की झलक देखने के लिये व्याकुल था।

होते-होते नाटक के अन्तिम दृश्यो की बारी आई।

सुरासुर संग्राम में इन्द्र की सहायता करने के उपरात दुष्यन्त लौटा। आश्रम मे सिंह के बच्चो के साथ खेलता हुआ लडका मिला। स्नेह उमड़ा बालक के हाथ से गडा खिसक गया। दुष्यन्त ने उठा लिया। गडा साँप के आकार में परिवर्तित नही हुआ। इस व्यापार को देखने वाली शकुन्तला की एक सहेली को विस्मय हुआ। दुष्यन्त को उस बालक की माता का नाम मालूम हो गया। मलिन वेशधारिणी शकुन्तला भी बाल बिखेरे आश्रम से बाहर निकल आई। दुष्यन्त ने पहिचान लिया। उसको परिताप हुआ। शकुन्तला ने अपनी विपत्ति का कारण अपने दुर्भाग्य को बतलाया। परन्तु उससे दुष्यन्त को सतोष नही हुआ। क्षमा प्राप्ति और प्रायश्चित करने के लिये दुष्यन्त शकुन्तला के पैरो पर गिर पडा।

दुष्यन्त के पैरो पर गिरते ही मोतीबाई की दृष्टि एक क्षण के लिये खुदाबख्श पर गई। उसकी आँखें तरल थी और अनेक दर्शक भी अपने आँसुओ से, मानो स्त्रियो के साथ किये गये दुर्व्यवहारो का प्रायश्चित कर रहे थे। मोतीबाई की आँखो में बड़े-बडे आँसू आ गये।

गङ्गाधरराव ने खुदाबख्श की ओर गर्दन मोडी। कहा, 'क्यो रे कैसा रहा ?'

मोतीबाई के आँखो के आसुओ की ओर जरा सी निगाह फिर डाल कर खुदाबख्श ने रुद्ध स्वर मे कहा, 'महाराज बहुत अच्छा 'पर आज 'वाह' 'वाह नही निकली ?' राजा ने पूछा। खुदाबख्श जरा झेपा। झेप को दबाने के लिये मुस्कराकर बोला, 'हुजूर उसके लिये कोई जगह नही पाई।'

राजा इस बात को पीकर रह गये। खेल की समाप्ति पर दर्शक नाटक शाला के बाहर हुये और गङ्गाधरराव श्रृंगार कक्ष में। मोतीबाई अब भी मलिन वेश में थी। अभिनय के विषय में सम्मति सुनने के लिये प्रणाम करती हुई राजा के सम्मुख आई। उन्होने उसकी पीठ पर थपकी देकर शाबाशी दी। कहा, 'तुम्हारा आज का अभिनय बहुत अच्छा और स्वाभाविक रहा। कालिदास महान हैं। उन्होने उस समय शकुन्तला के हृदय को जो आँसू दिये थे, तेरे नेत्रो ने ब्याज के साथ लौटा दिये।' मोतीबाई प्रसन्नता के मारे फूल गई। बिना पुष्पो के ही पुष्पो से लदी जान पडी।

राजा ने उसको एक बडा बाग जागीर में लगा दिया।*

दूसरे दिन राजा गङ्गाधरराव ने खुदाबख्श को राजदरबार से अलग कर दिया और घोषणा करवाई कि यदि खुदाबख्श फिर कभी झाँसी शहर में दिखलाई पडा तो उसके नगे शरीर पर कोडे लगाये जायँगे।

लोगो को इस आज्ञा पर आश्चर्य था। परन्तु लोग राजा के सुलभकोपी स्वभाव को जानते थे, इसलिये किसी खास कारण को जानने की लालसा जनता के मन मे नही हुई।

---

*यह बाग ओरछे दरवाजे के भीतर, दरवाजे से लगा हुआ था। आजकल इसके एक सिरे पर सडक के किनारे मसजिद है। बाकी में अब साग भाजी की खेती होती है।

दीवान रघुनाथसिह और राव दूल्हाजू के मन में असली कारण के विषय में जो शका थी, उन्होने किसी पर प्रकट नही की। उन्होने सोचा कि इस नाटकशाला से दूर ही रहना चाहिये, परन्तु राजा के निमन्त्रण की अवज्ञा भी कैसे कर सकते थे ?

मोतीबाई सावधानी और लगन के साथ नाटकशाला में काम करती रही। परन्तु दर्शको में खुदाबख्श को उसने फिर कभी नही देखा। और न कभी गङ्गाधरराव ने मोतीबाई को किसी विशेष दर्शक पर आँख को केन्द्रित करते पाया। इच्छा रखते हुये भी मोतीबाई रगमच पर फिर कभी बडे बडे आँसू नही निकाल सकी।

इन दिनो नाटकशाला मे जुही नाम की एक अल्पवयस्का नर्तकी और आई। परन्तु उसको अपने घर पर नाचने गाने की और अधिक तालीम पाने की अनुमति मिल गई थी। जुही उनाव दरवाजे भीतर मेवातीपुरा के सिरे पर रहती थी। इसका भवन माधवराव भिडे के बाग से लगा हुआ था। उसने अभी अल्हडपन से बाहर कदम नही रक्खा था। रंगमच पर इसका नृत्य और गायन अधिक होता था, अभिनय कम।

उदय

[१]

वर्षा का अन्त हो गया। कुवाँर उतर रहा था। कभी कभी झीनी झीनी बदली हो जाती थी। परन्तु उस सन्ध्या के समय आकाश बिलकुल स्वच्छ था। सूर्यास्त होने में थोडा सा विलम्ब था। बिठूर के बाहर गगा के किनारे तीन अश्वारोही तेजी के साथ चले जा रहे थे। तीनो बाल्यावस्था मे। एक बालिका, दो बालक। एक बालक की आयु १६, १७ वर्ष, दूसरे की १४ से कुछ ऊपर। बालिका की तेरह से कम।

बडा बालक कुछ आगे निकला था कि बालिका ने अपने घोडे को एड लगाई। बोली, 'देखूँ कैसे आगे निकलते हो।' और वह आगे हो गई। बालक ने बढने का प्रयास किया तो उसका घोडा ठोकर खा गया, और बालक धडाम से नीचे जा गिरा। सूखी लकडी के टुकडे से उसका सिर भिड गया। खून बहने लगा। घोडा लौटकर घर की ओर भाग गया बालक चिल्लाया, 'मनू मै मरा।'

बालिका ने तुरन्त अपने घोडे को रोक लिया। मोड़ा, और उस बालक के पास पहुची। एक क्षण में तडाक से कूदी और एक हाथ से घोडे की लगाम पकडे हुये झुक कर घायल बालक को ध्यान पूर्वक देखने लगी।

माथे पर गहरी चोट आई थी और खून बह रहा था। बालिका मिठास के साथ बोली, 'घबराओ मत, चोट बहुत गहरी नही है। लोहू बहने का कोई डर नही।'

मझला बालक भी पास आ गया। उतर पडा और विह्वल होकर अपने साथी की चोट को देखने लगा।

'नाना तुमको तो बहुत लग गई है।' उस बालक ने कहा।

'नही, बहुत नही है' बालिका मुस्कराकर बोली, 'अभी लिये चलती हूँ। कोठी पर मरहम पट्टी हो जायगी और बहुत शीघ्र चगे हो जायगे।'

'कैसे ले चलोगी मनू ? बडे लडके ने कातर स्वर में कराहते हुये पूछा।

मनू ने उत्तर दिया, 'तुम उठो। मेरे घोडे पर बैठो। मै उसकी लगाम पकडे तुम्हे अभी घर लिये चलती हू।'

'मेरा घोडा कहाँ है ?' घायल ने उसी स्वर में प्रश्न किया।

मनू ने कहा, 'भाग गया। चिन्ता मत करो। बहुत घोडे हैं। मेरे पर बैठो। जल्दी। नाना, जल्दी।'

नाना बोला, 'मनू में सध नही सकू गा।'

मनू ने कहा, 'मैं साध लू गी। उठो।'

नाना उठा। मनू एक हाथ से घोडे की लगाम थामे रही, दूसरे से उसने खून मे तर नाना को बिठलाया और बडी फुर्ती के साथ उचट कर स्वय पीछे जा बैठी। एक हाथ से घोडे की लगाम सभाली। दूसरे से नाना को थामा और गाव की ओर चल दी। पीछे पीछे मझला बालक भी चिन्तित, व्याकुल, चला। जब ये गाव के पास आगये तब कई सिपाही घोडो पर सवार इन बालको के पास आ पहुँचे।

'लगी तो नही ?'

'ओफ बहुत खून निकल आया है।'

'आओ मै लिये चलता हूँ ।'

'घर पर घोडे के पहुँचते ही हम समझ गये थे कि कोई दुर्घटना हो गई है ।' इत्यादि उद्‌गार इन आगन्तुको के मुँह से निकले। इन लोगो के अनुरोध करने पर भी मनू नाना को अपने ही घोड़े पर सँभाले हुये ले आई। पहुँचते ही कोठी के फाटक पर एक उतरती अवस्था के और दूसरे अधेड वय के पुरुष मिले। दोनो त्रिपुण्ड लगाये थे। उतरती अवस्था वाला रेशमी वस्त्र पहिने था और गले में मोतियो का कठा। अधेड सूती वस्त्र पहिने था। उतरती अवस्था वाले को कुछ कम दिखता था। उसने अपने अधेड साथी से पूछा, 'क्या ये सब आ गये मोरोपन्त ?'

'हा महाराज ।' मोरोपन्त ने उत्तर दिया। जब वे बालक और निकट आ गये तब मोरोपन्त नामक व्यक्ति ने कहा, 'अरे यह क्या ? मनू और नाना साहब दोनो लोहूलुहान हैं !'

जिनको मोरोपन्त ने 'महाराज' कहकर सम्बोधन किया था, वह पेशवा बाजीराव द्वितीय थे। उन्होने भी दोनो बच्चो को रक्त मे सना हुआ देख लिया। घबरा गये।

सिपाहियो ने झटपट नाना को मनू के घोडे पर से उतारा। मनू भी कूद पडी।

मोरोपन्त ने उसको चिपटा लिया। उतावले होकर पूछा, 'मनू कहा लगी है बेटी ?'

'मुझको तो बिलकुल नही लगी काका', मनू ने जरा मुस्कराकर कहा, 'नाना को अवश्य चोट आई है, परन्तु बहुत नही है।'

'कैसे लगी मनू ?' बाजीराव ने प्रश्न किया।

कोठी मे प्रवेश करते करते मनू ने उत्तर दिया, 'उँह साधारण-सी बात थी। घोडे ने ठोकर खाई। वह सँभल नही सके। जा गिरे। घोडा भाग गया। घोड़ा ऐसा भागा, ऐसा भागा कि मुझको तो हँसी आने को हुई।'

मोरोपन्त ने मनू के इस अल्हड़पन पर ध्यान नही दिया। नाना को मनू अपने घोडे पर ले आई, वे इस बात पर मन ही मन प्रसन्न थे।

बाजीराव को सुनाते हुये मोरोपन्त ने पूछा, 'तू नाना साहब को कैसे उठा लाई ?'

मनू ने उत्तर दिया, 'कैसे भी नही। वह बैठ गये। मै पीछे से सवार हो गई। एक हाथ में लगाम पकड ली, दूसरे से नाना को थाम लिया। बस।'

नाना को मुलायम बिछौनो में लिटा दिया गया। तुरन्त घाव को धोकर मरहम पट्टी कर दी गई। घाव गम्भीर न होने पर भी लम्बा और ज़रा गहरा था। बाजीराव बहुत चिंतित थे। उन्होने रो तक दिया।

मोरोपन्त को विश्वास था कि चोट भयप्रद नही है तो भी वह सहानुभूति के कारण बाजीराव के साथ चिन्ताकुल हो रहे थे।

जब मनूबाई और मोरोपन्त उसी कोठी के एक भाग मे, जहाँ उनका निवास था अकेले हुये, मनू ने कहा, 'इतनी जरा सी चोट पर ऐसी घबराहट और रोना पीटना !'

'बेटी, चोट जरा सी नही है। कितना रक्त बह गया है !'

'आप लोग हमको जो पुराना इतिहास सुनाते है उसमे युद्ध क्या रेशम की डोरो और कपास की पौनियो से हुआ करते थे ?'

'नही मनू। पर यह तो बालक है।'

'बालक है ! मुझसे बडा है। मलखम्ब और कुश्ती करता है। बाला गुरू उसको शाबाशी देते हैं। अभिमन्यु क्या इससे बडा था ?'

'मनू, अब वह समय नही रहा।'

'क्यो नही रहा काका ? वही आकाश है, वही पृथ्वी। वही सूर्य-चन्द्रमा और नक्षत्र। सब वही है।'

'तू बहुत हठ करती है।'

'जब मैं सवाल करती हू तो आप इस प्रकार मेरा मुंह बन्द करने लगते हैं। मैं ऐसे तो नही मानती। मुझको समझाइये, अब क्या हो गया है !'

'अब इस देश का भाग्य लौट गया है। अङ्गरेजो के भाग्य का सूर्योदय हुआ है। उन लोगो के प्रताप के सामने यहाँ के सब जन निस्तेज हो गये हैं।'

'एक का भाग्य दूसरे ने नही पढा है। यह सब मन-गढ़न्त है। डरपोको का ढकोसला।'

'तू जब और बड़ी होगी तब संसार का अनुभव तुझको यह सब स्पष्ट कर देगा।'

'मैं डरपोक कभी नही हो सकती। आप कहा करते हैं—मनू तू ताराबाई बनना, जीजाबाई और सीता होना। यह सब भुलावा क्यो? अथवा क्या ये सब डरपोक थी?'

'बेटी, ये सब सती और वीर थी, परन्तु समय बदलता रहता है। बदल गया है।'

'यह तो हेरफेर कर वही सब मनमाना तर्क है।'

'फिर कभी बतलाऊँगा।'

'मै ऐसी गलत–सलत बात कभी नही सुनने की।'

'तो सोवेगी या रात भर सवाल करती रहेगी!' अन्त मे खीझ कर, परन्तु मिठास के साथ मोरोपन्त ने कहा। मनू खिलखिलाकर हँस पडी। बोली, 'काका आपने तो टाल दिया। मैं इस प्रसग पर फिर बात करूँगी। अभी अवश्य करवट लेते ही सोई, यह सोई।' फिर एक क्षण उपरांत मनू ने अनुरोध किया, 'काका देख आइये नाना सो गया या नही। आपको नीद आ रही हो तो मै दौडकर देख आऊँ।' मोरोपन्त ने मनू को नही जाने दिया। स्वय गये। देख आये। बोले, 'नाना साहब सो गये हैं।'

मनू सो गई। मोरोपन्त जागते रहे। उन्होने सोचा, 'मनू की बुद्धि उसकी अवस्था के बहुत आगे निकल चुकी है। अभी तक कोई योग्य वर हाथ नही लगा। दक्षिण जाकर देखना पडेगा।' इसी विचार के लौटफेर में मोरोपन्त का बहुत समय निकल गया। कठिनाई से अन्तिम पहर में नीद आई।

[२]

मनूबाई सवेरे नाना को देखने पहुँच गई। वह जग उठा था, पर लेटा हुआ था। मनू ने उसके सिर पर हाथ फेरा। स्निग्ध स्वर में पूछा, 'नीद कैसी आई ?'

'सोया तो हूँ, पर नीद आई-गई बनी रही। कुछ दर्द है।' नाना ने उत्तर दिया।

मनू—'वह दोपहर तक ठीक हो जायगा। तीसरे पहर घूमने चलोगे न ? सध्या से पहले ही लौट आयेंगे।'

नाना—'सवारी की धमक से पीडा बढने का डर है।'

मनू—'आरम्भ में कदाचित थोडी सी पीडा हो, परन्तु शीघ्र उसको दाब लोगे और जब लौटोगे याद नही रहेगा कि कभी चोट लगी थी।'

नाना—'यदि पीडा बढ गई तो ?'

मनू—'तो सह लेना, फिर कभी गिरोगे तो चोट कम आसेगी।'

नाना—'और यदि आज ही फिर फिसल पड़ा तो ?'

मनू—'तो मैं तुमको फिर उठा लाऊँगी। चिन्ता मत करो।'

नाना—'और जो तुम खुद गिर पडी तो ?'

मनू—'तब मै फिर सवार हो जाऊँगी। किसी की सहायता नही लेनी पडेगी और घर आ जाऊँगी।'

नाना—'मेरे बस का नही।'

मनू—'लड्डू खाओगे ?'

नाना—'इच्छा नही।'

मनू—'तब क्या इच्छा है ?'

नाना—'मुझे चुपचाप पडा रहने दो।'

मनू—'कब तक ?'

नाना—'तीन चार दिन लग जायेंगे।'

मनू—'किसने कहा ?'

नाना—'काका कहते थे। वैद्य ने भी कहा था।'

मनू—'वैद्य तो लोभवश कहता होगा, पर दादा क्यों कहते थे ?'

नाना—'उनसे ही पूछ लेना। मेरा सिर मत खाओ।'

मनू हँस पड़ी। फिर दाईं ओर का होठ थोडा सा—बिलकुल जरा सा—दबाकर बोली, 'तुम कहते थे—बाजी प्रभु देशपाडे की कीर्ति से बढ कर कीर्ति कमाऊंगा, तानाजी मालसुरे को पछाड़ूंगा, स्वर्ग निवासी छत्रपति शिवाजी को अपने कृत्यो से फड़का दूंगा, श्रीमन्त पन्तप्रधान प्रथम बाजीराव की बराबरी करूँगा,......'

इतने में वहा बाजीराव आ गये। मनू इतनी तीक्ष्णता के साथ बोल रही थी कि बाजीराव ने उसका अन्तिम वाक्य सुन लिया।

बोले, 'तेरी चपलता न जाने कब कम होगी ? यह सब क्या बके जा रही है ?'

मनू रञ्चमात्र भी नही दबी। बोली, 'इसको दादा आप बकना कहते हैं ? आप ही हम लोगो को यह सब छुटपन से सुनाते आये हैं। मैं उसी को दुहरा रही हूँ। अब इसे आप बकवास समझने लगे हैं ! यह क्यो दादा ?'

बाजीराव ने कहा, 'बेटी क्या आज उन बातो के स्मरण से जीवन को चलाने का समय रहा है ? महाभारत की कथायें सुनो और अपने पुरखो की बाते सुनो। अच्छी भली बनो। मन बहलाओ और जीवन को पवित्र सुख से सुखी बनाओ। नाना को चिढाओ मत।'

मनू ने मुस्कराकर ओठ जरा सा दबाया, थोडी सी त्योरी संकुचित की और बाजीराव के बिलकुल पास आकर बोली, 'क्या हम लोगो को अब सोकर, खाकर ही जीवन बिताना सिखलाइयेगा दादा ?'

बाजीराव को हँसी आई। कुछ कहना ही चाहते थे कि मोरोपन्त कहते हुये आ गये, 'नाना साहब को हाथी पर बिठला कर थोडा सा घूम आने दीजिये। बाहर तैयार खडा है।'

बाजीराव ने प्रश्न किया, 'हाथी की सवारी में चोट को धमक तो नही लगेगी ?'

मोरोपन्त ने उत्तर दिया, 'नही, पलकिया में बहुत मुलायम गद्दी तकिये लगा दिये गये हैं और हाथी बहुत धीमे चलाया जावेगा।'

मनू हाथी को देखने बाहर दौड गई। नाना निस्तार इत्यादि के लिये उठ गया। मनू ने हाथी पहले भी देखे थे, फिर भी वह इस हाथी को बार बार चारो ओर से घूम घूमकर देख रही थी। और उसके डील-डौल पर कभी मुस्करा रही थी, कभी हँस रही थी।

थोडी देर बाद बाजीराव नाना को लिये बाहर आये। साथ में छोटा लडका भी था, मोरोपन्त पीछे पीछे। हाथी पर पहले नाना को बिठला दिया गया। फिर छोटे को। महावत ने हाथी को अकुश छुलाई। हाथी उठा।

मनू ने मोरोपन्त से कहा, 'काका मै भी हाथी पर बैठूँगी।'

बाजीराव के घुटनो से लिपट कर बोली, 'दादा मैं बैठूँगी।'

नाना हौदे में महावत के पास बैठा था। उसने महावत को अविलम्ब चलने का आदेश किया। मनू की ओर देखा भी नही। बाजीराव ने नाना से कहा, 'लिये जाओ न मनू को।'

नाना ने मुँह फेर लिया। तब बाजीराव ने दूसरे बालक से कहा, 'रावसाहब मनू को ले लेते तो अच्छा होता।'

महावत कुछ ठमका तो नाना ने उसकी पसलियो में उँगली चुभोकर बढने की आज्ञा दी। वह नाना साहब और रावसाहब—दोनो लडको—को लेकर चल दिया। मनू की आँखो में क्षोभ उतर आया। मोरोपन्त का हाथ पकडकर बोली, 'हाथी लौटाओ काका। मै हाथी पर अवश्य बैठूँगी।'

बाजीराव कोठी में चले गये।

मोरोपन्त को भी क्षोभ हुआ, परन्तु उन्होने उसको नियंत्रित करके कहा, 'वह चला गया बेटी।'

मनू मोरोपन्त का हाथ पकड कर खीचने लगी, 'महावत को पुकारिये, वह रुक जायगा। मैं बिना बैठे नही मानूँगी।'

मोरोपन्त का क्षोभ भडका। उन्होंने उसका फिर दमन किया। मनू ने फिर हाथी पर बैठने का हठ किया। मोरोपन्त ने क्रुद्ध स्वर में मनू को डाटा, 'तेरे भाग्य मे हाथी नही लिखा है। क्यो व्यर्थ हठ करती है?'

मनू तिनक कर सीधी खडी हो गई। तमक कर कुछ कहना चाहती थी। एक क्षण होठ नही खुल सके।

मोरोपन्त ने शात करने के प्रयोजन से, भरसक धीमे स्वर में, परन्तु क्रोध के सिलसिले में कहा, 'सैकडो बार कहा कि समय को देखकर चलना चाहिये। हम लोग न तो क्षत्रधारी हैं और न सामत—सरदार। साधारण गृहस्थो की तरह संसार मे रहन-सहन रखना है। पढी लिखी होने पर भी न जाने सुनती-समझती क्यो नही है। कह दिया कि भाग्य में हाथी नही लिखा है। हठ मत किया कर।'

मनू के होठ सिकुडे। चिनौती सी देती हुई बोली, 'मेरे भाग्य में एक नहीं दस हाथी लिखे हैं।'

मोरोपन्त का क्रोध-क्षोभ भीतर सरक गया। हँस पडे। मनूबाई को पेट से चिपका लिया। कहा, 'अब चल कोई शास्त्र पुराण पढ। तब तक वे दोनो लौट आते हैं।'

मनू मचली। बोली, 'मै अपने घोडे पर बैठकर सैर को जाऊगी और उस हाथी को तङ्ग करूगी।'

मोरोपन्त सीधे शब्दो में वर्जित करना चाहते थे, परन्तु इस उपकरण में सफलता के चिन्ह न पाकर उन्होने तुरन्त बहाना बनाया, 'घोडे से यदि हाथी चिढ़ गया तो तू भले ही बचकर निकल आवे, पर नाना साहब, रावसाहब तथा महावत मारे जावेगे।'

वह मान गई।

'तब तक कुछ और करूंगी' मनूबाई ने कहा, 'पुस्तके तो नही पढूगी। बन्दूक से निशानाबाज़ी करूंगी।'

[३]

थोडी देर में घण्टा बजाता हुआ हाथी लौट आया। मनू दौड कर बाहर आई। एक क्षण ठहरी और आह खीच कर भीतर चली गई। नाना और राव, दोनो बालक, अपनी जगह चले गये। बाजीराव ने नाना को पुचकार कर पूछा, 'दर्द बढा तो नही ?'

'नही बढा' नाना ने उत्तर दिया, 'अच्छा लग रहा है। मनू कहाँ गई ?'

बाजीराव ने कहा, 'भीतर होगी।'

रावसाहब—'उसे बुरा लगा होगा। नाना ने साथ नही लिया, मैने तो कहा था।'

नाना—'वह मुझको सवेरे से ही चिढा रही थी।'

बाजीराव—'क्या ? कैसे ?'

नाना—'उसका स्वभाव है।'

कुछ क्षण उपरात मनू वहा आ गई।

नाना ने हँसते हुये कहा, 'छबीली, तुम क्या कोई ग्रथ पढ रही थी ?'

मनू जल उठी। बोली, 'मुझसे छबीली मत कहा करो।'

नाना ने और भी हँसकर कहा, 'क्यो नही कहा करूँ ? यह तो तुम्हारा छुटपन का नाम है।'

मनू की आँख लाल हो गई। बोली, 'मुझको इस नाम से घृणा है।'

नाना गभीर हो गया। बोला, 'मुझको तो यही नाम सुहावना लगता है। छबीली, छबीली।'

'इस नाम को कभी नही सुनूँगी।' कहकर मनू वहाँ से जाने को हुई। बाजीराव ने उसको पकड लिया। मनू ने भागना चाहा। न भाग सकी। तब नाना ने भी पकड लिया।

'क्या मनू बुरा मान गई ?' नाना ने स्नेह के साथ पूछा।

मनू होठ सिकोडकर, रुखाई के साथ बोली, 'अवश्य। आगे इस नाम से मेरा सम्बोधन कभी मत करना।'

इसी समय पहरे वाले ने बाजीराव को सूचना दी, 'झाँसी से एक सज्जन आये हैं। नाम तात्या दीक्षित बतलाते हैं।'

नाना बोला, 'मनू एक से दो तात्या हुये।'

मनू का क्षोभ घुला। बाजीराव ने प्रहरी से झासी के आगन्तुक को बिठलाने के लिये कह दिया।

मनू ने कहा, 'झासी वाला तात्या कुश्ती लडता होगा ?'

रावसाहब—'झाँसी में कोई बाला गुरू होगे तो कुश्ती का भी चलन होगा। वह तो राज्य ठहरा।'

नाना—'बडा राज्य है ?'

बाजीराव—'बडा तो नही है, पर खासा है। हमारे पुरखो का प्रदान किया है, जानते होगे।'

रावसाहब—'अपने को फिर नही मिल सकता है ?'

मनू—'दान किया हुआ फिर कैसे वापिस होगा ?'

बाजीराव—'हाँ वापिस नही हो सकता। झासी के राजा हमारे सूबेदार थे। इस समय अपना बस होता तो झासी में हम लोगो का काफी मान होता। परन्तु झासी तो बहुत दिनो से अङ्गरेजो की मातहती में है।'

मनू—'ग्वालियर, इन्दोर, बरोदा, नागपुर, सतारा इत्यादि के होते हुये भी थोडे से अङ्गरेज़ो ने आप सब को दाब लिया !'

बाजीराव—'यह मानना पडेगा कि वे लोग हमसे ज्यादा चालाक हैं। हथियार उनके पास अधिक अच्छे हैं। शूरवीर भी हैं और भाग्य उनके साथ है और आपसी फूट हमारे साथ . '

मनू—'दादा क्या भाग्य में शूरवीर होना लिखा रहता है ? यदि ऐसा है तो अनेक सिंह स्यार होते होगे और अनेक स्यार सिंह।'

बाजीराव—'जब स्यार पागल हो जाता है तब सिंह भी उससे डरने लगता है।'

मनू—'वह भाग्य से पागल होता है अथवा और किसी कारण से ?'

बाजीराव हँसने लगे।

इसी समय मोरोपन्त ने आकर कहा, 'दादा साहब तात्या दीक्षित झासी से आये हैं।'

बाजीराव बोले, 'मैंने उनको बिठला लिया है। यही ठहरने, भोजन इत्यादि का प्रबन्ध कर दिया जावे।'

मोरोपन्त ने कहा, 'तात्या मुझको एक बार काशी में मिले थे। यात्रा के लिये गये हुये थे। विद्या विदग्ध हैं, सज्जन हैं। राजा के यहा उनका मान है।'

मनू ने हँसकर पूछा, 'कुश्ती लडते हैं ? तलवार बन्दूक चलाते हैं ? घोडे पर चढते हैं ?'

'दुर पगली', मोरोपन्त ने कहा, 'जो यह सब न जानता हो वह क्या कुछ है ही नही ? दीक्षित जी पक्के ब्राह्मण हैं। शास्त्री, आचार्य।'

नाना ने मनू की ओर देखते हुये कहा, 'और यदि ब्राह्मण हथियार बाध उठे तो वह पक्के से कच्चा हो जायगा ? मनू ! तुम बतलाओ।'

मनू हँसी। बाजीराव भी हँसे। मोरोपन्त ने मुस्करा कर कहा, 'इस लडकी जैसी वाचाल तो शायद ही कोई हुई हो।'

मनू ने होठो की समेट में मुस्कराहट को दबा कर गर्दन मोडी, फिर, विशाल नेत्र सकुचित करके बोली, 'आप ही कहा करते हैं, ताराबाई ऐसी थी, जीजाबाई ऐसी थी, अहिल्या ऐसी, मीरा ऐसी। मैं पूछती हू, क्या ये सब मुह पर मुहर लगाये रहती थी ?'

[४]

भोजनोपरान्त तात्या दीक्षित से बाजीराव और मोरोपन्त मिले। तात्या दीक्षित ज्योतिष और तन्त्र के शास्त्री थे। काशी, नागपूर, पूना इत्यादि घूमे हुये थे। महाराष्ट्र समाज से काफी परिचित थे। बिठूर (ब्रह्मावर्त) में बाजीराव के साथ दक्षिणी ब्राह्मणो का एक बडा परिवार आ बसा था।* उस काल में मलखंब और मल्लयुद्ध के आचार्य बाला गुरू का अखाडा दक्षिणियो और हिन्दुस्थानियो से भरा रहता था और गुरू बल, यौवन और स्वाभिमान को वितरित सा करते रहते थे। वह स्वय इतने दृढ, बलिष्ठ और स्वाभिमानी थे कि उनको लेटने तक में चित होने से नफरत थी। औंधे लेटा करते थे।

मोरोपन्त ने अवसर निकाल कर तात्या दीक्षित से प्रार्थना की, 'दीक्षित जी, मुझे अपनी कन्या मनूबाई के विवाह की बडी चिंता लग रही हैं। मैंने बहुत खोज की है परन्तु कोई योग्य वर नही मिला। अब भी खोज कर रहा हू। आपका ससार में बहुत परिचय है। आप इस कन्या के लिये योग्य वर ढूंढ दीजिये। बडा अनुग्रह होगा।'

बाजीराव ने भी कहा, 'कन्या बहुत सुन्दर है। बडी कुशाग्र बुद्धि और होनहार। उसके लिये अच्छा वर ढूंढना ही चाहिये।'

मोरोपन्त बोले, 'सब हथियार चलाना बहुत अच्छी तरह जानती है। घोडे की सवारी में पुरुषो के कान पकडती है। जब चार वर्ष की थी इसकी माँ का देहान्त हो गया था। इसलिये मैंने स्वय उसकी दिन रात देख भाल की है, लालन पालन किया है। मराठी, सस्कृत और हिन्दी पढाई है। शास्त्रो में उसकी रुचि है।'

---

*इनकी सख्या लगभग आठ सहस्त्र थी। बाजीराव की पैंशन का एक बडा भाग लोगो पर खर्च होता था।

वाजीराव ने कहा, 'वालिका है, इसलिये इस आयु में जितना पढ सकती थी उतना ही पढा है परन्तु तेज वहुत है। पूजा पाठ मन लगा कर करती है।'

पूजापाठ सम्बन्धी रुचि पर वाजीराव ने ज्यादा जोर दिया। अश्वारोहण इत्यादि पर वहुत कम।

तात्या दीक्षित ने जन्मपत्री मागी। मोरोपन्त ने ला दी। दीक्षित ने उसकी परीक्षा करके कहा, 'ऐसी जन्मपत्री मैंने कदाचित् ही पहले कभी देखी हो। इसको कही की रानी होना चाहिये।'

मोरोपन्त फूल गये। वाजीराव को भी सन्तोप हुआ। वोले, 'जव आप जावें साथ में जन्मपत्री लेते जावे। योग्य वर से मेल खाने पर हमको सूचित करें।'

दीक्षित ने स्वीकार किया।

उसी समय रावसाहव के साथ वहाँ मनू आगई।

वाजीराव ने दीक्षित से कहा, 'यही वह कन्या है।'

दीक्षित ने मनूवाई के विशाल नेत्र, भौरे को लजाने वाले चमकीले वाल, स्वर्णसा रंग और सम्पूर्ण चेहरे का अतीव सुन्दर वनाव देखकर प्रसन्नता प्रकट की।

दीक्षित ने ममता प्रदर्शित करते हुये कहा, 'आ वेटी आ! तूने शास्त्र पढे हैं? उच्च कुल की ब्राह्मण कन्या के लिए यह उपयुक्त ही है।'

मनू और रावसाहव वाजीराव के पास मसनद पर वैठ गये।

मनू विना किसी सकोच के वोली, 'मैंने शास्त्र आँखों से देख भर लिये हैं। मुझको तुलसीदास की रामायण वडी प्रिय लगती है परन्तु तलवार चलाना, मलखंब भाजना घोडे की सवारी, ये उससे भी वढकर भाते हैं...।'

वाजीराव ने हँस कर टोका, 'और वात वनाना, चवड़-चवड करना इन सव से वढ़ कर अच्छा लगता है।'

मोरोपन्त के मन में क्षणिक रोष आया। वह चाहते थे कि लडकी तात्या दीक्षित के सामने ऐसी बर्ते कि शील-संकोच का अवतार जान पडे।

'परन्तु', दीक्षित ने हँसकर कहा, 'बालिका है। अभी ससार का उसने देखा ही क्या है।'

'बिलकुल अबोध हैं', मोरोपन्त बोले, 'सयानी होने पर अपने घर-द्वार का खूब प्रबन्ध करेगी।'

तात्या दीक्षित ने उत्साहित होकर भविष्यद्वाणी सी की, 'यह किसी राज्य की रानी होगी।'

रावसाहब अभी तक मनू के पीछे चुप बैठा था। बोला, 'राज्य तो सब अङ्गरेजो ने ले लिये हैं। नये राज्य कहाँ से बनेगे ?'

'राज्यो की और राज्य बनाने वालो की न कमी रही है और न रहेगी।' तात्या दीक्षित ने हँसकर कहा।

मनूबाई मुस्कराकर बोली, 'पर कुछ लोग तो कहते हैं कि अङ्गरेजो ने ऐसा जोर बांध लिया है कि कोई सिर ही नही उठा सकता।'

बाजीराव विषयान्तर करना चाहते थे। बोले, 'झाँसी में बाग-बगीचे कितने हैं ?'

तात्या दीक्षित—'बहुत हैं। राजा के बगीचे हैं। सरदारो और सेठ-साहूकारो के हैं। नगर के भीतर ही अनेक हैं।'

मनू—'सेना बडी है ?'

दीक्षित—'खासी है।'

मनू—'घोडे अच्छे है ?'

रावसाहब—'हाथी ?'

दीक्षित—'बहुत से हैं।'

मनू—'कितने ?'

इतने में वहाँ सुगठित शरीर का एक युवक आया।

बाजीराव ने पूछा, 'क्या है तात्या ?'

अपने नाम के एक और मनुष्य को सम्बोधित होते देखकर दीक्षित चौंका।

मनू ने बेधड़क कहा, 'यह हमारे गुरू के अखाड़े के प्रधान हैं। आपके नामधारी।'

तात्या दीक्षित ने मन में चाहा कि लड़की और अधिक बात न करे।

युवक तात्या ने पेशवा से विनय की, 'महाराज, गुरूजी ने कहलवाया है कि झाँसी से जो आचार्य आये हैं वे हमारे अखाड़े को देखने की कृपा करें।'

दीक्षित ने हामी भरी। तीसरे पहर सब लोग बाला गुरू के अखाड़े पर गये। मलखम्ब और मल्लयुद्ध का प्रदर्शन हुआ।

[५]

महाराष्ट्र में सतारा के निकट बाई नाम का एक गाव है। पेशवा के राज्य काल में वहा के कृष्णराव ताम्बे को एक ऊँचा पद प्राप्त था। कृष्णराव ताम्बे का पुत्र बलवन्तराव पराक्रमी था।

उसको पेशवा की सेना में उच्चपद मिला। बलवन्तराव के दो लडके हुये—एक मोरोपन्त और दूसरा सदाशिव। ये दोनो पूना दरबार के कृपापात्र मे थे।

उस समय पेशवा बाजीराव द्वितीय पूना में रहते थे। सन् १८१८ में अङ्गरेजो ने पेशवाई खत्म करके बाजीराव को आठ लाख रुपया वार्षिक पैन्शन और बिठूर की जागीर दी। बाजीराव ब्रह्मावर्त (बिठूर) चले आये। बाजीराव के निज भाई चिमाजी आपा साहब थे। वे बनारस चले गये। मोरोपन्त ताम्बे पर चिमाजी की बडी कृपा थी। मोरोपन्त चिमाजी के साथ पूना से काशी चले आये और उनका काम काज करते रहे। इसके उपलक्ष में मोरोपन्त को पचास रुपया मासिक वेतन मिलता था। यही मोरोपन्त मनूबाई के पिता थे।

मोरोपन्त की पत्नी का नाम भागीरथीबाई था। सुशील, चतुर, रूपवती।

मनूबाई कार्तिक बदी १४ स० १८९१ (१९ नवम्बर सन् १८३५) के दिन काशी में इन्ही से उत्पन्न हुई थी।

चिमाजी का शरीरात हो गया। मोरोपन्त को अपने कुटुम्ब के पालन के लिए कोई सहारा काशी मे नही दिखलाई पड रहा था। बाजीराव ने काशी से बिठूर बुला लिया। मोरोपन्त पर बाजीराव की भी बहुत कृपा रही।

मनूबाई चार वर्ष की ही थी जब उसकी माता—भागीरथीबाई—का देहान्त हो गया। मनू के पालन-पोषण और लाड़दुलार का सम्पूर्ण भार

मोरोपन्त पर आ पड़ा। मोरोपन्त ने मनू को बहुत प्यार के साथ पाला। लडके से वढकर।

मनू इतनी सुन्दर थी कि छुटपन में वाजीराव इत्यादि उसको स्नेहवश 'छवीली' के नाम से पुकारते थे।

वाजीराव के अपनी कोई सन्तान न थी। इसलिये उन्होने नाना धोडूपन्त नाम के एक वालक को गोद लिया। नाना तीन भाई थे—नाना, वाला और रावसाहव। वाला उस समय बिठूर में न था। छोटा सहोदर रावसाहव था।

मनू और ये दोनो लडके साथ खेलते-खाते और पढते थे। मलखंब कुश्ती, तलवार–वन्दूक का चलाना, अश्वारोहण, पढना–लिखना इत्यादि सब इन तीनो ने छुटपन से साथ साथ सीखा। मनू चपल, हठीली और वहुत पैनी वुद्धि की थी। कम आयु की होने पर भी वह इन हुनरो में उन दोनो वालको से वहुत आगे निकल गई। स्त्रियो की सगति कम प्राप्त होने के कारण वह लाज सकोच की अतीत दवन और झिझक से दूर हटती गई थी।

नाना आठ लाख वार्षिक पैंशन अपने और अपने भाइयो की परम्परा के -जीवन सुख के लिये काफी से अधिक समझाता होगा। वाजीराव को पैन्शन 'उसको और उसके कुटुम्ब के लिए दी गई थी।' विना किसी प्रयत्न-प्रयास के आठ लाख वार्षिक मिलते जावे तो फिर किस महत्वाकांक्षा की जोखिम के लिये और अधिक हाथ–पैर हिलाये जावे ?

मनूवाई ऐसा नही सोचती थी। छत्रपति शिवाजी इत्यादि के आधुनिक और अर्जुन–भीम इत्यादि के पुरातन आख्यानो ने मनू की कल्पना को एक अस्पष्ट और अदम्य गुदगुदी दे रक्खी थी।

[६]

तात्या दीक्षित आदर और भेट सहित बिठूर से झाँसी लौट आये। उन्हे मालूम था कि मनूबाई के लिये जितना अच्छा वर ढूँढ कर दूँगा। उतना ही अधिक बाजीराव सतुष्ट होगे। और उस सतोष का फल उनकी जेब के लिये उतना ही महत्वपूर्ण होगा।

दीक्षित ने मन में कई वर टटोले। जिसको स्थिर करते उसी के लिये प्रश्न उठता। 'क्या पेशवा इसको पसन्द कर लेंगे ?' जो उचट जाता। सरदार श्रेणी के ब्राह्मणो में कुछ की टीपनाये लाकर मिलाई, पर मेल न खाया।

सोचा, 'श्रीमन्त सरकार गगाधरराव की जन्मपत्री मिलाकर देखूं शायद टक्कर खा जाय।' टीपना प्राप्त हो गई। मिल गई। परन्तु एक असमजस हुआ, गङ्गाधरराव की पहली पत्नी का देहान्त काफी दिन पहले हो चुका था। वह विधुर थे। विवाह करना चाहते थे। परन्तु अपने कठोर स्वभाव के कारण बहुत बदनाम थे। भाँड-भगतियो, सखियो इत्यादि के हंसी-मजाक, आमोद-प्रमोद में उनका काफी समय जाता था। नाटकशाला में तो रात का अधिकाश प्राय बीतता ही था। इसलिये जितना वह करते थे, उससे कही अधिक की, उनकी बदनामी फैल गई थी।

नाटकशाला मे बहुत रुचि रखने के कारण खास तौर पर वेश्याओ, गायिकाओ और नर्तकियो के नाटकशाला में नौकर रखते हुये भी स्त्रियो की भूमिका में अभिनय करने की वजह से उनकी झूठी बदनामी बहुत करदी गई थी। इस पर, फिर उनका कठोर बर्ताव। दीक्षित सोचते थे कि विवाह सम्बन्ध स्थापित करने में सफल हो जाऊँ तो सदा याद किया जाऊँगा। मोरोपन्त तो हमेशा कृतज्ञ रहेगे ही, बाजीराव भी मानते रहेगे, झाँसी राज्य में कितना सम्मान होगा ? मनूबाई ? सुन्दर है, रानी बनने योग्य सब गुण उसमे हैं। चपल चचल और उद्धत है। मुँहजोर है। किसी और घर में जायगी तो न खुद सुखी हो

सकेगी और न अपने पति को सुखी बना सकेगी। गंगाधरराव की रानी बनने पर चपलता न रह सकेगी। जीवन में सयम आ जावेगा। वह १३–१४ साल की है और गंगाधरराव चालीस से कुछ ऊपर। परन्तु उनका स्वास्थ्य अच्छा है। स्वभाव कठोर सही है, लेकिन ऐसी उग्र स्त्री के लिये तो ऐसा ही पति चाहिये। घोडे की सवारी, तीर-तमचा, मलखभ और क्या क्या यह सब झासी के राज्य ही में मिल सकेगा, और कही असम्भव है। यह सब सोचकर दीक्षित ने झाँसी के राजा के साथ मनूबाई का विवाह सम्बन्ध कराने में किसी प्रकार की भी कसर न लगाने का निश्चय किया। गङ्गाधरराव के पास गये। एकांत पाकर बोले, 'महाराज से निवेदन करने करने आया हू।

राजा ने कहा, कहिये दीक्षित जी।'

दीक्षित – 'रनवास को सूना हुये काफी समय हो गया है। अब···'

राजा—'मै क्या करूँ ? जन्मपत्री मे मेरे इतने तेजस्वी ग्रह हैं कि मेल ही नही खाती। एकाध जगह मिली तो लडकी का भुखमरा पिता चाहता था कि मै सब कामधाम छोड कर, बाप-बेटी की पूजा–अर्चा में ही बाकी का जीवन बिताऊँ। इससे तो मेरी नाटकशाला ही अच्छी। अप्सराओ के सुन्दर अभिनय। सुखलाल के बनाये नये-नये पर्दे। सुरीला–गायन वादन और सुहावना नृत्य। आपने तो अनेक बार रंग-शाला में अभिनय देखे हैं।

दीक्षित—'श्रीमन्त सरकार, बन्श परम्परा बनाये रखने के लिये शास्त्रो का विधान अनिवार्य है। प्रजा अपने राजा की बगल में अपना राजकुमार देखने की लालसा रखती है। सरकार का आमोद–प्रमोद भी चलता रह सकता है।'

'हाँ ठीक है।' कह कर गङ्गाधरराव सोचने लगे।

कुछ क्षण बाद बोले, 'दीक्षित जी आप तो काव्यरसिक हैं। श्री हर्षदेव रचित रत्नावली नाटिका कितनी कोमल, मधुर, मन्जु कल्पना है, और मोतीबाई अब भी कितनी सुन्दर, कितना मनोहर अभिनय करती है।'

दीक्षित ने सोचा अब खतरे में पडे। मोतीबाई के प्रति राजा का ऐसा उत्साह देखकर दीक्षित कुण्ठित हुये।

धीरज पकड कर दीक्षित कह गये, 'परन्तु सरकार, महल सूना है। उसमें तो दिवाली कोई सजातीय कन्या ही जगमगा सकती है।'

गङ्गाधरराव की आँख बडी थी और डोरे लाल। दीक्षित ने डरते डरते देखा। डोरे और कुछ रक्तिम हो गये।

राजा ने कहा, 'मैं क्या करूँ? सजातीय की कन्या को ज़बरदस्ती पकड लूँ?'

दीक्षित ने तुरन्त उत्तर दिया, 'नही महाराज, मैंने जन्मपत्रियो की परीक्षा करली है, बिलकुल मिल गई हैं। कन्या भी देख आया हू। बहुत सुन्दर और कुशाग्र बुद्धि है। उसमें रानी होने योग्य समस्त गुण हैं।'

'कहाँ पर?' राजा ने जरा मुस्कराकर पूछा।

दीक्षित का साहस बढा। उत्तर दिया, 'महाराज, वह इस समय बिठूर में है। श्रीमन्त पन्त प्रधान पेशवा का काम-काज देखने पर उसका पिता मोरोपन्त ताम्बे नियुक्त है। पढी लिखी है और समयोचित सभी गुण उसमे हैं।'

राजा ने प्रश्न किया, 'ताम्बे कुलीन होते हैं, यह मै जानता हूँ लेकिन मोरोपन्त भट्ट भिक्षुक तो नही है?'

दीक्षित ने जवाब दिया, 'श्रीमन्त पेशवा की यज्ञशाला पर एक रामभट्ट गोडसे है। वह मोरोपन्त का मित्र है। उसने मोरोपन्त की पुत्री को विद्याभ्यास भर कराया है। इसके सिवाय मोरोपन्त का रामभट्ट या किसी भट्ट से और कोई सम्बन्ध नही है।'

गङ्गाधरराव ने जरा तीखेपन से कहा, 'मै पूछता हूँ मोरोपन्त भिक्षुक है या नही?'

दीक्षित ने दृढता के साथ उत्तर दिया, 'कदापि नही, सरकार।'

गङ्गाधरराव ने दूसरा प्रश्न किया, 'पेशवा और मोरोपन्त में कैसा सम्बन्ध है?'

दीक्षित—'बहुत घनिष्ठ । मित्रो जैसा । कोई नही कह सकता कि पेशवा मालिक हैं और मोरोपन्त नौकर। कन्या को पेशवा ने बिलकुल अपनी पुत्री की तरह मान रक्खा है । मै स्वयं देख आया हू ।'

राजा—'वे लोग सम्बन्ध को स्वीकार कर रहे हैं ?'

दीक्षित—'कर लेंगे । मुझको विश्वास है ।'

राजा—'तब सगाई मगनी इत्यादि के लिये आपको ही बिठूर जाना पड़ेगा ।'

हर्ष के मारे दीक्षित का दिमाग चक्कर खा गया । बोले, 'अवश्य जाऊँगा, सरकार ।' फिर गला भर आया । आँख मे एक आँसू ।

'यह क्या दीक्षित जी ?' राजा ने मिठास के साथ कहा ।

दीक्षित गला सयत करके बोले, 'झासी की जनता को यह समाचार बहुत हर्ष देगा, श्रीमन्त ।'

[७]

राज्य के अन्य कर्मचारियो के साथ तात्या दीक्षित बिठूर गये। मोरोपन्त और बाजीराव को सम्वाद सुनाया। उन्होने स्वीकार कर लिया। गङ्गाधरराव की आयु का कोई लिहाज नही किया गया।

मनूबाई का शृंगार कराया गया। रगीन रेशमी साड़ी, स्वर्ण के आभूषण, मानिक मोती के हार। बाजीराव ने अपने वे सब आभरण मनूबाई से फिर वापिस नही लिये।

मनूबाई के बडे बडे गोल नेत्र मणि मुक्ताओ को भी आभा दे रहे थे। दुर्गा सी जान पड़ती थी।

सगाई वाग्दान की रीति होने के बाद मनूबाई नाना साहब और रावसाहब एक ही कमरे में इकट्ठे हुये। वे दोनो लड़के भी रेशमी-वस्त्रो और आभूषणो से लदे थे। सगाई का उत्सव बाजीराव ने धूम-धाम से करवाया। बालको में बातचीत होने लगी।

नाना—अब तो मनू तू झाँसी से हाथियो पर बैठकर ब्रह्मावर्त आया करेगी।'

मनू—'एक हाथी पर या दस पर ?'

नाना—'एक पर बैठेगी, बाकी पर मंत्री, सेनापति इत्यादि बैठे आवेगे।'

मनू—'मुझको तो घोडे की सवारी पसन्द है।'

नाना—'झाँसी में बैठ पावेगी ?'

मनू—'कौन रोक लेगा ?'

नाना—'सुनता हू राजा बडा क्रोधी है।'

मनू—'तो क्या मुझे सूली मिलेगी ?'

रावसाहब—'अरे नही। पर नबकर झुककर चलना पडेगा।'

मनू ने नबकर झुककर कमरे का एक चक्कर काटा। हँस कर बोली, 'ऐसे ? ऐसे चलना पड़ेगा ?'

वे दोनो लडके भी हँस दिये। मनू की कान्ति से वह घर झिलमिला उठा। और जब वे बालक हँसे, उनके दातो की दीप्ति से वह घर दमक उठा।

रावसाहब—'मनू तुम्हारे चले जाने पर हम लोगो को सब तरफ सूना सूना लगेगा।'

मनू—'तो साथ चले चलना।'

नाना—'काका एकाध महीने के लिये जाने दे सकते हैं अधिक समय के लिये नही।'

मनू—'अधिक समय तो यही रहना चाहिये। बाला गुरू से तुमको अभी बहुत सीखना है। आया ही क्या है ? मलखम्भ, कुश्ती इत्यादि से शरीर को खूब कमाओ। अच्छी तरह से हथियार चलाना सीखो'...'

नाना—'और फिर दिल्ली पर धावा बोल दो।'

मनू—'दिल्ली मे क्या रक्खा है ! दादा, काका और अखाडे के सब समझदार लोग चर्चा करते हैं कि दिल्ली के कटघरे में अब एक कठपुतली भर रह गई है।'

नाना—'अब तो सब तरफ अंगरेज़ो का चरचराटा है।'

मनू हँस पडी।

रावसाहब ने कहा, 'तो क्या अङ्गरेज़ हमको वैसे ही निगल जायेंगे ?'

मनू हँसते हँसते बोली, 'नाना साहब को कदाचित् विश्वास नही होता कि अङ्गरेज़ भी हराये जा सकते हैं।'

नाना जरा कुढ गया। कहने लगा, 'छबीली को सिवाय घमंड मारने के और कुछ आता ही नही।'

उन उज्वल विशाल नेत्रो को और भी विस्तार मिला। मनू बोली, 'फिर छबीली कहा ?'

नाना हँस पडा। 'आज तो तुमने अपने ही मुँह से छबीली कह दिया ! ओह मात खाई !' नाना ने कहा।

मनू भी हँसी। बोली, 'आगे कभी मत कहना।'

नाना ने गंभीर मुख मुद्रा कर के कहा, 'अब तो झासी की रानी कहा करूँगा।'

मनू मुस्कराई।

उस मुस्कान में झासी का कितना महान और कैसा अमर इतिहास छिपा पडा था!

उसी समय वहा बाजीराव और मोरोपन्त आ गये। बाजीराव प्रसन्न थे और मोरोपन्त आनन्द विभोर। उन बच्चो को सुखी देखकर वे लोग उस कमरे के वातावरण में समा गये। बाजीराव के मुँह से निकल पडा, 'मनू तू ऐसी भाग्यवती हो कि भाग्यो को बाटती रहे।'

मोरोपन्त ने मनू को चिढाने के तात्पर्य से कहा, 'श्रीमन्त ने इसका छुटपन में क्या नाम रक्खा था? मैं तो भूल ही गया।'

मनू ने गर्दन मोडकर ओठ सिकोडे। आखो में क्रोध लाने की चेष्ठा की। 'ऊँ' निकला और मुस्करा दी।

बाजीराव बोले, 'क्या नाम था मनू? तू ही बदलादे बेटी।'

बाजीराव के पेट पर अपना सिर रखकर मनू ने कहा, 'नही दादा। छबीली नाम अच्छा नही लगता।'

खिलखिला कर हँस पडे।

उसी समय तात्या ने आकर कहा, सरकार! लोग इकट्ठे हो गये हैं। बातचीत होनी है।'

वे तीनो चले गये। बैठक में ब्रह्मावर्त निवासी महाराष्ट्र के प्रमुख ब्राह्मण विवाह की शर्तों की चर्चा कर रहे थे।

मोरोपन्त के पास सोना चादी नही था, पर जो कुछ था वह उसे विवाह में लगा देने को तैयार थे। बिठूर के इन प्रतिष्ठित ब्राह्मणो की मध्यस्थता मे तै हुआ कि विवाह का व्यय झासी के राजा वहन करेंगे और विवाह झासी में होकर होगा। यह भी तै हुआ कि मोरोपन्त झासी में ही स्थायी तौर पर रहा करेंगे और उनकी गणना झासी के सरदारो में होगी।

झासी के मिहमान मोरोपन्त को कन्या सहित अपने साथ लिवा ले जाना चाहते थे। लेकिन यह ठीक न समझकर मोरोपन्त उन लोगो के साथ नही गये। अपने सुभीते के लिये उन्होने कुछ समय उपरात झासी आने का सकल्प प्रकट किया। विवाह का मुहूर्त निश्चित करके मिहमान झासी चले गये। बाजीराव ने बाला गुरू के अखाडे वाले तात्या को झासी में मोरोपन्त के लिये निवास-स्थान इत्यादि की उचित व्यवस्था के लिये उन लोगो के साथ भेजा। यह ब्राह्मण था। आगे चलकर इतिहास में यही युवा तात्या टोपे के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

[८]

झाँसी में उस समय मन्त्रशास्त्री, तन्त्रशास्त्री, वैद्य, रणविद इत्यादि अनेक प्रकार के विशेषज्ञ थे। शाक्त, शैव, वाम मार्गी, वैष्णव सभी काफी तादाद में। अधिकाश वैष्णव और शैव। और ऐसे लोगो की तो बहुतायत ही थी जो 'गृहे शाक्ता., वहिर शैवा , सभा मध्येच वैष्णवा:' थे। इन सब के सघर्ष मे अनेक जातियाँ और उपजातियाँ जिनको शूद्र समझा जाता था उन्नति की ओर अग्रसर हो रही थी। व्यक्तिगत चरित्र का सुधार, घरेलू जीवन को अधिक शान्त और सुखी बनाना तथा जातियो की श्रेणी मे ऊँचा स्थान पाना यह उस प्रगति की सहज आकाक्षा थी। ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य जनेऊ पहिनते हैं—यह उनकी ऊँचाई की निशानी है, जो न पहिनता हो वह नीचा। इसलिये उन जातियो के कुछ लोगो ने, जिनके हाथ का छुआ पानी और पूडी मिष्ठान्न आम तौर पर ऊँची जाति के हिन्दू ग्रहण कर सकते थे, जनेऊ पहिनने आरम्भ कर दिये। उनके इस काम में कुछ बुन्देलखण्डी और महाराष्ट्र ब्राह्मणो का समर्थन था। झाँसी नगर मे ब्राह्मण काफी सख्या में थे। अकेले महाराष्ट्र ब्राह्मणो के ही तीन सौ घर थे। इन सब का बहुत बडा भाग इस प्रगति के विरुद्ध था।

आन्दोलन उठा। शूद्र जनेऊ के अधिकारी नही हैं, अधिकाश पण्डित इस मत के थे। आन्दोलन के पक्ष में एक विद्वान तान्त्रिक नारायण शास्त्री नाम का था। वह शृङ्गार शास्त्र का भी पारङ्गत समझा जाता था। उसने शिवाजी के प्रसिद्ध अमात्य वालाजी आवजी के पक्ष मे दी हुई महापण्डित विश्वेश्वर भट्ट* की व्यवस्था को जगह जगह उद्धृत किया।

यह वाद-विवाद कुछ दिनो अपनी साधारण गति से चलता रहा।

---

*पूरा नाम—ब्रह्मदेव विश्वेश्वर भट्ट कलियुग के व्यास। महाराष्ट्र में गङ्ग भट्ट के नाम से विख्यात।

गङ्गाधरराव के पास भी खबर पहुची। वह तटस्थ से थे, और कट्टर-पथियो के नायको का उन्होने मजाक भी उडाया। पर इससे कट्टरपन्थ की धार को जरा और तेज़ी मिली। घर-घर वाद-विवाद होने लगा। अमुक वर्ग शूद्र है, अमुक सवर्ण इस वात पर खूव ले-दे मची। घरो के वाहर के चवूतरो पर, वैठको में, तम्वोलियो की दूकानो पर, मन्दिरो में, पाठशालाओ में, दावतो-जेवनारो में, वाज़ार-वाजार मे, चर्चा का यही प्रधान विषय। उस समय झाँसी में दो अच्छे कवि थे। एक हीरालाल व्यास, दूसरे 'पजनेश'। हीरालाल ने अपना उपनाम 'हृदयेश' रक्खा था। हृदयेश वैसे उदार विचारो के थे, उस समय के लिहाज से राष्ट्रवादी।

पजनेश शृङ्गार-रस के कवि थे। अन्य जाति की एक सुन्दरी रक्खे हुये थे और नारायण शास्त्री के मित्र थे। दोनो रसिक। इसलिये कट्टर पन्थियो के प्रतिकूल थे। पजनेश ने इस विषय पर कुछ छन्द भी वनाये परन्तु समय की हवा के खिलाफ होने के कारण पजनेश के तर्क-वितर्क वाले थोडे से छन्द विलकुल पिछड गये और हृदयेश का कट्टरपन्थी पक्षपात छन्दो की वाढ में वहने लगा।

दुर्गा लावनी वाली एक वेश्या थी। अच्छी गायिका और विलक्षण नर्तकी। उसने वहुमत का साथ दिया। हृदयेश के छन्द गाती और कभी अपनी वनाई हुई लावनियो में उस पक्षपात को चमकाती। नारायण शास्त्री दाँत पीसते और सिरतोड परिश्रम अपने पक्ष की पुष्टि के लिये करते। पजनेश ने उस पक्ष के समर्थन में कविता करना वन्द कर दिया। हृदयेश को गली-कूचे, हाट-वाज़ार और मन्दिरो में इतना महत्व मिलते उन्हे अच्छा नही लगा। खासतौर पर दुर्गा सरीखी प्रसिद्ध नर्तकी और सुन्दरी द्वारा हृदयेश के वनाये हुये छन्दो का गायन। वह नारायण शास्त्री के घर अव और अधिक आने-जाने लगे और अधिक समय तक वैठने-उठने लगे। नारायण शास्त्री का शास्त्रोक्त समर्थन सीख-सीख कर वाद-विवाद में पूरी मुँहजोरी के साथ उद्धृत करने लगे। एक दिन

उनके एक क्षुब्ध विरोधी ने सब दलीलो का एक जवाब देते हुये तडाक से कहा, 'नारायण शास्त्री जिसकी तुम बार बार दुहाई देते हो, ब्राह्मण ही नही है ।'

पजनेश ने अधिकतर क्षुब्ध स्वर मे पूछा, 'क्यो नही है ?'

उत्तर मिला, 'वह एक भगिन को रखे हुये है ।'

यह अपवाद खुसफुस के रूप मे फैला । परन्तु धीरे धीरे । कुछ कट्टर पंथियो ने इसको अपना लिया और कुछ ने असम्भव कह कर अस्वीकृत कर दिया । पजनेश ने सोचा, 'मैं स्वय निर्णय करूँगा ।' नारायण शास्त्री ने भी अपनी बदनामी सुन ली ।

[६]

एक दिन ज़रा सवेरे ही पजनेश नारायण शास्त्री के घर पहुँचे। शास्त्री अपनी पौर में बैठे थे जैसे किसी की बाट देख रहे हो। पजनेश को कई बार आओ आओ कहकर बिठलाया, परन्तु पजनेश ने यदि शास्त्री की आख की कोर को बारीकी से परखा होता तो उनको मालूम हो जाता कि उनके आने पर शास्त्री का मन प्रसन्न नही हुआ था। पजनेश पौर के चबूतरे पर दरवाजे की ओर पीठ करके बैठ गये। शास्त्री दरवाजे की ओर मुंह किये बैठे थे। शास्त्री ने पान खाने के लिए पानदान बढाया। पजनेश के जी में एक क्षणिक झिझक उठी। उसको दबा लिया और पान लगाकर खा लिया।

शास्त्री ने पूछा, 'कोई नया समाचार?'

'अब तो आपके चरित्र पर ही लाछन लगाया जाने लगा है।' पजनेश उत्तर देकर पछताए। उस प्रसग का प्रवेश और किसी तरह करना चाहते थे।

शास्त्री ने आख चढाकर कहा, 'मैंने भी सुन लिया है।'

पजनेश ने दम ली। शास्त्री कहते गये, 'मूर्खो के पास जब युक्ति नही रहती तब वे गालियो पर आ जाते हैं। मै क्या गाली गलौज के दबाव में शास्त्र-चर्चा को छोड दूँगा? बदमाशो को मुंहतोड जवाब दूँगा। उस पक्ष के जितने शास्त्री हैं, चाहे महाराष्ट्र हो चाहे एतद्देशीय, सब इन बनियो महाजनो और सरदारो के किसी न किसी प्रकार आश्रित हैं। और ये आश्रयदाता हैं—पुरानी लीको के पुजारी। मक्षिकास्थाने मक्षिका वाले। ये लोग शास्त्र का पारायण नही करते-अथवा करते हैं तो सच बात न कहकर यजमानो को सतुष्ट करने के लिये केवल उनकी मुंह-देखी कहते हैं। तन्त्रशास्त्र वालो का मूल, ज्ञान-विज्ञान और सत्य में है; वे अवश्य पुराणियो और कथा-वाचको के साथ असत्य की सोझ नही करते।'

पजनेश—'परन्तु अपवाद का दमन जरूरी है।'

शास्त्री—'व्यर्थ है। बकने दो। मैं परवाह नही करता। अपना काम देखो।'

पजनेश—'मेरी समझ मे श्रीमन्त सरकार से फरियाद करनी चाहिये वे जब कठोर दण्ड देगे तब यह बदनामी खत्म होगी।'

शास्त्री—'मै ऐसी सडियल बात को राजा के सामने नही ले जाना चाहता। राजा तो यो भी उन कथा वाचको की दिल्लगी उडाया करते हैं।'

पजनेश—'तब मैं कहूगा।'

शास्त्री को प्रस्ताव पसन्द नही आया। बोले, 'यह और भी बुरा होगा। राजा कहेगे कि कुछ रहस्य अवश्य है तब तो स्वय फरियाद न करके मित्र से करवाई।' फिर विषयातर के लिये कहा, 'आज घर से इतनी जल्दी कैसे निकल पडे ?'

पजजेश ने उत्तर दिया, 'कान नही दिया गया तो इसी चर्चा के लिये आपके · ·· '

पजनेश का वाक्य पूरा नही हो पाया था—कि उतरती अवस्था की एक स्त्री डलिया झाडू लिये दरवाजे पर आई। वह बाहर ही रह गई। उसके पीछे उससे सटी हुई एक युवती थी। वह कुछ अच्छे वस्त्र पहिने थी, थोडे से आभूषण भी। साफ सुथरी। युवती उतरती अवस्था वाली स्त्री को एक ओर करके मुस्कराती हुई पौर में आगई। प्रवेश करते समय उसने पजनेश को नही देखा था। परन्तु भीतर घसते ही पजनेश की झाई पड गई। ठिठकी। लौटने के लिये मुडी और खडी रह गई। दूसरी स्त्री से बोली, 'कोसा पौर में तो कोई कूड़ा नही।'

कोसा ने कहा, 'मैं आती हू। ठहरना।'

पजनेश ने देखा ऊँची जाति की सुन्दर स्त्रियो जैसी सुन्दर है। नायिकाभेद की कुछ उपमाये स्मरण हो आई, कमलगात, मृगनयन, कपोत ग्रीवा, कमलनालकटि। नायिका भेद का साहित्य और आगे साथ न दे सका। कवि का मन आकर्षण और ग्लानि की खीचतान में पड़ गया।

शास्त्री ने अपनी घवराहट को किसी तरह नियन्त्रित करके उस युवती से कहा, 'थोडी देर मे आनातब तुम्हारा काम कर दूंगा। समझी छोटी ?'

युवती के खरे रग पर लाली दौड गई। वह 'हाँ' कहकर गजगति से नही, बिल्ली की तरह वहा से भाग गई।

शास्त्री और कवि दोनो किसी एक वडे वोझ से मानो दव गये। पजनेश के मुँह से वाक्य फूट पडा, 'यह कौन ?'

शास्त्री—'छोटी।'

पजनेज—'यह तो उसका नाम है। वह है कौन ?'

शास्त्री—'स्त्री।'

पजनेश—'यह तो मैं भी देखता हू। कौन स्त्री ?'

शास्त्री—'एक काम से आई थी।'

पजनेश—खैर मुझको कुछ मतलब नही, परन्तु यदि······

शास्त्री ने बात काट कर पूछा, 'परन्तु यदि क्या ? आप क्या इसके सम्बन्ध में मेरे ऊपर सन्देह करते हैं ?'

पजनेश ने एक क्षण सोचकर उत्तर दिया, 'वस्ती के लोग क्या इसी स्त्री की चर्चा करते हुये आप पर लाछन लगा रहे हैं ? यदि ऐसा है तो आपको सावधान हो जाना चाहिये। उस स्त्री की जाति वाले उसका सर्वनाश कर डालेगे और राजा आपका।'

शास्त्री ने कहा, 'झूठा आरोप है। मै किसी से नही डरता।'

'आप जानें,' पजनेश वोले, 'मेरा कर्तव्य था सो कह दिया।'

पजनेश उठे। शास्त्री ने एक पान और खाने का अनुरोध किया, परन्तु पजनेश विना पान खाये चले गये। बाहर निकल कर उनकी आँख ने इधर उधर उस युवती को ढूँढा, परन्तु वह न दिखलाई पड़ी। उन्हे आश्चर्य था, 'इस जाति में भी पद्मिनी हाना सम्भव है।'

[१०]

पजनेश जिस पक्ष का अभी तक जोरदार समर्थन करते चले आये थे उसको उन्होने छोड दिया। नारायण शास्त्री लगभग खामोश होगये। नए उपनीतो ने लडाई स्वय अपने हाथो मे लेली और एकाध जगह वह लडाई जीभ से खिसक कर हाथ और डडे पर आ बैठी। झझट का रूप जरा भयानक हो गया। मामला गगाधरराव के पास पहुचा। जाति और धर्म का झगडा था, इसलिये उन्होने दखल देने की ठानी। नये जनेऊ वाले लोग बुलाये गये। प्रमुख ब्राह्मण भी।

उस दिन कुछ वाद विवाद हुआ, पर राजा किसी निष्कर्ष पर नही पहुचे। छोटी जाति के कहे जाने वाले जनेऊ धारियो ने नारायण शास्त्री को पेश करने की मुहलत मागी। एक दिन का समय मिला। उन लोगो ने नारायण शास्त्री को सहज ही राजी कर लिया। उसी दिन बिठूर से तात्या दीक्षित और युवक तात्या झासी आये। दीक्षित ने बिठूर का सब समाचार राजा को सुनाया। राजा ने सब शर्तें मंजूर करली। मगनी की रस्म बिठूर में हो आई थी, परन्तु सीमन्ती इत्यादि विवाह की अन्य रीतिया झासी में किसी मकान में होकर होगी इसका प्रवन्ध राजा ने अपने कर्मचारियो के सुपुर्द कर दिया। इसके लिये युवक तात्या को झासी में दो एक दिन के लिये ठहरना पडा।

दूसरे दिन जनेऊ सम्बन्धी झगडे की पेशी होने को थी। युवक तात्या भी इस विलक्षण मुकद्दमें को सुनना चाहता था। दरबार में गया। उसको फौजी अफसर की पोशाक पसन्द थी। खास तौर पर लोहे की फ्रासीसी टोपी।

गगाधरराव ने उसको आदर के साथ बिठलाया। बाजीराव पेशवा का कर्मचारी और भविष्य की ससुराल से आया हुआ मिहमान। राजा अपने पदाभिमान के आतक में आगये और शास्त्रियो के थोड़े से ही विवाद के सुनने के बाद वे न्याय-निष्ठुरता पर जम गये।

राजा ने अपराधियो से पूछा, 'क्या ब्राह्मण बनना चाहते हो ?'

अपराधियो में एक अधिक साहस वाला था। उसने उत्तर दिया, 'नही तो सरकार !'

'फिर यह अनुचित काम क्यो किया ?

'अनुचित तो नही है सरकार।'

'क्योरे अनुचित नही है ?'

'सरकार ! ब्राह्मणो के अलावा और अनेक जातियाँ भी तो जनेऊ पहिनती हैं।'

'अबे बदमाश, उन जातियो की बराबरी करता है ?

वह चुप रहा।

गंगाधरराव का क्रोध चढ लेने पर उतरता मुश्किल से था।

बोले, 'जनेऊ तोडकर फेक दे और फिर कभी आगे न पहिनना।'

उसने हाथ जोडे सिर नीचा कर लिया।

राजा ने कडक कर कहा, 'क्या कहता है ? अपने हाथ से तोडता है या तुडवाऊँ ?'

उसने उत्तर दिया, 'अपने हाथो तो हम लोग अपने जनेऊ नही तोडेंगे चाहे प्राण भले ही निकल जावे। आप राजा हैं, चाहे जो करे।' गगाधरराव की आखो के लाल डोरे रक्त हो गए। चोवदार को हुक्म दिया, 'एक पतला तार लाओ। तावा, लोहा किसी का भी। जल्दी लाओ।'

वह दौडकर ले आया। आगी मगवाई गई। तार को जनेऊ का आकार बनाकर गरम किया गया। आज्ञा दी, 'यह गरम जनेऊ इसको पहिनाओ।'

अपराधी ने गर्व से सिर ऊँचा किया। आकाश की ओर एक क्षण के लिये हाथ बाधकर देखा और फिर नतमस्तक हो गया। वह गरम जनेऊ उसके कधे को छुलाया ही गया था कि युवक तात्या ने विनय की, महाराज धर्म की रक्षा करिये। यह ठीक नही है।'

गङ्गाधरराव ने वह गरम जनेऊ तुरन्त अलग करा दिया। युवक से बोले, 'श्रीमन्त पेशवा भी तो यही दण्ड देते।'

'नही सरकार', युवक ने निर्भयता के साथ सम्मति दी, 'धर्म अपने अपने विश्वास की बात है। इसमें राज्य को तटस्थ रहना चाहिये।'

'लोकाचार भी ?' गङ्गाधरराव ने जरा-सा मुस्कराकर प्रश्न किया।

'हा महाराज', युवक ने विनीत और मधुर स्वर में उत्तर दिया, 'लोकाचार समय-समय पर बदलते रहते हैं।'

गङ्गाधरराव के क्रोध ने कुछ ठण्डक पाई। उनकी दृष्टि उस युवक के टोप पर जा टिकी। कुछ क्षण ठहरी। कुतूहलवश पूछा, 'यह टोप क्यो लगाते हो ?'

युवक ने उत्तर दिया, 'मैं सिपाही हूँ।'

राजा को इस उत्तर पर हँसी आई। बोले 'हमारे यहा तात्या दीक्षित एक शास्त्रज्ञ ब्राह्मण हैं, सो जानते ही हो। तुम सिपाही ब्राह्मण हो, परन्तु नाम से बुलाने मे कभी-कभी गडबड हो सकती है। इसलिये तुमको तात्या टोपी वाले या सीधा टोपे कहे तो कैसा ?'

हँसकर युवक ने जवाब दिया, 'श्रीमन्त सरकार, मुझको इसी छोटे से नाम से लोग पुकारते हैं।

'मुझे भी पसन्द है।' राजा ने कहा। फिर जनेऊ वाले अपराधियो को बनावटी रूखे स्वर में डाटते हुये बोले, 'इस युवक ने तुमको बचा लिया—भाग जाओ।'

वे लोग चले गये। राजा ने तात्या टोपे को नाटकशाला के लिये आमन्त्रित करते हुये कहा, 'टोपे आज रात को हमारी नाटकशाला में रत्नावली नाटक खेला जायगा। आना। बहुत अच्छा अभिनय, गायन-वादन और नृत्य है। पहले कभी देखा ?'

'नही सरकार', टोपे ने उत्तर दिया।

'पढा है?' दूसरा प्रश्न किया गया।

'नही सरकार', टोपे ने फिर उत्तर दिया।

'समय से जरा पहले आ जाना', राजा ने प्रस्ताव किया, 'मैं तुमको कथानक वही बतलाऊँगा।'

सन्ध्या के कुछ घडी पीछे तात्या टोपे नाटकशाला पहुच गया। राजा ने रत्नावली का कथानक उत्साह पूर्वक सुनाया और रङ्गमञ्च पर आने वाले अभिनेताओ के नाम और गुण बतलाये। कहा, 'रानी वासवदत्ता का अभिनय मोतीबाई करेगी। बडी कलावती है, और सागरिका अर्थात् रत्नावली का अभिनय जूही करेगी। नृत्य बहुत अच्छा करती है। गाती भी है। नाटकशाला में हाल ही में आई है।'

नाटक समय पर ही शुरू हो गया।

राजा के निकट बैठे हुये नवागन्तुक तात्या टोपे को सभी पात्र बहुधा देखते थे। सुन्दर, बलिष्ट और किसी उमङ्ग में तना हुआ। और सिर पर विलक्षण टोपी !

रानी वासवदत्ता का अभिनय मोतीबाई ने बहुत अच्छा किया। सागरिका (रत्नावली) का अभिनय जूही ने खूब निभाया। नाची भी बहुत अच्छा। टोपे को वह सब बहुत भला लगा। परन्तु उसके मुँह से 'वाह' या आह' कुछ भी नही निकला।

नाटक की समाप्ति पर गङ्गाधरराव रगशाला के श्रगार-कक्ष में नही गये। टोपे से पूछा, 'कैसा रहा ?'

टोपे ने जवाब दिया, 'सरकार ने जैसा कहा था, ठीक वैसा ही सब हुआ है।'

'नृत्य कैसा था जूही का ?' राजा ने सवाल किया।

टोपे ने सावधानी के साथ जवाब दिया, 'मैंने इससे पहिले नृत्य देखे ही नही है। मुझे तो बडा विलक्षण जान पडा।'

राजा प्रसन्न हुये। उन्होने प्रस्ताव किया, 'थोडे दिन ठहर न जाओ झाँसी में ? कुछ और अच्छे-अच्छे अभिनय देखने को मिलेंगे।'

टोपे ने कृतज्ञता पूर्वक स्वीकार किया।

[११]

जनेऊ विरोधी पक्ष वाले किले से परम प्रसन्न लौटे। अपने पक्ष की विजय का समाचार बहुत गम्भीरता के साथ सुनाना शुरू करते थे और फिर पर पक्ष की मिट्टी पलीत होने की बात खिलखिलाकर हँसते हुये समाप्त करते थे। शहर भर मे धूम मच गई, 'तामे और लोहे के जनेऊ आगी मे लाल कर-करके राजा ने पहिनाये। नही तो इन्होने आज जनेऊ पहिने थे, कल वेदो की ऋचाये आल्हा की तरह गली-गली बकते फिरते।'

कोई कहते थे, 'अजी बडी कुशल समझो, बिठूर वाले मिहमान दरबार में न होते तो राजा सिर काटकर फेक देने का हुकुम दे चुके थे।'

नारायण शास्त्री यह सब वाङ्मय चुपचाप सुनते हुये घर आये। उदास थे। किवाड लटका कर पौर के चबूतरे की चटाई पर लेट गये। देर तक लेटे रहे। सन्ध्या हो गई। अन्धेरा छा गया। वह उठे। दियाबत्ती की। कुछ खा-पीकर फिर पौर में आ बैठे। किसी ने धीरे से साकल खटकाई। नारायण शास्त्री ने किवाड खोले। छोटी थी।

भीतर आ गई। शास्त्री ने किवाड बन्द करके साँकल चढा ली। छोटी चबूतरे पर बैठ गई। शास्त्री की उदासी जा चुकी थी। छोटी के नेत्रो में कटाक्ष सरल था, परन्तु सरल चितवन मे ही मद बहुत।

छोटी ने अपने एक घुटने पर ठोढी टेक कर नजर उठाई। बरौनियाँ भोहो के ऊपर जाने को हुई। बोली, मै तो बडी हैरान हूँ। लोग बहुत तग करते हैं। छेडते हैं। आपका नाम ले-लेकर आवाजे कसते हैं।'

शास्त्री ने भोह सिकोड कर कहा, 'उँह बकने दो छोटी! ज़रा भी परवाह मत करो।'

'मुझको आप ही की फिक्र रहती है,' छोटी बोली, 'अपने लिये कोई खटका नही। मेरी जात वाले लोग मुझको जात बाहर करना चाहते हैं। सुग-सुग चल रही है।'

'फिर क्या करोगी?'

'क्या करूँगी—आप ही बतलाइये।'

'देखा जायगा।'

'कब ?'

'जब बात सामने आवेगी तब।'

'और ये लोग जो मुझसे छेड़-छाड़ करते हैं, उनका क्या करूँ ?'

'उनसे आँख बरकाओ। कान मूँदकर अपना रास्ता लिया करो।'

'ऐसी छेड़-छाड़ को तो मैं अनसुनी कर सकती हूँ, करती ही रहती हूँ, परन्तु वे प्रेम की बातें करते हैं।'

'अच्छा !'

'हाँ ! कोई अप्सरा कहता है। कोई कविता न्योछावर करने की बात कहता है। कोई सौगन्ध खाता है कि तेरे लिये सब कुछ छोड़ने को तैयार हूँ।'

'तुम क्या जवाब देती हो ?'

'किसी को कुछ, किसी को कुछ। कुछ से मैंने पूछा, जनेऊ भी उतार देने को तैयार हो ?'

'उन लोगों ने इस सवाल के पल्टे में क्या कहा ?'

'उन्होंने कहा उतार देंगे।'

छोटी मुस्कराई। शास्त्री को गुस्सा आया। थोड़ी देर सोचते रहे। कभी सिर खुजलाते और कभी छोटी को देखते थे। बोले, 'छोटी, यदि बात ऊपर ही आ जावे तो मैं मारे जाने तक के लिये तैयार हू। तुम पक्की हो ?'

उसने दृढ़ता के साथ उत्तर दिया, 'क्या आपने कभी कोई कचाहट पाई ?'

शास्त्री ने नीची गर्दन करके कहा, 'वैसे ही पूछा था। एक काम करना होगा।'

'क्या ?' निश्चिन्तता के साथ छोटी ने प्रश्न किया।

शास्त्री ने प्रश्न के रूप में उत्तर दिया, 'क्या इन लोगों के जनेऊ उतरवा सकोगी ?'

छोटी सहज वृत्ति से बोली, 'जनेऊ उतरवाने के बदले में कुछ देना न पडेगा ? क्या बडे बडे लोग यों ही जनेऊ उतार कर दे देंगे ?'

'कौन कौन लोग हैं ? जाति और नाम तो बतलाओ।' शास्त्री ने कहा।

छोटी ने ब्योरेवार बतलाया। लम्बी सूची थी। बतलाने में समय लगा। शास्त्री को फिर क्रोध आया। थोडी देर जलते-भुनते रहे।

उसी समय ऐसा जान पडा जैसे किसीने बाहर से साँकल चढा दी हो। छोटी चौंकी। उसने शास्त्री को इशारा किया। शास्त्री धीरे से किवाडो के पास गए। आहट ली। बाहर कुछ खुश-फुसाहट और पैरो का शब्द सुनाई पडा। छोटी को सकेत किया, वह आगन में चली गई। शास्त्री ने भीतर की साँकल खोलकर किवाड खोलना चाहा। न खुला बाहर से साकल चढी हुई थी। उन्होने भीतर की साकल फिर चढाली। आँगन में छोटी के पास गये।

कहा, 'ये लोग किसी पाजीपन पर तुले हुए हैं।'

छोटी जरा आतुरता के साथ बोली, 'मैंने अभी-अभी पूछा था कि ऐसा समय आने पर क्या करूँ। समय आगया। अब बतलाइये।'

शास्त्री ऊपर से दृढ और भीतर से घबराये हुये थे। चुप रहे।

छोटी शान्ति के साथ बोली, 'आप चिन्ता छोडे। किसी तरह अपने को बचावे। मुझको चाहे मार कर घर के कुयें में डालदे। कहदे कि छोटी यहा कभी आई ही नही।'

शास्त्री ने दृढतापूर्वक कहा, 'क्या कहती है छोटी ? मेरे भीतर अभी कुछ बाकी है, जो मुझको मरने के समय भी धीरज दे सकता है। अब सब उघर गया। राजा के सामने जाना पडेगा। मै चाहता हूँ कि तुम्हारा बाल बाका न हो। कह देना कि शास्त्री ने जबरदस्ती की। मै वैसे भी मारा जाऊँगा। तुम इस तरह बच जाओगी।'

'कभी नही', छोटी गर्व के साथ बोली, 'अगर,हमारी जात मे कोई गुण है तो एक-हम लोग बेईमानी कभी नही कर सकते।'

शास्त्री सोच विचार में पड गए ।

कुछ देर वाद उन्होने एक अनुरोध किया, 'कुछ न कुछ झूठ वनाना पडेगा ।'

छोटी बोली, 'सिवाय उस झूठ के और जो कहिये कह दूंगी ।'

शास्त्री ने कहा, 'तुम कुछ ब्राह्मणो, बनियो इत्यादि के नाम लेकर कह सकती हो कि इन-लोगो ने अपने जनेऊ उतार कर तुम्हारे हवाले किये हैं ।'

छोटी ने उत्तर दिया 'जिन जिन लोगो ने मेरा धर्म मागा, उन्ही-उन्ही लोगो का नाम लूंगी । औरो के नही । पर जनेऊ कहा हैं ?'

शास्त्री ने समाधान किया, 'जनेऊ मैं देता हूँ । नये हैं, उनको मैला कर लेना । कुछ उतारे हुये भी है, उनको नयो में मिला लेना ।'

छोटी बोली, 'जल्दी करिये । अभी तो मैं निकल जाऊँगी ।'

शास्त्री ने पूछा, 'कैसे ?'

छोटी ने कहा, 'आप अपना काम देखिये । मैं निकल जाऊँगी ।'

शास्त्री ने वहुतसे नये-पुराने जनेऊ छोटी को दे दिये ।

छोटीने प्रस्ताव किया, आप पौर का दिया भीतर रख दीजिये । किवाड़ खुलवाने का उपाय कीजिये । तव तक मैं खपरैल पर से कूद कर घर जाती हू । देर लगी तो ये लोग मेरी जातवालो को दरवाजे पर इकट्ठा कर देंगे, और फिर मैं बहुत मारी-पीटी जाऊँगी । अभी तो मुझको कोई न छुयेगा ।'

शास्त्री ने मान लिया । उन्होने किवाड खोलने की कोशिश की, परन्तु न खुले । हल्ला करना ठीक न समझा । छोटी खपरैल से कूदकर निकल गई । परन्तु उसके मार्ग में रुकावट डाली गई । फिर भी यह अपने घर पहुच गई, यद्यपि घिरी हुई थी ।

[१२]

जनेऊ का प्रश्न समाप्त नही हुआ था कि यह बिकट रौरा खडा हो गया। जिन थोडे से लोगो का जीवन विविध समस्याओ के काटो पर होकर सफलतापूर्वक गुजर रहा था, वे तो नारायण शास्त्री के कृत्य की निन्दा करते ही थे, परन्तु जिनका भीतरी जीवन-बाहरी छल से भिन्न था—जो जीवन के काटो पर गुलाब की सेजो को अंगूरी की–या महुये की—मोहक सिचाई से मीठा बना बनाकर हर घडी को मौजो में बाट बाटकर, चल रहे थे—उन्होने नारायण शास्त्री की सबसे ज्यादा बुराई की। पाखण्डी है, पाजी है, धर्म-द्रोही, राक्षस है, इत्यादि–और उसको कम से कम प्राणदण्ड मिलना चाहिये। और छोटी को ? उसके टुकडे टुकडे करके स्यारो को खिला देना चाहिये, क्योकि उसी ने तो एक विद्वान ब्राह्मण को पतित किया ! इतनी बडी बात बिना विलम्ब राजा के पास न पहुँचे, यह असम्भव था। राजा ने जब सुना, कभी हँसी आती थी और कभी उनको क्षोभ-संताप होता था।

छोटी और नारायण शास्त्री बुलाये गये। मालूम होता था जैसे शास्त्री कुछ घण्टो में ही बूढे हो गये हो। छोटी चिंतित थी, परन्तु उसके पैर जम-जमकर किले की ओर गये थे। जब वह गगाधरराव के सामने पहुँची, तब उसको पसीना जरूर आ गया था।

इस मामले का निर्धार सुनने के लिये भी तात्या टोपे गया।

नारायण शास्त्री को उस बीभत्स में डूबा देखकर राजा को बडे ज़ोर की हँसी आने को हुई। उन्होने कठोरता के साथ अपना दुस्सह सयम किया। पूछ-ताछ शुरू की।

राजा—'यह क्या हुआ शास्त्री ?'

शास्त्री—'जो होना था हो गया सरकार।'

राजा—'कैसे हुआ ?'

शास्त्री—'क्या कहूँ श्रीमन्त।'

राजा—'बतलाना तो पड़ेगा। न बतलाने से ज़्यादा नुकसान होगा।'

शास्त्री—'क्या बतलाऊँ महाराज ?'

राजा—'यह कैसे हुआ ?'

शास्त्री—'तप और सयम के अतिरेक से। जब शरीर ने ताडना न सह पाई, तब जो-जो कुछ उसके सामने आया, ग्रहण कर लिया।'

राजा—'तुमको तो लोग बहुत दिन से शृङ्गार शास्त्री कहते हैं।'

शास्त्री—'वह तो उपकरण मात्र था।'

राजा—'सुनता हूं कोकशास्त्र का भी अध्ययन किया है।'

शास्त्री—'हाँ सरकार।'

राजा—'क्यो ?'

शास्त्री—'उस शास्त्र मे अपने सम्बन्ध के प्रसंग ढूँढने के लिये, और यह जानने के लिये कि इसमें ऐसा क्या है, जिसने महर्षि वात्स्यायन से कामसूत्र की रचना करवाई।'

राजा—'क्या पाया ?'

शास्त्री—'प्रकृति के साथ जीवन की टक्कर।'

राजा—'आगे क्या पाओगे ?'

शास्त्री—'यह मेरे हाथ मे नही है सरकार।'

राजा—'तब किसके हाथ में है ?'

शास्त्री—'सरकार के।'

राजा ने थोडी देर सोचा। उपस्थित लोगो पर दृष्टि घुमाई। छोटी की विनम्र आख को देखा। बडे पलक और बडी बरौनिया। फिर अपने ब्राह्मणत्व का ख्याल किया। बोले, इस लडकी को तुरन्त झाँसी का राज्य छोडना पडेगा। इसके लिये देश-निकाले का दण्ड काफी है। तुमको······'

छोटी ने तुरन्त दृढ स्वर में टोका, 'श्रीमत सरकार शास्त्री महाराज का कोई कसूर नही है। मै इनके पीछे पड गई, इसलिये इनका पतन हुआ। मेरे दण्ड को बढाकर इनके दण्ड की कमी को पूरा कर लीजिये। मैं सिर कटवाने के लिये तैयार हूं।'

राजा को रत्नावली नाटक का एक दृश्य प्रासंगिक न होने पर भी याद आगया, रत्नावली को भगवान ने आत्मवध से बचाया था।

राजा बोले—'ठहर जा लडकी। शास्त्री, तुमको विधिवत् प्रायश्चित करना पडेगा। पञ्चगव्य इत्यादि।'

शास्त्री—'और इसको देश-निकाला होगा ?'

राजा—'हा।'

नतमस्तक अपराधी का सर ऊचा हुआ। जैसे कीचड में से कमल फूट पडा हो। बोला, 'सरकार, मै प्रायश्चित नही करूंगा। मैंने कोई पाप नही किया हैं। यदि मुझको प्रायश्चित की आज्ञा दी जाती है तो पहिले लगभग आधे शहर को पञ्चगव्य लेना पडेगा।

'क्यो ?' राजा ने जरा विस्मय के साथ पूछा।

शास्त्री ने छोटी से आग्रह किया, 'बतला दे सरकार को।'

छोटी ने अपने वस्त्रो मे से मिट्टी की दो डबुलिया निकाली और उनमें से जनेऊ।

राजा ने उत्सुक होकर प्रश्न किया,'यह क्या है छोकरी ?'

नीची गर्दन किए, विना आख मिलाए छोटी ने उत्तर दिया,'बडी जातो के जिन-जिन लोगो ने मुझको फासने की कोशिश की उन सबके मैंने जनेऊ उतरवाये और इन डबुलियो में इकट्ठे किये।

सुनने वाले सन्नाटे में आगए। राजा जरा असमंजस मे पडे। फिर यकायक हँस कर शास्त्री से बोले, 'तुमने इस स्त्री को केवल अपना तन ही दिया, या मन भी ?'

शास्त्री ने कोई उत्तर नही दिया। छोटी कुछ कहना चाहती थी, परन्तु राजा ने उसको हाथ के सकेत से वर्जित करके शास्त्री से फिर प्रश्न किया,'तुम इस स्त्री को भ्रष्ट समझते हो या नही ?'

शास्त्री के मुह से यकायक निकला, 'नही सरकार।'

गंगाधरराव कुछ क्षण विचार निमग्न रहे । फिर गम्भीर स्वर में बोले 'इस स्त्री के साथ और किसी का भी ससर्ग नही है, मै इस नतीजे पर पहुचा हू । इन यज्ञोपवीतो की कहानी तुम्हारी ही गढन्त जान पड़ती है । मै सूत के इन डोरो को छूना नही चाहता । यदि परीक्षा करू तो पुरानो में ब्रह्मगाठ लगी होगी और नये विना किसी गाठ के होगे । ये सब तुम्ही ने इसको दिये होगे ।'

शास्त्री पसीने में तर हो गये ।

राजा कहते गये,'तुम समझते होगे कि तुम्हारे सिवाय सब मूर्ख हैं । तुमको अवश्य कठोर दण्ड देता, परन्तु तुमको दण्ड देने से इस अभागी का दण्डभार वढ जायेगा ।'

छोटी रोने लगी । वोली, 'मै भुगतने को तैयार हू ।'

राजा ने रूखे स्वर में शास्त्री से कहा, 'तुम प्रायश्चित पञ्चगव्य के लिये तैयार नही हो, इसलिये तुमको भी झांसी तुरन्त छोडनी पडेगी ।'

शास्त्री प्रसन्न हुये । वोले, 'वडा अनुग्रह हुआ । मै इसी के साथ झांसी छोड़ देने को तैयार हू ।'

वे दोनो चले गये ।

राजा ने तात्या टोपे की ओर देखा । वह विलकुल संतुष्ट जान पडता था ।

राजा ने सोचा, 'वहुत सस्ता छूटा यह । वह लडकी छोटी जाति की होने पर भी इस ब्राह्मण से वडी है । देश-निकाला दे दिया, काफी है । विठूर के लोग भी इसी निर्धार से सन्तुष्ट होगे । अधिक कड़ा दण्ड देने से झासी के वाहर वदनामी ज्यादा होती । और फिर अङ्गरेज ' अङ्गरेज...'

फिर और आगे उन्होने नही सोच पाया ।

छोटी और शास्त्री दूसरे दिन झासी छोड़ कर चले गए ।

[१३]

मोरोपन्त, मनूबाई इत्यादि के ठहरने के लिये कोठीकुआँ के पास एक अच्छा भवन शीघ्र ही तै हो गया । तात्या टोपे कुछ दिन झासी ठहरा रहा । निवास स्थान की सूचना विठूर शीघ्र भेज दी ।

टोपे को बिठूर की अपेक्षा झासी ज्यादा पसन्द आई । उसकी कल्पना गङ्गाधरराव की नाटकशाला में बार बार उलझ जाती थी । इसके सिवाय झाँसी का रहन-सहन, यहाँ के स्त्री-पुरुष और यहाँ का प्राकृतिक वातावरण उसको ब्रह्मावर्त के गङ्गा तट से अधिक मनोहर लगे । जब बिठूर लौटा अवसर पाकर उन बालको ने झासी के विषय में सवालो की झडी लगा दी ।

नाना—'क्या झाँसी बिठूर से बडा नगर है ?'

तात्या—'कुछ बडा ही होगा । किला बडा है । नगर के चारो ओर परकोटा है । बस्ती पहाडी की ऊँचाई-निचाई पर बसी है । इसलिये बरसात में कीचड नही मचती होगी । घर घर कुये हैं । नगर के भीतर इधर-उधर फल-फूलो के बगीचे । भीतर-बाहर तालाब, अच्छे अच्छे मन्दिर । किला पहाडी पर है । उसमें राजमहल है । महादेव और गण-पति के मन्दिर हैं । एक बडा महल नीचे है । महल के पीछे नाटकशाला ।'

मनू—'नाटकशाला ! उसमें क्या होता है ?'

तात्या—'अच्छे अच्छे नाटक खेले जाते हैं । गायन-वादन होता है '।

मनू—'मैं भी देखूँगी ।'

तात्या—'श्रीमन्त राजा साहब तो नित्य ही नाटकशाला में जाते हैं । मुझको भी बुलवा लेते हैं ।'

मनू—'हाथी कितने हैं ?'

तात्या—'दस या शायद ज्यादा हो ।'

मनू—'घोडे ?'

तात्या—'सरकार को घोडे की सवारी पसन्द नही है। तामझाम में चलते हैं।'

नाना—'सेना कितनी है ?'

तात्या—'कई हजार है।'

मनू—'ठीक नही गिनी ?'

तात्या—'बिलकुल ठीक तो नही, परन्तु आठ और दस हज़ार के बीच में होगी।'

मनू—'लोग कैसे हैं ?'

तात्या—'उनके शरीर दृढ और स्वस्थ हैं। व्योपार अच्छा है। शहर में चहल-पहल मची रहती है। धनधान्य खूब है। गरीबी बहुत कम देखने में आई है। स्त्री-पुरुष सुखी दिखलाई पडते थे। सन्ध्या समय लोग फूलो की माला डाले बगीचो और बाजारो में घूमते हैं। स्त्रिया घी के दिये थालो में सजाकर पूजन के लिये लक्ष्मी जी के मन्दिर में जाती हैं।'

रावसाहब—'कुश्ती मलखम्ब के अखाडे हैं ?'

मनू—'मै भी यही पूछना चाहती थी।'

तात्या—'हैं तो, परन्तु लोगो में गाने-बजाने का अधिक शौक दिखलाई पड़ता है।'

रावसाहब—'क्या रास्तो मे गाते-बजाते फिरते हैं ?'

तात्या—'नही तो।'

मनू—'फिर क्या नाटकशाला मे गाते बजाते हैं ?'

तात्या—'नही—घरो पर, समाजो, उत्सवो पर। जान पडता है मानो गाने का मिस ढूँढ रहे हो। स्त्रिया तो गाने का कोई न कोई बहाना लिये रहती हैं। पीसने के समय तो सब कही स्त्रिया गाती है, परन्तु झासी में पानी भरने जावे तो गाये, पानी भरते समय गाएँ। शायद मरती भी गाते गाते होगी।'

मनू—'झासी में तोपे कितनी हैं ?'

तात्या—'बड़ी तोपे चार हैं—बहुत बड़ी हैं। छोटी तो बहुत हैं।'

मनू—'किले के भीतर तालाब है ?'

तात्या—'नही। एक पोखरा है। एक बड़ा कुआ भी है, उसमें बहुत पानी रहता है। न जाने पहाड़ पर किसने खुदवाया होगा।'

नाना—'आदमियो ने खुदवाया होगा, देव-दानव तो खोदने आये न होगे।'

तात्या को बाजीराव ने बुलवाया। बाजीराव ने पूछा, 'बच्चो में क्या बात कर रहे थे ?'

तात्या ने उत्तर दिया, 'झाँसी का हाल सुना रहा था।'

बाजीराव—'नारायण शास्त्री वाली बात तो नही सुनाई ?'

तात्या—'नही सरकार। और न नाटकशाला की गाने-नाचने वालियो की।'

बाजीराव—'तुम मोरोपन्त के साथ कुछ दिन के लिये झाँसी जाओगे ?'

तात्या—'हाँ श्रीमन्त।'

बाजीराव—'मुहूर्त पास का निकला है। जल्दी जाना होगा।'

[१४]

यथा समय मोरोपन्त मनूबाई को लेकर झाँसी आगये। तात्या टोपे भी साथ आया।

विवाह का मुहूर्त शोधा जा चुका था। घूमधाम के साथ तैयारिया होने लगी।

नगर वाले गणेश मन्दिर में सीमन्ती, वर पूजा इत्यादि रीतियाँ पूरी की गईं। राजा गङ्गाधरराव घोडे पर बैठकर गणेश मन्दिर गये। उस दिन मनूबाई ने पहले पहल गङ्गाधरराव को देखा। गङ्गाधरराव का मुख-सौदर्य अब भी वैसा ही था। ऑखो का तेज लाल डोरो के कारण आकर्षक कम, भयानक ज्यादा मालूम होता था। पेट कुछ वढा हुआ, परन्तु भद्दा नही लगता था। रग सावलापन लिये हुये। सारी देह एक बलवान पुरुष की।

मनू का ध्यान शरीर के इन अगो पर एकाध क्षण ठहरकर उनके सवारी के ढग पर जा अटका। वह मुस्कराई। अपनी सम्मति प्रकट करने के लिये आस-पास लडकियो मे किसी उपयुक्त पात्र को मन ही मन ढूढने लगी। उस समय मनू ने सोचा, 'यदि इस घडी नाना या राव यहा होते तो उनको सब बाते सुनाती समझाती।'

राजा गगाधरराव धीरे-धीरे, रुकते-रुकते गणेश मन्दिर को जा रहे थे। नगर निवासी प्रणाम करते जाते थे और वे मुस्कराकर प्रणाम का जवाब देते जाते थे।

यकायक मनू के सामने एक मराठा-कन्या आई। आयु १५ से कुछ ऊपर। शरीर छरेरा। रग हलका सावला। चेहरा जरा लम्बा। आखें बडी। नाक सीधी। ललाट प्रशस्त और उजला। जैसे ही वह मनू के पास आई उसने आखे नीची करके आदरपूर्वक प्रणाम किया। मनू को ऐसा लगा मानो पहले से परिचित हो। उससे बात करने की तुरन्त इच्छा उमड़ी।

बोली, 'तुम कौन हो ?'

उसने उत्तर दिया, 'आपकी दासी सुन्दर मेरा नाम है।'

मनू—मेरी दासी ! कैसे ?'

सुन्दर—'आप हमारी महारानी हैं मै सेवा में रहूगी। आपकी दासी होकर अपना भाग्य बढाऊँगी।'

मनू—'मेरी दासी कोई न हो सकेगी। मेरी सहेली होकर रहोगी।' मनू ने उसका हाथ पकड कर अपनी ओर खीचा। वह झिझकी। मनू ने उसका हाथ ढीला करके पूछा, 'तुम क्या सचमुच सदा मेरे पास रहोगी ?'

'सदा सरकार,' सुन्दर ने उत्तर दिया, 'हम १६ दासिया आपकी सेवा में रहा करेगी।'

मनू को हँसी आई, परन्तु उसने रोकली। गङ्गाधरराव की सवारी अब भी सामने थी। मनू ने धीरे से सुन्दर से कहा, 'तुम घोडे पर चढना जानती हो ?'

सुन्दर बोली, 'थोडा सा। दौडना खूब जानती हूँ। कोस भर दौड जाऊगी और हाफ न आयगी।'

'धीरे धीरे जाने वाले घोडे को भी यह जाघ से कसे जा रहे हैं !' गङ्गाधरराव की ओर से सकेत करके मनू ने कहा।

सुन्दर ने चकित होकर पूछा, 'आपने कैसे जाना सरकार ?'

मनू हँसी। दातो की सफेदी चेहरे के निखरे गोरे रग से होड लगाने लगी।

मनू ने कहा, 'तुम हथियार चलाना जानती हो सुन्दर ?'

'नही सीखा। सुन्दर ने जवाब दिया।

इतने में गङ्गाधरराव की सवारी आगे बढगई। दो लडकियाँ और मनू के निकट आई सुन्दर की ही उम्र की एक। दूसरी लगभग १४ वर्ष की। उन्होने भी सिर झुकाकर प्रणाम किया।

सुन्दर ने परिचय दिया, 'इसका नाम मुन्दर है और इसका काशी। मेरी तरह यह भी आपकी दासिया हैं।'

मनू ने बिना किसी प्रयत्न के कहा, 'मेरी सहेलिया बनकर रहोगी। दासी मेरी कोई भी न होगी।'

वे दोनो हर्ष के मारे फूल गई। काशी जरा छोटे कद की और सुगठित शरीर वाली। मुन्दर छरेरे शरीर की और जरा लम्बी। मुन्दर और काशी दोनो गौर वर्ण की। मुन्दर का चेहरा बिलकुल गोल, आखे सुन्दर से कुछ ही छोटी, परन्तु चञ्चल और तेज। काशी की कुछ बड़ी और स्थिर।

मनू ने तीनो से अलग अलग प्रश्न किये।

'तुम लोग कौन हो ?'

तीनो ने उत्तर दिया, 'कुणभी।'

'झासी मे कब आई ?'

'पुरखे आये थे।'

'झासी के आसपास घूमी हो ?'

'बहुत कम।'

'घोडे पर चढना जानती हो ?'

'थोडा थोडा।'

'हथियार चलाना ?'

सुन्दर तो पहले ही बतला चुकी थी। मुन्दर ने तलवार चलाना सीखा था और काशी ने बन्दूक। मनू को जानकर अच्छा लगा।

बोली, 'मैं तुम लोगो को घोडे पर चढना सिखाऊँगी। हथियार चलाना भी। मलखम्ब जानती हो ?'

वे तीनो सिर नीचा करके मुस्कराई। सिर हिला दिये,— 'नही जानती।'

'गाना-बजाना जानती हो ?' मनू ने बहुत सूक्ष्म चुटकी लेते हुये कहा।

सुन्दर बोली, 'वह तो हम तीनो जानती हैं। हम लोग जब सरकार की मर्जी होगी, सुनावेगी।'

मनू ने कहा, 'जब इच्छा होगी सुनूँगी। परन्तु मुझको उसका शौक कुछ कम है वह अच्छा है, किन्तु घुडसवारी, हथियार चलाना, मलखब, कुश्ती, प्राचीन गाथाओ का श्रवण—ये सब—मुझको बहुत अधिक भाते हैं।'

'कुश्ती!' सुन्दर ने अपने बडे नेत्रो को जरा घुमा कर आश्चर्य प्रकट किया।

मनू के होठो पर सहज मुस्कराहट आई। बोली, 'हा कुश्ती भी यह बहुत आवश्यक है। फिर किसी समय बतलाऊँगी। अभी अवसर नही है।'

इतने में कुछ और स्त्रिया पास आने को हुईं, परन्तु कुछ दूर ठिठक गई। मनू ने उनको उस समय अपने पास बुला लेने की जरूरत नही समझी।

मनू कहती गई, 'पुरुषो को पुरुषार्थ सिखलाने के लिए स्त्रियो को मलखब, कुश्ती इत्यादि सीखना ही चाहिये। खूब तेज दौडना भी। नाचने-गाने से भी स्त्रियो का स्वास्थ्य सुधरता है, परन्तु अपने को मोहक बना लेना ही तो स्त्री का समग्र कर्तव्य नही है।'

चौदह वर्ष की मनू अपने से अधिक वय वाली लडकियो से जो कह गई, वह पास ठिठकी हुई उन स्त्रियो ने भी सुन लिया।

सुन्दर, मुन्दर और काशी यह सब सुनकर जरा झेंपी। उनकी मुस्कराहट चली गई। परन्तु मनू अब भी मुस्करा रही थी। वह मुस्कराहट उन लडकियो को, उन स्त्रियो को जीवन के कोष में कुछ दे सा रही थी। उन लडकियो का सहमा हुआ जी शीघ्र ही लहलहा गया। अन्य लडकियो तथा स्त्रियो को भी मनू ने अपने निकट बुला लिया। ये स्त्रिया उन तीन लडकियो की अपेक्षा अधिक सहमी हुई थी।

मनू ने उनको अपना मन खोलने के लिये उत्साहित किया। स्त्रियो की ओर से प्रस्ताव, गायन इत्यादि द्वारा अपने हर्ष को प्रदर्शित करने का हुआ। उसने बिना किसी विशेष उत्साह के स्वीकार किया।

जो और लडकियां उन स्त्रियो के साथ थी, उनके विषय में मनू ने प्रश्न किये। वे सब दासियो के रूप में मनू के पास रहने के लिये नियुक्त कर दी गई थी, क्योकि विवाह का मुहूर्त आ रहा था। उसके बाद भी उनको मनू के पास ही रहना था।

ये लडकिया अब्राह्मण जातियो में से रूप, रस इत्यादि; के पैमानो से तौल कर चुनी जाती थी और उनको आजन्म अपनी रानी के साथ कुमारी होकर रहना पडता था। यदि वे विवाह कर लेती तो उनको महल की नौकरी छोडनी पडती था। दहेज मे दासियो और दासो का देना महाराष्ट्र में नही था, शायद राजपूताने के कुछ रजवाडो से वहा पहुचा हो। शायद इसका प्रारम्भ, भिक्षुणी और देवदासी प्रथा से निसृत हुआ हो। इन दासियो के जीवन कितने कुतूहलो और कितने कोलाहलो से भरे रहते होगे और इनके जीवन कितने दु खान्त होते होगे उसकी कल्पना की जा सकती है। इनको जन्म देने वाले लगभग उसी प्रकार के माता-पिता, केवल धन-लोभ से इनको महलो के सुपुर्द कर देते थे। फिर, या तो वे अपने सौंदर्य के जमाने मे राजा के विलास की सामग्री बनी रहती थी या जीवन के स्वाभाविक मार्ग पर जाकर महल से अलग हो जाती थी।

मनू ने दासियो के इस चित्र की कुछ कल्पना की।

उसने अपनी उसी सहज मुस्कराहट से कहा, 'मैं तुमको दासियां बनाकर नही रक्खूँगी। तुम मेरी सखी-सहेली बनोगी। केवल एक शर्त है।

मनू ने अपने विशाल नेत्रो की दृष्टि को उन पर बिखेरा। बोली, 'जानती हो क्या ?'

उन सबो ने 'नाहीं' के सिर हिलाये।

मनू ने कहा, 'मेरे साथ जो रहना चाहे—उसको घोडे की सवारी अच्छी तरह आनी चाहिये। तलवार बन्दूक, बर्छा, छुरी-कटार, तीर-तमञ्चा इत्यादि का चलाना—अच्छी तरह चलाना सीखना पड़ेगा। दोनो हाथो से हथियार एक से चलाना सीख जावे तो और भी अच्छा।

पुरुषो जैसे काम सीखने की बात सुनते ही स्त्रियो के चेहरो पर लाज की हल्की लाली दौड गई। परन्तु मनके हर्ष और उत्साह ने लाज को दबा दिया।

काशी ने स्थिर दृष्टि और स्थिर स्वर में कहा, 'हम लोगो को जो कुछ सिखलाया गया है उतना ही हम जानती हैं। अब जो कुछ सरकार की आज्ञा होगी उसको हम लोग जी लगाकर और दृढता के साथ सीखेगे। परन्तु कुश्ती और मलखब कौन सिखलावेगा ?'

मनू ने तुरन्त बतलाया, 'जितना मैं जानती हूँ, मै सिखलाऊँगी। बाकी बिठूर के प्रसिद्ध आचार्य बाला गुरू। उनको यहाँ बुला दूँगी।'

बाला गुरू का नाम सुनते ही लडकिया शरमा गई और उनसे बडी उम्र की स्त्रिया हँस पडी। उस हँसी पर मनू के मन में क्षोभ उठा, परन्तु मनू ने उसको नियन्त्रित कर लिया।

फिर उसी मुस्कराहट के साथ बोली, 'बाला गुरू देवता हैं, और न भी हो तो तुमको क्या डर ? स्त्रिया दृढता का कवच पहिने तो फिर ससार में ऐसा पुरुष कोई हो ही नही सकता जो उनको लूट ले। बाला गुरू के साथ लडकर कुश्ती सीखने की जरूरत नही पडेगी। वह बतलाया भर करेगे। अखाडे मे उतरकर सिखलाऊँगी मैं।'

गणेश मन्दिर पास ही था। वाद्य बज रहे थे। उनमे होकर कभी कभी मीठी शहनाई की चहक भी सुनाई पड जाती थी। स्त्रिया मनू से शृगाररस की बात करने आई थी। अपने आदर के झरोखे मे होकर। मनू के मन की धारा गगाधरराव की सवारी, बाजो-गाजो और झासी निवासियो के हर्षोन्माद से सघर्ष पाकर दूसरी ओर चली गई थी।

सब स्त्रिया लडकिया भी अपने अच्छे से अच्छे वस्त्र और आभरण पहिने हुये थी। केश खूब संवारे गये थे और उनमें रग-बिरगे और सुगधित फूल गुँथे हुये थे। मनू के केशो मे भी फूल थे। मनू ने हँसकर कहा, 'तुम लोग यदि कुश्ती सीखने के लिये इसी समय अखाडे मे उतरो तो क्या हो ?'

सुन्दर मुस्कराकर बोली 'तो इन फूलो से सारा अखाड़ा भर जावेगा।'

मनू ने हँसकर कहा, 'और तुम्हारे बालो मे अखाडे की मिट्टी भर जावेगी।'

वे सब खिलखिला पडी।

मनू बोली, 'परन्तु वह मिट्टी तुम्हारे केशो पर इन फूलो से कही अधिक सुहावनी लगेगी।'

मुन्दर बोली, 'सरकार, बालो की शोभा मिट्टी से ?'

मनू ने मुन्दर का कन्धा हिलाकर कहा, 'ये फूल कहा से आये ? कहा जायेगे ? ये क्या मिट्टी से बढकर हैं ?'

मनू की बात मे, अपनी दादियो से सुनी हुई ससार की अस्थिरता की झाई सुनकर वे सब सहम गई।

मनू समझ गई। बोली, 'नही फूलो से नाता बनाये रक्खो, परन्तु मिट्टी से सम्बन्ध तोड कर नही।'

स्त्रियो के मन पर एक दार्शनिक झकोर ठोकर दे गई। उन्होने ऊंचे स्वर में 'हा, हा' कही, परन्तु आँखो से ऐसा जान पडता था, मानो उनका आनन्द कही भाग गया, उन्हे अपनी असगत अवस्था मे क्लेश होने लगा, मानो मनू ने उनके फूलो की भर्त्सना की हो और उनके आदर का अपमान।

मनू ने उन सब स्त्रियो से कहा, 'तुम गणेश मन्दिर मे जाकर देखो क्या होता है। मैं तब तक इन तीनो से बात करती हूँ। परन्तु एक बात सुनती जाओ। मुझको तुम्हारे फूल बहुत अच्छे लगे इनको फेक मत देना।'

इस बात पर प्रसन्न होकर वे सब चली गई। केवल सुन्दर, मुन्दर और काशी रह गई।

मनू बोली, 'मै सुनती हू झासी के लोग फूलो को बहुत प्यार करते हैं। अच्छा है। मुझको भी पसन्द है, परन्तु क्या दुबले पतले घोडे पर सोने-चादी का जीन अच्छा लगता है ?'

सुन्दर ने उमग के साथ तुरन्त कहा, 'सरकार मैं आपकी बात अब समझी।'

[१५]

सीमन्ती इत्यादि की प्रथाएँ पूरी होने के उपरान्त गणेश मन्दिर में गायन-वादन और नृत्य हुये और, एक दिन विवाह का भी मुहूर्त आया।

विवाह के उत्सव पर आसपास के राजा भी आये। उनमें दतिया के राजा विजयबहादुरसिंह खासतौर से उत्साह प्रदर्शन कर रहे थे।

कोठी कुआँ वाले भवन में भावर पडने को थी। बाहर गायन-वादन और नृत्य हो रहा था। सामने वाले मकान में मोतीबाई, जूहीबाई इत्यादि अभिनेत्रिया झरपो के पीछे वस्त्राभूषणो और पुष्पो से लदी बैठी थी। बाहर दुर्गाबाई का नृत्य और उस काल के प्रसिद्ध घुरपदिये मुगलखा का गायन अभ्यन्तर के साथ हो रहा था। मुगलखा के ध्रुवपद-अलाप इत्यादि पर अनेक लोग वाह वाह कर रहे थे, परन्तु जनता दुर्गाबाई के नृत्य के लिये बार-बार अकुला उठती थी। इसलिये मुगलखा ने अपना तम्बूरा रख दिया और दुर्गाबाई को खडे होने का इशारा किया। राजा विजयबहादुर महफिल में मसनद पर बैठे थे। उन्हे ऊँचे दर्जे के गायन और नृत्य-दोनो का व्यसन था। दुर्गाबाई नृत्य करने को खडी होने को ही थी कि भीतर से इत्रपान का सामान आया। सोने के वर्को से लिपटे पान और बढिया इत्र। पान लाने वाले एक सरदार थे। उन्होने कहा कि भावर शुरू हो गई। उसी समय भीतर एक घटना हुई।

पुरोहित ने मनूबाई की गाठ गगाधरराव से जोडने के लिये वर की चादर और वधू की साडी के छोर हाथ में पकडे। वृद्धावस्था के कारण हाथ काँप रहा था। गाठ लगाने में जरा सा विलम्ब हुआ। गाठ अच्छी तरह नहीं बँध पारही थी। बार-बार हाथ काप जाता था।

मनू ने सोचा, 'मै ही क्यो न इसको बाध दू?'

परन्तु उसने विचार को नियन्त्रित कर लिया। गाठ तो पुरोहित ने बाधली, लेकिन वह कापते हुये हाथो से गाठ का फन्दा कसने में कुछ

क्षणो का विलम्ब कर रहे थे। मनू से न रहा गया। बिना मुस्कराहट के और दृढ स्वर में बोली, 'ऐसी बाधिये कि कभी छूटे नही।'

गगाधरराव सिकुड गये। मोरोपन्त मन ही मन क्षुब्ध हुये। होठ सिकोड लिया। परन्तु पुरोहित खिलखिला कर हंस पडा। उसके पास वाले सब स्त्री पुरुष हँस पडे। कह-कहे लग गये। मनू-पुलकित हो गई। आखे नीची करके उसने थोडा सा मुस्करा भर दिया। इस कह कहे की आवाज बाहर पहुची और मनू की कही हुई बात भी। वहा भी कह कहे लगे। चारो ओर उस वाक्य की चर्चा हो उठी।

सामने वाले मकान में भी समाचार पहुचा। जूही ने, जो अब यौवनावस्था में लहराने को थी, कहा, 'मै तो नाचना चाहती हूँ। ऐसे अवसर पर चुपचाप वैठे-वैठे थक गई हू। इतनी खुशी के समय भी न नाचे तो कब नाचेगे ?'

मोतीबाई में बाहरी गम्भीरता आगई थी, परन्तु मन आल्हाद में फुदक रहा था। बोली, नाचो कोई हर्ज नही। मै भी नाचना चाहती हूँ, परन्तु घुंघरू बाँधकर नही। बाहर बडे बडे राजे महाराजे वैठे हैं। शोर-गुल सुनेगे तो क्या कहेगे ?'

जूंही बोली, 'तबला घुघरू हमको कुछ नही चाहिये, शोर-गुल न होगा। इस पर भी महाराज अगर कुछ कहेगे तो मै भुगत लूगी। आखिर नाटक होगा ही। हमलोग रगशाला मे नाचे और गावेंगे ही। राजे महाराजे नाटक--शाला मे पास से सब कुछ देखेगे ही। मै नही मानूगी।'

उन दोनो ने मनमाना नृत्य किया और नर्तकियो ने ताल दिया, परन्तु मीठी थपकी से।

बाहर मुगलखा खडा हो गया। बोला, 'वाह जैसा राज्य है, वैसी ही महारानी हमको मिली। दिल चाहता है कि मैं नाचू, परन्तु कभी सीखा नही इसलिये मजबूर हू।' और उसकी आंख मे आसू आगये, वैठ गया।

दुर्गाबाई खड़ी हो गई। बोली, 'उस्ताद यह काम मेरा है। मैं दिल और पैर दोनो से नाचूँगी। आप अकेले दिल से, खेलिये या नाचिये।' और उसने सिर नीचा कर लिया।

विजयबहादुर प्रसन्न हुये। स्वभाव से ही जरा सनकी थे। इस समय सनक कुछ तीव्रतर हो गई। बोले, 'दुर्गा खूब अच्छी तरह नाचो, इनाम मिलेगा।'

'बहुत अच्छा सरकार।' कहकर दुर्गा पूरे उत्साह के साथ गाने और नाचने लगी। मुगलखा को इसका गाना खटक रहा था, परन्तु उसके मन की इस चोट को दुर्गा का नृत्य सम्भाल ले गया।

थोडी देर में भावर की रस्म पूरी हो गई। अन्य रस्मो के पूरा होने पर गङ्गाधरराव वर की सजधज में पावडो पर, फूलो और चावलो की वरसा में, बाहर आये। सबने ताजीम दी। गाना बजाना थोडी देर के लिये वन्द हो गया। गङ्गाधरराव एक ऊँची मसनद पर जा बैठे और इधर उधर बारीकी के साथ देखने लगे कि मनू के उस वाक्य का असर भद्दे पन की किस हद तक हुआ है। उनकी आँख जम नही रही थी। आँखो के लाल डोरो में, रौब की जगह को सकोच ने पकड लिया था।

वहाँ के उपस्थित लोगो के जी मे वही वाक्य बार-बार और जोर के साथ चक्कर काट रहा था। आँखे सबकी गङ्गाधरराव के दूल्हा वेश पर जा रही थी और मन के मना करने पर भी आँखे उसी वाक्य को दुहरा रही थी।

उस मकान की झरप के भीतर का नृत्य वन्द हो गया था। उन अभिनेत्रियो की आँखो पर भी वही वाक्य सवार था।

जूही ने धीरे से मोतीबाई से कहा, 'असली राजा तो झासी को अब मिला बाई जी।'

मोतीबाई ने आँख तरेर कर जूही का हाथ दबाया, 'राजा सुनेंगे तो गर्दन काटकर फिकवा देंगे। खबरदार।'

'मैने तो आपसे कहा,' जूही बोली, 'आपके हाथ जोडती हू किसी को मेरी बात मालूम न होने पावे।

फिर ये सब झरपो के पास खडी होकर जो कुछ दूसरी ओर हो रहा था, देखने-सुनने लगी ।

गङ्गाधर, विजयबहादुर से बोले, 'आपने मुगलखाँ का ध्रुवपद सुना ?'

विजयबहदुर ने कहा, 'पहले भी सुना है । इनकी होरी भी सुनी है । परन्तु दुर्गा का नाच मुझको बहुत भाया ।'

मुगलखा की आँख बदल पडी, परन्तु उसने सिर नीचा कर लिया गङ्गाधरराव ने देख लिया । वे बोले, मुगलखा ताव खाने पर बहुत अच्छा गाता है । अब सुनियेगा । इसके ध्रुवपद का मुकाबिला कही है ही नही । नृत्य अपनी जगह अच्छा है, परन्तु मुगलखाँ का ध्रुवपद राजा है और दुर्गाबाई का नाच उसका चाकर ।'

मुगलखाँ हर्ष के मारे फूल गया । आँखो मे आसू छलक आये । उनको जल्दी पोछकर हाथ जोडकर खडा हो गया । बोला, 'श्रीमन्त सरकार का हुकुम हो तो लखनऊ वाली बात सुना दूँ ।'

मनू के उस वाक्य से गङ्गाधरराव को छुटकारा नही मिल रहा था। उनको विश्वास था कि उपस्थित लोग भी उसमे उसी प्रकार उलझे होगे । प्रतिघात से उमग की एक लहर उठी और उन्होने मूगलखाँ से कहा, 'महाराजा साहब को जरूर सुनाओ और फिर गाओ । बैठकर सुनाओ ।'

मुगलखा की बात सुनने के लिये वहाँ सन्नाटा छा गया ।

मुगलखा ने कहा, 'सरकार मैं गाने के लिये लखनऊ गया । वहाँ के गवैयो ने सलाह करली कि मैं नवाब साहब के सामने पहुच ही न पाऊँ । इसलिये उन्होने कहा, 'पहले हमको सुनाओ । समझेगे कि उस्ताद हो, तो नवाब साहब के सामने पेश कर देगे, वरना अपने वनखड को वापिस जाना । मै अपने देश के कपडे पहिने था । पहले तो उसका मजाक उडाया गया, बुन्देलखण्डी है । क्या ऊल-जलूल साफा बाधे है ! जूते आपके-माशा-अल्लाह ! दाढी बुन्देलखण्ड के रीछो जैसी ! बातचीत जङ्गलियो सी ! बर्ताव ठीक भेडियो का ! इत्यादि सुनते सुनते कलेजा

पक गया। फिर मैंने गाया। जो कुछ गाने के बाद हुआ उसको मैं कह नही सकता।'

गगाधरराव उत्साह के साथ बोले, 'मैं बतलाता हूं महाराजा साहब। जब उस्ताद ने आठो अङ्ग सहित ध्रुवपद सुनाया तब सच्चे स्वरो की वर्षा हो उठी, निन्दा करने वाले उसमें बह गये। उस्ताद के उन लोगो ने पैर छुये और इनको नवाब साहब के सामने पेश किया। नवाब साहब स्वय सगीत के बडे जानकार हैं। उस्ताद को काफी इनाम दिया। बुन्देलखण्ड को उन्होने जी खोलकर सराहा।'

फिर मुगलखा ने तल्लीन होकर गाया। लगभग सारी जनता मुग्ध हो गई। राजा विजयबहादुर इस अवसर पर पुरस्कार बाटने के लिये अपने साथ काफी रुपया लाये थे। सनक तो सवार थी ही, अपने बख्शी से बोले, 'मुगलखा के साफे मे जितने रुपये आवे दे दो, तबले वाले के तबलो में चाहे फोडकर चाहे वैसे ही भरदो। सारङ्गी वालो की सारङ्गी में रुपये ठूंस दो। दुर्गा जितना बोझ बाँध ले उतना बाध लेने दो।'

इस आज्ञा के सुनते ही अनेक वाद्य वाले खडे हो गये। इनमें से एक शहनाई वाला भी था उसकी शहनाई में बहुत थोडे रुपये जा सकते थे। इसलिये गुस्से में आकर उसने शहनाई तोड डाली। बोला, 'सरकार ऐसा बाजा किस काम का जो रुपये का मेल न खा सके।'

राजा विजयबहादुर ने उसकी शहनाई को सोने से भरने का आदेश किया।

उस युग की प्रथा के अनुसार उस दिन सबको कुछ न कुछ दिया गया। रात को नाटक हुआ। बहुत अच्छा। विजयबहादुर ने नाटकशाला से सम्बन्ध रखने वाले सब लोगो को काफी इनाम दिया।

विवाह की समाप्ति पर दरबार हुआ। नजर-न्योछावरे हुई। पुरस्कार बँटे। बडे बडे सरदारो की नजर-न्योछावरो के उपरांत छोटे जागीरदारो की बारी आई। एक मऊ का जागीरदार अपने को आनन्दराय कहते हुये

आगे बढा। राजा थकावट के मारे खीझ उठे थे। आनन्दराय ने अपने कुटुम्ब और अपनी सेवा का बखान करते हुए रामचन्द्रराव वाली घटना का वर्णन भी शुरू कर दिया।

राजा खिसिया उठे। बोले, 'मैं भी स्मरण किए हूं। तुम्हारी दास्तान पर यहा कोई काव्य या रायसा नही लिखा जाने वाला है। नजर करने के बाद अपनी जगह जा बैठो। तुमको जो मिलना होगा मिल जावेगा।'

आनन्दराय नजर-न्योछावर करके एक कोने मे सिमट गया। अवस्था अधेड हो गई थी, परन्तु शरीर अब भी बलिष्ठ था। अपने को अपमानित हुआ समझकर बार बार उसास ले रहा था—और छाती फुला रहा था। वह एक निश्चय पर पहुँचा। जैसे ही राजा के सामने ज़रा भीडभाड देखी वहां से खिसक गया।

राजा के कर्मचारी नजर-न्योछावरो का व्योरा भेट करने वालो के नाम-पते सहित लिखते जा रहे थे। भेट करने वालो को पलटे में पुरस्कार भी बाटने थे, इसलिए, और हिसाब रखने के लिये भी।

जब पुरस्कार बाटते बाटते आनन्दराय की बारी आई तब वह गैर-हाज़िर था। दरबार के निकट ही रनवास के लिये झरपे लगी थी। रानी भी वहा बैठी थी।

'कहा चला गया आनन्दराय?' राजा ने पूछा।

थोडी सी तलाश करने के बाद वह नही मिला। फिर और लोगो की हाज़िरी होती रही।

इस रस्म की समाप्ति पर वहा के सब लोगो ने जयजयकार किया।

'महाराजा गगाधरराव की जय'

'महारानी लक्ष्मीबाई की जय'

विवाह के उपरान्त ससुराल में आने पर मनू का नाम उसी दिन महाराष्ट्र और बुन्देलखण्ड की प्रथा के अनुसार लक्ष्मीबाई रक्खा गया था।

दरबार की समाप्ति के कुछ समय उपरांत रानी लक्ष्मीबाई—अब मनू नही कहा जावेगा–किले के महल के अपने कक्ष में सुन्दर, मुन्दर और काशी के साथ थी। उनको अपनी सब सहचारियो में ये तीन सबसे अधिक प्यारी लग उठी थीं।

रानी ने कहा, 'आज एक बात अच्छी नही हुई। आनन्दराय नाम के उस जागीरदार की अवहेलना की गई।'

मुन्दर बोली, 'सरकार को कैसे नाम याद रह गया? और इतने हल्ले गुल्ले और भीड भाड की ध्वनियो मे यह घटना कैसे स्मरण रही?'

रानी ने कहा, 'मैने देख लिया है कि बुन्देलखण्ड पानीदार देश है। इस पानी को बनाये रखने की हमको ज़रूरत है। उस आदमी का पानी उतारा गया—यह बुरा हुआ।'

काशी बोली,'छोटे छोटे से आदमियो का महाराज कहा तक लिहाज करे? थक भी तो बहुत गये आज। सुना है नाटकशाला भी नही जायगे।'

रानी ने कहा, 'जिन्हे तुम छोटा आदमी कहती हो, आधार तो हमारे वे ही हैं।

[१६]

विवाह होने के पहले गगाधरराव को, शासन का अधिकार न था। उन दिनो झासी का नायब पोलिटिकल एजेण्ट कप्तान डनलप था। वह राजा के पास आया-जाया करता था। लोग कहते थे कि दोनो में मैत्री है।

गगाधरराव अधिकार प्राप्त करने का प्रयत्न पहले से कर रहे थे। विवाह के उपरान्त उनको अधिकार मिल गया। परन्तु अधिकार मिलने के पहले कम्पनी सरकार के साथ फिर एक अहदनामा हुआ। पुरानी बाते पुष्ट की गईं।

केवल एक बात नई हुई—झाँसी में एक अङ्गरेजी फौज रक्खी जावेगी अङ्गरेजी हुकूमत मे, पर खर्चा झासी का राज्य देगा। गंगाधरराव को मानना पडा। मनको खटका। उन्होने नकद खर्चा न देकर कम्पनी सरकार का आग्रह निभाने के लिये झासी के राज्य से २ लाख २७ हजार चारसौ अट्ठावन रुपये वार्षिक आय का एक इलाका इन राज्य लोलुपो को दे दिया। जब यह सब हो गया तब गगाधरराव को शासन का अधिकार मिल पाया। इसके बाद दरबार हुआ। खुशिया मनाई गई। खेल-कूद, नाटक इत्यादि हुये, परन्तु अनेक झासी निवासियो को उनमें खोखलापन ही दिखलाई पडा। उनको अपने प्रदेश का खण्डित होना कसका।

स्वय राजा को नाटकशाला मे यथेष्ट मनोरञ्जन नही मिल सका। वे शीघ्र वहा से चले आये और रगमहल में रानी के पास पहुचे।

रानी किले वाले महल मे ही प्राय. रहती थी। बाहर बहुत कम निकल पाती थी। जब निकलती तब पर्दे की कैद में। इसलिये सवारी, व्यायाम इत्यादि किले वाले महल के इर्दगिर्द आड ओट से कर पाती थी। तो भी वे काफी समय इन बातो में लगाती थी और अपनी समग्र सहेलियो तथा किले के भीतर रहने वाली स्त्रियो को सवारी, शस्त्र-प्रयोग मलखब, कुश्ती का अभ्यास कराती थी। बचे हुये समय में धार्मिक-ग्रन्थो

परम श्रद्धा थी। बाल्यावस्था को पार कर यौवन मे पदार्पण करने को थी परन्तु नये नये वस्त्र, कीमती आभूषणो का शौक न करके उनकी धुन ऊपर लिखी बातो की ओर अधिक रहती थी।

झासी आने के बाद चपल, सुखी मनू मे एक परिवर्तन धीरे धीरे घर करता जा रहा था– वे अब उतना नही बोलती थी। रानी लक्ष्मीबाई मे गम्भीरता जगह करती जा रही थी और क्रुद्ध हो जाने की वृत्ति तो और भी अधिक शीघ्रता के साथ घुलती चली जा रही थी। व्यंग करने की इच्छा ज़रूर कुछ बढती पर थी, परन्तु वह सहज, सरल भव्य, दिव्य मुस्कान सदा साथ रही। और चित्त की दृढता तो पूर्व जन्मो से सचित होकर मानो छठी के दिन ही ब्रह्मा ने पूरी समूची उनके हिस्से में रख दी थी।

रंगमहल में आने पर रानी ने गगाधरराव का सत्कार जैसा कि हिन्दू नारी—और रानी—कर सकती है, किया।

राजा अपने भावो को छिपा पाने में असमर्थ थे। उनको इसका अभ्यास न था। चेहरे पर रुखाई थी और आखो में उदासी।

रानी ने कहा, 'आज आप नाटकशाला से जल्दी लौट आये। खेल अच्छा नही हुआ क्या ?'

राजा बोले, 'खेल तो सदा अच्छा होता है। मन नहीं लगा। एक नये खेल की तैयारी के लिये कह आया हूँ।'

रानी—'कौन सा ?'

राजा—'मृच्छकटिक।'

रानी—'यह क्या है ?'

राजा—'शूद्रक कवि ने संस्कृत में लिखा है। मैंने हिन्दी में उलथा करवाया है। चारुदत्त ब्राह्मण और वसन्तसेना के प्रेम की अद्भुत कहानी है। आप देखने चलोगी ?'

रानी—'न।'

राजा—'घोडे की सवारी, कुश्ती, मलखंब के सिवाय आपको और भी कुछ पसन्द है या नही ?'

रानी—'अवश्य। सहेलियो को अपना सा बनाना। उनको अवसर कुअवसर पडे पुरुषो की सहायता करने में पीछे पैर न देने की सीख देना, घर की सफाई, स्वच्छता इत्यादि बनाये रखना, काफी काम हैं।'

राजा—'इन सबो को मोटा–तगडा बनाकर आप क्या करने जा रही है ?'

रानी—'अभी तो मुझको भी नही मालूम। पर देह और मनको सबल बना लेना क्या कोई कम महत्व का काम है ?'

राजा—'व्यर्थ है। घर का ही इतना काफी काम स्त्रियो के लिये ससार में है कि उनको घुडसवारी इत्यादि की ओर खीच ले जाना फूहड बनाना है।'

रानी—'और नाचना–गाना ?'

राजा—'अकेले मे सभी स्त्रिया नाचती-गाती हैं। परन्तु यदि वे इन विद्याओ को ढङ्ग से सीखे तो शरीर और मन दोनो के लिये काफी कसरत पा सकती हैं।'

रानी—'हा स्वराज्य स्थापित है। अब सिवाय हंसने–खेलने के नर–नारियो के लिये और काम ही क्या बचा है ? देखिये न किस आराम के साथ झासी–राज्य का पचमाश से अधिक अङ्गरेजो के हाथ में दे दिया गया। आपका वह मित्र गार्डन भी नाटकशाला में आता होगा ?'

राजा—'अङ्गरेज लोग खूब हंसते–खेलते और नाचते–गाते हैं···'

रानी—'और नाचते–गाते ही पूरे हिन्दुस्तान को रोदते चले जाते हैं। खेल तो बढिया है।'

राजा—'हमारे यहा फूट है। गाव गाव में उपद्रवी, डाकू और बटमार भरे हुये हैं। अङ्गरेजो के पास हथियार अच्छे हैं। इसलिये उन्होने राज्य कायम कर लिया।'

रानी—'नाटकशाला में जो हथियार बनते हैं, उनसे क्या अङ्गरेज़ नही हराये जा सकते हैं ?'

राजा को यह व्यंग अखर गया। पर जिस मुस्कान के साथ वह निसृत हुआ था वह आकर्षक थी। साथ ही मोतीबाई, जूही इत्यादि कल्पना में बिजली की तरह कोध गई और आगे आने वाले मृच्छकटिक नाटक के अभिनय ने एक उमङ्ग पैदा की, रानी की मुस्कान का आकर्षण उसी क्षण तिरोहित हो गया और उसके साथ ही उठता हुआ क्षोभ। बोले, 'आप कभी-कभी बहुत कडी चोट कर बैठती हैं।'

रानी ने अदम्य भाव से कहा, 'आपके यहा के भाट क्या केवल प्रशसा और यशगान ही करते हैं या कभी कभी कडखा भी सुनाते हैं ?'

राजा का क्षोभ उभडा, परन्तु उन्होने वहा का वही दबाने का प्रयत्न किया और विषयान्तर करते हुए बोले, 'हमारे यहा कवि, चित्रकार इत्यादि अनेक कलाकार हैं।'

रानी ने भी बात न बढाते हुये पूछा, 'कवि कौन है और क्या करते हैं ?'

राजा ने उत्तर दिया, 'एक हृदयेश है। अच्छा कवि है। एक पजनेश है। रङ्गीन है। कहता अच्छे ढङ्ग से है।

'ये लोग क्या लिखते हैं ?'

'राधागोविन्द का प्रेमवर्णन, नखशिख नायिकाभेद।'

'नखशिख नायिकाभेद क्या ?'

'राधा या गोपियो की चोटी से लेकर एडी तक का कोमल वर्णन। यह नखशिख हुआ। नाना प्रकार की सुन्दर स्त्रियो की वृत्तियो का विविध वर्णन, यह नायिका भेद है।'

'अर्थात् स्त्रियो के पूरे शरीर की सूक्ष्म जाच-पडताल-और, इस काम के लिये इन लोगो को इनाम-पुरस्कार भी दिये जाते होगे ?'

राजा जरा झेपे, परन्तु सहमे नही। बोले, 'इस प्रकार की कविता करने में बहुत विद्वत्ता और मिहनत खर्च करनी पडती है। इसलिये उनको पुरस्कार दिया जाता है। वे लोग राजदरबारो की शोभा हैं।'

रानी ने फिर उसी मुस्कराहट के साथ पूछा, 'भूषण को छत्रपति शिवाजी क्या इसी तरह की कविता के लिये बढावा दिया करते थे ? भूषण तो दरबार की शोभा रहे न होगे ?'

राजा इस व्यङ्ग से कुढ गये और क्षोभ को दबा न सके।

बोले, 'आप हमेशा छत्रपति, और पन्तप्रधान बाजीराव और न जाने किन-किन का नाम दिन रात रटा करती हैं। मैंने कई बार कहा कि इन बातो की छेडछाड में अब कोई सार नही।'

रानी ने कहा, 'मैं भी तो विनती किया करती हू कि उन बातो को बतलाइये जिनमें सार हो।'

राजा—'आप राज्य का प्रबन्ध करना सीखिये। मैं भी इस ओर ध्यान देता हूँ। अच्छी व्यवस्था बनी रहेगी तो राज्य बचा रहेगा अन्यथा अङ्गरेज फिर इसको अपनी देख रेख मे ले-लेगे—या शायद राज्य को खत्म करके अपना अधिकार बर्तने लग जावे।'

रानी—'उस समय क्या नाटकशाला वाले किसी काम न आवेगे ?'

राजा के हृदय में आग लग गई। कुछ कहना चाहते थे कुछ कह गये, 'आपके मन में हठ, नगर-कोट बाहर घोडे पर घूमने का है और सखी सहेलिया भी जगल-टौरियो पर साथ मे घोडे कुदाये तो इससे बढकर न राज्य है, न राज्य प्रबन्ध और न बिचारी नाटकशाला। ठीक है न ?'

रानी के ऊपर उनके क्रोध का कोई प्रभाव नही पडा। बोली, मेरे आपके—दोनो के—लिये वह विशाल महल क्या कम है ?'

राजा पर इस व्यग की चोट पड गई, पर वे गुस्से को पीने लगे।

कुछ सोचकर पूछा, 'क्या सचमुच आपको नाटकशाला का मेरा मनोरञ्जन नापसन्द है ?'

रानी ने तुरन्त उत्तर दिया, 'इन दिनो अब इससे अधिक और हो ही क्या सकता है ? राज्य का काम चलाने के लिये दीवान हैं। डाकुओ का दमन करने और प्रजा को ठीक पथ पर चालू रखने के लिये अँगरेजी सेना है ही। इस पर भी यदि कोई गलती हो गई तो कम्पनी के एजेन्ट की खुशामद कर ली। बस सब काम ज्यो का त्यो मनमाना चलता रहा।'

रानी मुस्कराने लगी।

इस बात मे रानी की विलक्षण बुद्धि का आभास पाकर राजा को जरा विस्मय हुआ और उनके होठो पर बरबस हँसी आई।

[१७]

राजा गंगाधरराव और रानी लक्ष्मीबाई का कुछ समय लगभग इसी प्रकार कटता गया। सन् १८५० में (माघ सुदी सप्तमी स० १६०७) वे सजवज के साथ (कम्पनी सरकार की इजाजत लेकर !) प्रयाग, काशी, गया इत्यादि की यात्रा के लिये गये। लक्ष्मीवाई साथ थी। उनको किले में वन्द रहना पडता था, इस यात्रा में भी तामझाम इत्यादि वन्द सवारियो में चलना पडा, परन्तु नए–नए स्थान देखने के अवसर मिले। इस कारण वन्धनो का क्लेश न अखरा। काशी-यात्रा मे उनको देव-दर्शन और जन्म-गृह दर्शन प्राप्त हुये।

गगाधरराव का क्रोध समय–कुसमय न देखता था। एक दिन काशी नगर मे सैर के लिये निकले। एक विचारा राजेन्द्र बावू मार्ग में पड गया। उसने प्रणाम तो किया, परन्तु खडे होकर ताजीम नही दी। शामत आगई। गगाधरराव ने उसको वेहद पिटवाया। उसने कम्पनी सरकार मे फरियाद की।

जवाव मिला, 'गगाधरराव एक वडे राजा हैं। यदि तुमको खडे होकर ताजीम देना पसन्द न था तो अपने घर मे बैठे रहते!'

रानी को यह सव देख सुनकर काफी क्लेश हुआ था।

तीर्थयात्रा के लिये झाँसी छोडने के पहले जव गगाधरराव को कम्पनी सरकार ने शासन के अधिकार वापिस किये तव पहले का जमा किया हुआ तीस-लाख रुपया कम्पनी ने उनको लौटाया था। उसका उन्होने अपव्यय किया। अपने अनेक हाथियो में उनको सिद्धवकस नामक हाथी वहुत प्यारा था। उसका सारा सामान सोने का वनवाया। और भी अनेक हाथी घोडो का सामान–अम्वारी, हौदा, जीन, झूले इत्यादि-सोने की वनवाई। काशी से एक तामझाम, जिस पर वढिया नक्कासी का काम था, वहुत कीमत देकर मँगवाया। और भी काफी राजसी-ठाट इकट्ठा किया। राजा प्रदर्शन के वहुत प्रेमी थे। रानी को प्रदर्शन वहुत कम

पसन्द था। परन्तु उनको राजा की एक बात अच्छी लगी—उन्होने पाच हजार के लगभग सेना कर ली, लगभग दो सहस्र गोल पुलिस, पाचसौ घोडो का रिसाला, सौ खास पायगा के सिपाही और चार तोपखाने।

झाँसी राज्य में और बुन्देलखण्ड में लगभग हर जगह आताताई और डाकू–बटमार बडा उपद्रव कर रहे थे। गंगाधरराव ने अपने कठोर शासन से इनका दमन किया इस कार्य मे उनको अपने प्रधान-मत्री राघव रामचन्द्र पन्त, दरबार वकील नरसिहराव, और न्यायाधीश वृद्ध नाना भोपटकर से बहुत सहायता मिली। राजा के शासन से अँगरेज सन्तुष्ट थे, क्योकि उपद्रवो का शान्त करना ही राजा का सबसे बडा कर्तव्य समझा जाता था।

राजा गगाधरराव ने कई मौकों पर अँगरेजो की बहुत सहायता की। एक बार अपने विश्वस्त साथी और फौजी अफसर दीवान रघुनाथसिह को कुछ सिपाहियो के साथ मुहिम पर भेज दिया। दीवान रघुनाथसिह आज्ञाकारी योद्धा था। उसने बडी वीरता के साथ अपना कर्तव्य पालन किया। राजा गगाधरराव को अँगरेजो की मैत्री और भी बढी हुई मात्रा में मिली और दीवान रघुनाथसिह को इगलैड और कम्पनी सरकार की रानी विक्टोरिया की ओर से एक प्रशसापत्र तथा खड्ग मिला।

परन्तु रानी लक्ष्मीबाई को अपने पति के इस यश पर हर्ष नही हुआ और न सन्तोष। अभी उनकी आयु लगभग १५ वर्ष के होगी, परन्तु उनका आचार विचार आश्चर्य उत्पन्न करने वाली परिपक्वता कैसा प्रतीत होता था। उस युग की लडकियाँ जिस आयु में खेलना-खाना, पहिनना-ओढना ही सब कुछ समझती होगी, उस आयु में लक्ष्मीबाई गम्भीर और गम्भीरतर होती चली गई।

छुटपन की छबीली मनू, लक्ष्मीबाई के विशाल आदर्शो में विलीन हो गई।

[१८]

राजा गगाधरराव पुरातन पन्थी थे। वे स्त्रियो की उस स्वाधीनता के हामी न थे जो उनको महाराष्ट्र में प्राप्त रही है। दिल्ली, लखनऊ की पर्दा के बन्धेजो को वे जानते थे। उतना बन्धेज वे अपने रनवास में उत्पन्न नही कर सकते थे। यह भी उनको मालूम था। जनता की स्त्रिया मुँह उघाडे फिरे, चाहे घूँघट डाले फिरे, इस विषय में उनको उपेक्षा थी। परन्तु अपने महल में काफी पर्दा वर्तने के वे दृढ पक्षपाती थे।

इसलिए लक्ष्मीबाई किले के बाहर घोडे पर नही जा सकती थी। किले में भी उनकी स्वतन्त्रता पर काफ़ी बन्धन था। तीर्थ यात्रा से लौटने पर किले-भीतर वाले महल के मैदान के चारो ओर ऊँची ऊँची कनाते लगवा दी गई, जिससे उनको घोडे की सवारी इत्यादि में बहुत अडचन होने लगी। मलखम्ब और कुश्ती का प्रबन्ध उनको अपने कक्ष के भीतर ही मोटे और नरम कालीनो की पर्तो पर करना पडा। उन्होने अभ्यास छोडा नही। गगाधरराव ने उनकी सहेलियो को बदलने का प्रयत्न किया, परन्तु सुन्दर, मुन्दर और काशीबाई को वे नही हटा सके।

अन्तर्द्वन्द के कारण गंगाधरराव के मन में क्रोध की मात्रा बढ गई। और अपराधियो को दण्ड देने के लिए वे बिलकुल नए नए साधन काम में लाने लगे।

मृच्छकटिक नाटक के खेल का दिन आया। मोतीबाई ने वसन्तसेना का अभिनय किया और जूही ने उसकी सखी का। राजा ने उस दिन नाटकशाला को खूब सजवाया। कप्तान-गार्डन भी निमन्त्रित हुआ। खेल अच्छा हुआ। नृत्य, गायन, अभिनय सभी की गार्डन ने प्रशसा की।

खेल की समाप्ति पर गार्डन के मुँह से निकल पड़ा, 'महाराजा साहब एक बात समझ मे नही आती। आपकी सस्कृति मे वेश्याओ को इतने आदर का स्थान क्यो दिया गया है ?'

राजा ने हँसकर उत्तर दिया, 'क्यो कि हमारे पुरखे बहुत समझदार थे'।

गार्डन को अपने देश के क्रामवैल के समय का कठमुल्लावाद (Puritanism) और उसके तुरन्त ही बाद का, चार्ल्स द्वितीय के समय का मनमौज–वाद याद आगया। बोला, 'नही महाराज कुछ और बात है। असल में हिन्दुस्थान कई बातो में बहुत गिरा हुआ है।'

गगाधरराव ने कहा, 'फिर कभी बात करूँगा।'

गार्डन चलने को हुआ कि राजा ने एक कोने में खुदाबख्श को देख लिया। तुरन्त अपने अगरक्षक से पूछा, 'यह कौन है ?'

उसने उत्तर दिया, 'खुदाबख्श।'

'यहाँ कैसे आया ?' राजा ने प्रश्न किया।

अगरक्षक उत्तर नही दे पाया। खुदाबख्श ने समझ लिया। और वह तुरन्त भीड में विलीन होकर निकल गया।

गार्डन ने पूछा, 'क्या बात महाराजा–साहब ?'

राजा ने कहा, 'कुछ नही–यो ही। एक आदमी को आज बहुत दिनो के बाद नाटकशाला में देखा है।'

गार्डन चला गया। राजा ने नाटकशाला के प्रहरी को कैद में डलवा दिया और सबेरे पेश किए जाने की आज्ञा दी।

खुदाबख्श को बहुतेरा ढुढवाया, परन्तु पता नही लगा।

दूसरे दिन मोतीबाई नाटकशाला से बरखास्त कर दी गई। नाटकशाला के पात्रो को कोई कारण समझ में नही आरहा था। वे लोग आशा कर रहे थे कि इतना अच्छा अभिनय इत्यादि करने के उपलक्ष में बधाई और पुरस्कार मिलेगे, परन्तु हुआ उल्टा। उनकी सबसे अच्छी अभिनेत्री निकाल दी गई। झासी में जिन लोगो ने मोतीबाई के नृत्य को देखा था अथवा उसका गायन सुना था, सब क्षुब्ध थे।

सबेरे नाटकशाला के प्रहरी की पेशी हुई। राजा ने स्वयं मुकद्दमा सुना।

राजा ने खिसियाकर पूछा, 'क्यो रे नमक हराम यह खुदाबख्श नाटकशाला में कैसे आगया ?'

उसने घिघियाकर उत्तर दिया, 'श्रीमन्त सरकार मैं भूल गया। मुझको याद नही रहा।'

'तू यह भूल गया कि मै उसको देश-निकाला दे चुका हूं ?' राजा ने कड़क कर कहा।

प्रहरी अत्यन्त विनीत भाव से बोला, 'इस बात को श्रीमन्त सरकार बहुत दिन हो गये इसलिये मुझको सुध नही रही। और सरकार ने उस दिन तीर्थ यात्रा से लौटने की खुशी में बहुत लोगो को माफी बख्शी सो मैंने सोचा कि खुदाबख्श को भी माफी मिल गई होगी।'

इस उत्तर से राजा का क्रोध घटा नही, जरा और बढ गया। रोते हुये प्रहरी को सजा दी गई बिच्छू से डसवाने की।

गगाधरराव ने एक विशेप वर्ग के अपराधो के लिये बिच्छू से कटवाने का विधान कर रक्खा था। कुट्ठे में पैरो का डालना भाजना एक साधारण बात थी। गहन अपराधो में हाथ पाव कटवा डालने की जनसम्मत प्रथा जारी थी। परन्तु दबे दबे और थोडी थोडी। दहकते अगारो से डाकुओ के अग जलवाना इस बिधान में शामिल था, परन्तु बिच्छुओ से कटवाना जन-वृत्ति की सहन-शक्ति से बाहर हो गया था।

बिच्छू से कई जगह काटे जाने के कारण प्रहरी बेहद सन्तप्त हुआ अन्त में बेहोश हो गया। राजा समझे मर गया तब उनका क्रोध ठडा पडा। प्रहरी वहा से हटवा दिया गया।

[१६]

कप्तान गार्डन झांसी-स्थित अङ्गरेजी सेना का एक अफसर था। हिन्दी खूब सीख ली थी। राजा गङ्गाधरराव के पास कभी-कभी आया करता था। राजा उसको अपना मित्र समझते थे। वह पूरा अङ्गरेज़ था। साहित्यिक, व्यापार-कुशल, स्वदेश-प्रेमी और भारतवर्ष को घृणा या अवहेलना की वृत्ति से देखने वाला। परन्तु भारतवर्ष के राजाओ के सहलाने-फुसलाने की क्रिया का अभ्यासी—अपने कर्तव्य पालन में दृढ।

राजा से मिलने, गार्डन घोडे पर और कभी तामझाम में बैठकर आता था। नवाबो को दावते-दावते थोडी नवाबी भी अङ्गरेजो में आ गई थी। हुक्का, सुरा, रडियो का नाच, होली-फाग, दशहरा, दिवाली, ईद उत्सव इत्यादि नवाबो, राजाओ और जनता में हेलमेल बनाये रखने के लिये बर्ते जाते थे। परन्तु वे उनमें दूध-पानी नही हुये थे—उनकी सतर्क दृष्टि इङ्गलैंड की ओर बराबर मुडी रहती थी।

राजा ने और कोई मनोरञ्जन समक्ष न देखकर, एक दिन गार्डन को बुलवाया। यह तामझाम मे नगर वाले महल पर आया। वहाँ से राजा उसको किले वाले महल पर ले चले। राजा अपने तामझाम में बैठे। उत्तरी फाटक से जाना चाहते थे। बडी हथसार के नीचे से मार्ग था।* एक हाथी पागल हो गया। इन तामझामो की ओर दौडा। वाहको ने तामझाम कन्धो पर से उतार दिये। परन्तु भागे नही। उनकी कमर में तलवारें थी। म्यानो से निकाल ली। गार्डन के पास कोई हथियार न था। वह हक्कावक्का सा इन मजदूरो के पास आ गया। राजा के पास तलवार थी। उन्होने नही छुई। तामझाम से बाहर निकलकर दौडते हुये प्रमत्त हाथी को, अपनी ओर आती हुई गति को देखने लगे।

गार्डन ने कहा, 'बचो।'

मजदूरो ने कहा, 'बचो।'

---

*इसी हथसार की जगह अब सदर अस्पताल है।

राजा के मुँह से भी निकला, 'बचो।'

परन्तु तलवारे उस मस्त हाथी की गति का निरोध नही कर सकती थी।

इतने में एक ओर से बर्छा लिये एक सिपाही हाथी पर दौड पडा और उसने बर्छे के प्रहार से हाथी की प्रगति को लौटा दिया।

राजा को उस सिपाही ने प्रणाम किया।

राजा ने नाम पूछा।

उसने बतलाया, 'इमामअली। काजी हू सरकार, सांटमारी भी करता हूँ।'

राजा ने कहा, 'शाबाश काजी। इनाम मिलेगा।'

इमामअली बोला, 'सरकार के चरणो में बना रहू और बाल बच्चो का पालन-पोषण होता जावे यही सेवक के लिये गनीमत है।'

राजा ने पारितोषक में कुछ जमीन लगाने की घोषणा की और वह गार्डन के साथ किले के महल में चले गये।

जब दोनो दीवानखाने में बैठ गये तब भी गार्डन के मन में वह हाथी वाली घटना झूल रही थी।

वह बोला, 'सरकार, इनाम रुपये की शकल में दिया जाना चाहिये। इस तरह भूमि लगाते चले जाने से राज्य में चप्पा भर भी न बचेगी।'

राजा ने कहा, 'तब झांसी राज्य में बहादुर ही बहादुर नज़र आवेंगे।'

गार्डन को इस असङ्गत उत्तर से सन्तोष नही हुआ। बोला, 'इस देश में जो कुछ देखता हूँ सब अति के दर्जे पर। थोडे से बहुत धनवान और बहुत से निर्धन। विरला ही अत्यन्त धर्मनिष्ठ और बहुत से कीडो-मकोडो से ज्यादा सडी जिन्दगी बिताने वाले! किसी को जमीनें और जागीरें। छोटे-बडे सब तरह के कामो के लिये और बहुतेरो को हलके से हलके अपराधो के लिये अङ्गहीन करने की सजा! बिच्छुओ से कटवाने का दण्ड!'

राजा का चेहरा तमतमा गया। परन्तु उन्होंने अपने को संयत करके कहा, 'जब जैसा अपराध और अपराधी सामने आवे, वैसा उसको दण्ड देना चाहिये।'

गार्डन ने भाप लिया कि राजा ने अपने उठे हुये क्रोध को भीतर का भीतर धसा लिया है।

बोला, 'सरकार को शायद मालूम होगा हमारे यहाँ के एक बहुत बडे विद्वान ने हिन्दुस्तान भर के लिये एक ही दडविधान[१] प्रस्तुत कर दिया है। वह बहुत विशद और न्यायपूर्ण है। जितने दड रक्खे गये हैं कोई भी अमानुषिक नही।'

'क्या रियासतो में भी उस विधान को जारी किया जावेगा?'

गार्डन ने तत्काल उत्तर दिया, 'नही सरकार। रियासतो को अपना निज का प्रबन्ध अपनी व्यवस्था के अनुसार करने का अधिकार है।'

राजा एक क्षण सोचकर बोले, 'हमारी सन्धियो में यह अधिकार सुरक्षित है।'

सन्धि के शब्द पर गार्डन के मन में तुरन्त खटपट उठी, परन्तु उसने खुशामद के ढङ्ग को अधिक अच्छा समझकर कहा, 'परन्तु सरकार हमारे सम्राट और भारत के गवर्नर-जनरल को उस दिन बहुत अच्छा लगेगा, जब सब रियासतो में एक ही प्रकार का न्याय, एक ही कानून और एक ही तरह की अदालतो की स्थापना हो जाय। इसमें सरकार कोई हर्ज भी नही है। नरेशो का बोझ भी बहुत हलका हो जावेगा और जनता ज्यादा चैन की साँस लेने लग जावेगी।'

राजा ने प्रश्न किया, 'आपके राजाधिराज को बहुत अधिकार होगे?'

गार्डन असमन्जस में पड गया। परन्तु उससे अपने को उबार कर बोला, 'हमारे राजाधिराज ने अपना अधिकार पन्चायत को दे दिया है। वह पचायत कानून बनाती है। शासन करती है।'

---

[१] लार्ड मैकाले का इण्डियन पीनल कोड (भारतीय दंड विधान)।

राजा—'पंचायतें तो हमारे यहाँ गांव-गांव में हैं। इन पचायतो के फैसले को रद्द करने की कोई भी राजा बात नही सोचता। ये पंचायतें अपने-अपने गाव का सभी तरह का प्रबन्ध भी करती हैं। हमारे कर्मचारी उसमें कोई दखल नही देते। केवल वडे वडे मामले मुकद्दमे मेरे सामने आते हैं। उनको नाना—भोपटकर शास्त्री की सलाह से निवटाता हूँ।

गार्डन—'इसमें, सरकार, सहूलियत होने पर भी तरतीव, नियम-सयम जाव्ते-कायदे की कमी है और अन्याय होने की ज्यादा गुञ्जायश है।'

राजा—'आपके देश में क्या पंचायतें नही हैं?'

गार्डन—'युग वीत गये, जब थी। उनका रूप वदल गया है। न्याया-धीश को सम्मति देने और मामले का निर्धार न्याय कराने में पचायत सहयोग देती हैं। इस पंचायत के सहयोग के विना मुकद्दमा नही होता।'

राजा—'हमारे देश की पंचायते तो इससे भी वढकर समर्थ हैं। राज्य लौट-पौट जाते हैं, परन्तु पचायतें अमर रहती हैं।'

गार्डन को हिन्दुस्तानी पञ्चायतों का यह वर्णन वहुत खटका।

अपने क्षोभ को थोडा-वहुत दवाकर उसने कहा, 'अपढ-कुपढ लोगो की पञ्चायतो के ढङ्ग मैले कुचैले ही हो सकते हैं, सरकार। अदालतो की सफाई और निखार को पचायते कैसे पा सकती हैं?'

'वङ्गाल मदरास में आपकी अदालतें पचायतो के सहयोग से न्याय निर्णय करती हैं या यो ही?' राजा ने प्रश्न किया।

गार्डन का मन जरा सिटपिटाया। परन्तु उसने वेधडकी के हठ के साथ उत्तर दिया, 'पचायतो की मदद तो नही ली जाती, परन्तु हिन्दू-मुसलमानो के दीवानी झगडो को सुलझाने के लिये पडित और मौलवियो की सलाह ली जाती है। अपराधो के मामले अदालत के अफसर स्वयं ही निर्धार करते हैं।'

'स्वय!' राजा ने आश्चर्य के साथ कहा, 'स्वयं! सो कैसे?'

गार्डन ने जवाव दिया, 'गवाहो और वकीलो की मदद से।'

राजा ने पूछा, 'हर अदालत में एक-एक वकील रहता होगा?'

गार्डन को राजा की सिधाई पर मन में हँसी आई। उत्तर दिया, 'नही तो सरकार। वादी प्रतिवादी अपने-अपने गवाह वकीलो द्वारा पेश करते हैं। वकील लोग कानून जानते हैं। वे अपने कानूनी ज्ञान द्वारा अदालत की सहायता, ठीक निर्णय पर पहुँचाने मे, करते हैं। यह हमारे देश की संस्था है।'

राजा को हँसी आ रही थी। होठो तक आई, परन्तु उन्होने उसको प्रकट नही होने दिया। बोले, 'वकील क्या गवाहो को पेश करने का काम मुफत में करते हैं?'

गार्डन ने अभिमान के साथ कहा, 'हमारे देश में पहले वकील लोग मुफ्त में यह काम करते थे, परन्तु अब पारिश्रमिक लेने लगे हैं। और इस देश में तो वे लोग करारी रकमें लेते हैं।'

'तब कही लोग न्याय प्राप्त करने की आशा कर पाते है,' राजा खूब हँसकर बोले, 'भाडे के लोगो को बढाने की यह सस्था आप लोग इस देश में किस प्रयोजन से ले आये?'

हिन्दुस्थान के प्रति गार्डन के भीतरी मन में दबी हुई घृणा उभर पडी। बोला, 'आपके देश की न्याय प्रणाली की विपमता मुझको भी मालूम है। उसी अपराध के लिये ब्राह्मण पर एक रुपया दण्ड, ठाकुर पर पचास, वनिये पर पाचसौ और गरीब शूद्र का हाथ पैर कट। सरकार कानून सब के लिये एकसा होना चाहिये।'

राजा को इस तर्क ने ज़रा ज़ेर किया। परन्तु उनको एक व्यङ्ग सूझा। बोले, 'इस कानून ज़ाब्ते के द्वारा आपके इलाको में जनता को न्याय कितने समय में मिल जाता है?'

गार्डन ने शीघ्र उत्तर दिया, अपराध वाले मामलो में दो एक महीने लग जाते हैं और दीवानी मामलो में एकाध साल।'

राजा फिर हँसे। कहा, 'हमारे यहा तो तुरन्त न्याय होता है। मैं तो दो-एक दिन से ज्यादा नही लगाता। दीवानी और अपराधी मामलो का कोई भेद नही करता। पञ्चायतो के निर्णय को सर्वमान्य मानता हू।

आपके इलाकों में यदि पुलिस की गफलत या लापरवाही से चोरी इत्यादि हो जावे तो आप पुलिस को कोई दण्ड देते हैं ?'

'हा सरकार', गार्डन ने उत्तर दिया, 'बरखास्त कर देते हैं, तनज्जुल कर देते हैं।'

राजा ने उत्तेजित होकर कहा, 'इससे जनता को क्या लाभ होता होगा ? मै तो ऐसे मामलो में गफलत करने वाली पुलिस से चोरी का नुकसान भरवाता हूँ।'

गार्डन बोला, 'तब जनता पर पुलिस की धाक नही रह सकती। लोग उसकी बिलकुल परवाह नही करते होगे। ऐसा शासन बहुत दिनो नही टिक सकता सरकार।'

राजा और भी उत्तेजित हुये। उन्होने कहा, 'साहब, जनता पर मेरी धाक होनी चाहिये, न कि मेरे अफसरो की। वह राज्य भी बहुत समय तक नही टिक सकता जो कर्मचारियो और पुलिस की धाक पर आश्रित हो। मै तो अपने अपराधी कर्मचारियो को 'लोहे की मछली के' कोडे से ठोकता हूँ।'

गार्डन खिसिया गया। बोला, 'सरकार अनियंचित सत्ता बहुत बुरी चीज़ है। इस परिपाटी के मानने वाले चाहे जो कुछ मनमाना कर बैठते हैं। आपने बनारस में एक बिचारे राजेन्द्र बाबू को अकारण पिटवा दिया। हमारे पोलिटिकल विभाग को जवाब देते-देते मुसीबत आई।'

राजा को बनारस वाली घटना की स्मृति के साथ-साथ यह भी याद आ गया कि इसी पोलिटिकल विभाग की इजाज़त मिलने पर झाँसी राज्य के बाहर कदम रख पाया था।

'अशिष्ठता को दण्डित करने में मैं कभी नही चूकता', राजा ने कहा, 'फिर चाहे मैं कही होऊँ—अपने राज्य में होऊँ चाहे राज्य के बाहर।' उसी समय उनको खुदाबख्श और उसके सम्बन्ध वाला प्रसङ्ग याद आ गया।

गार्डन को भी वही प्रसङ्ग याद आया। बोला, 'यह नही हो सकता चाहे कोई भी राजा या नवाब हो गवर्नर जनरल साहब किसी को इस तरह का उद्दण्ड व्यवहार नही करने देगे। आपका गौरव रखने के लिए ही बनारस वाले उस पीडित को वैसा जवाब दिया गया था, आगे ऐसा न हो सकेगा।'

गङ्गाधरराव के हृदय में शिवराव भाऊ का खून खलबला उठा। कुछ क्षण चुप रहे। बिजली की कोंध के समान—दो–एक उत्तर मन में उठे, परन्तु उनको वे क्रोध के कारण प्रकट न कर सके।

अन्त मे वे केवल यह कह पाये, 'साहब, मै तो एक छोटा सा संस्थापक हू। तो भी चाहू तो बहुत कुछ कर सकता हू। लेकिन सभी राजाओ ने चूडिया पहिन रक्खी हैं। क्या यह आश्चर्य की बात नही कि अपने ही देश में हम सब कैद हैं? सवासौ वर्ष पहले की बात याद कीजिये। आप लोगो की क्या शान थी, जब दिल्ली के बादशाह और पूना के पन्तप्रधान के दरबार में साष्टाङ्ग प्रणाम कर करके अर्ज़िया पेश करते थे।'

राजा थर्राहट के मारे काप उठे। गार्डन की व्यापार—कुशल, बुद्धि तुरन्त सजग हुई।

उसने मिन्नत सी करते हुये कहा, 'सरकार बुरा न म नें। मैंने अपनी ओर से कुछ नही कहा मैंने जो कुछ निवेदन किया वह गवर्नर जनरल और कम्पनी सरकार की नीति का आभास मात्र है। पचायतो के बनाये रखने के ही विषय को लीजिये। अनेक अङ्गरेज अफसर उनको सुरक्षित रखना चाहते हैं, परन्तु अधिकाश मत कानून और जाब्ते के बेलन द्वारा हिन्दुस्थान की सारी समतल और ऊवडखावड सस्थाओ को चौरस कर डालने के पक्ष में हैं। मेरे ऊपर सरकार की वही कृपा बनी रहे जो सदा से चली आई है।

गार्डन को यह भी ख्याल था कि यदि राजा ने इस विवाद की सूचना कुछ बढाकर गवर्नर जनरल के पास भेजदी तो अवश्य और नाहक डाट-फटकार पडेगी।

राजा ठडे पड गये। गार्डन के तामझाम से उसका हुक्का मगवाया गया। उसने पिया। फिर राजा ने उसको पान दिया। वह खाकर चला गया।

रानी के पास इस विवाद का साराश पहुच गया।

वडी प्रसन्न हुई।

अपनी सब सहेलियो के सामने कहा, 'आज मै जितनी सुखी हुई उतनी कदाचित ही कभी हुई होऊँ। मुझको शिवराव भाऊ की वहू होने का वहुत घमड है। मुझको अपने राजा का, अपनी झाँसी का, अभिमान है। मन को केवल एक कसर खटक रही है-मुझ से और उस गार्डन से वात हुई होती तो मैं ऐसी करकरी सुनाती कि उसको अपने पुरखे याद आजाते। मुझको दादा पेशवा ने वतलाया है कि सौ सवा सौ वर्ष पहले इस अङ्गरेज कौम ने हमारे देश में किन किन उपायो से क्या क्या किया। मेरा वस चले तो······'

रानी ने दात पीसे और विशाल नेत्र तरेरे।

काशीवाई ने धीरे से कहा, 'सरकार ने कहा था कि बिठूर से वाला गुरू को कुश्ती सीखने के लिये वुलाया जावेगा।'

रानी ने तत्क्षरण अपनी सहज मुस्कराहट पाली। वोली, 'हाँ री, उनको शीघ्र वुलवाऊँगी।'

[२७]

वसन्त आगया। प्रकृति ने पुष्पाञ्जलिया चढाई। महक बरसाई। लोगो को अपनी श्वास तक में परिमल का आभास हुआ। किले के महल में रानी ने चैत्र की नवरात्र में गौर की प्रतिमा की स्थापना की। पूजन होने लगा। गौर की प्रतिमा आभूषणो और फूलो के शृङ्गार से लदगई और धूप-दीप तथा नैवेद्य ने कोलाहल सा मचा दिया। हरदी कूं कूं (हल्दी कु कुम) के उत्सव मे सारे नगर की नारिया व्यग्र, व्यस्त होगई।

परन्तु उसमें से बहुत थोडी गले में सुमन-मालाए डाले थी। उनके पास हृदयेश की कविता और उसका फल दूसरे रूप में पहुचा था-उनको भ्रम था कि राजा-रानी हमलोगो के इस शृङ्गार को पसन्द नही करते। इसलिये जब वे स्त्रियाँ, जो पूजन के लिये रनवास में आई-चढाने के लिये तो अवश्य फूल ले आई परन्तु गले में माला डाले कुछेक ही आई।

किले में जाने की सब जातियो को आज़ादी थी। किले के उस भाग में जहा महादेव और गणेश का मन्दिर है और जिसको शकर किला कहते थे, सब कोई जासकते थे। अछूत कहलाने वाले चमार, बसोर और भगी भी। जहा अपने कक्षमे रानी ने गौर को स्थापित किया था, वहाँ इन जातियो की स्त्रिया नही जा सकती थी, परन्तु कोरियो और कुम्हारो की स्त्रिया जासकती थी। कोरी और कुम्हार कभी अछूत नही समझे गये थे।

सुन्दर ललनाओ को आभूषण से सजा हुआ देखकर रानी को हर्ष हुआ, परन्तु अधिकाश के गलो में पुष्पमालाओ की त्रुटि उनको खटकी। उन्होने स्त्रियो से कहा, 'तुम लोग हार पहिन कर क्यो नही आई? गौर माताको क्या अधूरे शृङ्गार से प्रसन्न करोगी?'

स्त्रियो के मन में एक लहर उद्वेलित हुई।

लाला भाऊ बख्शी की पत्नी उन स्त्रियो की अगुआ बन कर आगे आई। वह यौवन की पूर्णता को पहुच चुकी थी। सौन्दर्य मुखमण्डल पर

छिटका हुआ था। बख्शिनजू कहलाती थी। हाथ जोडकर बोली, 'जब सरकार के गले में माला नही है तब हम लोग कैसे पहिने ?'

रानी को असली कारण मालूम था। बख्शिनजू के बहाने पर उनको हँसी आई। पास आकर उसके कन्धे पर हाथ रक्खा और सबको सुनाकर कहने लगी, 'बाहर मालिने नाना प्रकार के हार गूंथे बैठी हुई हैं। एक मेरे लिये लाओ। मैं भी पहनूंगी । तुम सब पहिनो और खूब गागा कर गौर माता को रिझाओ । जो लोग नाचना जानती हो, नाचें। इसके उपरान्त दूसरी–रीति का कार्य होगा।'

स्त्रिया होडाहीसी में मालिनो के पास दौडी, परन्तु मुन्दर पहले माला ले आई। बख्शिन जरा पीछे आई। मुन्दर माला पहिनाने वाली ही थी कि रानी ने उसको मुस्कराकर बरज दिया। मुन्दर सिकुड सी गई।

रानी ने कहा 'मुन्दर एक तो तू अभी कुमारी है, दूसरे तेरे हाथ के फूल तो नित्य ही मिल जाते हैं। बख्शिनजू के फूलो का आशीर्वाद लेना चाहती हू।'

बख्शिन हर्षोत्फुल्ल हो गई। मुन्दर को अपने दासीवर्ग की प्रथा का स्मरण हो आया—विवाह होते ही महल और किला छोडना पडेगा, उदास हो गई। रानी समझ गईं। बख्शिन ने पुष्पमाला उनके गले में डालकर पैर छुए। रानी ने उठाकर अङ्क में भर लिया। फिर मुन्दर का सिर पकडकर अपने कन्धे से चिपटा कर उसके कान में कहा, 'पगली, क्यो मन गिरा दिया ? मेरे पास से कभी अलग न होगी।'

मुन्दर उसी स्थिति में हाथ जोडकर धीरे से बोली, 'सरकार, मैं सदा ऐसी ही रहूगी और चरणो मे अपनी देह को इसी दशा में छोड़ूंगी।'

फिर अन्य स्त्रियो ने भी रानी को हार पहिनाये, इतने कि वे ढक गईं और उनको सास लेना दूभर होगया। सहेलिया उनके हार उतार-उतार कर रख देती थी और वह पुन: पुन. ढांक दी जाती थी।

अन्त में कोने में खडी हुई एक नववधू माला लिये बढी। उसके कपड़े बहुत रग-बिरगे थे। चांदी के ज़ेवर पहिने थी। सोने का एकाध

ही था। सब ठाठ सोलहआना बुन्देलखण्डी। पैर के पैजनो से लेकर सिर की दाऊनी (दामिनी) तक सब आभूषण स्थानिक। रङ्ग ज़रा साँवला। बाकी चेहरा रानी की आकृति, आँख-नाक से बहुत मिलता-जुलता? रानी को आश्चर्य हुआ। और स्त्रियो के मन में काफी कुतूहल। वह डरते डरते रानी के पास आई।

रानी ने मुस्कराकर पूछा, 'कौन हो?'

उत्तर मिला, 'सरकार हो तो कोरिन।'

'नाम?'

'सरकार. झलकारी दुलैया।'

'निस्सन्देह जैसा नाम है वैसे ही लक्षण हैं। पहिनादे अपनी माला।' झलकारी ने माला पहिनादी और रानी के पैर पकड लिये।

रानी के हठ करने पर झलकारी ने पैर छोडे।

रानी ने उससे पूछा, 'क्या बात है झलकारी? कुछ कहना चाहती है क्या?'

झलकारी ने सिर नीचा किये हुये कहा, 'मोय जा बिनती करने—मोय माफी मिल जाय तो कओ।'

रानी ने मुस्कराकर अभयदान दिया।

झलकारी बोली, 'महाराज, मोरे घर में पुरिया पूरबे की और कपडा बुनबे को काम होत आओ है। पै उनने अब कम कर दओ है। मलखब, कुश्ती और जाने काका करन लगे। अब सरकार घर कैसे चलै?'

रानी ने पूछा, 'तुम्हारी जाति मे और कितने लोग मलखब और कुश्ती में ध्यान देने लगे हैं?'

'काये मै का घर-घर देखत फिरत?' झलकारी ने बडी-बडी कजरारी आँखे घुमाकर, मुस्कराकर तीक्ष्ण उत्तर दिया।

रानी हँस पडी, 'यह तो तुम्हारे पति बहुत अच्छा काम करते हैं। तुम भी मलखब, कुश्ती सीखो। इनाम दूँगी। घोडे की सवारी भी सीखो।'

झलकारी लम्बा घूंघट खीचकर नव गई। घूंघट में ही बेतरह हँसी। रानी भी हँसी और अन्य स्त्रियो में भी हँसी का स्रोत फूट पड़ा।

लगभग सभी उपस्थित स्त्रियो ने ज़रा चिन्ता के साथ सोचा, 'हम लोगो से भी मलखब, कुश्ती के लिये कहा जावेगा वडी मुश्किल आई।'

उन लोगो ने उन फूलो के ढेरो और आभूपणो में होकर अखाडो और कुश्तियो को झाँका तथा परम्परा की लज्जा और सङ्कोच में वे ठिठुर सी गई। उनकी हँसी को एक जकड सी लग गई।

झलकारी बोली, 'महाराज, मैं चकिया पीसत हो, दो-दो तीन-तीन मटकन में पानी भर-भर लैं आउत, राँटा* कातत······'

रानी ने कहा, 'तुम्हारे पति का क्या नाम है ?'

झलकारी सिकुड गई।

वख्शिन ने तपाक से कहा, 'आज हम लोग आपस में कुंकुम रोरी लगाते समय एक दूसरे से पति का नाम पूछेगे ही। झलकारी को भी वतलाना पडेगा उस समय। परन्तु··· ···' वह नखरे के साथ दूसरी स्त्रियो की ओर देखने लगी।

रानी ने हँसकर पूछा, 'परन्तु क्या वख्शिनजू ?'

वख्शिन ने उत्तर दिया, 'सरकार वडे काम पहले राजा से आरम्भ होते हैं। आज के उत्सव की परिपाटी में रिवाज़ के अनुसार सवको अपने अपने पति का नाम लेना पडेगा, परन्तु प्रारम्भ कौन करेगा ? क्या यह भी हम लोगो को वतलाना पडेगा ?'

कुछ स्त्रियाँ हँस पडी। कुछ ताली पीटकर थिरक गईं। रानी की सहेलियाँ मुस्करा-मुस्करा कर उनका मुँह देखने लगी। रानी के गौर मुख पर ऊपा की अरुण स्वर्ण रेखाये सी खिच गईं। वह मुस्कराई जैसे एक क्षण के लिये ज्योत्स्ना छिटक गई हो। जरा सिर हिलाया मानो मुक्त-पवन ने फूलो से लदी फुलवारियो को लहरा दिया हो।

---

* चरखा। चरखा चलाने की प्रथा बुन्देलखण्ड में, ऊँचे घरानो तक में, घर-घर थी।

रानी ने बख्शिन से कहा, 'तुम मुझसे बडी हो, तुमको पहले बत-लाना होगा।'

'सरकार हमारी महारानी हैं। पहले सरकार बतलावेगी। पीछे हम लोग आज्ञा का पालन करेगी।' बख्शिन ने घूँघट का एक भाग होठो के पास दबाकर कहा।

हरदी कूँकूँ के उत्सव पर सधवा स्त्रिया एक दूसरे को रोरी का टीका लगाती हैं और उनको किसी न किसी बहाने अपने पति का नाम लेना पडता है।

रानी ने कहा, 'बख्शिन जू अपनी बात पर दृढ रहना। आज्ञा पालन में आगा पीछा नही देखा जाता।'

'परन्तु धर्म की आज्ञा सबके ऊपर होती है सरकार।' बख्शिन हठ पूर्वक बोली।

रानी के गोरे मुख-मडल पर फिर एक क्षण के लिये रक्तिम आभा झाई सी दे गई। बोली, 'बख्शिन जू याद रखना मैं भी बहुत हैरान करूँगी। मेरी बारी आयगी तब मैं तुम्हे देखूँगी।'

बख्शिन ने प्रश्न किया, 'अभी तो मेरी बारी है सरकार बतलाइये, महादेव जी के कितने नाम हैं।'

रानी ने अपने विशाल नेत्र जरा झुकाये। गला साफ किया बोली, 'शिव, शकर, भोलानाथ, शम्भु, गिरिजापति · '

सरकार को पूरा कोष याद है। अब यह बतलाइये कि महादेव जी के जटा जूट में से क्या निकला है?

'सर्प, रुद्राक्ष · · · ·'

'जी नही सरकार—किसकी तपस्या करने पर, किसको महादेव बाबा ने अपनी जटाओ में छिपाया, और कौन वहा से निकलकर हिमा-चल से बहकर इस देश को पवित्र करने के लिये आया? ब्राह्मावर्त के नीचे किसका महान् सुहावनापन है?'

'गङ्गा का,' यकायक लक्ष्मीबाई के मुँह से निकल पड़ा।

उपस्थित स्त्रियाँ हर्ष के मारे उन्मत हो उठी। नाचने लगी, गाने लगी। झलकारी ने तो अपने बुन्देलखडी नृत्य में अपने को विसरा सा दिया। रानी उस प्रमोद में गौर की प्रतिमा की ओर विनीत कृतज्ञता की दृष्टि से देखने लगी। आमोद की उस थिरकन का वातावरण जब कुछ स्थिर हुआ, रानी ने आनन्द विभोर बख्शिन का हाथ पकडा।

कहा, 'बख्शिनजू सावधान हो जाओ। अब तुम्हारी बारी आई।'

बख्शिन के मुँह पर गुलाल सा बिखर गया।

नत मस्तक होकर बोली, 'सरकार अभी यहाँ बडे बडे मन्त्रियो और दीवानो की स्त्रिया और बहुएँ हैं। हम लोग तो सरकार की सेना के केवल बख्शी ही है।'

रानी ने मुस्कराते मुस्कराते दात पीस कर विशाल नेत्रो को तरेर कर जिनमें होकर मुस्कराहट विवश झरी पड़ रही थी,—कहा, 'बख्शी सेना का आधार, तोपो का मालिक, प्रधान सेनापति के सिवाय और किसी से नीचे नही। राजा के दाहिने हाथ की पहली उङ्गली, और तुम यहा उपस्थित स्त्रियो में सबसे अधिक शरारतिन! मेरे सवालो का जवाब दो।'

बख्शिन ने अपनी मुख मुद्रा पर गम्भीरता क्षोभ और अनमनेपन की छाप बिठलानी चाही। परन्तु लाज से बिखेरी हुई चेहरे की गुलाली में से हँसी बरबस फूटी पड रही थी।

बख्शिन बोली, 'सरकार की कलाही इतनी प्रबल है कि मेरा हाथ टूटा जा रहा है।'

रानी ने कहा, 'तुम्हारी कलाही भी इतनी ही मजबूत बनवाऊँगी, बात न बनाओ। मेरे सवाल का जवाब दो। बोलो मेरे पुरखो के नाम याद हैं?'

बख्शिन सम्भल गई। उसने सोचा मारके का प्रश्न अभी दूर है।'

बोली, 'हाँ सरकार। जिनकी सेवा में युग बीत गये उनके नाम हम लोग कैसे भूल सकते हैं?'

'बतलाओ मेरे ससुर का नाम।' रानी ने मुस्कराते हुये दृढ़तापूर्वक कहा।

चतुर बख्शिन गडबडा गई । उसके मुँह से निकल गया—'भाऊ साहब ।'

बख्शिन के पति का नाम लाला भाऊ था ।

रानी ने हँसकर बख्शिन का हाथ छोड दिया ।

उपस्थित स्त्रिया खिल खिला कर हँस पडी । बख्शिन को अपने पति का नाम बतलाना तो जरूर था, परन्तु वह रानी को थोड़ा परेशान करके ही बतलाना चाहती थी, लेकिन रानी ने अनायास ही बख्शिन को परास्त कर दिया ।

इसके उपरान्त रानी ने चुलबुली झलकारी को बुलाया । उसके पति का वहा किसी को नाम नही मालूम था । इसलिये बहानो की गुन्जाइश न थी ।

रानी ने सीधे ही पूछा, 'तुम्हारे पति का नाम ?'

झलकारी के पति का नाम पूरन था । पति का नाम बतलाने के लिये व्यग्र थी, परन्तु उत्सव की रगत बढाने के लिए उसने जरा सोच विचार कर एक ढग निकाला ।

बोली, 'सरकार, चन्दा पूरनमासी को ही पूरी पूरी दिखात है न ?'

रानी ने हँसकर कहा, 'ओ हो ? पहले ही अरसट्टे मे फिसल गई ! पूरन नाम है ?'

झलकारी झेंप गई । चतुराई विफल हुई । हँस पडी ।

इसी प्रकार हँसते खेलते और नाचते गाते स्त्रियो का वह उत्सव अपने समय पर समाप्त हुआ ।

अन्त में रानी ने स्त्रियो से एक भीख सी मागी, 'तुममें से कोई बहिनो के बराबर हो, कोई काकी हो, कोई माई, कोई फूफी । फूल सदा नही खिलते । उनमें सुगन्धि भी सदा नही रहती । उनकी स्मृति ही मन में बसती है । नृत्य गान की भी स्मृति ही सुख दायक होती है । परन्तु इन

*शिवराव भाऊ गङ्गाधरराव के पिता थे ।

सब स्मृतियो का पोषक यह शरीर और इसके भीतर आत्मा है। उनको पुष्ट करो और प्रबल बनाओ ! क्या मुझे ऐसा करने का वचन दोगी ?'

उन स्त्रियो ने इस बात को समझा हो, या न समझा हो, परन्तु उन्होने हा–हा की। उन लोगो को डर लगा कि वही और तत्काल, कही मल–खब और कुश्ती न शुरू कर देनी पडे ! इत्र पान के उपरान्त चली गई।

एक बात लेकिन स्पष्ट थी–जब वे गई तब वे किसी एक अदृष्ट, अवर्ण्य तेज से ओतप्रोत थी।

उसके उपरान्त फिर झाँसी नगर की स्त्रिया संध्या समय थालो में दीपक सजा–सजा कर और गले में बेला, मोतिया, जाही, जुही इत्यादि की फूल–मालाए डाल डाल कर मन्दिरो में जाने लगी। स्त्रियो को ऐसा भान होने लगा जैसे उनका कोई सतत सरक्षण कर रहा हो, जैसे कोई संरक्षक सदा साथ ही रहता हो, जैसे वे अत्याचार का मुकाबिला करने की शक्ति का अपने रक्त में सचार पा रही हों।

[२१]

नाटकशाला की ओर से गङ्गाधरराव की रुचि कम हो गई। वे महलो में अधिक रहने लगे। परन्तु कचहरी दरबार करना बन्द नही किया। न्याय वे तत्काल करते थे—उल्टा सीधा जैसा समझ में आया, मनमाना। दण्ड उनके कठोर और अत्याचार पूर्ण होते थे, लेकिन स्त्रियो को कभी नही सताते थे। और न किसी की धन सम्पत्ति लूटते थे।

झाँसी की जनता उनसे भयभीत थी, परन्तु अपनी रानी पर मुग्ध थी। रानी शासन में कोई प्रत्यक्ष भाग नही लेती थी, किन्तु राजा के कठोर शासन में जहाँ कही दया दिखलाई पडती थी, उसमे जनता रानी के प्रभाव के आभास की कल्पना करती थी।

कम्पनी का झाँसी प्रवासी असिस्टेन्ट पोलिटिकल एजेन्ट राजा के कठोर शासन, अत्याचार इत्यादि के समाचार गवर्नर जनरल के पास बराबर भेजता रहता था। उनके किसी भी सत्कार्य का समावेश उन समाचारो में न किया जाता था। और राज्यो के साथ-साथ, कलकत्ते में झाँसी राज्य की भी मिसिल तैयार होती चली जा रही थी।

अङ्गरेजो का चौरस करने वाला बेलन बेतहाशा, लगातार और ज़ोर के साथ चल रहा था। अङ्गरेज लोग अपनी दूकान में हिन्दुस्थान को अधूरी या अधकचरी सौदा का रूप लिये नही देख सकते थे। एक कानून, एक जाब्ता, एक मालिक, एक नजर, इसमें अनैक्य को तिल भर भी स्थान देने की गुञ्जायश न थी। मौका मिलते ही छोटे मोटे रजवाड़े साफ हजम! भारतीय जनता के सुख के लिये!!

ऊँचे पदो पर भारतीय पहुँच नही पावे। भारतीय सस्कृति हेच और नाचीज है इसलिये पनपने न पावे। भारत में बहुत फालतू सोना-चाँदी है। इसलिये अङ्गरेजी दूकान की रोकड बढती चली जावे। जनता स्वाधीनता का नाम ले तो उसको बड़ी रियासतो के अन्धेरो का संकेत करके चुप कर दिया जावे। बडी रियासत वाले जरा भी सिर उठावे तो

छोटी रियासतो को किसी न किसी वहाने घोट-घाटकर वडी रियासतों को चुप रहने का सवक सिखाया जावे।

सवसे वडा काम जो अङ्गरेजो ने हिन्दुस्थानी जनता की भलाई (!) के लिये किया, वह था पञ्चायतो का सर्वनाश। अङ्गरेजो को इस बात के परखने में बिलकुल विलम्ब नही हुआ कि उनके कानून के सामने हिन्दुस्थान की आत्मा का सिर तभी झुकेगा जब यहाँ की पञ्चायते विलीन हो जायेंगी, और हिन्दुस्थानी, अर्जियाँ लिये उनकी बनाई हुई साहबी अदालतो के सामने मुह वाये भटकते फिरेगे।

यह सब उन्नीसवी शताब्दि के वैज्ञानिक ढङ्ग से हुआ। जो परिस्थिति कठोर से कठोर पठान या मुगल नरेश अपने प्रकट अत्याचारो से उत्पन्न नही कर पाये थे, वह अङ्गरेजो ने अपनी वैज्ञानिक हिकमत से उत्पन्न कर दी। वडे-बड़े राजा-महाराजा और नवाब अपनी जनता का दामन छोड कर अङ्गरेजो का मुँह ताकने लगे। पुरुपार्थ की जरूरत न थी, इसलिये सिर डुबोकर विलासिता के पोखरो में घुस पडे। अङ्गरेजी वन्दूक और सङ्गीन उनकी पीठ पर थी, जनता की परवाह ही क्या की जाती?

अङ्गरेजो को केवल एक वात का खुटका था—उनके इलाको के हिन्दू और मुसलमान धर्म के इतने ढकोसले क्यो मानते हैं? किसी दिन इन ढकोसलो की श्रद्धा में होकर हमें नफरत की निगाह से न देखने लगें? इस धर्म से लिपटी हुई आत्मा का कैसे उद्धार कर के अपना भक्त बनाया जावे? वस इनकी रूहानी भक्ति मिली कि हिन्दुस्थान मे अपना राज्य अमर और अक्षय हो गया।

इसलिये सरकारी पाठशालाओ में वाइविल की शिक्षा अनिवार्य कर दी गई। एमेरिका हाथ से निकल गया तो क्या हुआ? सोने की चिडिया, सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी—भारतभूमि—तो हाथ में आई! यह न जाने पावे किसी तरह भी हाथ से! मदिरो की मूर्तियाँ मत तोडो, मसजिदों को अपवित्र मत करो—परन्तु धर्म पर से श्रद्धा को हटा दो, फल उससे भी कही बढ़कर होगा। और कोने कोने में ढौंडी पीट दो कि हम धर्मो के

विषय में बिलकुल तटस्थ हैं—हमारा एकमात्र आदर्श हिन्दुस्थान के लुटेरो और डाकुओ का दमन करके शान्ति स्थापित करने का है, जिससे खेती—किसानी आबाद हो सके और व्यापार बेरोकटोक चल सके। किसका व्यापार ? किसके लिये खेती–किसानी ? उसी अङ्गरेज़ दूकानदार के लिये !

गगाधरराव यह सब अच्छी तरह नही समझते थे, परन्तु उनके पहले पूना में एक दुबला-पतला व्यक्ति नाना फडनीस हुआ था। वह खूब समझता था, एक एक नस, एक एक रग, राई-रत्ती ! उसने हिन्दुस्थान के तत्कालीन नेताओ को बहुत समझाता, बहुत सावधान किया, परन्तु वे मूर्ख कुछ न समझे ! अपनी महत्वकाक्षाओ की प्रेरणा से परस्पर कट मरे।

अङ्गरेजो ने पञ्जाब को परास्त करके हाल ही में अपने हाथ में किया था। बिहार और बगाल में राज्य था ही। मध्य देश बपौती का रूप धारण करता चला जाता था। इनके सबके बीच में दो बडे-बडे रोडे थे—एक अवध की मुसलमानी नवाबी और दूसरी झाँसी की बडी हिन्दू रियासत। ये दोनो किसी प्रकार खतम हो जायँ तो पाँचो घी में और फिर हो चौरस करने वाले अङ्गरेजी बेलन की जय !

गगाधरराव के पास गार्डन और कुछ अन्य अङ्गरेज आया करते थे, परन्तु गार्डन और वे, केवल दोस्ती निभाने नही आया करते थे। राज्य की भीतरी बातो का पता लगाकर गवर्नर जनरल को सूचना देना उनका प्रधान कर्तव्य था।

गगाधरराव के कोई सन्तान उस समय तक नही हुई थी। दूसरा विवाह सन्तान की आकाक्षा से किया था। रानी गर्भवती भी थी, परन्तु यह अनिवार्य नही था कि उनके पुत्र ही उत्पन्न हो। यदि वह निस्सन्तान मर गये तो झासी को तुरन्त अङ्गरेजी राज्य में मिला लिया जावेगा। अङ्गरेजो के अन्तर्मन में यह निहित था। इसीलिये गार्डन इत्यादि गगाधरराव की खरी–खोटी भी सुन लेते थे। एक दिन शायद आवे जब

झासी–निवासी हमारी खरी–खोटी चक्रवृद्धि व्याज के साथ सुनेगे। भीतर–भीतर यह लालसा घर किये बैठी थी।

ठण्ड पडने लगी थी। तारे अधिक चमक–दमक के साथ चन्द्रिका को अपनी विस्तृत झीनी चादर उढाकर आकाश में उपस्थित हुये। गार्डन और राजा गगाधरराव महल के दीवानखाने में बातचीत कर रहे थे।

गगाधरराव—'बाजीराव पन्तप्रधान के देहान्त का समाचार मुझको मिल गया था, परन्तु यह हाल में मालूम हुआ कि उनकी पैंशन जब्त कर ली गई है। यह अच्छा नही किया गया।'

गार्डन—'सोचिये सरकार, आठ लाख रुपया साल कितना होता है और फिर विठूर जागीर मुफ्त मे! उस पर खर्च कुछ नही।'

गगाधरराव—'मुझको याद है—मुझको विश्वसनीय लोगो ने बतलाया है कि कम्पनी ने सन् १८०२ मे* उक्त पन्तप्रधान के साथ जो सन्धि की थी, उसमें गवर्नर जनरल ने अपने हाथ से लिखा था 'यावच्चन्द्रदिवाकरौ' कायम रहेगी। परन्तु चन्द्रमा और सूर्य सब जहा के तहा हैं। सन्धिपत्र पर दस्तखत किये अभी ५० वर्ष भी नही हुये और सारा मैदान सफाचट कर दिया!'

गार्डन—'सरकार, सन्धिपत्र मेरे सामने नही है, इसलिये ठीक-ठीक नही कह सकता कि उसमें क्या लिखा है, परन्तु सुनता हूँ उनको जब १५, १६ वर्ष पीछे पैंशन दी गई तब यह लिखा था कि पैंशन को वह और उनका कुटुम्ब ही भोग सकेगा।'

गंगाधरराव—'नाना धोंडूपन्त जो अब जवान है, पन्तप्रधान का दत्तक पुत्र है। क्या वह उनका कुटुम्बी न माना जावेगा?'

गार्डन—हमारे देश के कानून में गोद नही मानी जाती।'

गगाधरराव—'पर हिन्दुस्थान तो आपका देश नही है।'

---

* सन् १८०२ ई० की सन्धि। परिशिष्ठ मे देखिये।

गार्डन—'अङ्गरेज कम्पनी का राज्य तो है। राजा अपना कानून वर्तता है न कि प्रजा का। सरकार अपने राज्य में अपना ही कानून तो वर्तते हैं न ?'

गगाधरराव—'हमारा और हमारी प्रजा का कानून तो एक ही है।'

गार्डन—'यह बिलकुल ठीक है सरकार। और दीवानी मामलो में हमारे इलाको में भी प्रजा का ही कानून माना और चलाया जाता है, परन्तु रियासतो के सम्बन्ध मे यह बात लागू नही की जाती।'

गगाधरराव—'क्यो, रियासते और उनके रईस क्या साधारण प्रजा से भी गये-बीते है ?'

गार्डन—'सो सरकार मै नही जानता। कम्पनी सरकार इङ्गलेड में कानून बना देती है। कुछ कानून गवर्नर जनरल भी बनाते हैं। हमको उन्ही के अनुसार चलना पडता है।'

गगाधरराव—हमारे धर्म में विधान है कि यदि औरस पुत्र पिडदान देने के लिये न हो तो दत्तक पुत्र ठीक औरस पुत्र की तरह पिंडदान दे सकता है। आप लोग क्या राजाओ को इससे वचित करना चाहते हैं ?'

गाडन—'नही सरकार। बडी रियासतो को यह अधिकार दे दिया गया है। परन्तु जो रियासते कम्पनी सरकार की आश्रित है, उनमें गोदी गवर्नर जनरल की स्वीकृति के विना नही ली जा सकती। यदि ली जावे, तो गोद लिया लडका राज्य की गद्दी का अधिकारी नही माना जा सकता। वह राजा की निजी सम्पत्ति अवश्य पा सकता है और पिंडदान मजे में दे सकता है। सरकार ने हमारे धर्म की पुस्तक पढी। उसका हिन्दी में अनुवाद हो गया है। छप गई है।'

गगाधरराव—'छप गई है अर्थात् ?'

गार्डन—'छापाखाना में छपती हैं। उसमे यन्त्र होते हैं। वर्णमाला के अक्षर ढले हुये होते हैं। उनको मिला-मिलाकर स्वाही मे कागज पर छाप लेते हैं। हजारो की सख्या में पुस्तके छप जाती हैं।'

गगाधरराव—ऐ ! यह तो विलक्षण यन्त्र है। मैं ग्रंथो की नकल करवा-करवा कर हैरानी में पडा रहता हू और न जाने कितना रुपया व्यय किया करता हू। एक यन्त्र हमारे लिये भी मँगवा दीजिये।'

गार्डन को डर लगा। ऐसा भयंकर विषधर झासी मे दाखिल किया जावे ! पुस्तके छपेगी, समाचार पत्र निकलेंगे। जनता सजग हो जावेगी। अङ्गरेजो का रोब धूल मे मिल जावेगा। जिस आतंक के बल-भरोसे कम्पनी-सरकार राज्य चला रही है, वह हवा मे मिल जावेगा। गार्डन ने सोचा था कि राजा को एक कडवे प्रसग से हटाकर किसी मनोरञ्जक प्रसग में ले जाऊँ, परन्तु यह प्रसग तो और भी अधिक कटु निकला।

लेकिन गार्डन ने चतुराई से अपने को बचा लेने का प्रयत्न किया।

बोला, 'सरकार, गवर्नर-जनरल की आज्ञा बिना कोई भी उस यन्त्र को नही रख सकता।'

गंगाधरराव को रोष हुआ। आश्चर्य भी।

बोले, 'इसमें भी गवर्नर जनरल की आज्ञा, अनुमति। आप लोग थोडे दिन मे शायद यह भी कहने लगे कि हमारी आज्ञा बिना पानी भी मत पियो।'

गार्डन हँसने लगा। राजा भी हँसे।

बात टालने की नियत से उसने कहा, 'सरकार बडी देर से हुक्का नही मिला। आज क्या पान भी न मिलेगा ?'

राजा ने हुक्का दिया।

उसी समय एक हरकारे ने आकर खुशी खुशी कहा, 'महाराज की जय हो ! झासी राज्य की जय हो। राजा को मालूम था कि रानी प्रसव गृह मे हैं। जय का शब्द सुनते ही समझ गये। भीतर का हर्ष भीतर ही दबाकर गम्भीरता के साथ पूछा, 'क्या बात है ?'

हरकारा हर्ष के मारे उछला पडता था। उसने हर्षोन्मत्त होकर उत्तर दिया, 'श्रीमन्त सरकार, झासी को राजकुमार मिले हैं।'

और उसने नीचा सिर करके अपनी कलाइयो पर उँगलियो से कडो के वृत्त बनाये।

राजा ने हँसकर कहा, 'सोने के कडे मिलेगे और सिरोपाव भी। जा तोपो की सलामी छुटवा। पर देख, बडी तोपें न छूटे। हल्ला बहुत करती हैं। और बस्ती के पञ्चो और भले आदमियो को सूचना दे।'

गार्डन भी बहस से छुटकारा पाकर अपने घर चला गया।

गवर्नर जनरल को सूचना दे दी गई। झासी राज्य को अङ्गरेजी इलाके में मिला लेने की घडी टल गई।

[२२]

जिस दिन गङ्गाधरराव के पुत्र हुआ उस दिन सम्वत् १९०८ (सन् १८५१) की अगहन सुदी एकादशी थी। यो ही एकादशी के रोज मन्दिरो में काफी चहल पहल रहती थी, उस एकादशी को तो आमोद प्रमोद ने उन्माद का रूप धारण कर लिया। अपनी प्यारी रानी के गर्भ से पुत्र की उत्पत्ति का समाचार सुनकर झासी थोडे समय के लिये इन्द्रपुरी बन गई।

राजा ने बहुत खर्च किया, इतना–कि खजाना करीब करीब खाली कर दिया। दरिद्रो को जितना सम्मान उस अवसर पर झासी मे मिला, उतना शायद ही कभी मिला हो।

दरबार हुआ। गवैये आये। मुगलखाँ का ध्रुवपद सिरे का रहा। उसको हाथी बख्शा गया। नर्तकियो में दुर्गाबाई खूब पुरस्कृत हुई। नाटक हुआ। परन्तु उसमे मोतीबाई न थी। राजा के मन मे आया कि उसको फिर से रगशाला में बुलवा लिया जावे, परन्तु न किसी ने सिफारिश की और न राजा अपने हठ को छोडकर स्वय प्रवृत्त हुये।

दरबार मे सभी जागीरदारो को कुछ न कुछ मिला।

उस दरबार में केवल एक व्यक्ति अपनी इच्छा की पूर्ति न करा सका। वे थे नवाब अलीबहादुर–राजा रघुनाथराव के पुत्र। जब अङ्गरेजो ने रघुनाथराव के कुशासन काल मे झासी का प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया था, तभी उनकी जागीर जब्त कर ली गई थी। और उनको पाच सौ रुपया मासिक पेंशन दी जाने लगी थी। जब गङ्गाधरराव को राज्याधिकार मिला तब उन्होने यह पैन्शन जारी रक्खी। अलीबहादुर चाहते थे कि यथा संभव उनको वही जागीर फिर मिल जावे। जागीर न मिल सके तो पेंशन में काफी वृद्धि कर दी जावे। जागीर मिलती न देखकर अलीबहादुर ने पेंशन बढाने के लिये विनय की। राजा ने पोलिटिकल एजेण्ट से सलाह करने की बात कहकर नवाब को उस समय टाला। नवाब का मन मसोस खा गया। परन्तु उन्होने आशा नही

छोडी। अनेक अङ्गरेज अफसरो से उनका मेलजोल था, परस्पर आना जाना था। इसलिये उस आश्रय को दृढतापूर्वक पकडने की उन्होने अपने जी मे ठानी।

दरबार में पगडी बधवाने की प्रथा बहुत समय से चली आरही थी। श्याम चौधरी नाम के एक सेठ के घराने वाले ही ऐसे मौको पर पगडी बाँधते थे। श्याम चौधरी लखपती था। कहते हैं कि उस समय झाँसी में ५२ लखपती थे। ये ५२ घर बावन बसने कहलाते थे। श्याम चौधरी पाग बाँधने के पहले अपना नेग दस्तूर लेने के लिये बहुत मचला। राजा ने जब मोती जडे सोने के कडे देने का वचन दिया तब उसने राजा को पगडी बाँधी। नवाब अलीबहादुर का जी इससे और भी अधिक जल गया।

वह किसी भी तरह इस भावना को नही दबा पा रहे थे—मै राजा का लडका हू, मैं ही झासी का राजा होता, मेरे पास जागीर तक नही! छोटे-छोटे से लोगो का इतना आदर सत्कार और मेरी पैन्शन बढाने तक के लिये पोलिटिकल एजेन्ट की सलाह की जरूरत!

नवाब साहब ऊपर से प्रसन्न और भीतर से बहुत उदास अपनी हवेली को लौट आये। वे रघुनाथराव के नईबस्ती वाले महल मे रहते थे। महल में तीन चौक थे। एक रङ्गमहल, दूसरा सैनिको, हाथियो इत्यादि के लिये तीसरा घोडो और गायो के लिये। महल का सदर दरवाजा चाँद दरवाजा कहलाता था। इस पर चढकर वे और उनके मुसलमान अफसर ईद के चाँद को देखते थे, इसलिये दरवाजे का नाम चाँद दरवाजा पड गया था। बिलकुल अगले सहन के आगे एक और विस्तृत सहन था। जिसके एक ओर इनका प्रिय हाथी मोती गज बधता था, और दूसरी ओर राजा रघुनाथराव के जीवनकाल में इनकी माता लच्छोबाई के रहने के लिये हवेली थी। इस समय नवाब अलीबहादुर के अधिकार मे यह हवेली और सारा महल था।

बाहर वाली हवेली मे उनके मेहमान या आश्रित ठहराये जाते थे। दरबार से लौटकर अलीबहादुर पहले इसी हवेली में गये।

हवेली बडी थी। उसमे कई कक्ष थे। परन्तु उजाला केवल दो कक्षो में था। बाकी सूनी और अँधेरी थी। बाहर पहरेदार थे।

उजाला दीपको का था। शमादानो में जल रहे थे। दो कमरो मे अलग अलग्। दोनो कमरे एक दूसरे से काफी दूर।

जिस पहले कमरे में नवाब अलीबहादुर गये उसमें सिवाय खुदाबख्श के और कोई न था। अभिवादन के बाद उनमें बातचीत होने लगी।

खुदाबख्श ने आशामयी आँखो से कहा, 'हुजूर ने मेरी विनती तो पेश की ही होगी ?'

अलीबहादुर ने उत्तर दिया, 'नही भाई मौका नही आया। जानते हो महाराज अब्बल दर्जे के जिद्दी हैं। एकाध दिन मौका हाथ आने दो, तब कहूँगा।'

खुदाबख्श—'उम कमरे में बिचारी मोतीबाई उम्मेदे बाधे बैठी है। उसका तो कोई कसूर ही नही है। उसके लिये आप कुछ कह सके ?'

अलीवहादुर—'क्या कहता ? वहा तो बनियो और छोटे-छोटे लोगो की बन पडी। मेरे लिये ही कुछ नही हुआ।'

खुदाबख्श—'ऐं !'

अलीबहादुर—'जी हा। जागीर चूल्हे में गई—पैन्शन बढाने के लिये अर्जं की तो कह दिया कि बडे साहब से सलाह करेगे। मै सोचता हूँ कि हमी लोग बडे साहब से क्यो न मिले ? आपके साथ काफी जुल्म हुआ है। आप मुद्दत से छिपे-छिपे फिर रहे है। जिस मोतीबाई के लिये राजा पलक-पाँवडे बिछाते थे, वह बिचारी दर-दर फिर रही है। एक दिन मुझको यह और राजा के अनेक अत्याचार बडे साहब के सामने साफ बयान करने हैं। आप भी चलना।'

खुदावख्श—'मैं तो आज तक किमी गोरे से नही मिला। आपकी उनसे दोस्ती है। आप जैसा ठीक समझे करे।'

अलीबहादुर—'मोतीवाई से अर्जी न दिलाई जावे ? आपसे कुछ बातचीत हुई ?'

खुदाबख्श—'क्या कहू, वे तो मुझ से पर्दा करती हैं। आप ही पूछियेगा।'

अलीबहादुर—'नाटकशाला वाली भी पर्दा करती है। रङ्गमञ्च पर तो पर्दे का नाम-निशान नही रहता, बल्कि उससे बिलकुल उल्टा व्योहार नजर आता है।'

अलीबहादुर की अवस्था ४२, ४३ वर्ष की थी। स्वस्थ थे। रङ्गीन तबियत के। उन्होने बातचीत का सिलसिला जारी रक्खा— रङ्गमञ्च पर उनका नाचना, गाना, हावभाव सभी पहले सिरे के देखे। यहाँ पर्दा कैसा वे पीरअली के सामने तो निकलती हैं।'

पीरअली अलीबहादुर का ख़ास नौकर और सिपाही था। बर्ताव एकान्त में मित्रो सदृश।

उसको बुलवाया गया।

पीरअली की मारफत मोतीबाई से बातचीत होने लगी।

'बडे साहब' को अर्जी देने के प्रस्ताव पर मोतीबाई ने कहलवाया, 'मैं अर्जी नही देना चाहती हू। किसी अङ्गरेज के सामने नही जाऊँगी। आप लोग बडे आदमी हैं। आप लोगो के रहते मैं अङ्गरेजो के बंगलो पर नही भटकना चाहती।'

अलीबहादुर ने कहा, 'आपको कही जाना नही पडेगा। आपकी अर्जी मै पेश कर आऊँगा।'

मोतीबाई ने उत्तर दिलवाया, 'साहब से सब कुछ जबानी कह दीजिये लिखी अर्जी नही दूँगी।'

खुदाबख्श ने समर्थन किया।

बोला, 'लिखा हुआ कुछ नही देना चाहिये। यदि कही अर्जी को साहब ने महाराज के पास फैसले के लिये भेज दिया तो हम सब विपद में पड जावेंगे।'

अलीबहादुर दूसरे के हाथ से अङ्गारे डलवाना चाहते थे इसलिये उन्होने खुदाबख्श को समझाया, 'आपका इससे बढकर तो अब और

कुछ नुकसान हो नही सकता। बिना किसी अपराध के देश-निकाला दे दिया गया। घर-द्वार छूटा। जागीर गई। परदेश की खाक छानते फिर रहे हो। मेरी राय में आपको लिखी अर्जी जरूर देनी चाहिये। मैं साहब से सिफारिस करूँगा। वे राजा के पास न भेजकर सीधी लाट साहब गवर्नर-जनरल बहादुर के पास भेज देगे। कम्पनी सरकार रियासतो के नुक्स तलाश करने में दिन-रात व्यस्त रहती है।'

खुदाबख्श ने कहा, 'जरा सोच लूँ। फिर किसी दिन अर्ज करूँगा। आप तो मेरे शुभचिन्तक हैं। आप अकेले का तो मुझको आधार ही है। अहसानो के बोझ से दबा हू।'

अलीबहादुर ने सोचा जल्दी न करनी चाहिये। पीरअली ने छिपे सकेत में हामी भरी। खुदाबख्श के खाने-पीने की व्यवस्था करके अलीबहादुर चले गये।

अकेले रह जाने पर मोतीबाई भी अपने घर गई। जाते समय उसने एक बार खुदाबख्श की ओर देखा। खुदाबख्श को ऐसा जान पड़ा जैसे कमलो का परिमल छुटकाती गई हो।

[२३]

लक्ष्मीबाई का बच्चा लगभग दो महीने का हो गया। परन्तु वे सिवाय किले के उद्यान में टहलने के और कोई व्यायाम नही कर पाती थी। शरीर अभी पूरी तौर पर स्वस्थ नही हुआ था। मन उनका सुखी था। लगभग सारा समय बच्चे के प्यार में जाता था। राजा भी उस बच्चे पर प्यार बरसाने में काफी समय उनके पास बिताते थे। राजा की प्रकृति में अद्भुत अन्तर आगया था। शासन की कठोरता में उन्होने कमी करदी। जनता उनको प्रजावत्सल कहने लगी।

उन्ही दिनो तात्या टोपे झाँसी आया। राजा का एक फौजी अफसर कर्नल मुहम्मद जमाखाँ था। उसी की हवेली के एक हिस्से मे तात्या को डेरा मिला। पास ही जूही रहती थी।

तात्या को रानी से एकान्त में बात चीत करने का अवसर मिला। उसने रानी से कहा, 'आपको दादा के देहान्त का हाल तो मालूम हो गया था, परन्तु पैन्शन छीने जाने की बात किसी ने नही बतलाई! आश्चर्य है।

लक्ष्मीबाई दुखी स्वर में बोली, 'मै अस्वस्थ थी, इसलिये यह समाचार मुझ तक नही आने दिया गया। अङ्गरेजो ने बडी बेईमानी की।'

तात्या—'यह उन लोगो की न तो पहली बेईमानी है और न आखरी। उन लोगो की नीति सारे देश को डसती चली जा रही है। गायकवाड, होलकर, सिंधिया, अवध के नवाब ये सब अफीम ही खाये बैठे हैं।'

रानी—'पैन्शन छीनने के विरुद्ध क्या उपाय किया?'

तात्या—'अर्जी फरियाद की। बडे लाट ने कोई सुनाई नही की। विलायत को भी लिखा पढा, एक होशियार आदमी भेजा, परन्तु सबने कानो में तेल डाल लिया है।'

रानी—'फिर क्या सोचा है?'

तात्या—'कुछ नही। नाना साहब और रावसाहब ने आपके पास मुझको भेजा है। उनको आपके विवेक और तेज का भरोसा है।'

रानी—'नवाब साहब के पास लखनऊ गये ?'

तात्या—'गया था। परन्तु नवाब साहब के चारो तरफ गायिकाओ नर्तकियो और भाडो का पहरा लगा रहता है। उन लोगो ने कहा कि अगले साल मुलाकात का मुहूर्त निकलेगा।'

रानी हँस पडी। जैसे सन्ध्या के पीछे बादलो मे दामिनी दमक गई हो। रानी ने अभी अपनी स्वाभाविक अरुणता पुन प्राप्त न कर पाई थी।

तात्या ने कहा, 'मै नवाब के प्रधान मन्त्री से मिला वह हिन्दू है। परन्तु विचारा क्या करता। उसने अपनी असमर्थता प्रकट की। फिर कई बडे जिमीदारो से मिला। उन्होने कहा, कि कुछ पुरुषार्थ करो हम साथ देगे।

रानी कुछ सोचने लगी। सोचती रही।

तात्या बोला, 'आप बिठूर में छत्रपति और बाजीराव और छत्रसाल, न जाने कितने नाम लिया करती थी।'

रानी ने कहा, ये नाम मै कभी नही भूलूगी। छत्रसाल का नाम इधर के लोगो में अब भी मन्त्र का सा काम करता है।'

तात्या—'यह और वे सब मन्त्र कब काम आवेगे ?'

रानी जरा मुस्कराई। तात्या उस मुस्कराहट को पहचानता था। उसके परिवेष्ठन में छुटपन की मनू के छोटे छोटे निश्चय बडी दृढता के साथ निकला करते थे। तात्या ने आशा से कान लगाये।

रानी ने कहा, 'टोपे अभी समय नही आया है। घडा अपूर्ण है—अभी भरा नही है। हम लोगो के आपसी उपद्रवो ने जनता को त्रस्त कर दिया है। उसको थोडा सांस लेने योग्य बन जाने दो। समर्थ रामदास का दिया हुआ स्वराज्य सदेश, छत्रपति शिवाजी का पाला हुआ वह आदर्श, छत्रसाल का वह अनुशीलन अमर और अक्षय है।

तात्या जरा अधीर होकर बोला, 'महारानी साहब, ये बाते कान और हृदय को अच्छी मालूम होती हैं, पर हिन्दू और मुसलमान जनता तो अचेत सी जान पडती है…'

रानी ने टोककर दृढ स्वर में कहा, 'तात्या भाई, जनता कभी अचेत नही होती, उसके नायक अचेत या भ्रम मय हो जाते हैं।'

तात्या—'तब नाना साहब से क्या जाकर कहूँ ?'

रानी—'यही कि कान और आख खोलकर समय की प्रतीक्षा करे। मुझे अभी तो पूर्ण स्वस्थ होने में ही कुछ समय लगेगा, स्वस्थ होते ही अपने आदर्श के पालन में सचेष्ट होऊगी। अपने आदर्श को कभी न भूलना—प्रयत्न की पहली और पक्की सीढी है।

तात्या चलने को हुआ।

रानी ने प्रश्न किया, 'दिल्ली का क्या हाल है ?'

तात्या ने उत्तर दिया, 'बादशाह का ? उन बिचारो को नव्वे हज़ार रुपया साल पेन्शन मिलती है। कविता करते हैं और कवि सम्मेलनो में उलझे रहते हैं। कम्पनी ने उनकी नजर भेट बन्द करदी है और उनसे कह रही है कि अपने को बादशाह कहना छोडो नही तो पेन्शन बन्द कर देगे।'

रानी ने कहा, 'मुसलमान नवाब और जन क्या इस चुनौती को यो ही पी जायेगे ?'

'कह नही सकता' तात्या ने कहा। कुछ समय बाद तात्या चला गया।

तात्या झासी में और ठहरना चाहता था, परन्तु बिठूर जल्दी जाना था और गङ्गाधरराव की नाटकशाला बन्द थी। यद्यपि अभिनय करने वालो का वेतन बन्द नही किया गया था।

[२४]

गङ्गाधरराव का यह बच्चा तीन महीने की आयु पाकर मर गया। इसका सभी के लिये दुखःद परिणाम हुआ। राजा के मन और तन पर इस दुर्घटना का स्थाई कुप्रभाव पडा। वे बराबर अस्वस्थ रहने लगे।

लगभग दो वर्ष राजा और रानी के काफी कष्ट मे बीते।

राजा की खीझ बढ गई। उन्होने सनको में काम करना शुरू कर दिया।

एक दिन उनको मालूम हुआ कि खुदाबख्श नवाब अलीबहादुर के यहा कभी कभी आता है इस जरा से अपराध पर उन्होने नवाब साहब का महल जब्त कर लिया। केवल बाहर वाली हवेली उनके रहने के लिये छोडी।

सन् १८५३ के शारदीय नवरात्र का महोत्सव हुआ। उस दिन उनका स्वास्थ्य अच्छा जान पडता था, केवल कुछ कमजोरी थी। राजवैद्य प्रतापशाह मिश्र का उपचार था। राजा वैद्य पर बहुत खुश थे। वैद्य उद्दण्ड प्रकृति का था, परन्तु राजा उसको बहुत निभाते थे।

दशहरे के भरे दरबार में वैद्य ने अपने एक पडोसी का उलाहना दिया, 'सरकार मै हवेली बनाना चाहता हू। मेरे मकान मे जगह थोडी है। पडौसी को मुँहमागा दाम देने को तैयार हू। वह पाजी है। बिलकुल नठ गया है। मकान नही छोडता। मेरी हवेली नही बन पा रही है। वह मकान मुझको दिलवा दिया जाय।'

राजा ने इस प्रार्थना को स्वीकृत करने से इनकार कर दिया।

वैद्य ने हठपूर्वक कहा, 'तब मै कोट बाहर एक अलग छोटी सी झाँसी बसाऊँगा। सरकार की अनुमति भर चाहिये। या तो नगर में हवेली बनाकर रहूगा या कोट बाहर एक बस्ती बसाऊगा और एक दृढ कोट उसके चारो ओर खिचवा दूँगा।

तीन साल पहले के गङ्गाधरराव होते तो वह इस प्रस्ताव पर वैद्य-राज की खाल खिचवा डालते। परन्तु उनका स्वभाव सनको से भर गया था। बल के साथ तेज भी उनका ठडा पड गया था।

राजा ने वैद्य को अनुमति दे दी। वैद्य का ध्यान उपचार से हटकर नया नगर बसाने और कोट खिचवाने की विशाल मूर्खता पर दृढता के साथ जा अटका। नईबस्ती तो वैद्य ने नही बसा पाई, परन्तु उसने कोट खिचवा लिया, जो अपने अखण्ड रूप में अब भी प्रतापसाह मिश्र के हठ का स्मारक बडेगॉव फाटक बाहर खडा है।

विजयादशमी के उपरान्त गगाधरराव को सग्रहणी रोग ने ग्रस लिया। बहुत दवा–दारू की गई कुछ न हुआ। मर्ज बढता ही चला गया।

उस समय झाँसी का असिस्टेट पोलिटिकल एजेट मेजर मालकम था। उसको सूचना दी गई। उसने डाक्टरी उपचार का अनुरोध किया परन्तु वैद्यो और हकीमो ने प्रयत्न को अभी आशा रहित नही समझा था, इसलिये उस अनुरोध पर विचार करने की भी नौबत नही आई।

महालक्ष्मी के मन्दिर में जो लक्ष्मी फाटक बाहर है और जहा सदा ही धूमघाम रहती थी, पाठ बिठलाया गया। झाँसी का कोई भी मन्दिर न था जहा राजा के रोग निवारण के लिये पूजा–अर्चा न कराई गई हो और जनता ने अपनी प्रार्थनाये भेट न की हो।

नवम्बर के तीसरे सप्ताह में राजा का स्वास्थ्य और भी बहुत बिगड गया। प्रतापसाह मिश्र ने बडे दम्भ के साथ 'प्रतापलकेश्वर रस' बनाया, परन्तु किसी भी रस का कोई प्रभाव न पडा।

राजा ने क्षीण मुस्कराहट के साथ इतना जरूर कहा, 'कोट खिचवाने से कैसे अवकास मिल गया?'

उसके बाद राजा यकायक बेहोश हो गये। रानी के पिता मोरोपन्त और दीवान नरसिहराव घबराये हुये आये।

राजा को पुन चेत हो आया था।

नरसिहराव ने कहा, 'सरकार स्वस्थ हो जावेगे। कोई चिन्ता की बात नही है। हम लोगो को आज्ञा दी जावे।'

राजा समझ गए। कुछ पहले से मनमें जो बात उठी थी, उसको उन्होंने कहा, 'मैं अभी जिऊँगा। प्रताप मिश्र का नया नगर देखने जाऊँगा परन्तु मैंने निश्चय किया है कि दत्तक ले लूँ।'

मोरोपन्त और नरसिंहराव राजा के मुह की ओर देखने लगे।

राजा कहते गये, 'हमारे कुटुम्बी वासुदेवराव नेवालकर का एक पुत्र आनन्दराव है। पाच वर्ष का है। सुन्दर और होनहार है। उसको मैं गोद लेना चाहता हू। यदि रानी साहब स्वीकार करे तो मै आज ही शास्त्रानुसार गोद ले लू।'

मोरोपन्त पूछ आये। रानी ने स्वीकार किया।

तुरन्त दत्तक विधान की तैयारी की गई। नगर की जनता के मुखिया निमत्रित किये गये। मेजर मालकम की जगह मेजर एलिस असिस्टेट पोलिटिकल एजेट होकर आ गया था और मालकम पोलिटिकल एजेट होकर चला गया था, उसको तथा अङ्गरेजी सेना के अफसर कप्तान मार्टिन को भी बुलाया गया। इन सबके सामने राजा ने आनन्दराव को विधिवत् गोद लिया।

आनन्दराव का नाम बदलकर दामोदरराव रक्खा गया।

[२५]

झासी की जनता के पञ्चो, सरदारो, और सेठ साहूकारो को जो इस उत्सव पर निमन्त्रित किये गये थे, इत्र पान भेट इत्यादि से सम्मानित करके विदा किया गया। केवल मेजर एलिस, कप्तान मार्टिन, मोरोपन्त और—प्रधान मत्री नरसिहराव वहा रह गए। निकट ही पर्दे के पीछे रानी लक्ष्मीबाई बैठी हुई थी। राजा ने एक खरीता कम्पनी सरकार के नाम लिखवाया। उसका सार यह है:—

'बुन्देलखण्ड मे कम्पनी सरकार का राज्य स्थापित होने के पहले से हमारे पूर्वज उनकी हर तरह की सहायता करते आये हैं और मैंने स्वय जीवन भर उनकी सहायता की है। मेरे घराने के साथ कम्पनी सरकार की जो सधिया समय समय पर हुई हैं, उनसे हमारा हक बराबर पुष्ट होता चला आया है। मैं इस समय रोग ग्रस्त हू। अच्छे होने की आशा है और यह भी आशा है कि स्वस्थ होने पर मेरे सन्तान हो, परन्तु यह सोच कर कि कदाचित् मेरा देहान्त हो जाय और विना उत्तराधिकारी के यह राज्य नष्ट हो जाय, अपने कुटुम्ब के एक पन्चवर्षीय बालक आनन्दराव को हिन्दू धर्म शास्त्र के अनुसार गोद लिया है। वह नाते में मेरा पौत्र लगता है। यदि मै स्वस्थ न हो सका और मेरा देहान्त हो गया तो यही बालक, जिसका नाम गोद के उपरान्त दामोदरराव रक्खा गया है, झासी राज्य का उत्तराधिकारी होगा। जब तक मेरी पत्नी जीवित रहे, तब तक इस राज्य की स्वामिनी और इस बालक की माता समझी जावे और राज्य की व्यवस्था उसी के आधीन रहे। मैं चाहता हू कि उसको किसी प्रकार का कष्ट न हो।'

राजा ने खरीता अपने हाथ से एलिस के हाथ में दिया। राजा का गला रुद्ध हो गया और आखो मे आसू भर आये। पर्दे के पीछे रानी की सिसक सुनाई पडी मानो उस खरीते पर इस सिसक की मुहर लगी हो।

गले को किसी तरह काबू में करके राजा ने एलिस से कहा, 'आपको मैं अपना मित्र मानता हू । बडे साहब मालकम भी मेरे मित्र हैं । गार्डन तो वैसे मेरा छोटा भाई हो · ···'

राजा के हृदय में पीडा हुई। वे रुक गये । एलिस ध्यानपूर्वक उनकी बात सुनने लगा ।

राजा बोले, 'इस समय गार्डन मेरे पास होता तो मुझको बडी खुशी होती' और मुस्कराए ।

पीड़ा कम्पित होठो पर वह अर्द्धस्मित किसी असह कष्ट को जोर के साथ दबा गया ।

'गार्डन का हुक्का दीवान खास में रक्खा हुआ है पियो तो मँगवा दूँ ।'

'नही सरकार ।'

'देखो मेजर साहब दामोदरराव कितना सुन्दर है। यह बडा होनहार है । मेरी रानी सी माता को पाकर झासी को चमका देगा। मेरी झासी को ये दोनो बडा भारी नाम देंगे · '

पर्दे के पीछे फिर सिसकी सुनाई दी । एलिस ने आख के एक कोने से उस ओर देखकर मुह फेर लिया ।

राजा ने पर्दे की ओर मुह फेरकर रुन्द्ध स्वर में, मुश्किल से, कहा, 'यह क्या है ? रोती हो ? मै अच्छा हो रहा हूँ। पर मुझे अपनी बात तो कह लेने दो ।'

रानी ने धीरे से खासकर अपना कठ संयत किया ।

राजा स्थिर होकर बोले, 'मेजर साहब हमारी रानी स्त्री जरूर है, परन्तु इसमें ऐसे गुण हैं कि संसार के बडे बडे मर्द इसके पैरो की धूल अपने माथे पर चढावेगे ।

बहुत प्रयत्न करने पर भी राजा अपने आसुओ को न रोक सके ।

एलिस ने कहा, 'महाराज थोड़ी बात करे नही तो तबियत देर में अच्छी हो पावेगी ।'

रानी ने जरा जोर से खासा मानो राजा को निवारण कर रही हो।

दुर्बल हाथो से राजा ने आसू पोछे। गले को नियन्त्रित किया।

'बोले रानी बहुत अच्छी व्यवस्था करेगी। आप लोग दामोदरराव की नाबालिगी के कारण परेशान मत होना।'

राजा के हृदय में पीडा बढी।

किसी प्रकार उसको काबू में करके उन्होने कहा, 'मुझे झासी के लोग बहुत प्यारे हैं। मैं चाहता हू मेरी जनता सुखी रहे। मैने जिसको जो कुछ दिया है, वह सब उसके पास बना रहना चाहिये। मुगलखा बहुत बडा गवैया है मेजर साहब।'

एलिस ने सोचा गङ्गाधरराव का दिमाग फिरने को है। जरा चिन्तित हुआ।

राजा बोले, 'उसको मैने इनाम में हाथी दिया है। वह उसी के पास रहेगा। और हाथी के व्यय के लिये मैंने जो कुछ लगा दिया है वह भी उसके पास रहना चाहिये।'

इसके उपराप राजा को खासी आई और साथ ही रक्त। प्रतापसाह वैद्य बाहर मौजूद था। बुला लिया गया। दवा दी गई। राजा को कुछ चैन मिला। पर वह जान गये कि यह क्षणिक है।

बोले, 'एलिस साहब ये हमारे वैद्य जी बडे हठी हैं। अपना एक अलग नगर बसा रहे हैं। मैने अनुमति दे दी है। इनके हठ को कोई तोडे नही।'

वैद्य की आख में भी एक आसू आ गया। उसको वैद्य ने किसी बहाने से जल्दी पोछ डाला। वैद्य बाहर चला गया।

राजा के होठो पर एक क्षीण मुस्कराहट फिर आई।

'मैं चाहता हूँ कि मेरी नाटकशाला मे चाहे खेल हो या न हो, परन्तु पात्रो के लिये जो वेतन खजाने से दिया जाता है वह उनको मिलता रहे।'

राजा फिर खासे। अबकी बार ज्यादा खून आया। वैद्य फिर भीतर आया। उसने आज्ञा के स्वर में प्रतिवाद किया, 'महाराज अब बिलकुल न बोले…'

राजा ने तुरन्त कहा, 'थोडा सा और फिर बस। तुम्हारी और तुम्हारी दबा की कोई जरूरत न रहेगी।'

राजा की आकृति विगडी। सब लोग चिन्तत और भयभीत हुये। बहुत कष्ट के साथ वोले, 'मेजर साहब एक अन्तिम प्रार्थना—बस एक—झॉसी अनाथ न होने पावे' '।'

कराहने लगे। आँखे फिरने लगी।

कप्तान मार्टिन एक ओर चुप बैठा हुआ था। उसने एलिस को चल देने का संकेत किया। एलिस उठना ही चाहता था कि राजा बोले, चित्रकार सुखलाल, हृदयेश कवि····· '

एलिस उठा उसने प्रणाम करके राजा से कहा, 'सरकार हम लोग जाते हैं। समाचार मिलते ही तुरन्त हाजिर होगे।'

राजा ने आखे स्थिर की।

कहा, 'मेजर साहब भूलना मत। हमको आपका भरोसा है। हमारी प्रार्थना को ध्यान में रखना। लाट साहब को मेरी विनती·· '

इसके बाद वे नही बोल सके और बेसुध हो गये।

एलिस और मार्टिन चले गये।

लक्ष्मीबाई तुरन्त पर्दे से बाहर निकल आई। पति की उस दशा को देखकर चीत्कार कर उठी। मोरोपन्त ने दामोदरराव को बुलवा लिया। नाना भोपटकर लेकर आये। रानी को कुछ सात्वना मिली।

[२६]

जिस इमारत में आजकल डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का दफ्तर है, वह उस समय डाक बङ्गले के काम आता था। पास ही झासी प्रवासी अङ्गरेजो का क्लब घर था। एलिस और मार्टिन राजा के पास से आकर सीधे क्लब गये। वहा और कई अङ्गरेज आमोद-प्रमोद मे मग्न थे। यहा इन दोनो का जी हल्का हुआ।

'उन अङ्गरेज़ो ने महल का हाल पूछा।'

'राजा बीमार है। बच नही सकता।'

'इलाज वही दकियानूसी होगा ?'

'एक मूर्ख वैद्य कुछ पीस-पासकर मधु के साथ खिला रहा है।'

'कैप्टिन एलन का इलाज करवाओ।'

'खुशी से, परन्तु ये लोग ऐसे कट्टर-धर्मी हैं कि शायद राजा एलन के हाथ की छुई हुई दवा न खायगा।'

'शायद अच्छा हो जाय। न हुआ तो क्या होगा ?'

'राजा ने एक लडके को गोद लिया है।'

'कब ?'

'आज हम लोगो के सामने।'

'गोद ! यानी झासी में वही मनमानी और कानून हीन व्यवस्था जारी रहने दी जावेगी ?'

एलिस ने इस प्रसङ्ग को आगे नही बढने दिया। तब वर्तालाप की धारा दूसरी ओर मुड गई और बातचीत में सभी शरीक हो गये।

'सुनते हैं रानी बहुत सुन्दर है। अच्छी घुडसवार है। यदि नाचना सीखे तो उसका नृत्य अजीब होगा।' एक अङ्गरेज़ ने कहा।

'चुप मूर्ख', एलिस बोला, 'अभी उसी के राज्य में बैठे हो। हिन्दुस्थानी लोग अपने राजा-रानी के बारे ऐसी बात सुनना बिलकुल पसन्द नही करते।'

'हिश ! (डैमइट) वह तो गधो का झुण्ड है। फिर भी मैं तुम्हारी बात मानता हू। इसलिये नही कि रानी-वानी से डरता हूं, किन्तु इसलिये कि प्याले के ऊपर मीठा-मीठा पवन बहना चाहिये न कि बहस-मुवाहिसे की गरम आधी। वरना मैं अपनी पूरे महीने की तनखाह की होड़ लगाता। तो भी मेजर, मैं सुनता हू राजा नाचता अच्छा था। किसी ज़माने में, और उसकी नाटकशाला में बडी सुन्दर शकले थी। बहुत बढिया नाच।'

'हम सब जानते हैं, पर देखा नही है। वैसे और हिन्दुस्थानी नर्तकियो का नाच बहुत देखा। मगर मजा नही आता। इस देश के नाच तक में कोई ढङ्ग नही, कोई मोहकता नही।'

'पर नर्तकिया हैं हसीन। मैं शर्त लगाता हूँ, नाच-गान चाहे उनका उतना खूबसूरत न हो।'

'ये लोग हमारे नाचने-गाने को भद्दा समझते है। मैंने हिन्दुस्थानियो का अपने नृत्यग्रह में आना बन्द कर दिया है। केवल नवाब अलीबहादुर आता है। वह समझदार है।'

'सिर तो जरूर हिलाता है।'

'ओह ! बहुत काम का आदमी है। तुम जानने हो।'

'वह अपने दो-एक दोस्तो को साथ लाना चाहता है।'

'बेकार है। मैं पसन्द नही करता।'

'यहा से ले क्या जावेगा ?'

'हम लोगो की स्त्रियो के बारे में बुरा ख्याल फैलावेगा !'

'कोई परवाह नही। बुरा ख्याल फौज और पुलिस में नही फैलना चाहिये।'

'एक से एक बढकर बे दिमाग हैं। उन कार्तूसो को मुँह से खोलने से इन्कार किया तो हमने रगड दिया। रह गये। जितना वेतन हम इन लोगो को देते हैं, उतना इनको दुनिया में कही भी नहीं मिल सकता।'

'और तुम्हारे रिसाले में जो कुछ ब्राह्मण माथा रंग रग कर परेड में आते थे उनका तो अनुशासन कर दिया ?'

'हा। पहले उन्होने कहा हमारा टीका है। धर्म की बात। फिर हमने पुछवा दिया। डैमइट ऑल। भई कितनी जहालत भरा मुल्क है !'

'जरूर। परेड से छुट्टी पाकर बारक में न सिर्फ माथे पर बल्कि माथे से लेकर पैर की उँगली तक टीको से देह को रगलो हमको फिकर नही। इस धर्म से हमको महान कष्ट होता है।'

'अभी यह कौम बिलकुल नादान और जाहिल है। अङ्गरेजी पढने से अकल कुछ सुधरेगी। बाईबिल का पढाना मदरसो में इसीलिये जरूरी रक्खा गया है। जब अङ्गरेजी का प्रचार हो जावेगा और बाईबिल की सस्कृति इनके खून में बैठ जायगी तब धरातल कुछ ऊँचा होगा।'

'हाँ, और कदाचित् तब इस देश के लोग हमारे शेक्सपियर, वाल्टर स्काट, बायरन की पूजा कर उठे। यहा के लोग पूजा, नमाज बहुत जल्दी कर उठते हैं।'

'गगाधरराव की नाटकशाला में जो नाटक खेले जाते थे वे कौनसी बला होते हैं ?'

'महज कूडा कर्कट तो नही है। शकुन्तला नाटक तो मैंने भी पढा है। मोनियर विलियम्स का अनुवाद। खूबसूरत चीज है। यद्यपि टैम्पैस्ट की मिराण्डा को शकुन्तला नही पहुचती, फिर भी एक चीज है...'

'ऐसी कितनी पुस्तके हिन्दू मुसलमानो के पास होगी ?'

'हिन्दुओ की गाठ में शकुन्तला, कुछ वेद और कुछ ऐसा ही साहित्य है। मुसलमानो के पास कुरान, गुलिस्ताँ, बोस्ताँ और उमरखैयाम की रुबाइया। बस खतम। बाकी सब कूडा, महज रद्दी।'

'तुम तो लार्ड मैकाले की भाषा में बोल रहे हो पट्ठे।'

'मैकाले क्या गलत कहता है ? उसने तो हिन्दू मुसलमानो को बहुत बडा गौरव दिया जो यह कह दिया कि इनकी सारी अच्छी पुस्तकें एक छोटी सी अलमारी मे बन्द की जा सकती हैं।'

'मैं कसम खाता हूं मैकाले ने 'छोटी सी' अलमारी नही कहा है। मै कहता हूँ, कि इनकी अच्छी पुस्तके अलमारी के एक ही कोने में आ सकती हैं।'

'जाने दो, इनकी नर्तकिया अवश्य कभी कभी परियो सी जान पड़ती हैं।'

'जब वे ढेरो जेबर लादकर सामने आती हैं तब जान पडता है मानो फूलो में जुगनूं जड दी हो।'

'कभी कभी नाच के कुछ कदम भले लगते हैं।'

'लेकिन गाना बिलकुल चीख चिल्लाहट। हा सारगी का बाजा मीठा लगता है और जब तबला धीमी लय मे बजता है तब नाच उठने को जी चाहने लगता है।'

'हिन्दुस्थान का जलवायु, प्रकृति, अनाज, दूध सब अच्छा, लेकिन देश कुसंस्कारो से भरा हुआ है। किसान बहुत मिहनती नही हैं।'

'और चोर डाकुओ के मारे चन नही ले पाते हैं।'

'हम लोग हिन्दुस्थान में उन्ही का नाश करने के लिये तो मौजूद हैं।'

'रियासतो में बडा अन्धेर, बडा अत्याचार होता है।'

'सुनता हूँ किसी रियासत में एक इत्रफरोश गया। एक सरदार ने छत्तीस हजार रुपये का इत्र खरीद डाला। जब इत्रफरोश ने कहा कि अभी मेरे पास बेचे हुये इत्र से भी बढिया और मौजूद है, तब उस सरदार ने वह सब खरीदा हुआ इत्र अपनी घुडसाल के घोड़ो की पूंछो पर उडेल दिया और कहा यह इत्र तो हमारे लायक नही। घोडो की पूछ की बू जरूर इसमे दूर हो जावेगी, और तुम्हारा जो इससे बढिया इत्र है, वह यदि बेचो तो गधेरो के गधो की पूछ पर छिडकवा दूगा। जब राजा के पास यह समाचार पहुचा तब उसने सरदार को शाबाशी दी और खजाने से छत्तीस के दुगुने बहत्तर हजार रुपया सरदार के पास भेज दिये।'

'यह झासी के राजा का ही किस्सा है।'

'मैंने सुना है कि इस कहानी का सम्बन्ध दिल्ली के बुड्ढे बादशाह बहादुरशाह से है।'

'वह तो कविता करने में मस्त रहता है।'

'उसको बादशाह कौन कहता है ?'

'शिष्टाचार। केवल शिष्टाचार।'

'ऐसा कैसा शिष्टाचार! बादशाह सिर्फ एक है। एक के सिवाय दूसरा किसी प्रकार नही हो सकता है। वह है इगलैंड का बादशाह। थी चियर्स। हुर्रे!'

'हुर्रे! इन सब कठपुतलियो को खाक करो। कहा के राजा और कहा के बादशाह! कम्बख्त किलो और महलो में बैठे बैठे गुलछर्रे उडाते हैं। गरीबो की औरतो को सताते हैं और डाके डालवाते हैं। डैम दैम ऑल।'

'चुप चुप अभी नही। जरा ठहर कर सब होगा। सब मुकुट और ताज हमारें पैरो पर गिरेगे। पर होगा सब धीरे धीरे। कुछ दिनो में सारा हिन्दुस्थान ईसाई हो जावेगा। और इङ्गलैंड का राज्य अमर।'

'धीरे धीरे बेवकूफ अभी कसर है। इस समय चोर-डाकुओ और फसादियो को ठडा करके व्योपार और खेती को वढाना है। जनता हमको श्रद्धा की दृष्टि से देखेगी। जो हिन्दुस्थानी अंगरेजी पढ लिख जाय उसको छोटी मोटी नौकरिया देकर अगरेजो का अदब करना सिखलाया जावगा। वे उस अदब को जनता में फैला देंगे। जनता हमेशा कृतज्ञ रहेगी और हमारे हाथ जोडते नही अघावेगी। हमारे छोकरे सदा सर्वदा हमारा आतक बनाये रक्खेगे। वही आतक हमारा सब कुछ होगा।'

'ओह डियर मी! तुम तो बिलकुल अरस्तू और सुकरात हो गये।'

'हिश! हमारे मन को केवल एक बात दिक करती है—ये राजा और नवाब!'

'फिर वही हिमाकत। कह दिया कि धीरज धरो। इंगलैड के राजनीतिज्ञ काफी होशियार और कुशल हैं और हिन्दुस्थान मे गवर्नर

जनरल को अपनी काउन्सिल की सम्मति को रद्द करने का पूरा अधिकार है। यहां की जनता को मुट्ठी में रखने के लिये कुछ राजा नवाबो का बनाए रखना बहुत जरूरी है। और यह भी बहुत जरूरी है कि ऐसे वडे वडे राजो और नवाबो को रियासतो में अत्याचार होते रहे, जिसमें अगरेजी इलाके की प्रजा अपनी बेहतर हालत को, रियासती प्रजा की अवतर हालत से सदा मुकाबिला करती रहे, तोलती रहे। और पुकार कर कहती रहे कि हिन्दुस्थानी हुकूमत से अंगरेजी हुकूमत बहुत अच्छी। समझे!'

'जनता में ऊँची-नीची श्रेणिया कायम रखने की जरूरत है।'

'तुम्हारा सिर। उनमें जात–पात, ऊँच-नीच बहुत सख्या में जमानो से है। केवल जिमीदारी, ताल्लुकेदारी प्रथा को मजबूती के साथ दाखिल करना रह गया है। बगाल में हो गया है। सब जगह कर दिया जावेगा। सिर उठाने वाली जनता को ये जिमीदार, ताल्लुकेदार ही कुचल दिया करेंगे। हमको हाथ जमाने की परवाह ही न करनी पडेगी। सब बन्दोवस्त आराम से होता चला जावेगा।'

'मुझको यह शब्द 'बन्दोबस्त', बहुत प्यारा लगता है। हर जगह, कोने कोने में, बन्दोबस्त होना चाहिए।

'तुमने अभी अभी कहा 'तुम्हारा सिर' वापिस लो इसको। तुम क्या मुझसे होड लगा सकते हो कि हिन्दुओ की जात–पात और मुसलमानो का ऊँच नीच हमारे सहायक नही हैं?'

'बेशक होड लगा सकता हू। यह सब होते हुए भी इन लोगो में वडे वडे राजा और वादशाह हुये हैं। फिर भी हो सकते हैं। इसलिये इस देश को अनन्त काल तक अपने हाथ मे बनाये रखने के लिये—हिन्दुस्थानियो के लाभ और अपने रोजगार के हेतु—वही दूसरी तरकीव बेहतर है। हम–तुमसे कही ज्यादा चतुर राजनीतिज्ञो ने इस सम्पूर्ण समस्या पर यो ही माथापच्ची नही की है।'

प्यालो का दौर और अखण्ड साम्राज्य की कल्पना, अनेक अवसरो की तरह, क्लब में लगभग उफान पर आ रही थी कि क्लब के बाहर तेज़ी से दौडकर आने वाले घुड सवारो की आहट सुनाई पडी।

पहरे वाले ने सलाम किया और कहा, 'हुज़ूर, राजा के यहां से खबर आई है कि वे बेहोश पडे हैं।'

सबने अपने अपने प्याले रख दिये। सतर्क हो गये। एक दूसरे की ओर देखने लगे।

एलिस ने कहा, 'सूचना दो कि मै थोडी देर में आता हूँ।'

पहरे वाला चला गया।

मार्टिन ने एलिस से पूछा, 'राजा मरने वाला है या शायद मर भी गया हो। हिन्दुस्थानी लोग असल बात को देर तक छिपाये रखने के अभ्यासी होते हैं। यदि राजा मर भी गया हो तो क्या वह गोद स्वीकार करली जावेगी ? मेरे ख्याल में लार्ड डलहौजी झासी को अङ्गरेज़ी इलाके में मिला लेगे।'

'हिश!' एलिस ने उँगली से वर्जित कर के कहा, 'कुछ ज्यादा पी गये हो मालूम होता है।'

उसी क्षण और घुडसवार आये। पहरे वाला भीतर आया। बोला, 'हुज़ूर' अब महल से दूसरा समाचार यह आया है कि महाराज अच्छे हैं और हुज़ूर को तुरन्त बुलाया है।'

'डैम इट।' धीरे से मार्टिन के मुँह से निकल पडा। पहरेदार ने सुन लिया। सिर नवाकर बाहर चला गया। उसके कलेजे में कुछ कसक गया।

एलिस ने आखे तरेरी। मार्टिन ने अगूठा दिखाकर उपेक्षा की।

कहा, 'हमारा नौकर है। राजा का नौकर नही।'

एलिस डाक्कर एलन को साथ लेकर राजमहल चला गया।

गङ्गाधरराव को रनवास के कक्ष मे पहुँचा दिया गया था। जब एलिस और एलन पहुचे राजा होश में थे। एलिस को देखकर वे प्रसन्न हुये। बोलने की चेष्टा की। टूटे टूटे बोले।

उसी दिन जो खरीता राजा ने एलिस के हाथ में दिया था उसका स्मरण दिलाया और उसको सूचित किया कि पोलिटिकल एजेंट मेज़र मालकम के पास भी एक खरीता भेज दिया है—केवल एक बात उसमें विशेष है कि सन् १८१७ में रामचन्द्रराव के साथ जो सन्धि कम्पनी सरकार की हुई थी उसमे झाँसी राज्य दवाम के लिये चिरकाल के लिये, शिवराम भाऊ के वंशजो के अधिकार में रहने की बात लिख दी गई थी। उस लिखे हुये वचन का पालन किया जाना चाहिये।

एलिस राजा की हालत देखकर उनको बातचीत करने से रोकता रहा। वे बोलने का प्रयत्न करते-करते फिर अचेत हो गये। उन्हे बातचीत करते-करते बीच में बेहोशी आ आ जाती थी।

एलिस ने डाक्टर एलन की औषधि खाने के लिये अनुरोध किया। वह उनके पास गया। परन्तु क्लब में शराब पी थी। मुँह से गन्ध आरही थी। राजा को बहुत अवहेलना हुई।

उसने सोचा अहिन्दू की छुई हुई दवा न खायेगे। प्रस्ताव किया, 'सरकार इसमें गङ्गाजल मिला दिया जावेगा। दवा पवित्र हो जायगी, आप पिये शीघ्र आराम मिलेगा।'

राजा की आकृति से ऐसा जान पडा मानों उन्होने स्वीकार कर लिया हो। वे शायद शराब की बू से छुटकारा पाना चाहते थे। कैसा भी कुसस्कृत हिन्दू हो मरने के समय कैसे भी सुसंस्कृत हिन्दू या अहिन्दू को शराब की बू फैलाते हुये पसन्द न करेगा।

एलिस ने तुरन्त एक ब्राह्मण के हाथ दवा भेजी। राजा ने छूने तक से इनकार कर दिया।

एक दिन और पीडा में कटने को था। उस दिन (२० नवम्बर को) दुपहरी में कुछ नीद आई। ४ वजे आँख खुली। महल के सामने झासी की जनता कुशल-समाचार के लिये व्याकुल खडी थी।

राजा गङ्गाधरराव को पल पल पर बेहोशी आ रही थी।

ज्यो त्यो करके वह दिन कटा।

दूसरे दिन उनकी अवस्था असाध्य हो गई। अन्त में मुँह से केवल यह निकला, गंगाजल।'

उनको तुरन्त गङ्गाजल दिया गया।

एक क्षण के लिये उनको ऐसा जान पडा मानो रोगमुक्त हो गये हो।

तत्क्षण सचेत होकर बोले, 'मैंने बहुत अपराध किये हैं ' बहुतो को सताया है···सब क्षमा करे···ओमहरि···'

कुछ क्षण उपरान्त राजा का देहान्त हो गया।

महल में हाहाकार मच गया। जिस रानी को कभी किसी ने विह्वल नही देखा था, वह करुणा के बाध तोडे जा रही थी। मोरोपन्त और नाना भोपटकर ने क्रन्दन करते हुये दामोदरराव को रानी की ओली में रख दिया।

लक्ष्मी दरवाजे बाहर, लक्ष्मी ताल के किनारे गङ्गाधरराव के शव का दाह धूमधाम के साथ किया गया। स्मशान भूमि पर एलिस और मार्टिन भी उपस्थित थे। दूर रेग्यूलर केवलरी के सिपाही भी। सब काले बिल्ले बाधे हुये। एलिस और मार्टिन कुतूहल के साथ अन्तिम क्रिया-कर्म देख रहे थे और हिन्दुस्थानी सिपाही, रुदन करती हुई झासी की जनता के साथ, रुद्ध-कण्ठ थे।

एलिस ने २० नवम्बर सन् १८५३ को राजा गङ्गाधरराव का एक दिन पहले का दिया हुआ खरीता पोलिटिकिल एजेट कैथा* के पास भेज दिया था। २१ नवम्बर को राजा गङ्गाधरराव का देहान्त हुआ। यह समाचार भी उसने अविलम्ब पहुचा दिया।

---

*उस समय बुन्देलखण्ड और रीवा का पोलिटिकिल एजेंट कैथा जिला हमीरपुर में रहता था।

[२७]

एलिस का भेजा हुआ राजा गङ्गाधरराव का १९ नवम्बर का खरीता और उनके देहान्त का समाचार मालकम के पास जैसे ही कैथा पहुंचा उसने गवर्नर जनरल को अपनी चिट्ठी अविलम्ब (२५ नवम्बर के दिन) भेज दी। चिट्ठी के साथ एलिस का भेजा हुआ खरीता और गङ्गाधरराव का वह खरीता भी, जो उन्होने सीधा मालकम के पास पहुंचवाया था, भेज दिया। मालकम की चिट्ठी का सार यह था —

'झासी के राजा को बिना कम्पनी सरकार की अनुमति लिये, गोद लेने का अधिकार नही है। रानी योग्य और लोकप्रिय हैं, परन्तु कम्पनी का शासन जन-हित की दृष्टि से ज्यादा अच्छा होगा। ऐसी परिस्थिति में रानी को पाच सहस्त्र मासिक वृत्ति, निजी सम्पत्ति और नगर का महल दे दिया जावे।'

इस प्रकार की चिट्ठी के भेजने के उपरान्त ही मालकम ने झासी के बन्दोवस्त का प्रयास शुरू कर दिया और अपना फौज फाटा बढा दिया।

इधर झासी दरवार के लोगो का विश्वास था कि दत्तक पुत्र के नाम पर राज्य चलेगा और वे दामोदरराव के नाम पर शासन प्रबन्ध करने भी लगे।

उन्नीसवी शताब्दि के आरम्भ काल में जव कम्पनी का राज्य जल्दी जल्दी बढा तव वह अपनी नीति और हथियार की विजय के बोझ से लदी सी जा रही थी और समय समय पर कम्पनी के साझीदारों ने विचार प्रकट किया था कि विजय और इलाके की सीमा वढाने की योजनायें घृणास्पद हैं। और ब्रिटिश जाति की इच्छा, प्रतिष्ठा और नीति के प्रतिकूल हैं। असल वात यह थी कि कही ऐसा न हो कि मुफ्त में आया हुआ इतना माल किसी अदृष्ट गड्ढे मे चला जावे।

इन योजनाओ का सही रूप डलहोजी था उसकी नीति में कुछ भी लगा-लिपटा हुआ न था। उसका वक्तव्य स्पष्ट था।

'हम किसी भी मौके को चूकने नही देना चाहते । हमारे इलाको के बीच बीच में ये जो छोटी छोटी रियासते हैं, काफी खिझलाहट का कारण है । इनको अपने हाथ में कर लेने से खज़ाने मे रुपया बढेगा और हमारी शासन प्रणाली से इन रजवाडो की जनता को लाभ ही लाभ प्राप्त होगा ।'

जिस समय खरीतो सहित मालकम की चिट्ठी कलकत्ता पहुची डलहौज़ी अवध की ओर दौरे पर गया हुआ था । चार पाच महीने तक कोई उत्तर नही आया ।

[२८]

जिस दिन गंगाधरराव का देहान्त हुआ, लक्ष्मीबाई १८ वर्ष की थी। इस दुर्घटना का उनके मन और तन पर जो आघात हुआ वह ऐसा था, जैसे कमल को तुषार मार गया हो। परन्तु रानी के मन में एक भावना थी, एक लगन थी, जो उनको जीवित रक्खे थी। वह छुटपन के खिलवाड़ में प्रकट हो हो जाती थी। इस अवस्था में वह उनके मन के किस कोने में पड़ी हुई थी, इसको बहुत ही कम लोग जानते थे। जो जानते थे, उनमें से एक तात्या टोपे था। दूसरा नाना घोडपन्त।

राजा गंगाधरराव के फेरे के लिये बिठूर से नाना घोडपन्त, अपने दोनों भाईयो सहित आया। तात्या भी साथ था। वे सब जवान हो गये थे। पैन्शन के ज़ब्त हो जाने के कारण सतप्त थे। और रोष भरे। गगाधर-राव के देहान्त के कारण उनको बडी ठेस लगी। जालौन का राज्य समाप्त हो चुका था। एक महाराष्ट्र की गद्दी झासी की बची थी। उनको भय था कि यह भी विलीन होने जा रही है। अत बाजीराव द्वितीय बिठूर में बैठे बैठे, शुरू ज़माने में, जिस स्वराज्य स्वप्न की कल्पनायें उपस्थित किया करते थे और जिनसे इनका तथा लक्ष्मीबाई का बाल्यकाल पाला गया था, वह केवल दुस्वप्न सा अवगत होने लगा था।

रानी किले वाले महल में ही रहती थी। वही उनकी सहेलिया और सिपाही, प्यादे भी। नीचे का महल, हाथी खाना, सेना, घोड़े हथियार इत्यादि सब हाथ में थे।

नगर का शासनसूत्र भी अधिकार में था। राज्य की माल दीवानी भी उनके मन्त्रियो के हाथ में थी, परन्तु कम्पनी सरकार झासी की छावनी में अपनी सेना और तोपे बढाने में व्यस्त थी। इससे मन में कुछ खुटका उत्पन्न होता था।

शोक समवेदना के उपरान्त नाना के दोनो भाई बिठूर चले गये। नाना और तात्या रह गये।

विकट ठड थी। ठिठुरा देने वाली। दीन दरिद्रो के दात मे दात बजाने वाली। उस पर सन्ध्या से ही बादल घिर आये। आधी चल उठी और पानी बरस पडा। नाना और तात्या रानी से बातचीत करने सध्या के पहले ही किले के महल में गये। भोजन के उपरान्त बातचीत होना थी और फिर डेरे को लौटना था। परन्तु ऋतु की कठोरता के कारण उनके विश्राम का वही प्रबन्ध करवा दिया गया।

दीवान खास में बैठक हुई। सुन्दर, मुन्दर, और काशीबाई भी रानी के साथ थी।

रानी का मुख दुर्बल हो जाने के कारण जरा लम्बा जान पडता था। तो भी उस सतेज सौन्दर्य के आतक मे वही आदर उत्पन्न करने वाला ओज था। विशाल आखो की ज्योति और भी ज्वलन्त थी। रानी कोई आभूषण नही पहिने थी—केवल गले में मोतियो की एक माला और हाथ में हीरे की एक अगूठी। श्वेत साडी पर एक मोटा श्वेत दुशाला ओढे थी। सहेलिया भी जेवरो का त्याग करना चाहती थी, परन्तु रानी के आग्रह से उन्होने ऐसा नही कर पाया था।

रानी—बुन्देलखण्ड के रजवाडे बुझे हुये दीपक हैं। उनमें तेल है, परन्तु लौ नही।

नाना—'क्या उनमें लौ पैदा नही की जा सकती?'

रानी—कह नही सकती। तुमने ढूढ खोज की? मैं तो बाहर आने जाने से विवश रही हूँ, और हूँ।'

तात्या—'मैं यो ही घूमा फिरा हूँ। विशेष तौर पर यहा के किसी राजा से प्रसग नही छेडा। परन्तु वातावरण बिलकुल ठस जान पडा। राजाओ को अपने सरदारो और प्रजा से प्रणाम लेने मे सुख की इति अनुभव होती है। हास विलास और सुरापान में मस्त रहते हैं।'

रानी—'वीरसिहदेव, छत्रसाल और दलपति के बुन्देलखण्ड का हाल कुछ और होना चाहिये था।'

नाना—'लखनऊ और दिल्ली का हाल कुछ अच्छा है।'

तात्या—'वहुत दिन हुए, जव मैं रानी साहव को लखनऊ, दिल्ली की परिस्थिति सुना गया था।'

रानी—'तुम लोग मुझसे रानी साहव मत कहा करो। अच्छा नही लगता।'

'तात्या—'वाईसाहव कहूँगा।'

नाना—'दिल्ली का हाल मै सुनाता हू। वादशाह वृद्ध है। अपनी स्थिति से वहुत दुखी है। मन के महाकष्ट को कविता में होकर घटाता रहता है। उसके राजकुमार कुछ होनहार जान पडते हैं, परन्तु दिल्ली के राजकुमारो में जिस आयु में प्राय घुन लग जाता है कदाचित इनको भी लग जावेगा।'

रानी—'ग्वालियर?'

नाना—'राजा का अभी लडकपन है। अङ्गरेज प्रवन्ध कर रहे हैं।'

रानी—'इन्दौर?'

तात्या—'इन्दौर मै गया था। वहा का तो कचूमर ही निकल गया है।'

रानी—'हैदरावाद?'

तात्या—'वहा नही गया। परन्तु इतना निर्विवाद समझिए कि हैदरावाद अङ्गरेजो का परम भक्त है। जनता अपने साथ है।'

रानी—'पजाव की सिक्ख रियासते?'

नाना—'वहा मैं कही कही गया। सिक्खो में अङ्गरेजो को पछाडने की शक्ति होते हुए भी, फूट इतनी विकट है और राजा इतने स्वार्थान्ध हैं कि अङ्गरेज उस ओर से विलकुल निश्चिन्त रह सकते हैं।'

रानी—'और झाँसी में तो अव कुछ है ही नही। जो कुछ है भी सभव है कि, हाथ में न रहे।'

नाना—'झाँसी में ही तो हम लोगों का सव कुछ है। मनू—वाई साहव, झाँसी ही तो हम लोगो की एक आशा है।'

लक्ष्मीवाई के फीके होठो पर वही विलक्षण मुस्कराहट क्षीण रूप में आई।

बोली, 'क्या आशा है ?'

तात्या ने कहा, 'दामोदरराव की गोद स्वीकार की जावेगी, ऐसा विश्वास है। एलिस ने गोलमोल अवश्य लिखा है, परन्तु कलकत्ते में अपने कुछ मित्र हैं। वे लोग कुछ सहायता करेंगे।

रानी ने कहा, 'एलिस, मालकम सब एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं। ये लोग अपने लाट की नेत्रकोर के सकेत पर चलते हैं। मैंने यहां से पूरनचन्द बगाली बाबू को कलकत्ते भेजा है। वह बहुत अङ्गरेजी पढा है। लाट से स्वयं मिलेगा और हमारी बात को समझाएगा। क्या कम्पनी सरकार का लाट हमारे इतने बडे सन्धिपत्र को समूचा निगल जायगा ?'

तात्या ने सहेलियो की ओर देखा।

रानी समझ गईं। बोली, 'ये तीनो मेरी अत्यन्त विश्वासपात्र हैं। बिना किसी हिचक के बात किये जाओ।'

नाना ने कहा, 'मुझको मालूम है। ये मराठा हैं।'

'झासी की लगभग सभी स्त्रियो का विश्वास किया जा सकता है।' रानी बोली, 'ये तीनो तो स्त्रियो की मानो पराग हैं।'

नाना ने कहा, 'बाईसाहब, यह लाट और इसके भाई वन्द 'यावच्चन्द्र दिवाकरौ' वाली सन्धि को समूचा ही पचा गये हैं। झासी वाली सन्धि में न तो दिवाकर की सौगन्ध है और न चन्द्रमा की। ये लोग किसी चीज को पवित्र नही समझते। इनकी लिखतम का, इनकी बात का, कोई भरोसा नही। हमारी पेंशन के छीनने के समय कहा था तीस बत्तीस साल में आठ लाख रुपया साल के हिसाब से तीन करोड रुपया बैठता है। वह सब कहा डाला ? इनका विश्वास नही करना चाहिए।'

रानी ने वैसे ही मुस्करा कर पूछा, 'क्या ये लोग सीधे साधे गणित को भी धोखा देते हैं ?'

नाना जरा हँसा।

तात्या ने उत्तर दिया, बाईसाहब ये लोग अपने स्वार्थ पर अचलरूप से डटे रहते हैं। जब तक स्वार्थ पर ठोकर लगने का अन्देशा नही रहता तब तक हरिश्चन्द्र और युधिष्ठिर का सा बर्ताव करते हैं, परन्तु जहा देखते हैं कि स्वार्थ को धक्का लग जावेगा, तुरन्त पैंतरा बदल देते हैं। और इतने धूर्त हैं कि इनमे से कुछ न्याय करने करवाने का ढोंग बनाते हैं और दूसरे उसी ढोंग की ओट में स्वार्थ की सिद्धि करते हैं। जैसे, हेस्टिङ्गस ने अवध की बेगमो को लूटा। कुछ अंग्रेजो ने उस पर मुकद्दमा चलाया। बाकी ने इनाम देकर उसको छोड दिया। इधर बिचारा नन्दकुमार बगाली फासी पर चढा दिया गया।'

रानी ने प्रश्न किया, 'लखनऊ का अब क्या हाल है?'

नाना ने उत्तर दिया, 'पहले का हाल तात्या बतला गया था। अब तो वहा शून्य है। जनता निस्सन्देह जीवट वाली है।'

रानी ने ज़रा सोचकर कहा, 'मैं इन सब बातो को सुनकर इस निष्कर्ष पर पहुची हूं, कि जनता के चित्त का पता अभी पूरा नही लगाया गया। जनता असली शक्ति है। मुझको विश्वास है कि वह अक्षय है। छत्रपति ने जनता के भरोसे ही इतने बूडे दिल्ली सम्राट को ललकारा था। राजाओ के भरोसे नही। मावले, कुणभी किसान थे और अब भी हैं। उनके हलो की मूठ मे स्वराज्य और स्वतन्त्रता की लालसा बँधी रहती है। यहाँ की जनता को भी मै ऐसा ही समझती हू। उसको छत्रपति ने नेतृत्व दिया था। यहा की जनता को तुम दो।'

वे दोनो सिर नीचा करके कुछ सोचने लगे।

रानी ने अपनी सहेलियो की ओर देख कर कहा, 'तुम लोग क्या कहती हो?'

सुन्दर ने तुरन्त उत्तर दिया, 'मैं सरकार कुणभी हूँ। और क्या कहूँ? आपकी आज्ञा का पालन करते हुए मरने के समय आगा पीछा नही सोचूगी।'

नाना ने कहा 'तुम ठीक कहती हो बाईसाहब, अभी हम लोग जनता के पास नही पहुचे हैं। आशा है जनता शीघ्र जाग्रत हो जावेगी, परन्तु वह बिना नेता के कुछ नही कर सकती।'

'नेता को नेता नही ढूढना पडता।', रानी बोली, 'समर्थ रामदास का आशीर्वाद नेता को तो बिना विलम्ब उत्पन्न कर देता है।'

नाना—'मै समझ गया। निराशा का कोई कारण नही।'

रानी—'हा, जो साधन जहा मिले उसका उपयोग करना चाहिये। जनता मुख्य साधन है। राजा और नवाब की पीढी, दो पीढी ही योग्य होती है। परन्तु जनता की पीढियो की योग्यता कभी नही छीजती।'

नाना—'अब एक प्रश्न और है–यदि तुम्हारा अधिकार लाट के यहाँ से मान्य रहा तो हमको स्वराज्य प्राप्ति के उपायो के जुटाने में सुविधा रहेगी, परन्तु यदि लाट ने न माना, जैसी कि मुझको आशका है, तब किस प्रकार कार्य साधन होगा?'

रानी—'मैं ऐसा क्षण भर भी नही सोचती कि लाट नही मानेगा। नही मानेगा तो मैं मनवाऊँगी। झासी राज्य की जनता सोलहआना मेरे साथ है। और यहा की जनसख्या महाराष्ट्र के मावलो से अधिक ही है कम नही है। बुन्देलखण्ड में ब्राह्मण से लेकर भगी तक हथियार चलाना जानते हैं और हथियार चलाने की हौस रखते हैं।'

जिस समय रानी ने यह बात कही उनका चेहरा तेज से दीप्त हो गया उन दोनो पुरुषो के मन में हर्ष की लहर दौड गई।

तात्या ने कहा, 'अग्रेजी सेना के हिन्दू मुसलमान सिपाहियो को भी टटोलू गा।'

रानी बोली, 'अभी नही। पहले उनके घरो को टटोलो, जहा उन्होने जननी से जन्म पाया और उसकी गोद में खेले हैं।'

नाना ने पूछा, 'यदि लाट का उत्तर हमारे विरुद्ध आया तो क्या तुम तुरन्त युद्ध छेड दोगी?'

रानी ने जवाब दिया, 'बिठूर से झांसी आकर इतने दिनो में बहुत कुछ सीखा है। समय उत्तर देगा।'

वे दोनो समझ गये कि रानी का कार्यक्रम इस समय ढूंढ खोज करने का और अवसर की प्रतीक्षा का है।

[१६]

सवेरे की उस कपकपाती ठड में जब सूर्य भी बदली में मुँह छिपाये था, नवाब अलीबहादुर अपने नौकर पीरअली को साथ लिये हाथी पर सवार एलिस को कोठी पर पहुँचे। जिस भवन में आज कल डिस्ट्रिक्ट जज की कचहरी है, उसी में एलिस रहता था।

एलिस अलीबहादुर की हवेली पर जाया करता था। अलीबहादुर एलिस को अपना मित्र मानते हुये भी, उसकी खुशामद करने से नही हिचकते थे।

जैसे ही वे हाथी से उतरे, एलिस का नौकर पास दौडता हुआ आया। उन्नीसवी शताब्दि के अन्त में साहब के नौकरो और खानसामो का जो पद गौरव चरम सीमा को पहुँच गया था, उस समय उसका आरम्भ था।

नौकर ने झुककर सलाम किया। अलीबहादुर ने मिठास के साथ पूछा, 'साहब क्या कर रहे हैं ? बहुत उलझन में तो नही हैं ? मिलना चाहता हू।'

नौकर ने जवाब दिया, 'नही हुजूर। दफ्तर में अभी अभी आकर बैठे हैं। हुक्का पी रहे हैं। फौरन इत्तिला करता हू।'

कुछ क्षण पश्चात् ही नौकर अलीबहादुर को भीतर पहुँचा आया।

अभिवादन और कुशल-क्षेम प्रश्नोत्तरी के उपरान्त उन दोनो में बातचीत होने लगी।

अलीबहादुर ने कहा, 'रानी साहब की अर्जी का कुछ जवाब नही आया। शायद खारिज हो जावेगी।'

एलिस विचार की मुद्रा बनाकर बोला, 'कह नही सकता। आपका ऐसा ख्याल क्यो है ?'

अलीबहादुर ने कहा, 'रियासतो के बुरे इन्तजाम को देखकर और जनता की भलाई की नजर से, सरकार ने कई रजवाडो में अपना अदल, अमन और इन्साफ चालू किया है। इसलिये शायद झाँसी में भी सरकारी बन्दोबस्त किया जावे।'

भोलेपन के साथ एलिस बोला, 'मुझको मालूम नही नवाब साहब, पर अगर ऐसा हो तो यहा की जनता सरकारी हुकूमत और कानून पसन्द करेगी ?'

अलीबाहादुर ने बडे मीठे स्वर मे जवाब दिया, 'दोनो हाथो से जनाब। स्वर्गीय राजा साहब के जमाने में जो जुल्म हुये हैं उनको आसानी से नही भुलाया जा सकता।'

एलिस सचाई का ढोग करते हुये बोला, 'कुछ मैंने भी सुने हैं जैसे साधारण से अपराधो पर लोगो को बिच्छुओ से कटवाना। लेकिन, मरने के करीब के जमाने की कोई शिकायत मेरे कान तक नही आई।'

एलिस नवाब साहब जैसे हिन्दुस्थानियो की आतो तले से बात को निकालने का केडा जानता था। उनकी ओर देखने लगा।

नवाब ने कहा, 'छोटी छोटी सी बातो का आपके सामने बयान करना आपकी शान के खिलाफ होगा। पहले के किये हुये कुछ अन्धेरे इतने गजब के हैं कि सताये हुये लोग अब तक तडप रहे हैं।'

'मुझको ऐसे लोगो के नाम और उन पर बीती हुई याद नही नवाब साहब।' उत्सुकता प्रकट न करते हुये एलिस बोला

'कमसे कम एक ही की बीती हुई सुनें जनाब' नवाब ने कहा, 'नाम बिचारे का खुदाबख्श है पहले उसको राजा साहब बहुत अङ्ग लगाये रहते थे। नाटकशाल में बराबरी से बिठलाते थे। छोटी सी जागीर भी दिये हुये थे। एक दिन सनक जो सवार हुई तो गरीब को देश निकाले की सजा देदी। जागीर जब्त करली। उसने अर्ज मारूज पेश करने की बरसो कोशिश की, मगर उसको मोका तक नही दिया गया।'

'उसने कम्पनी सरकार में कोई अर्जी दी ?' एलिस ने पूछा।

नवाब ने माथा टटोल कर उत्तर दिया, 'याद नही पडता। शायद नही दी।'

अङ्गरेज ऐसे मौको पर अपनी धाक जमाते हैं।

एलिस बोला, 'खुदाबख्श अर्जी देता तो एजेंट साहब बहादुर सुनवाई करते।'

खुशामदी हिन्दुस्थानी ऐसे ही मौके पर स्वार्थ–साधन का जरिया निकाला करते थे।

नवाब ने कहा, 'जनाब की सेवा में खुदाबख्श अर्जी पेश करदे?'

एलिस जरा सकट में पडा। परन्तु उसकी व्यापार कुशल बुद्धि ने सहायता की।

बोला, 'अर्जी जरूर दे। परन्तु वडे साहब के पास कैथा भेजे। जब मेरे पास आवेगी, मैं उचित काररवाई करूँगा।'

इतने से शायद नवाब साहब का मन भर गया। उन्होने चिन्ह कम से कम ऐसे ही प्रकट किये।

फिर वहुत मुस्कराकर, वडे मिठास के साथ अलीवहादुर ने कहा, 'एक मेरी ज़ाती विनती है।'

एलिस ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा, 'जरूर कहिये नवाव साहब।'

अलीबहादुर वास्तव में जिस प्रयोजन से एलिस से भेट करने आये थे उन्होने प्रकट किया।

'जनाव को मालूम है, मिसलो मे लिखा पढा है, मेरे स्वर्गीय पिता राजा रघुनाथराव साहब ने मुझको ८५ गाव जागीर में लगाये थे। सरकारी बन्दोबस्त होने पर वह जागीर मेरे पास से निकाल ली गई और पाच सौ रुपया माहवारी वसीका लगा दिया गया। बडा कुटुम्ब है। सफेद पोशी साथ लगी है। गुजर नही होती। राजा साहब गगाधरराव से प्रार्थना की थी। उन्होने कहा था एजेन्ट साहब से सलाह करके जवाब देगे। फिर उनका लड़का मर गया और वे बीमार पड गये। बात अधूरी रह गई। अब शासन बदला है। शायद सरकारी बन्दोबस्त हो जाय। इसलिये मेरी उचित विनती पर ध्यान दिया जाना चाहिये।'

एलिस सोचने लगा।

नवाब ने समझा कि पानी बिलमा।

एलिस ने समझ लिया कि खुदाबख्श वाली शिकायत केवल भूमिका और पेशबन्दी थी। असल में नवाब साहब खुदाबख्श की ओट मे अपनी विनती लेकर आए हैं। परन्तु वह कुढा नही। उसको एक छोटा सा अध्ययन मिला और अपना काम निकालने का अवसर तथा साधन।

बोला, 'नवाब साहब, आप मेरे मित्र हैं। मुझसे जो कुछ सहायता बनेगी करूँगा। अर्जी दीजिये। उसमें सब हाल ब्योरेवार लिखिए। अर्जी चाहे एजेंट साहब बहादुर के पास बाला बाला भेज दीजिए, चाहे मेरी मार्फत।' 'बहादुर' शब्द पर उसने जरा ज्यादा जोर लगाया।

इस समय खुदाबख्श की कोई चिन्ता अलीबहादुर को न थी।

खुश होकर बोले, 'मैं बहुत धन्यवाद देता हू। परमात्मा आपको लाट साहब करे।' फिर मिठास में घुलकर कहा, जनाब को मालूम है कि महाराजा रघुनाथराव वाला महल मेरे कब्जे में रहा है। मुझको महाराज साहब दे गये थे। उसको राजा गङ्गाधरराव ने यो ही छीन लिया। किसी काम मे नही आ रहा है। ताले पडे हैं।'

एलिस ने कहा, 'मुझको मालूम है। वह जगह आपकी है आपको मिलेगी, जरासा इन्तजार करिये।'

नवाब साहब ने सलाम करके धन्यवाद दिया। चलने की आज्ञा मांगने लगे।

एलिस ने हँसकर कहा, 'थोडा सा और बैठिये नवाब साहब।'

नवाब साहब को घर पर काम ही क्या था? सट से जम गये।

एलिस ने फुसलाहट के ढग पर पूछा, 'आपके पास तो बस्ती के बहुत लोग आते-जाते हैं। क्या हाल है?'

'बहुत अच्छा हाल तो नही है। लोग परेशान हैं। सच पूछिये तो वे लोग चाहते हैं, कि कम्पनी सरकार का बन्दोबस्त हो जाय।'

'लोगो से ज़रा और ज्यादा मिलते रहिये और जनता के सुख-दुख की बाते मुझको बतलाते रहिये ।'

'ऐसा ही करूँगा। लगभग दूसरे-तीसरे दिन हाजिरी दिया करूँगा।'

'रानी साहब का क्या हाल है ? उनका स्वभाव किस तरह का है ?'

'रानी साहब रञ्ज में रहती हैं ? चाल-चलन अव्वल दर्जे का खरा है। अपने धर्म की पाबन्द हैं। घुडसवारी, हथियार चलाना, लिखने-पढने की योग्यता... '

'यह सब मुझको मालूम है नवाब साहब। मैं उनकी बहुत इज्जत करता हू। मै केवल यह जानना चाहूगा कि कोई इधर-उधर के लोग उनको बरगलाते तो नही हैं।'

अभी तो उनके नाते-गोते के लोग फेरे के लिये आ जारहे हैं। हाल में बिठूर के कुछ लोग आये थे। वे चले गये।'

'कृपा होगी यदि आप इन आने-जाने वालो का भी पता देते रहे।'

'बहुत अच्छा जनाब। पीरअली मेरा बहुत भरोसे का नौकर है। उसको इस काम पर तैनात कर दूंगा। मेरे साथ ही हाथी पर आया है। आप फरमाएँ तो सामने पेश करदूँ।'

'नही नवाब साहब, जरूरत नही। आपको यकीन है तो मुझको भी है।'

इसके बाद अलीबहादुर चले गये। घर जाते समय मार्ग में ही पीरअली को उन्होने उसका कर्तव्य सुझा दिया।

खुदाबख्श हवेली पर मिला। उससे अर्जी देने को कहा। बोले, 'साहब जरा मुश्किल में माने। वह तुम्हारी अर्जी पर विचार करेंगे।'

खुदाबख्श ने कहा, 'मैंने रानी साहब से अर्ज करवाई थी। उन्होने झासी में रहने की आज्ञा दे दी है। जागीर के बारे में उन्होने हुक्म दिया है कि लाट साहब के यहा से अधिकार मिलनेपर, खुलासी कर दी जावेगी। इसलिये सोचता हूँ अभी बडे साहब या छोटे साहब, किसी को भी अर्जी न दूँ।'

'अच्छी बात है,' नवाब ने कहा। मन में कुढ गये।

एक क्षण उपरान्त पूछा, 'किसकी मार्फत अर्ज की थी ?'

'मोतीबाई अपनी तनख्वाह की फरियाद करने गई थी। अपनी बात के सिलसिले में उन्होने मेरी विनती भी कर दी।'

'कब ?'

'कल। और आज सवेरे रानी साहब का जवाब आ गया। बहुत नेक हैं।'

मोतीबाई आई हैं ?'

नही, उन्होने खबर भेजी है।'

'मुझको खुशी हुई। मेरे लायक तुम्हारा जो काम होगा, करूँगा।'

'आपकी कृपा है।'

अलीबहादुर ने सोचा, 'एलिस साहब के कान मे इस बात के डालने की जरूरत नही है।'

खुदाबख्श शहर में रहने लगा।

[३०]

हाट का दिन था। झासी के निकटवर्ती गावो से बहुत लोग आये थे। बाजार में झासी के भविष्य की क्या चर्चा है, इसके जानने के लिये, वे उत्सुक थे। हल्वाईपुरा झासी का सबसे बडा बाजार था। ग्रामीण इसको 'मिठियाई' कहते थे। हलवाइयो की दूकाने एक सिरे पर थी। दूसरे सिरे पर एक दिशा में 'मुरली मनोहर' का मन्दिर और सामने मन्दिर का नक्कारखाना। मन्दिर में मूर्ति राधाकृष्ण की थी—और है। मन्दिर कहलाता लक्ष्मीबाई का है, इसमें दर्शन करने के लिये लक्ष्मीबाई नियम से जाया करती थी।

हलवाइयो की दूकानो और मुरली मनोहर के मन्दिर के बीच के सिलसिले में, अनेक प्रकार की दूकाने थी। बीच मे मार्ग काफी चौडा। पश्चिम की ओर मार्ग दो फन्सो में फूटा है, एक हवेली और किले की ओर, और दूसरा दतिया फाटक को।

हाट के दिन इस सम्पूर्ण मार्ग पर बहुत चहल पहल पर रहती थी;। स्त्रिया और पुरुष आजादी के साथ अपना सौदा खरीद रहे थे और बातचीत कर रहे थे। खुदाबख्श और पीरअली बाजार मे साथ थे।

कपडे की दूकान से कुछ कपडा मोल लेकर एक देहाती ने दूकानदार से पूछा, 'काये जू अब झासी में का होने ?'

'जो होत आओ है सो हुइये' उत्तर मिला।

'हम गाव बारे इतनीई में समझ जात होते तो का हती। तनक उल्था करके बताओ।'

तीन चार देहाती वहा और आ गये। बिक्री की आशा से दूकानदार का मन बढा। बातचीत का सिलसिला चला।

'महाराज ने स्वर्गवास के पैले कुँअर गोदी लएते सो सबरो ससार जानत। वा गोद के मनवावे के लाने उनने अपने सामने अर्जी लाट साब लो पौंचा दईती। अबै ऊतर नई आओ।'

'गोद के मनवाबे के लाने अर्जी ! जो कैसो अन्देर राम ! हम अपने गावन मे रोजई गोद लेत देत, पै ईके लानै अर्जी पुर्जी तो कोऊ नई देत।'

'अङ्गरेजन ने नये नये कानून निकारे हैं।'

'तो का ऐसे कानून चल जैहैं ?'

' बे तौ बात बात पै क़ानून बरसाउत। अर्जी दो, 'टिकट लगाओ, पंचायतन खौ चूल्हे में डारो। गोरन के बगलन पै मारे मारे फिरौ, हाजरी देओ...'

'इतनो खाओ और इतनो सोओ—अबका ईके लानै सोऊ अङ्गरेज कानून बनाये ?'

'अक्कल चेथरी* में चढ गई सो अब उने कछू सूझत नईया।'

'तौका ऐसी आखे फट गई धरम-करम कछू नही लेखत ?'

'वे धरम-करम का चीन्हे ? बौ तौ हिन्दू-मुसलमान केई बाटे परो है।'

इस आत्मश्लाघा के बाद दूकानदार ने ग्राहको को चलाया। भीड बढ गई थी। सौदा मजे मे चल रहा था। दूकानदार बात करना चाहता था और देहाती सुनना और गुनना चाहते थे।

'ऐहो सो अङ्गरेज़ की जा अन्दाधुन्धी चल जैहै ? हम तुम का मानसई नईया ?'

'अङ्गरेजन की छाउनियन मे गउयँ कट रईं हैं। कानून कौ ऐसौ डडा धलरओ कै सब जने सास लैवे में उकतान लगे।'

'कितै जू ?'

'सब जागा। ग्वालियर रियासत तौ है, पै उतै अङ्गरेजन कौ चालौ चल रओ। उतै कौ बडौ साब जब बजार में होके निकरत तब सब बजार बारन खो उठ उठ कै झुक झुक कै राम सलाम करने परत।'

'जौ बडो साब को आय ? ऐसै राम राम तौ राजन खौ करी जात।'

'बडो साब लाट साब कौ नौकर है।'

---

*चेथ—मस्तक का सबसे ऊपरी भाग।

'और लाट साब कीको नौकर है ? का बौ राजा है ?'

'राजा नइया। बिलात के राजा को नौकर।'

'ओ राम ! नौकरन के नौकरन खो झुक झुक के परनाम ! ई देस के ऐसे दिन आ गये ! और जो कोऊ राम राम न करैं तौ ?'

'ऊखो बँगला पै पकर बुलाउत और कष्ट देत।'

देहातियो ने दात पीसे।

एक बोला, 'हम तौ कौउन अङ्गरेज खो राम राम न करैं और न सलाम। बौ न हिन्दू न मुसलमान। और पकर कै बुलाय तौ खुपरिया खोल देओ।'

'इतने में कुछ दूसरी से 'हटो बचो' की आवाज आई।

एलिस बाजार घूमने घोडे पर आया था, साथ में एक सवार था। वही 'हटो बचो' कह रहा था।

कुछ—बहुत थोडे दूकानदार– प्रणाम करने को उठे। बाकी अपना काम करते रहे।

किसी देहाती ने प्रणाम नही किया।

वह कपडे वाला प्रणाम करने को उठना चाहता था कि देहातियो ने मना कर दिया।

एक ने कहा, 'बैठे जो रओ कौन बौ बतासा बाट रओ।'

दूकानदार ने प्रणाम बैठे बैठे ही किया। देहाती एलिस की वेशभूषा देखते रहे। एलिस आगे निकल गया। मार्ग में चाँदी के जेवरो से लदी, माथे पर सिन्दूर की बिन्दी लगाये, जरा लमछेरे शरीर की एक सुन्दर स्त्री उसने देखी। कुतूहलवश उसने उस स्त्री पर आख जमाई। स्त्री जरा भी नही सहमी। बल्कि उसने एलिस पर आँख तरेरी।

उस स्त्री के साथ एक स्त्री और थी। उस सुन्दरी ने अपनी सगिन से तुरन्त कहा, 'जो नठिया मोरी ओर का देखत तौ ? ई कै का मताई बैनें न हुईए।'

झलकारी, इन अङ्गरेजन मे चलन दूसरी तरा को सुनत।'

'हुइये आगलगन के। मोरे मन में तो आउत कै पनैया उतार कै मूछन बरेके मोपें चटाचट दैओ।'

'कायरी ऊनै तोरो का लै लओ ?'

'हमाओ कछू लैवे खो आय तब पसुरिया टोर कै धर दैओ, पै वैना का इन गोरन खौ जानती नइँया ? झासी खौ गुटकन चाउत।'

'हमाई रानी न गुटकन दे।

'ए, रानी का है छाच्छार* दुर्गा है। ऐसी प्यारी लगत। मोये तो ऊदिना हरदी कूँ कूँ में गरे से लगा लओ तो। मैं तो ऊवै अपने प्रान दै सकत।'

'और तौरो मुस का कर है ?'

'काये अब गारियन पै आ गई ? मै ठूँसा दैओ, सो सबरो बुकलयावो बिसर जै। जब रानी पै कौनउ आफत आजै, तब का लुगाई और का मानस, सब अपने खौ हौम देये।'

पीरअली और खुदाबख्श ने पान वाले की दूलान पर सुना —

'यह छोटा साहब कैसी अकड के साथ बाजार मे होकर निकलता है !'

'इस समय इन लोगो का सितारा चमका है। कभी डूबेगा भी।'

'इनकी तकदीर तो देखो। जो सामने आया समेट लिया गया। हैं हिम्मत वाले।'

'जी हा ! हिम्मत के सब हरफ खुदा ने इन्ही के खोपडे पर लिख दिये हैं। हमारी फूट ने हमे खालिया। नही तो क्या मुगल, पठान, राजपूत, मराठा वगैरह के होते ये एक घडी भी हिन्दुस्थान में ठहर सकते थे ?'

'वनिये बनकर आये और ठाकुर बनकर जम रहे हैं।'

'इन राजो नवावो ने चौपट किया।'

'प्रजा को कष्ट दिये। सिपाही लडाई में हारे, और राज्य गया।'

'अजी सब जनाने हो गये।'

---

*छाच्छार = साक्षात।

'यही के राजा को न देखो । नाटक चेटक और नाचने गाने में सब समाप्त कर दिया ।'

खुदाबख्श के कान खडे हुये । क्षोभ आया ।

उसी आदमी से पूछा, 'यहा के राजा ने रैयत को तो कोई दुख दिया नही ?'

'दुख न देना और बात है, सुख पहुचाना दूसरी बात ।'

'अङ्गरेजो का राज हो गया, तो याद आवेगी ।'

'अङ्गरेज़ कौन कच्चा खाये जाते हैं ।'

'जनाब वह ऐसी कौम है कि बिना खाये ही पचा जावेगी ।'

'ऐसा नही हो सकता । यहा का राज अङ्गरेजो के हाथ नही जावेगा ।'

'कुछ नही कहा जा सकता । यदि चला गया तो ?'

तम्बोली ने पान बनाते बनाते कहा, 'ठट्ठा है जो चला जावेगा । रानी हमारी बनी रहे, हम तो अपने सिर कटवा देंगे ।'

पीरअली ने हँसकर कहा, 'तुम तो पान काटते कतरते जाओ भाई । सिर काटना, कटवाना हम सिपाहियो का काम है ।'

तम्बोली ने ध्यान पूर्वक पीरअली को देखा ।

बोला, 'आप झाँसी के रहने वाले नही जान पडते । परदेशी हैं ?'

'क्यो ? क्या फर्क पड गया ?'

'धरती आकाश का ।'

'कैसे ?'

'अभी कुछ नही कह सकता । समय आने पर देखना ।'

'समय आने पर तेली तम्बोली भी तलवार बन्दूक चलावेगे, यह देखना बाकी है ।'

'अभी न देखलो । ले आओ अपनी ढाल-तलवार मैं अपनी लाता हूँ । फिर देखलो झासी का पानी ।'

पीरअली हँसा । खुदाबख्श उसको वहा से ले गया ।

दूकान के पास झम्मीसिह और भग्गी दाउजू सुनार खडे थे ।

झम्मीसिंह ने कहा, 'खूब कई साब तुमने, स्याबास । अँगरेजन कौ जासूस सौ का हतौ ?'

तम्बोली बोला, 'हुइये । का करनै कक्का ।'

भग्गी दाउजू ने कहा, 'झासी लटी तकै तिहि खाये कालका माई ।'*

'वा दाउजू वा,' तम्बोली बोला, 'कविराजई तो ठ्रे ।'

झासी मे उस समय अनेक लावनी बाज थे । उनकी कविताये पिंगल के नियमो मे परे होती थी, लेकिन थी वे बहुत लोक प्रिय । भग्गी दाउजू उन्ही में से एक था ।

पीरअली ने बाज़ार का सारा समाचार अलीबहादुर को दिया ।

अलीबहादुर ने दूसरे दिन एलिस को सुनाया ।

एलिस ने नवाब साहब को धन्यवाद दिया और मन में कहा, 'आल बाजार गौसिप' (सब बाजार की गपशप) ।

---

*भग्गी दाउजू का रायसा—परिशिष्ट में देखिये ।

[३१]

जब महीने भर से ऊपर हो गया और कलकत्ते से कोई जवाब न आया तो एलिस, मालकम इत्यादि को चिन्ता हुई। शायद गवर्नर जनरल रानी के पक्ष में फैसला करदें और झाँसी सरकारी 'बन्दोबस्त' की हुकूमत से वंचित रह जाय।

एलिस के सामने सदाशिवराव नेवालकर नाम का एक व्यक्ति दावेदार बन कर आया। खूब रहा—प्यादे से प्यादा कट जावेगा। सदाशिवराव को एलिस ने प्रोत्साहित किया। सदाशिवराव ने एक लम्बे खर्रे की अर्जी पेश की। गङ्गाधरराव के वंश का कुर्सी नामा अर्जी में दर्ज किया—ठीक पांचवी पीढ़ी पर। और रानी बिचारी तो किसी भी पीढी में न थी! गत राजा की धर्मपत्नी! तो भी क्या हुआ? स्त्री तो थी। स्त्री राज्य करने लायक! लेकिन इङ्गलेंड की रानी विक्टोरिया तो पुरुष नही। मगर हिन्दुस्थान इङ्गलेड नही है!

सदाशिवराव की अर्जी को रानी की अर्जी से लड़वा ही तो दिया। डलहौजी रानी के लिये अब क्या खाक करेगा? और न इस मूर्ख के लिये ही कुछ।

मालकम ने ३१ दिसम्बर सन् १८५३ को सदाशिवराव की सिफारिश करते हुये लिखा, 'यदि मृत राजा के पुरखो के किसी मर्द वारिस का ही हक कबूल किया जाना है, तो यह व्यक्ति वास्तव में गद्दी का सब से अधिक निकट का हकदार है।'

सदाशिवराव के पास कही से कुछ धन भी आ गया और वह मजे में राजसी ठाठ से रहने लगा। राज्य मिलने में कितनी कसर रह गई थी? पोलिटिकल अफसरो ने सिफारिश कर ही दी थी। कोडा हाथ में आ गया। बस। कसर रही थोडी—जीन लगाम घोडी!

रानी गभीरता पूर्वक सारी स्थिति का अवलोकन कर रही थी। वे झाँसी राज्य को अपने किसी उद्देश्य की पूर्ति का साधन मात्र समझती

थी। झाँसी का राज्य उनके लिए सुरपुर न था–किन्तु, जिस सुरपुर के पाने की उनके मन मे लालसा थी, झाँसी उसकी एक सीढी मात्र थी।

पति के देहान्त के बाद से रानी की दिनचर्या इस प्रकार हो गई —

वह नित्य प्रातःकाल चार बजे स्नान करके आठ बजे तक महादेव का पूजन करती और उसी समय गवैये भजन–गायन सुनाते। फिर ग्यारह बजे तक महल के समीपवर्ती खुले आँगन में घोडे की सवारी, तीरन्दाजी, नेजा चलाना, दौडते हुए घोडे पर चढे चढे, दाँतो से लगाम पकड कर दोनो हाथो से तलवार भाँजना, बन्दूक से निशाना लगाना, मलखब कुश्ती इत्यादि करती थी और अपनी सहेलियो तथा नगर से आने वाली कुछ स्त्रियो को ये सब काम सिखलाती थी। इन मे भाऊबख्शी की पत्नी प्रमुख थी और बहुधा आने वालो में, झलकारी कोरिन।

ग्यारह बजे के उपरान्त रानी फिर स्नान करती और भूखो को खिलाकर तथा कुछ दान-धर्म करके तब भोजन करती। भोजन के उपरात थोडा सा विश्राम। फिर तीन बजे तक ग्यारह सौ राम नाम लिख कर आटे की गोलियाँ मछलियो को खिलाती। उस समय वे किसी से बात-चीत नही करती थी और न कोई उस समय उनके पास बैठ सकता या आ सकता था। वे किसी गूढ चिन्ता, किसी गूढ विचार में निमग्न रहती थी। तीन बजे के उपरान्त सध्या तक फिर वे ही व्यायाम और कसरते—शरीर को फौलाद बनाने की क्रियाये।

सध्या के उपरान्त आठ बजे तक कथावार्ता, पुराण, भगवद्गीता का अठारहवा अध्याय और भजन सुनती। इसके बाद एक घटा आगन्तुको को भेट के लिये दिया जाता था। तीसरी बार स्नान करती। इसके बाद थोडे समय तक इष्टदेव का एकान्त ध्यान। फिर ब्यालू भोजन। पश्चात् सुन्दर, मुन्दर और काशीबाई के साथ थोडा सा वार्तालाप और फिर ठीक दस बजे शयन। वे समय की बहुत पाबन्द थी। शिथिलता तो छूकर नही निकली थी।

राज्य मिलेगा या न मिलेगा—इन दोनो के व्यवधान मे वे महीने चले जा रहे थे। मोरोपन्त ताम्बे और अन्य कर्मचारी यथावत कार्य कर रहे थे। एलिस वर्ग अपना पाया मजबूत बनाने की तैयारी करता चला जा रहा था, वहुत सतर्कता, बडी सावधानी के साथ।

जब कई महीने हो गये और डलहौजी का उत्तर न आया तब मोरोपन्त, नाना भोपटकर इत्यादि की सम्मति से एलिस और मालकम के द्वारा एक खरीता और भेजा। उसमे पुरानी सधियो को दुहराया गया और जिनके सामने गोद ली गई थी उनके नाम प्रकट किये गये।

एलिस ने सिफारिश की। लिखा, 'ओर्छा राज्य के दत्तक की स्वीकृति दी गई है। जैसा ओर्छा राज्य वैसा झासी राज्य। एक को अनुमति देना और दूसरे को न देना अनुचित मालूम होना है।'

यह बात नही कि एलिस रानी की अर्जी का स्वीकृत किया जाना पसन्द करता हो। वह ओर्छा राज्य को दत्तक की स्वीकृति के मिलने पर कुढ गया था—एक अच्छा खासा ग्रास कम्पनी सरकार के मुँह से छुटका दिया गया।

कई महीने उपरान्त डलहौजी अवध के दौरे से कलकत्ता लौटा। झाँमी की मिसिल पेश हुई। जगह जगह ऐमे उद्गार जो नाक तक नफरत पैदा करे।

बुन्देलखण्ड मे कम्पनी के राज्य की स्थापना हमारे पुरखो की सहायता से हुई है! हमारी राजभक्ति की कदर की जानी चाहिये। जरूर! अब किस साधना के लिए राजभक्ति की अटक है? सन्धिया पवित्र होती हैं। वेशक! तुम पेशवा के नौकर थे। पेशवा हमसे हारा और उसने अपना स्वामित्व हमारे हवाले किया। अब तुम हमारे नौकर हुये। मर्जी हमारी, माने हम तुम्हारी गोद–वोद को या न माने।

डलहौजी सोचता-सोचता, जिस निष्कर्ष पर पहुचा, उसकी काउन्सिल भी उससे सहमत हो गई।

डलहौजी ने झाँसी की मिसिल पर २७ फरवरी सन् १८५४ को हुकुम चढाया:—

'झाँसी राज्य पेशवा का आश्रित राज्य था। १८०४ की सन्धि में शिवराव भाऊ ने इस बात को कबूल किया था। हमको ऐसे आश्रित राज्यो में गोद मानने न मानने का अधिकार है। रामचन्द्रराव ने १८३५ मे, जिसको हमने ही सन् १८३२ मे राजा की उपाधि दी थी, मरने से एक दिन पहले किसी को गोद लिया था। वह गोद ब्रिटिश सरकार ने नही मानी थी। हम दामोदरराव की गोद को मानने के लिये बाध्य नही हैं। इसलिये झाँसी राज्य खालसा किया जाता है, और अङ्गरेजी राज्य में मिलाया जाता है। पोलोटिकल एजेट की सिफारिस के अनुसार रानी को मासिक वृत्ति दी जायगी।'

इस हुक्म को कानूनी लिवास ७ मार्च सन् १८५४ को मिल गया।

मालकम के पास डलहौजी की आज्ञा आ गई और उसने विना विलम्ब नीचे लिखा हुआ इश्तिहार एलिस के पास भेज दिया—

'दत्तक को गवर्नर जनरल ने नामन्जूर किया है। इसलिये भारत सरकार की ७ मार्च सन् १८५४ की आज्ञा के अनुसार झाँसी का राज्य ब्रिटिश इलाके में मिलाया जाता है। इस इश्तिहार के जरिये सब लोगो को सूचना दी जाती है कि सम्प्रति झासी प्रदेश का शासन मेजर एलिस के आधीन किया जाता है। इस प्रदेश की सब प्रजा अपने को ब्रिटिश सरकार के अधीन समझे और मेजर एलिस को कर दिया करे और सुख तथा सन्तोष के साथ जीवन निर्वाह करे। १३-३-१८५४ ह० मालकम।'

प्रजा का सुख-सन्तोष! उसका कल्याण!! राजनीति के पाखण्ड को कैसे बढिया मुहाविरे मिले!!!

[३२]

मालकम ने इस घोषणा को बहुत छिपा-लुका कर एलिस के पास भेजा और उसको हिदायत की कि बहुत सावधानी के साथ काम किया जावे, क्योंकि उसे मालूम था कि रानी जन-प्रिय हैं, कहीं झांसी की जनता दगा-फसाद न कर बैठे। इसलिये एलिस ने सेना द्वारा झांसी का कठोर प्रबन्ध किया।

एलिस ने होशियारी के साथ उस घोषणा को एक जेब में रक्खा और दूसरी में पिस्तौल। सशस्त्र अङ्गरक्षको साथ लेकर रानी के पास किले वाले महल में पहुचा। रानी को सूचना दे दी गई थी कि छोटे साहब के पास बडे लाट की आज्ञा आगई है, उसी को सुनाने आ रहे हैं। मोरोपन्त इत्यादि बहुत दिन से आशा लगाये बैठे थे। दीवान खास में नियुक्त समय पर आ गये। रानी पर्दे के पीछे बैठी। दीवान खास में एक ऊँची कुर्सी पर दामोदरराव।

एलिस दृढ पद और अदृढ हृदय के साथ दीवान खास में प्रविष्ट हुआ। मोरोपन्त इत्यादि ने बहुत विनीत भाव के साथ अभिवादन किया। दीवान खास मे इत्र-पान इत्यादि सजे सजाये रक्खे थे। बुर्जो पर तोपो में सलामी दागने के लिये बारूद डाल दी गई थी। एलिस ओठ से ओठ सटाये आया और अपने माथे की शिकनो को समेटकर अभिवादन का उत्तर देता हुआ बैठ गया।

मोरोपन्त ने विनीत भाव के साथ कहा, 'साहब, आपको यहा तक आने में बहुत कष्ट हुआ होगा।'

मुश्किल से एलिस का कण्ठ मुखरित हुआ, 'मेरा कर्तव्य है। दुःखदायक कर्तव्य है।'

सब लोग सन्नाटे में आ गये।

एलिस ने कहा, 'महारानी साहब आ गई है ?'

दीवान ने उत्तर दिया, 'जी साहब। पर्दे के पीछे विराजमान हैं।'

एलिस ने जेब से मालकम वाली घोषणा निकाली। दरबारियो के कलेजे धक धक करने लगे।

कलेजा थाम कर उन लोगो ने घोषणा को सुन लिया। गुलाम गौस खा तोपची अनुकूल घोषणा की आशा से दीवान खास के एक दर के पीछे की तरफ कान लगाये खडा था। प्रतिकूल घोषणा को सुनकर मुँह लटकाये चुपचाप चला गया।

जब घोषणा पढी जा चुकी—मोरोपन्त के मुँह से निकला, 'ओफ!'

दीवान के मुँह से, 'हाय!'

और दरबारियो के मुँह से—'अनहोनी हुई।'

दामोदरराव समझने की कोशिश कर रहा था, उसको आभास मिल गया कि कुछ बुरा हुआ है।

यकायक ऊँचे परन्तु मधुर स्वर में रानी ने पर्दे के पीछे से कहा, 'मै अपनी झासी नही दूगी।'*

इन शब्दो से दीवान खास गूँज गया। वायुमण्डल ने उनको अपने भीतर निहित कर लिया।

भारत के इतिहास मे वे शब्द पिरो दिये गये। झासी की कलगी में वे शब्द मणि-मुक्ता बन कर चिपक गये।

अब एलिस का धडकता हुआ हृदय कुछ स्थिर हुआ।

बोला, 'मुझको गवर्नर जनरल साहब की जो आज्ञा मालकम साहब के द्वारा मिली उसको मैंने पेश कर दिया। जो कुछ मेरे सामर्थ्य में था मैंने किया। हम सब गवर्नर जनरल साहब की आज्ञा में बधे हुये हैं। परन्तु मै समझता हूँ कि असन्तोष का कोई कारण नही है। पाच हजार रुपया मासिक वृत्ति महारानी साहब और उनके कुटुम्ब के लिये काफी है। यह मानना पडेगा कि गवर्नर जनरल साहब ने बहुत उदारता का बर्ताव किया है।'

* परिशिष्ट देखिये।

एलिस का वाक्य समाप्त नही हुआ था कि पर्दे के पीछे से रानी ने उसी ऊँचे मधुर स्वर में कहा, 'मुझको यह वृत्ति नही चाहिये, मैं न लूंगी।'

एलिस ने अधिक ठहरना उचित नही समझा। दीवान से कहता गया, आप तुरन्त मेरे पास आइये।'

दीवान ने पान खाने का आग्रह किया। वह पान खाकर चला गया।

मुन्दर रानी के पास पर्दे में बैठी थी। जब घोषणा सुनाई गई वह मूर्छित हो गई थी। एलिस के चले जाने पर वह होश में आई।

रानी ने कहा, 'क्यो री मूर्छित होना किससे सीखा ? क्या इस छोटे से राज्य के लिये हम लोग जीवत हैं ?'

मुन्दर रोने लगी। रानी ने पुचकारा। मोरोपन्त इत्यादि ने समझाया।

दीवान ने रानी से पूछा, 'मैं एलिस साहब के पास जाऊँ ? वह बुला गये हैं।'

रानी अनुमति देकर रनवास में चली गई।

कुछ क्षणो मे ही समाचार सारे नगर में फैल गया। उस समय झासी निवासियो के क्षोभ का ठिकाना न था। रानी की सेना तुरन्त युद्ध छेड़ देना चाहती थी, परन्तु रानी ने निवारण किया। कहलवाया, 'अभी समय नही आया है।'

झलकारी ने जब सुना अपने पति पूरन से कहा, 'छाती बर जाय इन अङ्गरेजन की, गटक लई झासी।'

[३३]

एलिस ने झासी का 'अङ्गरेजी बन्दोबस्त' आरम्भ कर दिया।

दीवान से दफ्तरो की चाभिया ली। थाने पर अधिकार किया और शहर में अङ्गरेजी राज्य और अपने अधिकार की डोडी पिटवा दी। तहसीलो मे तुरन्त समाचार भेजा और वहा भी कडे प्रबन्ध की व्यवस्था कर दी।

दीवान रानी को सब बातो की सूचना देकर अपने घर उदास चला गया। रानी के नित्य नियम मे कोई अन्तर नही आया। अपने कार्य-क्रम के अनुसार जब वे विश्राम के लिये बैठी तब मुन्दर, सुन्दर और काशीबाई उनके पास आ गई। वे अपने आभूषण उतार आई थी।

रानी ने कहा, 'आभूषण क्यो उतार आई हो? क्या इसी समय रणभूमि में चलना है?'

मुन्दर सिसकने लगी। सुन्दर और काशी के नेत्र तरल हो गये।

रानी बोली, 'ये चिन्ह तो असमर्थता और अशक्ति के हैं। अपने सब आभूषण पहिनो और इस प्रकार रहो मानो कुछ हुआ ही नही है।'

मुन्दर ने रानी के पैर पकड लिये उसकी हिलकी नही समाती थी।

रानी का कठ भी थोडा रुद्ध हुआ। उन्होने भौहे सिकोडी। एक ओर देखने लगी।

काशीबाई रुदन करती हुई बोली, 'बाईसाहब, बाईसाहब!'

सुन्दर ने करुण स्वर में कहा, 'सरकार अब क्या होगा?

रानी ने अपने को सहज ही संयत कर लिया। मुन्दर के सिर पर हाथ फेरा। उसकी आखे आसुओ से भरी हुई थी। सुन्दर और काशी की भी। चंचल आसुओ में होकर उन तीनो ने रानी के तेजस्वी रूप को देखा—कई लक्ष्मीबाइया, कई सतेज नेत्र दिखलाई पडे। उन्होने अपनी आखें पोछी।

रानी ने कहा, 'ये आसू बल का क्षय करेगे। अभी तो अपने कार्य का प्रारम्भ भी नही हुआ है। सोचो, जब छत्रपति के उपरान्त शम्भू जी

मारे गये, साहू समाप्त, राजाराम गत तब ताराबाई की गाठ में क्या रह गया था ? इतने बडे मुगल सम्राट को ताराबाई कैसे परास्त कर सकी ? उसने स्वराज्य की बागडोर को कैसे बढाया ? रो-रोकर ? कपडे और गहने फेंक-फेंककर ? भूखो मर मर कर ? और सोचो, जीजाबाई को पति का सुख नही मिला। उन्होने छत्रपति को पाला। काहे के लिये ? किस आशा से ? गद्दी पर बिठलाने के लिये ? उन्होने इतना तप, इतना त्याग अपने पुत्र को केवल हाथी की सवारी और नरम नरम गद्दी पर विराजमान कराने के लिये किया था ?'

वे सहेलिया सचेत हुई।

रानी कहती गई, 'हमको जो कुछ करना है उसकी दिशा निश्चित है। मार्ग में विघ्न बाधाये तो आती ही हैं। खरीते का स्वीकृत न होना केवल एक बाधा ही है। स्वीकृत हो जाता तो क्या हम लोग केवल सो जाने के लिये ही जीवित रहती ? भगवान कृष्ण की आज्ञा को याद रक्खो कि हमको केवल कर्म करने का अधिकार है। कर्म के फल का नही। देखो, छत्रपति के उपरान्त जिन लोगो ने स्वराज्य के आदर्श को आगे बढाया और उसकी जडे प्रबल बनाई, वे बाधाओ को डटकर प्रतिरोध करते रहते थे। जिन लोगो की लालसा अपने लिये फलो की ओर गई, वे गिर गये और स्वराज्य की धारा धीमी पड गई। परन्तु वह सूखी कभी नही। दादा बाजीराव पेशवा हतप्रभ होकर बिठूर चले आये। परन्तु हम लोगो को वे स्वराज्य की शिक्षा देने से कभी नही चूके। यदि हिन्दुस्थान में कोई भी उस पवित्र काम को अपने हाथ मे न ले, तो भी, मैंने अपने कृष्ण के सामने, अपनी आत्मा के भीतर उसका बीड़ा उठाया है। करूँगी और फिर करूँगी। चाहे मेरे पास खडे होने के लिये हाथ भर भूमि ही क्यो न रह जाय। मानलो कि मैं सफल न हो पाई, तो भी जिस स्वराज्य धारा को आगे बढा जाऊँगी, वह अक्षय रहेगी। उसी महावाक्य को सदा याद रक्खो—हमको केवल कर्म करने का अधिकार है, फल का कभी नही। हमको एक बड़ा सन्तोष है। जनता हमारे साथ

है। जनता सब कुछ है। जनता अमर है। इसको स्वराज्य के सूत्र में बाधना चाहिये। राजाओ को अङ्गरेज भले ही मिटादे, परन्तु जनता को नही मिटा सकते। एक दिन आवेगा जब इसी जनता के आगे होकर मैं स्वराज्य की पताका फहराऊँगी।'

सहेलियो की आखो में भी चमत्कार उत्पन्न हो गया।

रानी बोली। 'मुझ से आज एक भूल हो गई है। मुझको एलिस के सामने कुछ नही कहना चाहिये था। मेरे उस वाक्य से वह अपने सङ्गी अङ्गरेज़ो सहित चौकन्ना हो जागया। वृत्ति भी अस्वीकृत नही करना चाहिये थी।'

काशी ने स्थिर स्वर मे प्रश्न किया, 'अब क्या करना है?'

रानी ने कहा, 'अङ्गरेज़ जाति बहुत धूर्त है। उसका सामना चाणक्य नीति ही से हो सकता है। मैं वृत्ति को स्वीकृत करूँगी और आगे सावधानी के साथ काम करूँगी। मैं दामोदरराव की ओर से विनय प्रार्थना की लिखा पढी जारी रक्खूँगी। विलायत में अपील भिजवाऊँगी। जिसमे एलिस इत्यादि मेरी झाँसी न देने वाली बात की यथार्थता को अपनी समझ से दूर कर दे और, जनता अपनी स्मृति में इस बात को पकडे रहे, कि मै और झासी अभी बनी हैं।'

इतने मे वहा दामोदरराव आया।

रानी ने अपनी गोद में बिठला लिया।

दामोदरराव ने पूछा, 'माता, क्या यह राज्य चला जावेगा?'

रानी—'यह राज्य चला जावेगा तो चला जाने दो। स्वराज्य आवेगा।'

दामोदरराव—'स्वराज्य क्या?'

रानी मुस्कराई।

बोली, 'अभी भोजन करने चलो। फिर कभी बतलाऊँगी।'

रानी ने पैन्शन लेने की स्वीकृति लिखवा भेजी।

[३४]

झाँसी की जनता के क्षोभ का समाचार, एलिस को मिल गया। उसने अपने मन मे एक सामञ्जस्य स्थिर किया और उसके अनुसार मालकम को लिखा। मालकम ने गवर्नर जनरल को सिफारिश की:—

'रानी लक्ष्मीबाई को आजीवन पाच हज़ार रुपये दिये जावें और नगर वाला राजमहल उनकी सम्पत्ति समझी जाकर उन्ही को दे दिया जाय। रानी या उनके नौकरो पर ब्रिटिश अदालतो की सत्ता न रहे। अपने नौकरो के अपराधो का वे स्वय न्याय करे। राजा का निजका धन, रियासत के लेन देन का हिसाब करके जो बाकी बचे वह, और राज्य के सब जवाहिरात, रानी को दे दिये जावे। राजा और रानी के नातेदारो की एक सूची बनाई जाय, और उन लोगो के निर्वाह की व्यवस्था कर दी जाय।'

डलहौजी ने ये सिफारिशे स्वीकार की, केवल एक बात नही मानी। वह यह कि राजा की निज की सम्पत्ति और रियासत के जवाहिरात रानी के हो। उसने तै किया कि दामोदरराव के होगे क्योकि यद्यपि वह राज्य का अधिकारी नही है, मगर हिन्दू शास्त्र के अनुसार गगाधरराव की निजी सम्पत्ति का अधिकारी अवश्य है।

डलहौजी ने यह आज्ञा २५ मार्च सन् १८५४ को दी और तदनुसार पोलिटिकल एजेन्ट ने झासी के खजाने से छः लाख रुपये निकाल कर दामोदरराव के नाम से अङ्गरेजी खज़ाने में जमा कर दिये और निश्चय किया कि दामोदरराव को बालिग होने पर व्याज समेत लौटा दिये जावेगे। रियासत के सब जवाहिरात और सोने-चादी के आभूषण इत्यादि 'दामोदरराव हेतु' रानी के आधीन कर दिये।

ईमान और राजनीति दोनो की परस्पर निभा दी।

अब अङ्गरेजी बेलन अपरिहार्य और अनवरत गति से चला।

सबसे पहले जो हुआ, वह रानी से किले का खाली कराना था। किले से एक बडी सुरङ्ग हाथीखाने को और वहा से शहर वाले महल को

गई थी। रानी ने इसके द्वार को मुँदवा दिया और वह किले से शहर वाले महल में सहेलियो सहित चली आई ।

अग्रेजी पल्टन ने किले पर कब्जा कर लिया। उसके अग्रेज अफसरो ने रात को कवाब-शराब से जशन मनाया। पल्टन के बहुत से हिन्दुस्थानी सिपाही आँसू बहाते हुये सोये।

दूसरे दिन बहुत सा रियासती फौजी सामान नष्ट किया गया और बडी बडी तोपो को निरुपयोगी कर डाला गया। झाँसी राज्य की सम्पूर्ण सेना एक कलम बरखास्त कर दी गई—उनको छ छ महीने का वेतन देने की उदारता जरूर की गई। सिपाही वेतन लेकर महल के सामने से निकले। वे रानी का एक अन्तिम दर्शन लेना चाहते थे। रानी झरोखे पर पर्दे के पीछे आ गई। सिपाही आसू बहाते जाते थे और रानी माता, रानी माता कहते हुए उनको प्रणाम करते चले जाते थे। रानी पर्दे के बाहर केवल अपने जुडे हुए हाथो नमस्कार करती जाती थी। रानी ने सिपाहियो के आसू देखकर भी अपने आँसू किसी आश्चर्यपूर्ण क्रिया से रोके।

छ छ मास वाले वेतन की उदारता केवल सिपाहियो तक सीमित रही बाकी सब रियासती नौकर खाली जेब घर चले गये। जिसको पटवार-गिरी और कानूनगोई से पेट भरना था उनकी अर्जिया जल्दी जल्दी मजूर करली गई। एक बख्शिशअली झासी नगर के सब फाटको का फाटकदार था और रियासती कर्मचारियो मे उसका बहुत ऊँचा स्थान था। उसको झासी के जेल की दरोगाई मिल गई।

लगभग सब जागीरदार खत्म कर दिये गये। केवल गुरसराय, कटेरा और गुसाइयो की जागीरे बच गई। वे इसलिये कि बेलन के नीचे कुछ कडे कंकड बच ही जाते हैं। छोटे जागीरदारो में आनन्दराय भी था। उसके पास ताम्र-पत्र थे। छीन लिये गये और बदले में कागज पर नकले दे दी गई

औरो की तरह आनन्दराय से भी पूछा गया, 'नौकरी करोगे ?'

'कौनसी ?'

'पटवारगिरी।'

'नही कर सकूँगा। खेती से पेट पालूँगा।'

'नायब थानेदारी करोगे ?'

'कर लूँगा।'

जहाँ सैकडो और सहस्रों की तादाद में जनता के पढे-लिखे लोग रियासत में थोडा वेतन भी पाकर अपनी गुजर करते थे, वहाँ रियासत के केवल थोडे से ऊँचे कर्मचारी और छोटे-छोटे जागीरदार अङ्गरेजी राज्य में छोटे-छोटे से पदो पर कुछ अधिक वेतन देकर नियुक्त कर दिये गये। वाकी वडे-वडे पदो पर मोटा वेतन पाने वाले थोडे से अङ्गरेज़ मुकर्रर हो गये। ठीक तो है—राजा की जगह अङ्गरेज़ कमिश्नर, एक दर्जन दीवानो की जगह एक डिप्टी-कमिश्नर और दो-तीन अङ्गरेज़ परगना-हाकिम। सहस्रो सिपाहियो की जगह दो सौ तीन सौ अँग्रेज सैनिक। दरबार समाप्त—कवि, चित्रकार, धुरपदिये, सितारिये, नर्तकियां नर्तक, साटमार, कारीगरी सब की विदा!

उनकी जगह क्लब, डाकबङ्गला और ऊँचे-नीचे, छोटे-बडे सब हिन्दुस्थानियो का अनिवार्य माथा-टेकू सलाम। वह भी, अर्दली को हक-दस्तूर दो, जूते उतार कर साहब की विलायती प्रतिमा के सामने नतमस्तक जाओ, तब नसीब। कोरी, करघे, कपडे सब गायब—केवल एक अत्यन्त महत्वपूर्ण क्रिया जारी—गङ्गाजी के किनारो से चाँदी-सोने का शोषण करना और टेम्स जी के किनारो पर निचोड देना।

हिन्दुस्थान उस ओर चलाया जाने लगा जिसको आजकल की भाषा में कह सकते हैं—

'महफिल उनकी साकी उनका
आँखें अपनी बाकी उनका।'*

---

* अकबर इलाहाबादी।

झासी प्रदेश के अनेक लोग रानी के पास प्रणाम करने जाते थे और पूछते थे—

'सरकार की आज्ञा हो तो अङ्गरेजो की नौकरी करले ?'

रानी उत्तर दिलवाया करती थी, 'करलो, परन्तु इस बात को मत भूलना कि कभी झाँसी राज्य में तुम्हारा कोई स्थान था ।'

सेठ—साहूकारो के उलहनो के मारे रानी हैरान थी । कोई कुछ कह जाता, कोई कुछ ।

'आप कुछ उपाय क्यो नही करती ?'

'विलायत खरीता भेजिये । झाँसी को यो ही तो अङ्गरेजो के हाथ में नही चला जाने देना चाहिये ।'

'हम लोगो से जितना रुपया चाहिये हो लीजिये और मुकद्दमा लड़िये ।'

'हम लोग साहबो के बङ्गलो पर सलाम करने नही जाना चाहते इसलिये कम से कम शहर तो अपने अधिकार में लीजिये ।'

'हमारा सारा व्यापार ठप हो गया है । राजदरबार, सरदार कोई नही रहे—अब हमको कोई नही पूछता ।'

किसानो के ऊपर जो लगान रियासत में कायम था, वह पूरा कभी वसूल नही हो पाता था—कभी आधा कभी पर्धा । और वह भी प्राय अन्न के रूप में । अब कागजो में लगान कम हुआ; परन्तु जितना लिखा गया उसमे से वसूली कौडी कम की नही की गई—और सब सिक्को में । भूमि का स्वामी राजा पुस्तको में अवश्य था, परन्तु नित्य के जीवन में किसान को अपनी भूमि किसी को भी देने का अधिकार था । अङ्गरेज़ी राज्य में वसूली करने के लिये पहले-पहल हर गाव मे ठेकेदार नियुक्त किये गये। फिर इन्ही को जिमीदारियाँ 'अता' कर दी गईं । इस श्रेणी के खडे कर देने से किसान नीचे धसक गये । भूमि के ऊपर उनका जो अधिकार था, वह थोडे से ज़िमीदारो के हाथ में पहुँच गया । इन दोनो श्रेणियो के बीच के व्यवधान को सतुलित रखने के लिये—अथवा जिमीदार-किसान सघर्ष में

किसान अभी सिर न उठा पावे इसके लिये—साहब, साहब की कचहरी और साहब का बङ्गला उद्‌भुत हुये।

रह गई ग्राम पचायतें सो उनके हाथ में केवल जात-पाँत के झगडे निवटाने का हथकण्डा रह गया। बाकी सारी शक्ति सौतिया-डाह रखने वाली अङ्गरेजी अदालत के 'इजलास' में चली गई।

इङ्गलेड के कुछ आत्मनिष्ठ पुरुषो ने प्रतिवाद किये, परन्तु इन प्रतिवादो का कोई प्रभाव नही हुआ।

इङ्गलेड सामन्त युग को लाँघकर, माध्यम वर्ग के नेतृत्व में आ चुका था। फ्रास की क्राति से घृणा करते हुये भी, इङ्गलेड के मध्यम वर्ग ने फ्राँस-क्रान्ति के तीन मोहक शब्द 'न्याय' 'समता' और 'भाईचारा' अपने साहित्य में सोख लिये। इङ्गलेड की तत्कालीन राजनीति भी प्रभावित हुई। माध्यम वर्ग के एडमन्ड बर्क, शेरीडीन इत्यादि ने सिहनाद किया। राजनीति के अमर सिद्धान्त प्रकट हुये। मध्यम वर्ग दृढतापूर्वक आगे बढा और इ गलेड का अधिकार क्षेत्र उसने अपने हाथ मे कर लिया। अधिकार हाथ में आते ही दायित्व ने उदारता को पीस डाला, क्योकि निम्न वर्ग की असख्य जनता उस अधिकार ससर्ग से दूर थी। जो मध्यम वर्ग उदार स्वरो में ऊची राजनीति के राग अलापा करता था वह हर कदम पर हाँ-ना के सिर हिलाने लगा। मध्यम वर्ग के उदारवृत्ति वाले जो लोग अधिकार क्षेत्र से बाहर थे, और प्रयत्न करने पर भी जो उस क्षेत्र में नही घुस पाते थे, उसकी कौन सुनता था ?

रानी ने विलायत को अपील भेजी। उसका कभी जवाब ही नही मिला।

पार्लियामेंट में भी थोडी सी वहस हुई। एक मेम्बर ने कम्पनी के डायरेक्टरो का पुराना मत उद्धृत किया।

'अपने इलाके को और अधिक वढाना बुद्धिमानी का काम नहीं है। राज्य-विस्तार की नीति सकटपूर्ण है और ब्रिटिश जाति की भावना प्रतिष्ठा और नीति के प्रतिकूल है।'

उस मेम्बर ने अन्तरराष्ट्रीय कानून के न्याय की भी दुहाई दी। उस मेम्बर के वाक्चातुर्य की तारीफ हुई और बुद्धि की निन्दा।

दूसरी अगस्त सन् १८५४ को अपनी सब पूर्व प्रतिज्ञाओं का विस्मरण करके ब्रिटिश सरकार ने झांसी राज्य को 'अंग्रेजी इलाके' में मिला लेने की मुहर लगा दी। गवर्नर जनरल की, की हुई कारवाई मन्जूर कर ली गई।

चुक्खी चौधरी मगन गन्धी, लाला श्याम, झम्मी और भग्गी दाउजू पूरन कोरी और छन्दी चमार इत्यादि सब अपनी विगत स्वतत्रता की ओर हसरत भरी निगाहों से देखते रह गये। झलकारी कोरिन के वस्त्राभूषणों की चटक चली गई।

[३५]

अङ्गरेज़ी क्लब घर के सामने वाले मैदान की दूबा साफ कराई जा रही थी। धूप में मजदूर हाँफ हाँफ कर काम कर रहे थे। मजदूरो का मुखिया खडे खडे काम का ढग वतला रहा था।

एलिस चाहता था काम ज्यादा जल्दी हो। सन्ध्या के पहले ही कमिश्नर स्कीन, डिप्टी-कमिश्नर गार्डन और फौजी अफसर कप्तान डनलप इत्यादि की बैठक होनी थी। कुछ फल-फलारी की भी योजना थी।

झाँसी को कमिश्नरी शासन का गौरव प्राप्त हुआ। इसमें कई जिले शामिल कर दिये गये। झाँसी का एक अलग ज़िला बना। इस झाँसी ज़िले का पहला डिप्टी–कमिश्नर कप्तान गार्डन हुआ, जो गगाधरराव की चिरौरी किया करता था।

मैदान की सफाई करने वाले मज़दूर ज़रा ढीले पड पड जा रहे थे। एलिस को क्षोभ हुआ। उसने मजदूरो के मुखिया को डाटा।

मुखिया ने कहा 'ये मुफ्तखोर हैं हुज़ूर। डर के मारे मैंने अभी तक इनकी मारपीट नही की। अब हड्डी–पसली तोडता हू।'

एलिस वोला, 'मैं इस समय हड्डी–पसली तोडना पसन्द नही करता, मगर इनसे काम लो। काफी पैसा दिया जाता है। जब रियासत थी तब तो इनको मुफ्त में काम करना पडता था।'

एलिस वगले में चला गया। मुखिया ने सोचा, 'रियासत में काम मुफ्त में करते थे तो रियायतें भी बहुत पाये हुये थे। लडकी–लडके के व्याह के समय, दखें अब कौन इन लोगो की मदद करता है।'

चिल्लाकर मज़दूरो का काम करने के लिये सम्बोधन करने लगा।

पास जाकर उनसे कहा 'अब, रियासत नही है अङ्गरेज़ी करकरा उठी है। ठिकाने से काम करो नही तो खाल टूटती फिरेगी।'

मज़दूरो ने कुडकुडाते हुये कहा—

'न हमें रियासत जागीर लगाये थी और न अङ्गरेज़ लगा देंगे।'

'जितना खोदेंगे उतना पी पायेंगे।'

'पर यह जरूर है कि अपना अपना ही है।'

'अपने को मार खाते थे तो उनसे लड भी जाते थे। इनलोगो से तो कुछ कह भी नही सकते।'

मुखिया ने मना किया, 'झंझट की बात मत करो। साहब अपनी भाषा खूब समझता है। सुन लेगा तो तुम्हारी और हमारी जान लेलेगा।'

मजदूर सन्ध्या के पहले ही काम समाप्त करके अपनी मजदूरी लेकर चले गये। ठीक समय पर अङ्गरेज अफसरो की बैठक हुई।

खानपान के साथ ही काम काज की बात जारी रही।

एलिस—'मुझको अन्देशा था कि कही झाँसी की जनता हटाये हुये रियासती सिपाहियो को भडका कर, दंगा न करवादे।'

डनलप—'हमारी पल्टने तैयार थी।'

स्कीन—'बन्दोबस्त अच्छा था।'

गार्डन—'मैने सुना है कि वे सब रानी के पास गये थे।'

एलिस—'स्वाभाविक है।'

गार्डन—'परन्तु रानी ने उनको कोई प्रोत्साहन नही दिया। समझदार स्त्री है।'

स्कीन—'मुझको उस स्त्री पर अचरज होता है। सुनता हूँ ऐसी घुड सवार है, कि पुरुष दातो तले उँगली दबाते हैं।'

गार्डन—'हिन्दुस्थानी कसरते खूबी के साथ करती है।'

एलिस—मुझे शका थी कि कही सती होने की कोशिश न करे। मै गंगाधरराव के दाह के समय कप्तान मार्टिन को ससैन्य ले गया था।'

गार्डन—'मै उन दिनो यहा न था।'

स्कीन—'इस प्रदेश के लोग शान्ति-प्रिय और कानून-भक्त हैं। यहा पहले दो वार सरकारी अमल रह चुका है, इसलिये हमारा शासन पसन्द करने हैं। न मालूम इस रियासत के सडे और गन्दे वातावरण में यहां की जनता कैसे सास लेती रही?'

एलिस—'ओ यह पूर्व है। जनता में मानो जान ही नही। मध्यम वर्ग यहा नाम मात्र को भी नही है। राजा जनता के भेडिया धसान को डंडे के सिरे से हाकते रहते हैं।'

डनलप—'हमारा शासन उनको कानून और न्याय देगा। व्यवस्थित शासन में ये लोग समृद्ध और सुखी होगे।

स्कीन—'यहाँ के बडे लोगो को अपने पास बुलाते रहना चाहिये। वे लोग जन समाज के मुखिया हैं। इनको हाथ मे रखने से शासन में विघ्न बाधा उपस्थित न होगी और जिन लोगो के मन में रियासत की भावनाओ का पक्षपात होगा, वे भी बिलकुल ढल जावेगे।'

गार्डन—'ठीक है। हम लोग उनको जागीरे नही दे सकते। लेकिन उपाधिया दे सकते हैं। वे उपाधियो को काफी बडा पुरस्कार समझेगे।'

स्कीन—'अलीबहादुर नवाब यहा का बडा आदमी है। विश्वसनी है मुझसे मिला है। बहुत शिष्ट है। उसको बराबर मुलाकात देना चाहिये।'

एलिस—'मैंने चार्ज हवाला करते समय गार्डन को समझा दिया है। नवाब अलीबहादुर अपनी पेंशन बढवाना चाहता है। यह नही हो सकता। उससे साफ कहना होगा, मगर उसको नवाब की उपाधि आजीवन दी जा सकती है।'

गॉर्डन—'मैंने उसको हवेली वापिस करदी है। वह बहुत कृतज्ञ है।'

स्कीन—'ठीक किया। अगर उसके कोई लडका हो तो तहसीलदार बना दिया जावे।'

एलिस—'लडका तो है, किन्तु वह उसमे नोकरी नही कराना चाहता।'

स्कीन—'क्यो? हमारे तहसीलदारो को बहुत अख्तियार हैं। हम तहसीलदारो को कुर्सी देते हैं। उनको जूता पहिने दफ्तर में आने देते हैं।'

गार्डन—'हा इस बात में काले आदमी बडा गौरव देखते हैं।'

स्कीन—'बनियो महाजनो को भी बुलाना चाहिये। इन लोगो के ब्याज का जनता पर बहुत असर चलता है। व्योपार और रोजगार का

अब बहुत अच्छा सुभीता हो गया है। यहा से लेकर बम्बई तक बेखटके माल आ–जा सकता है। उनको बिलायत का माल शहर और देहातो में बेचने से बहुत मुनाफा मिल सकता है। थोडे दिन में मालामाल हो जावेगे।'

एलिस—'आज मैने उनमें से खास खास को बुलवाया है। नवाब अलीबहादुर को इशारा कर दिया था।'

स्कीन—'मुझको मालूम है। गार्डन ने बतलाया था। उनसे कहना चाहिये कि झाँसी में रेल भी किसी दिन आ जावेगी और महीनो की यात्रा दिनो में हो जाया करेगी। रेल के जरिये वे लोग सहज ही अपने तीर्थों को दर्शन के लिये जा सकते हैं।'

एलिस—'कुछ स्कूल खोलना पडेंगे।'

स्कीन—'वह पीछे देखा जायगा। फिलहाल अस्पतालो और अच्छी सडको की चिन्ता करनी होगी।'

गार्डन—'लेकिन मन चाहे सरकारी नौकर, हिन्दुस्थानियो में तभी इस जिले में मिल सकेंगे, जब उन्हे हमारी शिक्षा मिल जाय।'

स्कीन—'हा कुछ दिनो बाद बाबुओ की जरूरत पडेगी।'

गार्डन—'परन्तु केवल बाबू वर्ग उत्पन्न करने के लायक शिक्षा देने की नीति को पूरा पूरा स्वीकृत नही किया गया है।'

स्कीन—'हाँ वह बात कलकत्ता, मदरास, आगरा इत्यादि के लिये है। झाँसी सरीखी पिछडी हुई जगह और बुन्देलखण्ड से वनखण्ड के लिये नही है यहा तो जो स्कूल खोला जाय, उसे मिडिल से आगे मत ले जाओ मै नही चाहता कि हिन्दुस्थानी छोकरे, एडमड बर्क की मदिरा पीकर मतवाले हो जाय।

एलिस—तजुर्बा गार्डन को सब सिखला देगा।'

सोने की मोटी साकल से ठगी हुई घडी को स्कीन ने जेब से निकाला। समय देखकर बोला, 'एलिस, तुम्हारे मुलाकाती अभी नही आये हैं। समय हो गया है।'

एलिस ने कहा, 'इन लोगो के धर्म में सब कुछ अनन्त है, इसलिये समय की पाबन्दी को महत्व नही देते।' उठकर एक तरफ गया। लौटकर आकर बोला।

'आ गये हैं। मैंने झाक कर देखा। पूरा पूर्वीय ठाठ है। पगडी पग्गड, फेटे दुपट्टे। हाथो गलो और पैरो तक में जेवर!'

गार्डन ने राजसी मुस्कराहट के साथ कहा, 'मैंने दरबारो में यह सब ठाठ देखा है।'

स्कीन—'यह भी दरबार है गार्डन। डिप्टी कमिश्नर साहब बहादुर का दरबार।' स्कीन हँसा। सब अङ्गरेज़ हँसे।

स्कीन बोला, 'हम लोग जाते हैं। एलिस और डनलप के सिवाय और किसी की जरूरत नही।'

स्कीन इत्यादि गये। एलिस वाली कोठी में एक कमरा लम्बा चौडा था। उसी में 'दरबार' की योजना की गई थी। एक ऊँचे चबूतरे पर भी एक और छोटा सा चबूतरा था। उस पर दो कुर्सियाँ थी। उन पर एलिस और गार्डन जा बैठे। नीचे वाले चबूतरे पर आमने सामने दो कुर्सियाँ पडी हुई थी। एक पर डनलप बैठ गया। दूसरी खाली थी। चबूतरे के नीचे एलिस का पेशकार खडा था।

थोडी देर में बस्ती के आदमी, सेठ, साहूकार इत्यादि आये और प्रणाम कर कर के खडे हो गये। उनमें नवाब अलीबहादुर भी थे।

एलिस ने पेशकार को इशारा किया। वह नवाब अलीबहादुर को चबूतरे के पास लिवा लाया। उन्होने फिर झुककर प्रणाम किया। एलिस ने उनको नीचे वाले चबूतरे की खाली कुर्सी पर बिठला लिया।

नवाब साहब की बाछे खिल गई।

पेशकार ने बस्ती के सब लोगो को फर्श पर लगी हुई कुर्सियो पर बिठलाया।

सन्नाटा छा गया।

एलिस खडे होकर बोला, 'हमने अपना काम कप्तान गार्डन साहब बहादुर को सौप दिया है। कमिश्नर साहब बहादुर अभी हम लोगो को हुक्म दे गये हैं कि आप लोगो की और प्रजा की भलाई पर खूब ध्यान दिया जाय। आप लोगो की कुशल क्षेम हम लोगो की चिन्ता का दिन रात कारण रहेगा। खूब बेखटके रोजगार करिये। वहा से बम्बई तक अमन चैन कायम है। चोर उचक्को को कुचलने के लिये हमारे हाथ मे बहुत बडी ताकत है। आप अपने अपने धर्म का पालन, दूसरो को नुकसान पहुचाये बगैर, चाहे जैसा करिये। हमको उससे कोई सरोकार नही। हालाकि हम समझते हैं कि हमारा ईसाई धर्म सर्वश्रेष्ठ है। बहुत जल्दी मदरसे खोले जायँगे। आपकी भाषा के साथ साथ अङ्गरेजी भी पढ़ाई जावेगी, जिससे आप लोगो की सतान विलायत की अच्छी बातो को भी जान सके। अच्छे पढे लिखे हिन्दुस्थानियो को, बडी बडी नौकरिया दी जावेगी, जिससे आप लोग शासन में हाथ बटा सके। अदालते कायम कर दी गई हैं। सब लोग बिना सकोच के इन अदालतो में अपनी फरियाद पेश कर सकते हैं। न्याय किया जावेगा। किसी के साथ रियायत न की जावेगी। अपराधियो को जो दड दिये जावेगे वे कठोर होते हुये भी अमानुपिक नही होगे—किसी का भी हाथ पैर नहीं कटवाया जा सकेगा, किसी को भी बिच्छुओ से नही कटवाया जा सकेगा। आप लोग सुखी हो, हम अग्रेज केवल यही चाहते हैं। आप लोगो में से किसी को कुछ कहना हो, तो कह सकते हैं।'

एलिस बैठ गया। झासी के उपस्थित लोग एक दूसरे का मुँह ताकने लगे।

एक साहूकार मगन गन्धी बोला, 'हुजूर से हमको केवल एक विनती करनी है। हमारे देश में पहले कभी गाय नही काटी गई। मुसलमान बादशाहो ने भी कभी इस बात को नहीं होने दिया। आपकी अमलदारी होते ही इसका आरम्भ हो गया। इसको बन्द कर देना चाहिये, आप शक्तिशाली हैं।'

एलिस ने बैठे बैठे ही कहा, 'आपकी बस्ती में तो यह जानवर नहीं काटा जाता—सिर्फ छावनी में खाने वालो के लिए विवश होकर ऐसा किया जाता है।'

मगन गन्धी बैठ गया। उसने अपनी आँख का एक आँसू पोछा।

एलिस ने धीरे से गार्डन से कहा, 'ए सैन्टीमैन्टल फूल (एक भावुक मूर्ख।)'

अलीबहादुर ने एलिस और गार्डन की ओर ताका, जैसे कुछ कहना चाहते हो। उन्होने अनुमत दी।

अलीबहादुर बोले, 'हम लोग परमात्मा को धन्यवाद देते हैं, कि महान कम्पनी सरकार का राज्य हो गया है। हमारे हाकिम बहुत नेक हैं। शहर और इलाके का बहुत अच्छा, बेमिसाल बन्दोबस्त कर रहे हैं। सब लोग चैन से अपने घर सोते हैं। चोर, उठाईगीरे लापता हो गए हैं। किसी को कोई कष्ट नही। अब मदरसे और पाठशालाये खुलेगी। सारा देश झकाझक हो जावेगा। आप लोगो का व्योपार बढेगा और आप मालामाल हो जावेंगे।'

अलीबहादुर बैठ गये।

पीछे की कुर्सी पर बैठा हुआ एक सेठ हँसना चाहता था,. परन्तु उसकी हसी मुस्कराहट में परिवर्तित होगई। एलिस और गार्डन ने देख लिया। गार्डन ने दरबार को समाप्त करने के लिए धीरे से अनुरोध किया। एलिस ने दरबार समाप्त किया।

वह 'पूर्वीय दरवार' इत्रपान की अनुपस्थिति से विशिष्ठ था। सेठ-साहूकार कोरे कोरे, फीके घर लौट लौट आए।

सब लोगो के चले जाने पर एलिस ने गार्डन से कहा. स्कीन की मार्फत आज की काररवाई की सूचना लैफ्टिनेट गवर्नर के पास आगरा भेज देना।'

'अलीबहादुर चतुर और प्रभावशाली आदमी है। इसको हाथ में रखना। ठाकुर मुश्किल मे दवेगे. परन्तु उनको दवाना है अवश्य। यदि

इनकी जाति के कुछ लोगो को पुलिस का थानेदार बना सको, तो अच्छा होगा। रानी अगर बुलाये तो चले जाना, परन्तु उसको कोई वचन न देना क्योकि उसके मामले में अब और कुछ नही हो सकता। मदरसो के खोलने की जल्दी मत करना। नौकरिया देने में हिन्दू-मुसलमानो का लाभकारी समीकरण रखना और यथाशक्ति दोनो को उनके अलग अलग हक समझाते रहना।'

गार्डन बोला, 'मैं मूर्ख नही हू। मैंने शिक्षा-नीति के सम्बन्ध मे जो बात कही थी वह केवल यह देखने को कि स्कीन कितने गहरे पानी में है।'

एलिस—'स्कीन खुर्राट है रे।'

[३६]

कप्तान गार्डन डिप्टी—कमिश्नर बहादुर का 'बन्दोबस्त' 'बहादुरी' के साथ चला। जागीरे ज़ब्त हुई, ज़िमीदारियाँ कायम हुई। मन्दिरो की सेवा—पूजा के लिये जो जायदादे लगी थी वे खत्म हुई। पुजारियो को, पूजको को यह बहुत अखरा। अर्जी—पुर्जिया की। बगलो पर माथे रगडे एक न चली। गार्डन की दृढता ने चोर—डाकुओ से लेकर पुजारियो तक के होश ठिकाने लगा दिये। हर बात में अर्जी और अर्जीनवीस का दौरदौरा बढ गया। कानून की प्रतिष्ठा के लिये वकीलो को आदर मिला। पहले कोई परीक्षा इस पेशे के लिये जारी नही की गई थी। वकालत की सनद डिप्टी—कमिश्नर 'अता' किया करता था—ठीक उसी तरह जैसे जिमीदारी या नौकरी 'अता' होती थी। होशियार लोगो ने झटपट अङ्गरेज़ी कानून, अदब, ढग सीखा और आगे चलकर बिना उसके अदालत का पत्ता भी न हिला। इस वर्ग ने उस युग में सब प्रकार की निष्ठाओ के ऊपर कानून की निष्ठा को बिठलाने में जाने-अनजाने सहायता की। केवल यह एक ऐसा अङ्गरेज़ी सस्कार है जिसके प्रति हिन्दुस्थानियो की आत्मगत भावनाओ में श्रद्धा होनी चाहिये थी, परन्तु जिस प्रेरणा और जिस वातावरण में होकर और जिन उपकरणो के साथ न्याय का यह साधन आया था, वे सब हिन्दुस्थानियो को कतई अच्छे नही लगे और इसीलिये कनून भी अखरा।

परोपकार की वृत्ति से प्रेरित होकर अंगरेजो ने कानून की प्राण प्रतिष्ठा हिन्दुस्थान के न्याय—मन्दिर में की हो सो बात नही थी।

देश में पूर्ण शाति हो, अगरेजो का अधिकार सदा—सर्वदा इस देश में बना रहे और अगरेज़ी व्यापार, व्यवसाय निर्वाध चलते रहे, बस इसी वृत्ति से प्रेरित होकर कानून बनाये गये और चलाये गये। गवर्नर जनरल से लेकर पटवारी और चौकीदार तक कायदा—कानून मे बँधकर अपना अपना काम करते चले जाय, अनुशासन में शिथिलता न आने

पावे। तभी तो अङ्गरेजी राज्य निर्विघ्न चल सकता था। उन लोगो ने हिन्दू नरेशो और मुसलमान बादशाहो के उत्थान–पतन के इतिहास पढे–गुने थे, इसलिये वे अपने शासन को उन सब गढ्ढो से बचाना चाहते थे, जिनमें नरेशो और बादशाहो के सूबेदार और अन्य कर्मचारी मौका पाते ही उसको ढकेल दिया करते थे।

समय समय पर गार्डन शहर के बडे आदमियो को मुलाकात के आकर्षण देता रहा। चिरौरी करना तो वे जानते ही थे, इसकी भी करते थे, परन्तु जब वे इसके सामने झुकते थे उनकी रीढ में दर्द हो उठता था और माथे पर बल पड जाते थे। घर आकर लाभ–हानि को आकने के साथ वे साहब की हेकडी पर जलते थे और अपनी चिरौरी पर हँसते थे।

रानी को भी समाचार दे आते थे। वे चुपचाप सुन लेती थी और उनके बाल–बच्चो के समाचार विस्तृत ब्योरे के साथ पूछ लेती थी। अन्य कोई बात न कहने का उन्होने अपने मन पर बन्धेज कर रक्खा था।

शहर वाले महल के ठीक सामने राजकीय पुस्तकालय था। वह उन्हीके हाथ में था। पुस्तकालय के पीछे एक ढाल था और ढाल के नीचे उनका सुन्दर बडा बाग।* इस बाग में वह घुडसवारी इत्यादि व्यायाम किया करसी थी। नगर की जो स्त्रिया उनके पास आती थी, उनको वह बडी निष्ठा के साथ इसी बाग में कसरते सिखलाती थी। अब तो सुन्दर, मुन्दर और काशीबाई इतना सीख गई थी, कि दूसरो को सिखाने में रानी को इनसे बडी सहायता मिलने लगी। फिर भी रानी सोचती थी कि अश्वारोहण और शस्त्र–चालन में मै सर्वश्रेष्ठ नही हुई हूँ।

पुरानी लडाइयो के नकशे उनके महल में थे। वे उनका बारीकी के साथ अध्ययन करती थी। बनावटी लडाइयो के नकशे कागज़ पर बनाती और बिगाडती। अपनी सहेलियो के साथ भिन्न भिन्न प्रकार की अनेक युद्ध-परिस्थितियो पर वाद-विवाद करती। उनको पहाडियो पर अश्वारोहण

*यह बाग अब हार्डीगञ्ज हो गया है।

का शौक हुआ। झासी के आसपास पहाडिया हैं ही, उस समय जंगल और विषम स्थल भी थे। रानी तेजी के साथ सहेलियो सहित इन पर आश्वारोहण करती। झासी के आसपास की भूमि का उनको राई-रत्ती परिचय प्राप्त हो गया। इस भौगोलिक परिचय के क्षेत्र को वे निरन्तर, अनवरत वढाती रहती थी। जो स्त्री-पुरुष उनके पास भेंट के लिये आते उन सबसे कहती—

'शरीर को इतना कमाओ कि फौलाद हो जावे, तभी मन दृढता पूर्वक भगवान की ओर जायगा।'

उनका कसरतो का शौक शीघ्र विख्यात हो गया। अमीरखाँ, वज़ीरखा दो नामी उस्ताद उनको मिले। वाला गुरू भी बिठूर से आये और मल्लविद्या के सूक्ष्मतम दाव-पेच बतला कर चले गये। नरसिंहराव टौरिया के नीचे दक्षिणियो के मुहल्ले में, वे एक अखाडा जारी कर गये। रानी कुश्ती का अभ्यास अपनी सहेलियो के साथ करती थी। तीर, बन्दूक, छुरी, विछुआ, रैकला इत्यादि चलाने में पहले दर्जे की श्रेष्ठता, उन्होने अमीरखा, वजीरखा, के निर्देशन से प्राप्त की—ऐसी और इतनी कि उनकी कुशाग्रबुद्धि, शक्ति और हस्त-कुशलता पर वे दोनो नामी उस्ताद विषमय में डूब जाते थे। वे जानते थे। कि रानी उद्दण्ड प्रकृति हैं, इसलिये कभी कभी लगता था कि हथियार चलाने या परीक्षा के लिये, ललकार न वैठे। यह उनका भ्रम था। रानी का वाह्य रूप प्रचण्ड तेज पूर्ण था, परन्तु अन्तर वहुत कोमल और उदार।

इस प्रकार महीनो पर महीने बीत गये।

एक दिन तात्या टोपे आया। रानी की सेना वहुत दिन पहले समाप्त कर दी गई थी, परन्तु सैनिक और उनके नायक, अपने कौशल को न भूले थे। और न उनका स्वाभिमान गारत हुआ था।

मुहम्मद जमाखा अपने को कर्नल अव भी कहता था, अठवारे पखवारे रानी को वह प्रणाम कर आया करता था। उसी की हवेली के एक भाग में तात्या पूर्ववत ठहरा। रात के आठ वजे के वाद तात्या रानी के पास

पहुँचा। वे तीनों सहेलियां उनके साथ थी। अबकी बार तात्या ने जो रानी को देखा, तो बहुत सतेज पाया।

कुशल वार्ता के बाद बातचीत हुई।

'अबकी बार राजस्थान, पन्जाब इत्यादि भी घूमे ?' रानी ने पूछा।

तात्या ने उत्तर दिया, 'अब की बार बहुत घूमा हू और एकाध जगह तो पकडे जाने की ही नौबत आगई।'

वे सब सतर्क होकर सुनने लगी।

तात्या कहता गया, 'मै अपना हाल राजपूताने मे आरम्भ करता हू। बडे बडे राज्य जैसे जयपूर, जोधपूर, बीकानेर इत्यादि किसी विशेष पक्ष में नही। तटस्थ से हैं परन्तु सब कहते हैं कि झासी के साथ अङ्गरेजो ने बेईमानी की। हम लोगो के प्रति उनका भाव उदासीन है। इसके लिये हमारा उनका, दोनो में से किसी का भी दोष नही है। हम लोग एकत्र स्वराज्य स्थापित करना चाहते थे और वे लोग अपनी अपनी अलग स्वतन्त्रता की धुन में थे। राजपूताने में एकाध ठिकाना ऐसा भी है जो महाराष्ट्र नाम से ही अप्रसन्न है, परन्तु हिन्दुस्थान की स्वाधीनता के लिये उपयुक्त अवसर आने पर अपना सर्वस्व होमने के लिये तैयार हैं। लेकिन वहाँ के अधिकाश राजा अपने को, अङ्गरेजो की सहायता के कारण ही, निरापद समझते हैं, इसलिये न अपने जागीरदारो की परवाह करते हैं, और न प्रजा की। जैसा ढर्रा चला आया है, मजे में उसको चालू रखने के पक्षपाती हैं। अच्छे नेतृत्व की हीनता में जनता जीवन के साधारण उद्देश्यो में ही लिप्त है। ऐसी अवस्था में वहा से कोई आशा नही करना चाहिये। परन्तु यह विश्वास है कि वहा की सेना अपनी सेना का साथ देगी। पन्जाब का हाल कम आशाजनक है। रणजीतसिंह का पञ्जाब, अङ्गरेजी इलाके और पाच रियासतो में विभक्त हो गया है। इन रियासतो के राजा, हाथ आई रोटी को किसी प्रकार भी फेकने को तैयार नही। जनता नेता-विहीन है, इसलिये विवश सी है। दिल्ली का बादशाह बहादुरशाह वृद्ध है। परन्तु उसकी बेगम तेजस्वी है। मुसलमान लोग

बादशाह के नाम पर बलिदान होने को तैयार हो सकते हैं। मैं कई प्रभावशाली मुसलमानो से मिला; वे कहते हैं कि हिन्दुस्थान में फिर बादशाहत कायम करो। मैंने कहा, 'स्वराज्य' और बादशाहत का सामञ्जस्य हो सकता है। जब उन्होने पूछा कैसे होगा तब मैंने उनको बतलाया कि अपने अपने प्रान्तो और प्रदेशो में सब लोग स्वराज्य नियुक्त करेंगे-बादशाह को उनमें दखल देने का अधिकार तो न रहेगा परन्तु अन्तर्प्रान्तीय बडे कार्यों से सम्बन्ध रखने वाले हुकुमो पर मुहर बादशाह के नाम की रहेगी। सिर्फ दिल्ली के आसपास का प्रदेश बादशाह का खालसा रहेगा। बाहर के शत्रुओ से सब प्रान्त और प्रदेश सम्मिलित होकर स्वराज्य और बादशाह के नाम पर लडेंगे और इस तरह मिलकर हिन्दुस्थान का शासन चलावेंगे। पर हर हालत में पहले सब मिलकर इस बला को इस देश से टालें। बहुत लोग इस योजना से सहमत हुये, क्योंकि इस समय यही व्यवहारिक जान पडती है, परन्तु यही पर मैं पकडे जाने से बालबाल बच गया। एक नायब डिप्टी कमिश्नर ने, जो हिन्दुस्थानी था, कैद कर लिया परन्तु सिपाहियो की आखमिचौनी में से भाग निकला। इसके बाद मे दक्षिण गया।'

रानी ने कहा, 'तात्या तुम बहुत चतुर हो। अपनी वार्ता सुनाते जाओ। मैं ध्यान दिये हूं।'

तात्या मुस्कराकर बोला, 'मराठा रियासतो के राजाओ का जो हाल पहले देखा था, वही अब भी है। केवल एक अन्तर है। जनता सजग है और सिपाही स्वाभिमानी हैं। महाराष्ट्र की जनता अब भी स्वराज्य-मत्त है। दरिद्र और धनाढ्य, किसान, मज़दूर और जागीरदार लगभग सब एक संकेत पर खडे हो सकते हैं।'

'और एक बार फिर', रानी ने सहसा कहा, 'वे पर्वतमालायें और मैदान, वे घाटिया और उपत्यकायें 'हर हर महादेव' से गूंज उठेंगी, काप उठेंगी।'

रानी का सतेज मुख और भी तेजमय हो गया । परन्तु वे तुरन्त मुस्करा उठी ।

बोली, 'तात्या, मुझको तुम्हारे सामने तक नियत्रण के साथ बोलना चाहिये । कभी कभी मैं वाक्सयम की कमी के कारण अपने ऊपर खीझ उठती हूँ ।'

तात्या ने दृढ स्वर में कहा, 'बाईसाहब, मेरे हृदय में, इनके हृदय में, और सब जनता के हृदय में, जो बात गड़ी हुई है, वही आपके मुँह से निकल पडी ।'

रानी बोली, 'अभी उसका समय नही आया । समय पर ही निकलनी चाहिये । तुम आगे की वार्ता कहो ।'

तात्या ने कहा, 'मैं हैदराबाद गया । नवाब, अन्य रईसो की तरह अङ्गरेजो के आतक से दबा हुआ है । सेना जिस पक्ष का पासा पड़े उस ओर जायगी । जनता हमारे साथ होगी । मै मैसूर और तञ्जोर भी गया था । यही हाल वहा का भी है ।'

रानी के होठो पर वही मुस्कान आई, जिसके मृदुल मधुर आवरण में फौलादी आदर्श निहित थे ।

बोली, 'तात्या अभी कुछ विलम्ब और है । तब तक महत्वपूर्ण स्थानो के भूगोल का बारीकी के साथ अध्ययन करलो । कहा किस प्रकार सेनाओ को ले जाना पडेगा, कहा आसानी के साथ युद्ध किया जा सकता है और अपने अभीष्ट स्थान पर किस प्रकार शत्रु को एकत्र करके लडाई के लिये विवश किया जा सकता है । इन विषयो पर काफी समय और परिश्रम खर्च करने की आवश्यकता है । इसके सिवाय बारबरदारी के जानवरो और अच्छे घोडो के इकट्ठा करने की योजना पर विचार करते रहने को भी मनमें बहुत स्थान मिलना चाहिये । तोपे, बन्दूकें, बारूद, गोला, गोली इत्यादि युद्ध सामग्री के बनाने वाले कारीगरो को भी, हाथ में ले लो । अङ्गरेजी कारखानो में अपने आदमी नौकर रखवाओ ।

वे लगन के साथ सब क्रियाये सीखें। अपनी पुरानी बारगी युद्ध परिपाटी*
को तो गाठ ही मे बाध लो। हमारा देश उस परिपाटी को छोडकर
अङ्गरेजो से लडा, इसलिये भी हारा।'

तात्या— मैंने नाना साहब और रावसाहब के प्रोत्साहन और आज्ञा
से इन सब बातो का ध्यान रक्खा है और आपकी भी आज्ञा मिली। पूरा
ध्यान दूँगा। मैं इतने महीनो पैदल अधिक फिरा हू इसलिये मुझको देश
का भूगोल बहुत अच्छी तरह याद हो गया है। किसी न किसी तरह बहुत
से आदमी, सामान और जानवर लेकर कही का कही पहुँच सकता हूँ।'

रानी—'लडाइयो के नकशो का अध्ययन किया ?'

तात्या—'अच्छी तरह। पञ्जाब मे जो लडाइया अङ्गरेजो से सिक्ख
लडे हैं उनका भी मैंने अध्ययन किया। व्यर्थ ही सिक्खो ने इतनी वीरता
खर्च की। इतनी युद्ध सामग्री, ऐसी अच्छी सीखी-सिखाई फौज यदि
अच्छे नायको के हाथ मे होती तो अङ्गरेज सिक्खो को कभी न हरा पाते।
परन्तु कदाचित् उनकी हार देश-द्रोहियो के कारण हुई है।'

रानी—'वे लोग कहते होगे कि भाग्य ने हरा दिया ?'

तात्या— निरसन्देह यही कहते हैं।'

रानी—'पजाब में स्त्रियो को कुछ स्वाधीनता है ?'

तात्या—'हिन्दू और सिक्ख स्त्रियो को है।'

रानी—'तब पजाब किसी दिन फिर खडा होगा।'

तात्या—'परन्तु मुसलमान स्त्रियो में कम है।'

रानी—'यह खेद की बात है, किन्तु वे भी किसी दिन अपनी बहिनो
के प्रभाव में आवेगी।'

तात्या—'मै पजाब को भी अपनी योजना में ले रहा हू। जिस
समय इस ओर की बाढ पजाब से जोट करावेगी, उस समय पजाब भी
नीचे पडा न रह सकेगा।'

---

*Guirella warfare.

रानी— मैं सिक्खो की लडाइयो के नकशो का अध्ययन करना चाहती हू।'

तात्या ने कागज़ो पर मानचित्र बनाकर समझाया। रानी ने और उनकी सहेलियो ने भी समझा।

तात्या ने अनुरोध किया, 'हमको एक अपने विश्वसनीय जासूसी विभाग की बडी आवश्यकता है।'

रानी ने मुस्कराकर कहा, 'मैंने स्थापना कर दी है।'

तात्या ने उत्सुक होकर पूछा, 'कैसे ? कहाँ ?'

रानी ने उत्तर दिया, 'यही। मेरी ये तीनो सहेलियां काम सीख रही हैं और कर रही हैं। मै और स्त्रियो को भी तैयार कर रही हू, परन्तु काम सावधानी का है, इसलिये धीरे-धीरे कर रही हू।'

तात्या प्रसन्न हुआ।

बोला, 'झासी में एक विलक्षण बात देखी। जो यहा निवास करता है वह तो आपका भक्त है ही, किन्तु यहा का निवासी जो बाहर चला गया है, वह भी झांसी के लिये अपना तन मन बलिदान करने के लिये प्रस्तुत है।'

रानी बोली, 'मुझको इसी लिये झासी का बहुत अभिमान है।'

तात्या ने कहा, 'बाईसाहब, जब मै ग्वालियर राज्य का हाल लेता हुआ हाल में दक्षिण की ओर गया, तब वहा बाजार में एक फटियल ब्राह्मण मिला। उसने मुझको पहिचान लिया। मैंने भी उसको चीन्ह लिया। वह झासी का रहने वाला नारायण शास्त्री निकला। उसको स्वर्गीय सरकार ने, एक अपराध में देश निकाले की सज़ा दी थी...।'

रानी बोली, 'मैंने उस अपराध के विषय में सुना है।'

तात्या ने कहा, 'नारायण शास्त्री आश्वासन देता था कि जो कुछ भी कार्य भार उसको दिया जायगा, वह प्राणपण से करेगा।'

रानी ने पूछा, 'वह जिस स्त्री को लेकर यहा से गया था, क्या उसको त्याग दिया ?'

तात्या ने उत्तर दिया, 'नही वाईसाहब। उसने मुझसे स्पष्ट कहा।'

रानी—'समाज ने उसको कैसे ग्रहण किया होगा?'

तात्या—'वह समाज से बाहर है। मूंछ मुडाये, वैरागी वेश में रहता है। साथ में वह स्त्री रहती है।'

रानी—'उसको क्या काम दिया?'

तात्या—'सेना के साथ सम्पर्क रखने का काम। नारायण शास्त्री ज्योतिष जानता है और कवितायें गाता है। उनके प्रयोग से वह सेना के सम्पर्क में रहेगा।'

'रानी—'सेना के साथ घनिष्ठ सम्पर्क उत्पन्न करने को बहुत महत्व देना होगा।'

तात्या—'दे रहा हूँ।'

रानी—'तुमको, जान पडता है अकेले ही बहुत काम करना पडता है।'

तात्या—'नही वाईसाहब, नाना साहब, राव साहव इत्यादि बहुत लोग काम में जुटे हुये हैं। दिल्ली और मेरठ इत्यादि प्रदेशो के अनेक मुसलमान भी प्राणो की होड लगा कर निरत हैं।'

रानी—'मुझको ऐसा लगता है कि शीघ्र ही कुछ न हो बैठे परन्तु मैं सोचती हूँ कि अधकचरी तैयारी मे कुछ भी न किया जाना चाहिये। बहुत दिन हुये, मदरास की ओर कुछ सिपाहियो ने अचानक उपद्रव कर डाला था वह व्यर्थ गया। फल यह हुआ कि मदरासी अब सेना में कम भर्ती किये जाते हैं। और अग्रेजो ने अपनी सावधानी को कसकर बढा लिया है।'

तात्या—'कैसी भी सावधानी, कुटिलता और बुद्धि से अङ्गरेज लोग काम लें, हमारी विशाल, असख्य जनता, उनका राज्य नही चाहती। इसलिये राजाओ और नवावो का साथ न पाते हुये भी हमको अपने उत्साह में कमी प्रतीत नही होती।'

रानी ने मुस्कराकर कहा, 'मैं जानती हूँ।'

तात्या बोला, 'वाईसाहव, अव आपके शयन का समय आने को है—भोजन तो अभी हुआ ही नही है। जाता हूँ। यहा एकाध दिन रह कर चला जाऊँगा। शीघ्र ही फिर सेवा में उपस्थित होऊँगा अर्थात् जैसे ही कोई महत्व की वात सामने आई, मैं आऊँगा।'

रानी—'भोजन अब मै नही करूँगी। केवल दूध पिऊँगी नही तो कल के कार्य क्रम का व्यतिक्रम हो जावेगा। तुम दीवान रघुनाथसिह और दीवान जवाहरसिंह से मिले हो ?'

तात्या—'पिछली वार आया तव मिला था। अवकी वार नही मिल पाया हू।'

रानी—'उनसे मिलना। रघुनाथसिह नई वस्ती में गनपत खिडकी वाहर रहते हैं और जवाहरसिंह कटीली गाव में होगे।'

तात्या—'मै इनसे मिलूंगा।'

तात्या चला गया।

[३७]

रानी के पास आठ बजे के लगभग तात्या, रघुनाथसिंह और जवाहरसिंह आये। रघुनाथसिंह पुष्ट देहका बडा बलशाली पुरुष था। जवाहरसिंह जरा छरेरे शरीर का परन्तु काफी बलवान।

प्रणाम करके तीनो बैठ गये।

रानी ने पूछा, 'दीवान जवाहरसिंह को क्या कटीली से ले आये तात्या?'

हाथ जोडकर जवाहरसिंह ने उत्तर दिया, 'दीवान रघुनाथसिंह का एक साडिनी सवार लिवा लाया। उसने प्रात काल के बहुत पहले ही सोते से जगाया था।'

तात्या ने कहा, 'मै स्वय नही गया। दीवान साहब से प्रार्थना की और इन्होने तुरन्त रात को ही, साडिनी-सवार भेज दिया। घुडसवार जाता तो दीवान साहब को भी घोडे पर ही आना पडता। शायद कोई सन्देह करता, इसलिये ऊँट भेजा।'

जवाहरसिंह बोला, 'श्रीमन्त सरकार, मुझे किसी का भी डर नही है। उस दिन के लिये तरस रहा हूँ, जब झासी और अपने स्वामी के लिये अपना शरीर त्याग दू।'

रघुनाथसिंह झूमने लगा।

रानी ने मुस्कराकर कहा, 'आप ही लोगो का बल-भरोसा है। एक दिन आवेगा जब आप लोगो के जौहर का उपयोग होगा। तात्या ने कुछ बतलाया होगा?'

रघुनाथसिंह—'बतलाया है सरकार। थोडे में समझ लिया। हम लोगो को ज्यादा सुनने समझने की दरकार ही नही है। अपनी माता के दर्शन करने थे, इसलिये चले आये।'

जवाहरसिंह—'हम लोगो को सरकार के हाथो अपनी तलवार पर गगाजल छिटकवाना है।'

रघुनाथसिंह—'और अपनी माता का आशीर्वाद प्राप्त करना है।'

रानी मुस्कराई। बोली, 'आप लोगो को मै अच्छी तरह जानती हू। आप लोग सहज ही प्राणो की होड लगा सकते हैं। परन्तु मै चाहती हूँ कि प्राणो को सहज ही न खोया जाय। अवसर आने पर ही तलवार म्यान से बाहर निकले। छोटी छोटी सी बात पर न खिच जावे।'

तात्या—'इन लोगो को लाट की आज्ञा पर बहुत क्षोभ हुआ। और ये तुरन्त कुछ जवाब देना चाहते थे।'

रानी—'अङ्गरेजो के अन्याय बढते जावे तो अच्छा ही है। फिर भगवान हमारी जल्दी सुनेंगे। असल में अभी इन छोटी बातो पर खीझ कसर का निकालना, अच्छा नही है।'

उन दोनो ठाकुरो ने स्वीकार किया।

फिर उन दोनो ने अपनी चमचमाती हुई तलवारे, रानी के पैरो के पास रखदी और हाथ जोडकर खडे हो गये।

रानी ने मुन्दर से कहा, 'गगाजल ला।'

मुन्दर गंगाजल ले आई। रानी ने पहले जवाहरसिंह की तलवार पर छीटे दिये और फिर रघुनाथसिंह की तलवार पर।

उन दोनो ने रानी के चरण स्पर्श करके तलवारें म्यान में डाल ली।

रानी पुलकित हुईं।

एक क्षण में अपने को सयत करके बोली, गगाजल की पवित्रता को निभाना। आपस की कलह में इसका प्रयोग मत करना और न किसी कलुपित काम में।'

उन दोनो ने मस्तक नवाये।

रघुनाथसिंह ने कहा, 'सरकार अब आशीर्वाद मिलना चाहिये।'

रानी का गला भर आने को हुआ। उन्होने नियत्रण कर लिया।

बोली, 'तुम्हारे हाथो स्वराज्य के आदर्श का पालन हो। सुखी रहो और अपने पीछे ऐसा नाम छोड जाओ कि आने वाली अनत पीढिया. तुम्हारे स्मरण से अपने को शुद्ध करती रहे।'

जवाहरसिंह ने कहा, 'माता का यह आशीर्वाद और वह पवित्र गंगाजल सदा हमारे साथ रहेगा ।'

रघुनाथसिंह बोला, 'मां आज न जाने क्यों ऐसा भास रहा है मानो हम लोग अनेक युद्धों पर विजय प्राप्त कर चुके हों ।'

रानी ने कहा, 'मुझको सन्देह नहीं है, युद्धों पर विजय प्राप्त करोगे ।'

रघुनाथसिंह ज़रा मचलते हुये बोला, 'माता हमको आशीर्वाद तो मिल गया, अब प्रसाद और मिलना चाहिये ।'

रानी ने तुरन्त मुन्दर से कहा, 'लड्डू ला मुन्दर । मैंने अपने हाथों आज ही बनाये हैं ।'

मुन्दर थाल भर लड्डू ले आई ।

'नहीं सरकार, इतने नहीं,' जवाहरसिंह हँसकर बोला, 'हम लोग भोजन कर आये हैं ।'

रानी उठी । दोनों हाथों में एक एक लड्डू लिया ।

'अपने हाथ के बनाये लड्डू अपने ही हाथों खिलाऊँगी । तात्या तुम भी खाओ ।' रानी ने कहा ।

उन लोगों ने मुँह खोले । रानी ने आग्रह के साथ खिलाया । बचे हुये लड्डू उन तीनों सहेलियों को खिला दिये ।

हाथ-मुँह धोकर वे सब बैठ गये ।

रानी ने कहा, 'आप लोग अभी केवल इतना करें—नातेदारियों में अपना मेल बढ़ाएँ और उनको अपनावें । सबके काम में पड़ें और छोटी से छोटी जाति के पुरुष या स्त्री का, गरीब से गरीब, मज़दूर या किसान को, कदापि छोटा न समझें । सब जातियों और सब वर्गों को, बिना अपना उद्देश्य बतलाये, हथियार चलाना सिखलाएँ । इस काम के लिये काफी अवसर मिल सकते हैं, जैसे शिकार, उत्सव, ब्याह-बारात इत्यादि ।

जवाहरसिंह ने कहा, 'बहुत अच्छा ।'

रघुनाथसिंह ने कहा, 'ऐसा ही होगा ।'

तात्या वोला, 'मैंने इनसे कहा है कि ऐसी कोशिश करो कि कोई नातेदार डाका न डाले। ये कहते हैं कि वडी मुश्किल पडेगी। मैंने कहा कि डाके डालने ही हैं तो खज़ानो पर डालो और थाने लूटो।'

रानी ने निवारण करते हुये कहा, 'नही तात्या, यह उचित नही अनाचार और अत्याचार को प्रोत्साहन एक वार मिला, कि वह वार वार सिर उठाता है। जव स्वराज्य का युद्ध शुरू होगा तव खज़ाने और थाने सव अपने अधिकार में किये जावेगे। अभी नही।'

जवाहरसिंह और रघुनाथसिंह ने हामी भरी।

तात्या वोला, 'अभी तो गार्डन अपना प्रवन्ध पक्का किये जा रहा है। समझता होगा कि जनता को अपनाते चले जा रहे हैं।'

रानी ने कहा, 'जनता मूर्ख नही है।'

तात्या, दीवान जवाहरसिंह और दीवान रघुनाथसिह प्रणाम करके चले गये।

रानी ने अपनी सहेलियो से पूछा, 'वतलाओ, इन दोनो मे से, झाँसी की स्वराज्य-सेना का प्रवान सेनानायक वनाने योग्य कौन है?'

मुन्दर—'दीवान रघुनाथसिह।'

सुन्दर—'मै भी ऐसा ही सोचती हूँ।'

काशीवाई—'जवाहरसिंह।'

फिर वे तीनो रानी का मुँह ताकने लगी।

मुन्दर वोली, 'हम दोनो की वात सही निकलेगी।'

सुन्दर ने कहा, 'वाईसाहव देखे क्या कहती हैं।'

काशीवाई हँसकर वोली, 'वे अभी वतला देवेगी।'

रानी ने कहा, 'समय वतलावेगा।'

[३८]

ब्रिटिश सरकार के शासन की गति–विधि में अफसरो का ज़िले भर में दौरा करने, प्रत्येक दफ्तर के काम को बारीकी के साथ देखने भालने, थानो, तहसीलो और जेलखानो का निरीक्षण करने का महत्वपूर्ण स्थान था। ग्राम पञ्चायतो का स्थान अङ्गरेजी अदालते दौरे के साधन द्वारा आसानी के साथ ले सकती थी। इसके सिवाय दौरे का जीवन शिकार देता था, नवीन नवीन प्राकृतिक दृश्यो के दर्शन कराता था और सम्पूर्ण देहात को सम्पर्क में इन लोगो के लाता था। शासन की जड़ें मजबूत बनती थी।

गार्डन दौरा करता हुआ मऊ गया। निरीक्षण के लिये थाने पर पहुचा। नायब थानेदार आनन्दराय रियासती पगडी बाधे, लम्बी दाढी, बीच में से कघीं कर, कानो पर चढाये इन्सपेक्टर और थानेदार सहित स्वागत के लिये आगे बढा। आनन्दराय की वह दाढी गार्डन को खटक गई। उसी समय अपनी आलोचना और आज्ञा प्रकट करना चाहता था, परन्तु ठहर गया।

निरीक्षण करने के बाद उसने आनन्दराय को बुलाया।

बोला, 'तुम डाकुओ की सी दाढी क्यो रक्खे हो ?'

आनन्दराय कोई उत्तर नही दे सका।

गार्डन ने कहा, 'इस थाने का तेरा कोई अफसर इस तरह की दाढी नही रचाता। क्या अपने को इनसे बडा समझता है ?'

आनन्दराय का कलेजा जल उठा, परन्तु मुँह से निकला, 'नही तो।'

'बातचीत करने का भी तमीज नही,' गार्डन ने कहा।

आनन्दराय ने सिर नीचा कर लिया।

गार्डन ने हुकुम दिया, 'दाढी रखनी ही है तो सीधी रख। कानो पर कभी मत चढा। जा सीधी करके आ।'

आनन्दराय गया और दाढी को कानो पर से उतार कर सीधी करके आगया। चेहरा बिलकुल पीला पड गया।

गार्डन के चेहरे पर सन्तोष की मुस्कराहट आगई। बोला, 'अब ठीक है। जाओ।'

उसी समय झाँसी मे एक हरकारा कमिश्नर स्कीन की चिट्ठी लेकर आया। स्कीन ने उसको समाचार दिया था कि सागरसिंह नामक डाकू पकडा गया है, जेल में बन्द है। जेल का निरीक्षण करना चाहता हूँ। एक दिन के लिये जल्दी आजाओ।

गार्डन ने घोडा गाडी से झासी की ओर कूच कर दिया। मार्ग में घोडे बदलता हुआ दूसरे दिन झाँसी पहुँच गया।

उसके दूसरे दिन जेल का मुआइना हुआ। स्कीन और गार्डन साथ थे। बख्शिशअली जेल का दरोगा था बडे विनम्र भाव से सलामें झुकाता हुआ, उन दोनो के सामने आया। दोनो प्रसन्न हुये। उनको इस प्रकार का शाही अदब कायदा पसन्द था।

जेल के भीतर जाकर सागरसिंह को देखा। तगडा फुर्तीला आदमी था। आख तीक्ष्ण और चमकदार, दाढी कानो पर चढी हुई; हथकडी बेडी से जकडा हुआ।

स्कीन ने पूछा, 'क्या नाम है ?'

'क्या आपको मालूम नही ?'

'तुम्हारे मुँह से सुनना चाहता हू।'

'कुँवर सागरसिंह।'

'कहाँ के रहने वाले हो ?'

'रावली के—बरुआसागर से कुछ दूर।'

'तुमने यह पेशा क्यो अपनाया ?'

'क्योकि इससे बढिया कुछ और मिला नही।'

'हमारी फौज में नौकरी क्यो नही की ? अच्छा वेतन मिलता।'

'हमारे घराने में अफसरी होती आई है। हम कोरी सिपाहीगीरी कैसे करते ?'

'तुम धीरे धीरे नायक, हवलदार और फिर सूबेदार तक हो सकते थे।'

'हमारे तुरखो की मातहती में पाच पाच हज़ार सिपाहियो ने काम किया है। सेनापतियो के घराने के होकर हवलदारी, सूबेदारी करेंगे ?'

'ओः जनरल बनना चाहता था ?'

'क्यो, जन्डैल बनना कोई बडी बात है ?'

'डाकू से जनरल! हिन्दुस्थान में सब अजीब ही अजीब होता है। जनरल से डाकू हो जाता है तब डाकू से जनरली की तरक्की मामूली बात है। तुमको मालूम है सागरसिह... '

'कुँवर कहिये—मुझको अकेले नाम से कोई नही पुकारता।'

'अच्छा कुँवर सागरसिह, तुमको मालूम है कि इसी जेलखाने में फासीघर है और मुझको फासी देने का अधिकार है। और तुम्हारे जो कारनामे सुने गये हैं, वे साबित भी होगे और साबित होने पर तुमको फासी की सज़ा दी जावेगी। मैं कल-परसो में तुम्हारा मुकद्दमा करके उसी दिन फांसी दे दूँगा।'

'मुझ अकेले कुँवर सागरसिह को!'

'तुम्हारे साथ और कौन कौन हैं ?'

'बहुत से हैं।'

'नाम बतलाओगे ?'

'क्यो बतलाऊँ ? क्या पडी है ? मुझको कोई फायदा हो, तो नाम बतला दूँगा।'

'फायदा होगा। यदि सच सच कहोगे, तो सरकारी गवाह बना लिये जाओगे और छोड दिये जाओगे।'

'बतलाऊँगा, परन्तु इन हथकडियो और बेडियो के बोझ के मारे और भूखो-प्यासो अकल बिगड गई है। आज ज़रा आराम मिल जाय तो कल अवश्य बतला दूँगा, पर अपने वचन पर पक्के रहना।'

'हा'

स्कीन ने जेल-दरोगा को सागरसिह का बोझ हलका करने की आज्ञा दी और अच्छे भोजन की व्यवस्था के लिये भी कह दिया।

बख्शिशअली ने उस आज्ञा का यह अर्थ समझा कि कैदी के साथ पूरी रियायत की जावे ।

स्कीन और गार्डन उधर गये और इधर बख्शिशअली ने कुँवर सागरसिंह की हथकडी-बेडी खोल दी । केवल साधारण पहरा रहने दिया।

सागरसिंह ने कहा, 'दरोगा साहब, बहुत भूख लगी है । किसी ब्राह्मण के हाथ अच्छा खाना पकवा दीजिये ।'

बख्शिशअली बोला, 'कुँवर साहब, मै तो पूडी-मिठाई से आपका थाल भर देता, परन्तु इन अफसरो के मारे मजबूर हूँ। अब लीजिये, कोई दिक्कत नही रही, हुकुम हो गया है ।'

अच्छा खाना बनवाया गया। आदर के साथ परोसा गया। पहरेदारो के मन पर भी कुँवर साहब का आतक छा गया।

शाम हुई । रात हुई । पहरे वाले जागते जागते, सो गये। बख्शिशअली को दिन भर के परिश्रम के मारे थकावट आई। वह भी चैन में सो गया ।

कुँवर सागरसिंह को सुअवसर प्राप्त हुआ । चन्दबरदाई का दोहार्द्ध याद आया—'फेर न जननी जन्म है, फेर न खेचे कमान' और चुपचाप दीवार लाघकर नौ-दो-ग्यारह हुआ और सवेरा होते होते ऐसे जङ्गल मे पहुच गया, जहा उसके विश्वास के अनुसार, स्कीन और गार्डन के फरिश्ते भी नही पहुँच सकते थे ।

प्रात.काल जेल भर मे गडबडी फैल गई । बख्शिशअली का होश कपूर हो गया । कभी जेल में हडबडाकर पहुँचता और कभी घर में बीबी-बच्चो के पास आकर सिर पीटता ।

स्कीन और गार्डन के पास भी खबर पहुची । वे दोनो तुरन्त आये । क्रोध में डूबते-उतराते ।

बख्शिशअली ने अत्यन्त विनम्र प्रणाम किया । और अत्यन्त कातर स्वर मे कहा, 'हुजूर हुकुम दे गये थे कि हथकडी-बेडी खोल दो और

अच्छा खाना दो। मैंने वैसा ही किया। उस पर पहरा रक्खा। फिर भी रात को वह मौका निकालकर भाग गया।'

'बेवकूफ, गधे, नालायक', स्कीन पागल सा होकर बोला, 'हमने यह हुकुम दिया था?' और तडाक से बख्शिशअली को चढ़े जूते की ठोल दी। वह गिर पडा। वैसी हालत में भी स्कीन ने उसको कई ठोकरे और लगाईं।

तब कही उसका क्रोध शान्त हुआ।

गार्डन ने कहा, 'बख्शिशअली, गनीमत समझो कि कि तुमको साहब बहादुर ने इतने से ही छोड दिया। तुमको हम बरखास्त करना चाहते हैं।' बख्शिशअली रोने लगा। स्कीन ने इशारा किया। बख्शिशअली ने नही देखा।

गार्डन बोला, 'अच्छा तुमको बरखास्त नही करता हू, मगर उस पहरे वाले को बरखास्त किया जावेगा, जिसके पहरे मे से कैदी छूटकर भागा है।'

वह सिपाही बरखास्त कर दिया गया।

बख्शिशअली का अपमान पहरेदारो और कैदियो के सामने हुआ था। मारपीट से ज्यादा वह घोर अपमान उसको खला। सीधा घर गया और बहुत रोया। बीबी-बच्चे भी रोये।

बख्शिशअली ने कहा, 'जी चाहता है कि तलवार से तुम सबको कतरकर डाल दू और गोली मारकर मैं भी मर जाऊँ। राजा गगाधरराव ने या रानी लक्ष्मीबाई ने कभी तू-तडाक तक नही किया। आज इन गोरो ने मेरे बुजुर्गो की इज्जत खाक में मिला दी।'

बीबी ने रो-रोकर समझाया। मुश्किल से अपने अपमान और क्षोभ को पीकर, बख्शिशअली ने वह दिन भूखो काटा।

'कैसे मुँह दिखलाऊँगा?' वह बार बार कहता था, 'कहा तो मैं आठो फाटको का कोटपाल था और कहा आज यह हालत हुई!' बारबार मन में आत्मघात की, बीबी-बच्चो को मार डालने की प्रतिक्रिया मन मे

उठती थी, परन्तु उनकी रोती हुई, बेवस सूरतों को देख देखकर सहम जाता था।

अन्त में आत्मघात का निश्चय उसके मन के किसी कोने में जाकर लीन हो गया। बख्शिशअली फिर यथावत् काम करने लगा।

जब कभी स्कीन या गार्डन जेल—निरीक्षण के लिये आता, बख्शिशअली को ऐसा लगता मानो कोई जल्लाद आया हो।

[३६]

रानी को झासी की लगभग सब घटनाएं, समय समय पर, विदित होती रहती थी। स्मरण-शक्ति उनकी, इतनी विशाल थी कि लोगो को आश्चर्य होता था। बख्शिशअली वाली घटना का वर्णन उन्होने सुना और आनन्दराय वाली का भी। यद्यपि दाढी वाली घटना—जेल दरोगा की मारपीट वाली घटना के मुकाबिले में कुछ नही थी, तो भी रानी को उन घटनाओ का मूल तत्व समझने में देर नही लगी। जिस स्रोत से गार्डन और स्कीन को प्रेरणा मिली थी वह मूल मे एक ही था – हेकडी, अवहेलना, उपेक्षा। रानी का प्रशस्त गौर ललाट लाल हो गया। एक आह खीचकर रह गई।

'पेट के लिये इन लोगो को यह सब सहन करना पड रहा है,' रानी ने सोचा।

इस तरह की अनेक घटनाएं जब तब होती रहती थी।

अङ्गरेज लोग शासन को धाक (Biuff) की पुख्ता नीव पर खडा करते चले जाते थे। धाक रोब का रूप पकडती चली जा रही थी। यही रोब हिन्दुस्थानियो के मन में अङ्गरेजो के 'इकबाल' की सूरत में उत्पन्न होने को था।

परन्तु यह धाक या इकबाल हिन्दू-मुसलमानो के हृदय पर वह अधिकार नही कर पा रहे थे जो साधू और फकीर ने जमाने से कर रक्खा था।

रानी इस प्रकार की सब घटनाओ को ध्यान और विविध भावों से सुनती रहती थी।

गार्डन भी शहर और अपने जिले का हाल लगन के साथ टटोला करता था, परन्तु अहमन्यता और स्वार्थ के कारण वह सही स्थिति नही समझ सकता था। और न अधिकाश अङ्गरेज।

एक दिन गार्डन घोडे पर सवार शहर की कोतवाली* के निरीक्षण के लिये आ रहा था। एक साधारण हिन्दू गृहस्थ की बरात सामने पड

*यह अब पुरानी कोतवाली कहलाती है।

गई। दूल्हा घोडे पर चढा था। यह अगरेजो के नये हिन्दुस्थानी तरीके के खिलाफ था। उसने दूल्हा को घोडे पर से उतरने की आज्ञा दी। बारात वालो ने प्रतिवाद किया। उसने एक नही सुनी। आखें लाल-पीली थी।

दूल्हा के पिता ने विनय की, 'हमारे यहा राजा तक दूल्हा का मान रखता है।'

'चुप' गार्डन ने धमकाया।

दूल्हा को घोडे पर से उतरना पडा।

नवाब अलीबहादुर गार्डन और स्कीन के पास आया-जाया करते थे। परन्तु गार्डन के पास बहुधा। पैन्शन बढने की आशा अभी जीर्ण नही हुई थी। उनको इधर–उधर की खबर पीरअली दिया करता था। वे इन खबरो को गार्डन के पास पहुँचा देते थे।

पीरअली ने दीवान जवाहरसिंह के आने का समाचार नवाब साहब को दिया। परन्तु वह और तात्या जब चले गये तब।

नवाब ने कहा, 'कुछ दाल में काला है। जवाहरसिंह कटीली वाले राजा की फौज के एक बडे अफसर रहे हैं। बिठूर से उस आदमी का इन्ही दिनो आना इल्लत से खाली नही है। क्या है। क्या कर्नल जमाखा भी इन लोगो से मिले?'

पीरअली ने उत्तर दिया, 'कह नही सकता। अनुमान करता हू कि जरूर मिले होगे। कर्नल साहब की हवेली में ही तो वह बिठूर–वाला ठहरा था। उसको टोपे कहते हैं।'

'इन लोगो में क्या बात चीत हुई या किस प्रसंग की चर्चा हुई यह जानने की जरूरत है।'

मैने जानने की कोशिश की। लेकिन वे लोग दीवान रघुनाथसिंह के यहा ऐसी जगह बैठे थे कि वहा से सुनाई नही पड सकता था।'

'ये लोग रानी साहब के पास भी गये।'

'जी हां गये। और हँसते खुश होते हुये लौटे।'

'कर्नल साहब के यहा वह टोपी या टोपे क्या किया करता था ?'

'कर्नल साहब की हवेली के नजदीक नाटकशाला वाली जूही रहती है। मुझको मालूम होता है कि उस टोपे के लिये वह चुम्बक है।'

'हो सकता है। और इसीलिये शायद वह कर्नल साहब के यहा ठहरता है। मगर जवाहरसिंह का और इस टोपे का रघुनाथसिंह की भीतरी बैठक में देर तक बातचीत करना, किस मतलब से हुआ होगा ? खुदाबख्श कहां है ?'

'वह तो मोतीबाई के पीछे दीवाने हो रहे हैं।'

'मोतीबाई रानी साहब के पास कभी जाती है ?'

'जी हा, कभी कभी।'

'उससे काम नही निकाला जा सकता ?'

'कोशिश करूंगा।'

नवाब साहब सोचने लगे, 'मोतीबाई को मेरे पास लिवा लाओ। गाने के बहाने से।'

पीरअली—'लेकिन वह कही भी नही गाती। बहुत कम बाहर निकलती है।'

नवाब—'मेरे यहा गायगी। लेकिन खुदाबख्श को खबर न हो। खुदाबख्श से बाद में बातचीत की जावेगी।'

पीरअली अपने घर गया। देखा तो मोतीबाई मौजूद। पीरअली ने सोचा बहुत अच्छा शकुन हुआ।

आवभगत के बाद उसने मोतीबाई से बातचीत की।

'मैं तो आपके यहाँ आने वाला था,' प्रसन्न होकर पीरअली ने कहा।

मोतीबाई ने मधुर मुस्कान के फूल बरसाये। साडी का घूंघट खीचा। गर्दन मोडी। बोली, 'मैं खुद आगई। आप किस लिये कष्ट कर रहे थे ?'

'नवाब साहब को गाने का शौक हुआ है। कहा अकेले में सुन लूगा। महफिल न होगी।'

'और मैं भी यही सोचकर आई हूं। अब पर्दे में गुजर नही हो सकती खुले आम तो नाचना गाना मुझसे न होगा, चाहे भूखे भले ही मर जाऊँ। मगर नवाब साहब सरीखे बडे आदमियो को सुना आने में मुझको कोई उज्र न होगा।'

'नवाब साहब भी यही फरमाते थे। वह महफिल नही जोडेंगे।'

'आप भी सुना करिये।'

'मैं तो फर्ज और शौक दोनो के लिये मौजूद रहूँगा। उस्ताद मुगलखां के धुरपद से जब जी भर जाये, तब आपका ख्याल और नाटक के गीत ही मौज पैदा कर सकते हैं। सच पूछिये तो न दिन भर का समय हो और न मुगलखां साहब को सुना जा सके।'

'तो मैं कितने बजे आऊ ?'

'मेरे ख्याल में शाम का वक्त अच्छा रहेगा।'

'जी हां। लेकिन मैं आठ बजे चली आऊगी।'

'हा ठीक है। दो घटे क्या कम हैं।'

मोतीबाई समय नियुक्त करके चली गई।

पीरअली ने सोचा, 'उमर कुछ बढ गई है मगर अब भी झूमती फुलवारियो सा मतमाता यौवन है।'

पीर अली ने नवाब साहब को सूचना दी।

सन्ध्या के छः बजे मोतीबाई आगई।

पर्दे की आड टूट गई। प्रारम्भ में जरा शरमाते शरमाते। अलीबहादुर ने सोचा स्वाभाविक है। उनको आश्चर्य यही था कि रंगमञ्च पर बिना किसी शील सकोच के नृत्य गान करने और हाव भाव दिखलाने वाली अभिनेत्री इतने दिनो और ऐसा पर्दे का ढोंग क्यो किये रही।

नवाब ने रसीलेपन से कहा, 'मैंने रंगशाला में आपकी कला का कमाल देखा है। समझ में नही आता था कि इतना नाज संकोच और पर्दा मेरे पर आकर भी आप क्यों करती रही हैं।'

'हुज़ूर' मोतीबाई बोली, 'आदत पड गई थी। अब भी बिल्कुल नही छूटी है। गुज़र के लिये पर्दे को कम कर दिया है लेकिन बिलकुल तो न छोड सकूंगी। बहुत लोगो ने अङ्गरेज सरकार की नौकरी करली है। मुझे तो कोई नौकरी मिल नही सकती, इसलिये गाने बजाने से पेट भरना तै कर लिया है। आप सरीखे कुछ रईसो को खुश करना ही मेरी गुज़र के लिये काफी होगा।'

नवाब ने सोचा मोतीबाई शोख़ हो गई है उसकी वह शोख़ी उनको भली मालूम हुई।

मोतीबाई ने लगभग एक घन्टा गाया नाचा परन्तु इसके बाद न तो नवाब साहब का मन लगा और न मोतीबाई का।

नवाब साहब ने कहा, 'ज़रा सुस्ता लीजिये। फिर देखा जायगा। तब तक बात करें। पीरअली पान लाना।'

पीरअली ने पान दिये।

नवाब ने पूछा, 'कभी आप महलो में जाती हैं? काम ही क्या पडता होगा।'

'जाती हू,' मोतीबाई ने उत्तर दिया, 'रानी साहब भजन सुनती हैं। उनको मीरा के भजन बहुत पसन्द हैं। रोज़ तो नही जाती हूँ। कभी कभी सुना आती हूँ। वहा थोडा बहुत मिल जाता है।'

'रानी साहब की पैन्शन में से बहुत लोगो को सहारा मिलता है इसलिये बिचारी को मुश्किल का सामना करना पडता होगा।'

'ज़रूर, मगर वे बहुत उदार हैं। उनका निजी खर्च तो बहुत कम है। दान पुण्य में बहुत दे डालती हैं।'

'बहुत नेक हैं। और फिर इधर उधर के आने जाने वाले नाते रिश्ते के लोग पुराने मुलाजिम लगे हैं उनको भी कुछ न कुछ देना ही पडता होगा।'

मोतीबाई की एक आख के कोने पर सजगता आई। दरवाजे से सटा हुआ पीरअली कान खडे करके सुनने लगा।

मोतीबाई ने मुस्करा कर कहा, 'आते तो बहुत लोग हैं, पर उनको देते लेते मैंने नही देखा।'

'यही क्या कम है कि रानी साहब उनको बातचीत ही के लिये काफी समय देती होंगी।'

अलीबहादुर ने सुझाव दिया, 'पूजा-पत्री और सवारी कसरत में भी कई घन्टे निकल जाते हैं।'

मोतीबाई ने तुरन्त कहा, 'न मालूम कहां से दुनिया भर के कामो के लिये वे समय निकाल लेती हैं। सवारी, कसरत कुश्ती करती हैं, औरतों को सिखलाती हैं—पूजा करती हैं, गीताजी को सुनती हैं और न जानें कितने स्त्री-पुरुषो से बातचीत करती हैं। इसी बीच में, कभी कभी मेरा गाना भी सुन लेती हैं।'

'तुम्हारा गाना तो, बाई जी देवताओ को भी लुभा लेगा,' अलीबहादुर ने दाढी पर हाथ फेरते हुये कहा।

मोतीबाई मुस्कराई। झेंप का अभिनय किया। फिर भोलेपन के साथ बोली, 'उन्होने एक काम जरूर बहुत कम कर दिया है। शायद छोड ही दिया हो। रामनामी गोलियो का बनाना और अकेले में बैठ कर मछलियो को खिलाना। यह काम अब उनकी सहेलिया करती हैं।'

'दासिया, बाई जी ?'

'वह उनको दासिया नही कहती। सहेलिया कहती हैं।'

'वह बड़ी नेक हैं, बाई जी। अब तो उन्होने पर्दा छोड दिया है मैंने भी दर्शन किये हैं। न मालूम पहाडो और नदियो के घूमने में उनको क्या मजा आता है।'

'मुझसे भी घोड़े की सवारी के लिये कहा था।'

'सचमुच ? आपने सीखी ?'

'पहले तो बहुत डर लगा, पर अब थोड़ा थोड़ा सीख गई हूं। उनकी सहेली सुन्दर बड़ी अच्छी सवार है। वही सब औरतों को सिखलाती है।'

'क्या औरतो को हथियार चलाना भी सिखलाया जाता है ?'

'वह तो लाजमी है।'

'आपने भी सीखा ?'

'सीख रही हू।'

'किस मतलब से ?'

'मैं तो, अपने हाथ-पैर, अभी बरसो अच्छी हालत में रखना चाहती हू। इसलिये सीखती हूँ। केवल इसी मतलब से रानी साहब सवारी, कसरत इत्यादि करती हैं। और मतलब मुझको मालूम नही।'

'आपको घोडे पर सवार देखकर मुझको बडा अच्छा लगेगा। शायद फुरेरू आ जाय। आपकी तन्दुरुस्ती, रूप, रङ्ग सब पहले से बहुत अच्छे हैं। कारण यही कसरत, सवारी वगैरह है।'

अलीबहादुर ने सोचा, स्त्री को पराजित करना हो तो उसकी प्रशसा करो।

मोतीबाई पराजित सी जान पडी। मुस्कराकर, झेपकर, सिमटकर उसने आखो से मादकता उडेली।

बोली, 'हुजूर ने तो यो ही बहुत तारीफ कर डाली।'

नवाब ने कहा, ,मैंने झूठ नही कहा।'

फिर हँसने लगे। पान खाया और खिलाया! सतर्कता के साथ पूछा, 'कौन कौन लोग रानी साहब के पास आते हैं, या आये हैं ?'

मोतीबाई ने अविलम्ब उत्तर दिया, 'हाल मे बहुत लोग आये हैं। बिठूर से तात्या टोपे, कटीले से दीवान जवाहरसिह, एक कोई दूल्हाजू, कोई—क्या विनय करूँ बहुतो के नाम ही याद नही आ रहे हैं। आगे याद रक्खा करूँगी।'

'जरूर और मुझको बतला दिया करो। रुपये-पैसे की सकुच मत करना आप। जो कुछ थोडा-सा मेरे पास है, वह अपना समझो।'

'आपकी बहुत कृपा है। मैं अहसानो को कभी न भूलूगी।'

'और आने-जाने वाले लोग जो कुछ बात किया करे वह भी मुझको सुना जाया करिये। अभी हाल में कोई खास बात हुई हो तो •••••।'

'हा कुछ बाते तो मुझको मालूम हैं। निवेदन करूँ ?'

'अवश्य। मैं ध्यान से सुनूगा।'

'रानी साहब गोद लिये राजकुमार का जनेऊ करना चाहती हैं। उसी का मश्विरा हो रहा है।'

'दीवान जवाहरसिह और रघुनाथसिह से ?'

'जी हा। वे सब पुराने नौकरो को और सब नातेदारो को तथा शहर और देहात के रईसो को उस मौके पर बुलावेगी। चूंकि रानी साहब को अपने पुराने आदमियो के सही पते नही मालूम इसलिये जो लोग आते हैं उनके साथ इसी प्रसङ्ग की चर्चा करती हैं। वे राजकुमार के जनेऊ पर बहुत रुपया खर्च करेगी। हा एक बात भूल गई। उन्होने अपनी अपील को विलायत भिजवाया है, उसके लिये लगभग सबसे कहती हैं और जिद करती हैं कि सब छोटे-बड़े साहबो से मेरी सिफारिश करो।'

'आगे कोई और बात मालूम पडे तो मुझको आप ज़रूर बतलाना।'

'अपना कर्तव्य और सौभाग्य समझूँगी', कहकर मोतीबाई चलने को हुई। उसने मुस्कराकर एक कटाक्ष किया।

नवाब साहब ने पान दिया।

मोतीबाई ने कहा, 'मै सीधी रानी साहब के पास महल जाऊँगी। उनको एकाध भजन सुनाकर फिर घर पहुँचूंगी। यदि कोई खास बात मालूम पडी तो सेवा में आकर अर्ज करूंगी।'

पीरअली ने अनुरोध किया, 'मै आपको महल तक पहुँचा आऊँ ?'

मोतीबाई ने इनकार नही किया।

मार्ग की चहल-पहल कम हो गई थी, परन्तु बन्द नही हुई थी।

मोतीबाई ने अवसर पाकर पीरअली से कहा, 'नवाब साहब के सामने का पर्दा तोड दिया अब और लोगो के सामने भी निकलने लगूंगी।'

पीरअली समझ गया। बोला, 'खुदाबख्श साहब मेरे दोस्त हैं। उनसे कहूगा तो वह मेरा मुँह मीठा कर देगे।'

'जी नही। अभी नही। वे बहुत दिक करते हैं। आपका जैसा मिजाज और कायदा उन्होने नही पाया है।'

पीरअली प्रसन्न भी हुआ और सहमा भी। 'कायदा' शब्द उसको खटका।

वह मोतीबाई को महल के फाटक तक पहुँचा कर लौट आया।

रानी कथावार्ता का सुनना समाप्त कर चुकी थी। मोतीबाई ने आकर प्रणाम किया। जब सब लोग चले गये रानी ने उससे पूछा,

'क्या हाल है मोती ?

मोती ने अनुनय के साथ कहा, 'सरकार को मीरा का एक पद सुना दूं। तब कुछ निवेदन करूँगी।'

मोती ने तम्बूरे पर मीरा का एक पद सुनाया। फिर तम्बूरा जहां का तहा रखकर बोली,

'सरकार के विरुद्ध एक जासूस और पैदा हो गया है।'

रानी ने शान्त भाव से कहा, 'कौन है मोती ?'

नवाब अलीबहादुर।'

'मुझको सन्देह तो नवाब साहब पर पहले से था। क्या बात हुई ?'

मोतीबाई ने ओर से छोर तक सब सुनाया।

जनेऊ के सम्बन्ध की बात को सुनकर रानी बोली, 'मुझको तेरी बुद्धि पर अचरज होता है मोती। मेरे मन में दामोदर का जनेऊ करने की और अपने लोगो को निमन्त्रित करके समारोह करने की बात कुछ दिन से उठ रही है। पर मैंने उसको प्रगट किसी पर नही किया। तूने कैसे जान लिया ?'

'सरकार' मोतीबाई ने उत्तर दिया, 'एक दिन राजा भैया से आपने कहा था—तुम्हारा जनेऊ होगा। इतना याद था। उसी को मै काम में ले आई।'

रानी ने मुस्कराकर प्रस्ताव किया, 'तुझको खुदाबख्श की भी जाँच करनी है।'

मोतीबाई ने जरा सा सिर नवाया । फिर दृढ स्वर मे बोली, 'सरकार मै जाच करूंगी । यदि काम के निकले तो फर्द मे नाम रहने दीजियेगा, नही तो—काट कर अलग कर दीजियेगा ।'

'मुझको विश्वास है मोती', रानी ने कहा, 'लोहा, लोहा ही सिद्ध होगा ।'

रानी ने पूछा, 'जूही और दुर्गा कुछ कर रही है ?'

मोतीबाई ने उत्तर दिया, 'हा सरकार । दुर्गा फौज के हिन्दुस्थानी अफसरो को नाचना–गाना प्रदर्शित करती है और उनसे भेद लेती है। जूही की परीक्षा बाकी है ।'

'मेरा सम्बन्ध तो प्रकट नही होता ?' रानी ने प्रश्न किया ।

'नही सरकार', मोती ने उत्तर दिया ।

रानी ने कहा, 'मुझको तुम्हारी बुद्धि और अभिनय–कला का भरोसा है ।'

मोती ने उत्साह के साथ आश्वासन दिया ।

'यदि मेरा अभिनय श्री चरणो की कुछ भी सेवा कर सका, तो मैं अपने जन्म को सार्थक मानूगी ।'

मोतीबाई अपने घर चली आई ।

[४०]

घर आते ही खुदाबख्श मिला। मोतीबाई ने आड करने का प्रयत्न किया।

खुदाबख्श ने कहा, 'मेरे सौभाग्य का सदेशा अभी अभी पीरअली ने दिया, इसीलिये चला आया। बहुत दिनो से कान में मिठास नही पडा। एक बात सुनने को ।'

'पधारिये' कहकर मोतीबाई बैठक मे चली गई।

खुदाबख्श बैठक के कोने में बैठ गया। मोतीबाई ने समादान में बत्ती जलाई और इठलाती सी बैठ गई।

उसी ने बात शुरू की।

मोतीबाई—'मैं थकी मादी हू। इसलिये बात जल्द समाप्त हो जाय, तो मिहरबानी होगी।'

खुदाबख्श—'जितने के लिये आया था वह तो पा लिया। अब यह विनती है कि आप घर ही में रहे और मुझे सेवा करने की इजाज़त दें।'

मोतीबाई मुस्कराई। आख के कोने में एक मधुर कलोल हुई और बोली, 'अर्थात् में आपकी कैद मे रहूँ?'

'खुदाबख्श हर्षोन्मत्त हो गया।'

'मै आपका कैदी बनकर रहूगा।'

'इस प्रकार की बात आपने कितनी स्त्रियो से की है?'

'खुदा जानता है। मुझको कहने की जरूरत नही।'

'मैं भी जानती हू। मगर एक वायदा करना होगा। ईमान को बीच में करके। मै अस्मत इज्जत वाली औरत हू। मेरा भी खुदा जानता है।'

'मुझको मालूम है। इसलिये इतनी बरसो सहा और आसुओ की नदिया बहाई।'

'आसुओ की नदी या नदिया बहाने वालो से मै दूर रहना चाहती हू।'

मैं अपना खून बहाने को तैयार हू।

'उसी का ईमान लेना है।'

'ईमान देता हू । खुदा को बीच में करता हूँ ।'

'बदलियेगा नही ।'

'बदलने की बात मन में आते ही अपनी गर्दन छुरी से रेत डालू गा।'

मोतीबाई मुस्कराई । अपनी आँखो में उसने जादू पैदा किया ।

बोली, 'नवाब अलीबहादुर की नौकरी कर सकेंगे ?'

खुदाबख्श ने उत्तर दिया, 'कर सकूंगा । आपके हुकुम से सब कुछ कर सकूंगा। वैसे किसी की भी नौकरी न करने की ठान रक्खी थी। अब प्रण तोड़ गा । काम क्या करना पडेगा ? नवाब साहब या पीरअली ने आज तक नही कहा !'

'मै कहती हूँ,' मोतीबाई ने आदेश के ढंग पर कहा, 'आपको जासूसी का काम करना होगा ।'

'जासूसी का काम ! कैसी जासूसी ?'

'रानी साहब के पास कौन कौन आते हैं, किस मतलब से आते हैं, क्या बात करते हैं, कौन से ढग रचते है, अगरेज सरकार के खिलाफ कहा क्या हो रहा है इन बातो का पता लगाना होगा । नवाब साहब इस सेवा के बदले में काफी देंगे और अगरेज सरकार से दिलवायंगे। बडे बडे साहब से हाथ मिलाने का और अपनी तरक्की करने का, आपको मौका मिलेगा ।'

खुदाबख्श तमतमा उठा । हिल गया। माथे की नसे फूल गई । कठ रुद्ध हो गया । मोतीबाई ने सन्तुष्ट होकर यह सब देखा ।

खुदाबख्श मुश्किल से बोला, 'मुझको आपने बहुत कमीना समझा है । मैंने सिपाहीगरी की है । अपने राजा की कृपाओ का मेरे ऊपर उतना ही बोझ है जितना उनकी ज्यादती का । मगर मैंने आपको ईमान हारा है । अब तक किसी उम्मेद पर जीवन को टिकाये था । अब कोई जरूरत नही । जाता हू । सवेरे खुदाबख्श का नाम भर बाकी रह जावेगा । अगर भूले बिसरे कभी बन पडे, तो मिट्टी की कब्र पर एकाध फूल डाल देना ।'

खुदाबख्श खडा हो गया। मुँह फेर कर जाने को हुआ। मोतीबाई ने लपक कर हाथ पकड लिया।

बोली, 'किवाड बन्द कर आइये। फिर सुनिये।'

उसने पूछा, 'कुछ बाकी रह गया है ?'

मोती ने जल्दी से उत्तर दिया, 'बहुत।'

खुदाबख्श काँपते हुये पैरो गया। किवाड बन्द करने के लिये सिर बाहर निकाला। कोई खडा था। भाग गया। खुदाबख्श ने नही पहिचाना। उसने पहिचानने की परवाह भी नही की। बैठक में आकर खडा हो गया।

बोला, 'कहिये अब क्या बाकी है ?'

'बैठकर सुनिये।'

'न। इसके लिये ईमान नही दिया।'

मोतीबाई हँसी। मोतियो की लडिया सी छुटक गईं। खुदाबख्श पर कोई प्रभाव नही पडा। मोतीबाई ने परख लिया। वह और हँसी।

बोली, 'यदि मै अनुरोध करू कि आप रानी लक्ष्मीबाई की नौकरी करे, तो आपके ईमान को कैसा लगेगा ?'

'आप क्या मजाक कर रही हैं ?'

'बिलकुल नही। मैं अपने ईमान की सौगन्ध खाती हूँ।'

'फिर वह बात कैसे कही ?'

'बतलाऊँगी। पहले मेरी इस बात का जवाब दीजिये।'

'रानी साहब की सेवा मे तो अपना सिर चढा दूँगा। मगर अब मौका ही क्या आना है ?'

'आयगा। मुझसे पक्की बात करिये।'

'पक्की ही कहता हू। कोई अङ्गरेज पूछे तो उससे भी कह दूँगा।'

'कदापि नही। किसी से मत कहियेगा। नवाब साहब से बिलकुल नही। पीरअली से भी नही।

'हूं।'

'हू क्या ? पक्का वायदा रानी साहब की सेवा के लिये करिये।'

'मेरी जबान ही क्या वायदा करेगी, मेरा रोम रोम वायदा करता है।'

'अब मुझको भरोसा हो गया। मैंने अलीबहादुर साहब की नौकरी और जासूसी के सम्बन्ध में इसलिये पूछा था कि देखूं आप कितने पानी में हैं। परीक्षा ले ली। आप सफल हुये।'

'कुछ करके दिखलाऊँगा तब कहियेगा।'

'तभी और कुछ भी कहूगी,' मोतीबाई मुस्कराई।

खुदाबख्श की हसरत जागी।

बोला, 'कभी तो कह सकूंगा कि अब मै आपका कैदी हो गया।'

मोतीबाई ने मुस्कराते हुये कहा, 'मगर अभी कैद की घड़ी नही आई है। जिस दिन रानी साहब स्वराज्य कायम करके उत्सव मनायेगी मैं अखीरी बार नाचूंगी, और उस दिन आपकी कैद में हो जाऊँगी। तब तक आपकी और मेरी अस्मत—दोनो की—उस देवी के हाथो रहेगी, जो झाँसी की रानी कहलाती है और कहलावेगी।'

उस नर्तकी का मुखमण्डल उस समय दिव्यता से भर गया।

खुदाबख्श सिपाही था। उसका खून जोश खा गया।

मुट्ठी बाधकर बोला, 'ऐसा ही होगा बाई जी। मुझको कभी चूकते पाओ, तो मेरे मुँह पर थूक देना। महारानी साहब से कह देना कि खुदाबख्श उनका पुराना नौकर—सिपाही है, जब उसकी जरूरत पडे, वे कहला भर दे। अपने सीने पर गोली लेने के लिये तुरन्त आ खडा होगा। वेतन या भत्ते का नाम न लेना। दो वक्त खाने के लिये उन्ही का दिया हुआ मेरे पास अभी काफी है।

'मुझको आज बहुत खुशी है', मोतीबाई ने सयत स्वर मे कहा, 'मैं रानी साहब को कल ही सुनाऊँगी। मगर अर्ज है कि नवाब साहब और पीरअली से मत कहना।'

खुदाबख्श बोला, 'मुझको किसी से कुछ नही कहना है। यकीन रखिये। परन्तु पीरअली के बाबत अन्त में आप देखेंगी कि आपका भ्रम था।'

खुदाबख्श चला गया।

दूसरे दिन रानी को मोतीबाई ने सब समाचार दे दिया।

[४१]

रानी जब से घुडसवारी के लिये बाहर निकलने लगी, तब से वह मर्दानी पोशाक करने लगी थी—सिर पर लोहे का कुला, ऊपर साफा, उसका एक खूँट पीछे फहराता हुआ। कचुकी के ऊपर सटा हुआ अङ्गरखा। पैजामा। अङ्गरखे और पैजामे पर कसी हुई पेटी। दोनो बग़लो में पिस्तौले और दोनो ओर परतलो में तलवारें। कभी कभी इतने सब हथियारो के अलावा नेजा भी हाथ में साध लेती थी। इस पर भी घोडे को बहुत तेज़ चलाने में कसर नही लगाती थी। उनको काठियावाडी घोड़े अधिक पसन्द थे और सफेद रंग के खास तौर पर। घोडो की उनको विलक्षण पहिचान थी।

उन्हे कुला लगाकर साफा बाधने मे एक असुविधा अवगत होती थी—लम्बे केशो की। विधवा थी इसलिये महाराष्ट्र की प्रथा के अनुसार, बाल मुडवाने में कोई बाधा न थी। अपने केशो का कोई मोह था ही नही। सोचा काशी जाकर मुण्डन करा ले। पर्यटन हो जावेगा और काशी में बैठकर उस ओर की राजनैतिक परिस्थिति का आभास मिल जावेगा। एक भावना और थी— जिस घर में माता ने जन्म दिया था उसके दर्शन भी मिल जायँगे।

खोज करने पर मालूम हुआ कि विना डिप्टी कमिश्नर की अनुमति के काशी यात्रा के लिये नही जा सकती!

अनुमति के लिये गार्डन को अर्जी दी गई। उसके पास दीवान जवाहरसिंह इत्यादि के रानी के पास आने जाने की खबरें पहुच चुकी थी। वह चिढा हुआ था। दूसरे अपने अधिकार को करारे रूप में लाने का अभ्यासी था। काशी यात्रा के लिये जो अर्जी दी गई थी वह उसने अस्वीकृत कर दी।

जिसने सुना उसी के जी को चोट लगी।

'रानी ने प्रण किया, 'मैं केश मुडन तभी कराऊँगी, जब हिन्दुस्थान को स्वराज्य मिल जावेगा, नही तो स्मशान में अग्निदेव मुण्डन करेंगे।'

उनकी यह भीषण प्रतिज्ञा उनकी सहेलियो को मालूम थी। वे सब इस प्रतिज्ञा पर प्रसन्न थी—उनको पसन्द न था कि ऐसे सुन्दर बालो का कुसमय क्षय हो।

दामोदरराव रानी के प्रगाढ स्नेह में पल रहा था, बढ रहा था। कोई निज माता अपने गर्भ-प्रसून को इतना प्यार न करती होगी जितना वह दामोदरराव को चाहती थी।

समय अपनी प्राकृतिक गति से चला जा रहा था। इसी में रानी की योजना भी सवृद्धि और पुष्ट होती जा रही थी। कहा क्या हो रहा है, इसके समाचार उनको निरन्तर मिलते रहते थे। वह युद्ध सामग्री तैयार करने वाले कारीगरो को एकत्र करने की योजना पर, बहुत जोर देती थी—और यह हो रहा था।

इस ओर रानी के जासूस और विश्वसनीय सहायक काम कर रहे थे। उस ओर नाना और राव के तथा बहादुरशाह और अवध के साथ सहानुभूति रखने वालो के लोग, अपने अपने काम में जुटे हुये थे। बिहार, बगाल में भी स्वाधीनता की आग सुलग रही थी। महाराष्ट्र, मध्यदेश, बुन्देलखड उत्तर हिन्द तो मानो उसके पलने ही थे। यहा तो स्त्रिया भी काम कर रही थी।

रानी ने देखा कि लोगो को इकट्ठा करने का समय आ गया है। वह जानती थी कि ऐन मौके पर तुरन्त इकट्ठा करना दुष्कर होगा, इसलिये वे सबको एक बार एकत्र करके तब योजना को आगे बढाना चाहती थी। हर काम की एक योजना वे पहले बना लेती थी, तब व्यवस्था के साथ उसको व्यवहार का रूप देती थी।

इसलिये उन्होने दामोदरराव का जनेऊ करना निश्चित किया और उसके समारोह में जगह जगह से प्रमुख लोगो का, जमाव करके, आगे के कदम की बाबत परामर्श करना तै किया।

इस काम के लिये एक लाख रुपये की जरूरत थी नकद रुपया उनकी गाठ में न था।

दामोदरराव छ वर्ष का हो चुका था। सातवी लग गई। इस वर्ष में जनेऊ होना ही चाहिये। योजना भी इस स्थिति में आगई थी कि इस वर्ष मे एक महान सम्मेलन का किया जाना जरूरी था।

मोतीबाई इत्यादि ने समाचार दिया कि अङ्गरेजो की हिन्दुस्थानी सेना में, काफी असन्तोष फैल गया है।

रानी ने पुरोहित को बुलाकर मुहूर्त सुधवाया। मुहूर्त निकलने पर गार्डन को अर्ज़ी दी कि दामोदरराव के नाम से जो छ लाख रुपया खज़ाने में जमा है, उसमे से उसके जनेऊ के लिये एक लाख रुपया दे दिया जावे।'

पहले तो गार्डन की इच्छा अर्जी को तुरन्त खारिज कर देने की हुई। फिर सोचा हिन्दुओ की यह कोई जरूरी रस्म है, इसलिये अन्तिम निर्णय को स्थगित कर दिया।

उसने लोगो से पूछ ताँछ शुरू कर दी। अलीबहादुर से खोजा। उन्होने कहा, 'ब्राह्मणो में यह रस्म लाज़मी है।'

सेठ साहूकारो से पूछा। उन्होने कहा, 'अनिवार्य है।'

अन्त में फैसले को अपने पेशकार की सम्मति पर छोडा।

पूछने पर पेशकार ने कहा, 'हुजूर ऊँची जाति के हिन्दुओ में, विशेपकर ब्राह्मणो में यह रस्म किसी प्रकार भी नही टाली जा सकती।'

गाडन ने कमिश्नर से, कमिश्नर ने लेफ्टिनेट गवर्नर से पूछा। अन्त में गार्डन की मर्जी पर इस शर्त के साथ छोडा गया कि अगर झासी शहर के चार भले आदमी जमानत दे तो रुपया दे दिया जाय।

गार्डन ने रानी को सूचना दी, 'खजाने में जो रुपया जमा है वह दामोदरराव नाबालिग का है। यदि बालिग होने पर दामोदरराव ने सरकार पर दावा कर दिया तो सरकार को रुपया अपनी थैली में से देना पडेगा, इसलिये झासी शहर के ऐसे चार आदमियो की जमानत दीजिये, जिनमें मेरा मन भरे।'

रानी को इस अपमान पर जितना क्षोभ हुआ उसकी मात्रा का माप उस मानसिक बल से लग सकता है, जिसकी सहायता से रानी ने उस क्षोभ को दबाया। अपने ही रुपये के लिये ऐसे चार भले आदमियों की जमानत जिनमें मेरा मन भरे!'

अङ्गरेजो के, केन्द्रीकरण के, गार्डन के अहङ्कार की हद हो गई। झासी की प्रमुख जनता कुछ इसी तरह सोच रही थी।

झासी में चार क्या बावन बडे बडे आदमी थे। रानी की जमानत देने के लिये सब तैयार हो गये।

कुछ ने तो खुदाबख्श और दीवान रघुनाथसिंह से यहा तक कहा, 'अर्जी देने की क्या अटक पडी थी? इतना रुपया तो हमी लोग नजर कर सकते हैं।'

परन्तु रानी को अपने रुपये के लिये हठ था। उन्होने इस प्रस्ताव को स्वीकार नही किया।

जो 'भले आदमी' जमानत देने के लिये गार्डन के सामने हाजिर हुये, वे थे—लाला बीमा वाले, मगन गन्धी, मोती खत्री और श्याम चौधरी।

गार्डन उनको हतोत्साहित करना चाहता था।

बोला, 'सोच-समझकर काम करना। बालिग होने से तीन बरस के भीतर तक दामोदरराव दावा कर सकेगा।'

उन लोगो ने विश्वास दिलाया कि यदि जरूरत हो तो हम लोग नकद जमानत दाखिल कर दे।

गार्डन को झेप मालूम हुई, इसलिये उन लोगो की साधारण जमानत पर उसने रानी को एक लाख रुपया दे दिया।

नियुक्त समय पर समारोह हुआ। दूर दूर के लोग इकट्ठे हुये। झाँसी की जनता की ही बहुत बडी संख्या थी। नवाब अलीबहादुर भी शरीक हुये।

शुभ मुहूर्त में दामोदरराव का जनेऊ हो गया। लोगो ने खुशी खुशी नजर-भेंट की। काफी रुपया जमा हुआ।

दावत-पङ्गत हुई। गायन-वादन और दुर्गा का नृत्य। इसके बाद चुने हुये लोगों की बैठक। रानी लक्ष्मीबाई सफेद साडी पहने एक जरा ऊँचे आसन पर बैठी। आसपास उनकी खास सहेलियां। जरा फासले पर नाना साहब और उनके भाई, तात्या टोपे, जवाहरसिंह, रघुनाथसिंह, खुदाबख्श इत्यादि।

रानी ने कहा, 'जिस सफलता के साथ आप लोगो के सहयोग से यह छोटा सा यज्ञ हुआ, उसी सफलता के साथ उस बडे यज्ञ की पूर्ति होनी चाहिये।'

नाना बोला, 'अच्छे कारीगरो और बढिया सामान का प्रबन्ध हो गया हैं। यज्ञ की सामग्री ढोने वाके पशुओ और अश्वमेघ के घोडो का भी इन्तजाम कर लिया गया है।'

तात्या—'मैं जरा सीधी भाषा में बात करना चाहता हूँ।'

रानी—'कर सकते हो, सब अपने ही अपने हैं। बाहर स्त्रियो का कठोर पहरा है। काम की बात करके अधिवेशन को समाप्त कर दिया जावेगा।

तात्या—'उत्तरी और पूर्वी हिन्दुस्थान में अथक काम हो रहा है। अङ्गरेजो ने जिन कार्तूसो को आरम्भ मे जारी किया था, प्रतिवाद को देखकर लगभग बन्द कर दिया है। परन्तु उनके कारण जो घृणा उत्पन्न हुई थी, वह बिलकुल कम नही हुई है। अब अङ्गरेज हिन्दू सिपाहियो को तिलक टीका लगाये हुये परेड में नही आने देते, इस कारण हिन्दू सिपाहियो में घोर खिन्नता फैल गई है।'

खुदाबख्श—'यहा की फौज के मुसलमान सिपाहियो में भी बहुत जोश है। उनके दीन को बरबाद करने का जो काम चर्बी वाले कारतूसो ने जारी किया था, वह ऐसा नही है, कि कतई तौर पर बन्द हो गया हो।'

तात्या—'एक दिन था जब अङ्गरेज़ो के प्रतिनिधि अपने मस्तक को बादशाह के पैर रखने की जगह बतलाते थे।* अब हमारे सबके सिर पायदान बनते जा रहे हैं। कलाकारो की कला, कारीगरो का शिल्प और अनेक लोगो की रोटी गई। अब धर्म ईमान की बारी आई है। देश और जनता की रक्षा का समय आ गया है।'

रानी—'मेरी समझ में अभी थोडा काम और करने की आवश्यकता है।'

रघुनाथसिंह—'आपकी जो आज्ञा हो। वैसे हम लोग बुन्देलखण्ड से ही आरम्भ करने को तैयार हैं।'

रानी—'अभी नही। ओर्छा, अजयगढ और छत्रपुर के राजा बालक हैं। इन राज्यो के प्रबन्ध पर अङ्गरेज़ो की छाप है। इसके सिवाय क्रान्ति का लग्गा लगवाते ही डाकू और बटमार बढ जावेंगे। हमारी जनता ही इन उपद्रवो से पीडित होगी। जब तक हमारे पास मज़बूत सेना नही हो गई है, तब तक हम लोगो को प्रारम्भ नही करना चाहिये। अङ्गरेज़ो को परास्त करने के साथ साथ इन जन-पीडिको का भी तो दमन करना पडेगा, अन्यथा जनता का क्षोभ अङ्गरेज़ो के सिर से टलकर हम लोगो के सिर आवेगा। हिन्दुस्थानी सैनिको को अपनाने का क्रम ज़ारी रखना चाहिये। जब मन भर जावे, तब हा कही जावेगी।'

रानी की इस सम्मति से लोग सहमत हुये।

---

*सन् १६१२ में जान रसल का भेजा हुआ पत्र। परिशिष्ठ देखिये।

[४३]

मऊ छावनी से लेकर मेरठ छावनी तक और मेरठ छावनी से लेकर दमदम बारकपूर की छावनियो तक, विविध प्रकार के लक्षण दिखलाई पडने लगे। मऊ मेरठ, बारकपूर इत्यादि छावनियो में साधू और फकीर, विविध प्रकार के वेप और रूपक धारण करके, क्राति का कार्य करने लगे।

ग्वालियर की छावनी में नारायण शास्त्री उस मिहतरानी को गाना गवाते ले गया। सिपाही उसके नाचने-गाने पर रीझे। समाप्ति पर पैसे देने लगे।

नर्तकी ने पूछा,'आप लोग सेंधिया सरकार के नौकर हैं या अङ्गरेज के ?'

'अङ्गरेज के।'

'अङ्गरेजो का निमक खाने वालो का पैसा नही छूती।' और वह इठला कर चली गई।

उन लोगो ने नारायण से कहा, 'यह कौन है ? बडी घमडिन मालूम होती है।'

नारायण—'है तो वैरागिन, परन्तु झाँसी की बाईसाहब के राज्य की लडकी है।'

'उनका राज्य तो चला गया।'

'अङ्गरेजो ने बेईमानी से ले लिया फिर लौटेगा।'

छावनियो के सिपाही समय पर चुपचाप परेड पर जाते। चुपचाप ड्यूटी करते, परन्तु भन्नाये हुये।

अङ्गरेजो को ऊपर की तह चिकनी और समतल दिख रही थी। नीचे के कोलाहल का उनको पता न था। हिन्दुस्थान एक सपने में उनकी चुटकी में आया, सपने में ही चुटकी में बना रहेगा और यह सपना कभी न टूटेगा। वे लोग इस बात को नही जानते थे, उन्होने कभी इस बात को नही जाना, कि हिन्दुस्थान जीता भले ही आसानी के साथ जावे लेकिन बहुत समय तक इसको मुट्ठी में रक्खे रहना असम्भव है। बाहर से आये हुये शासको को इस देश को पराजित करने में बहुत समय नही लगा।

शान के साथ अपना अभिषेक करवा लिये। राजगद्दिया भी तोडी-मरोडी, परन्तु शासक की हैसियत से उनका इस देश मे रहना केवल छावनी का प्रवास मात्र रहा।

असल में, जनता को रुष्ट, असन्तुष्ट और क्षुब्ध करके यहाँ तो क्या ससार के किसी कोने में कोई भी राज्य नही कर सकता। फिर इस देश की जनता व्यक्तित्व-मग्न और महासस्कृतिमयी है। वहुत दिनो तक कदापि विदेशी शासन को सहन नही कर सकती।

इसीलिये उसकी अन्तरात्मा आसानी के साथ, उस समय के स्त्री-पुरुष नेताओ की बात सुन रही थी और मनमें गाठो पर गाठें बाधती चली जाती थी, कि कब अवसर मिले और सिर के बोझ को उतार कर फेक दे।*

'गार्डन और स्कीन इत्यादि अगरेज सोचते थे कि यहा के लोग दब्बू हैं—जनता एक भेडियाधसान है, थोडा वेतन पाने वाले वहुसख्यक हिन्दुस्थानी मोटी रकमें समेटने वाले अल्पसख्यक अगरेजो को सदा अपना सहयोग देते रहेगे।

अगरेजो का सब स्वार्थ-कार्य शास्त्रीय और वैज्ञानिक ढग पर चल रहा था। केवल चल नही रहा था किसी ढँग पर भी तो वह था मानव प्रकृति का, भारतीय जान-प्रकृति का, अध्ययन और विश्लेषण।

रेल तार जारी हो गये। नहरे खुदी, तालाब सुधारे गये। डाकुओ और बटमारो का दमन हुआ। किसान सुभीते से अपनी खेती काटने लगे। व्योपारी अपना रोजगार करने लगे। मन्दिरो, मसजिदो में लोग अपने विश्वास के अनुसार श्रद्धा भेंट कर उठे। कुछ पाठशालाये और मदरसे भी खुल गये। सडके बनी। उन पर पेड लगे। पञ्चायते टूटी। अदालते खुली। कानून का बर्ताव हुआ परन्तु अगरेजो ने यह न समझा, कि हिन्दू मुसलमान मन ही मन मना रहे हैं, कि हमारा खोया हुआ अधिकार फिर कब और कैसे हमारे हाथ में आवेगा।

---

* परिशिष्ट में सर जान मालकम का वक्तव्य देखिये।

मध्याह्न

[४४]

सं० १९१३ की दीवाली की गई। रीति निभाने के लिये लक्ष्मी जी का पूजन हुआ। दिये जलाये गये। नगर का बाहरी रूप जगमगा उठा। किले पर भी कुछ दिये हिन्दू मुसलमान सिपाहियो ने जलाये। लक्ष्मीबाई के शहरी महल पर भी रोशनी हुई, परन्तु हृदय सुनसान थे—वहा कोई जगमगाहट न थी।

अबकी बार अङ्गरेजो के बगलो पर दिये नही जलाये गये, क्योकि अङ्गरेजो ने सोचा इस सम्पर्क से ईसाइयत को धब्बा लग जाने का अन्देशा है। इससे जनता की धारणा और पक्की हो गई—अङ्गरेज हमारे नही हैं, हमारे कभी हो ही नही सकते।

मकान के बाहर दिये धरने की रस्म के बाद जूही मोतीबाई के घर आई। जूही यौवन के बसन्त में थी। बडी आँखो में चमक। नीचे देखने के समय लम्बी बरौनिया लाज के पावडे से डालने वाली। परन्तु कुछ उदास थी। मोतीबाई ने नौकरानी को पौर में बिठला दिया और जूही के साथ एकान्त में बातचीत करने लगी।

पूछा, 'आज उदास क्यो हो ? क्या बात है ?'

जूही ने उत्तर दिया, 'वे आये हुये हैं—विठूर वाले सरदार।'

मोतीबाई—'तब तो तुम्हे प्रसन्न होना चाहिये था। देखती हू बिलकुल उलटा। मुँह लटका हुआ।'

जूही—'आज पहली बार ही बात हुई और रूखे बोले।'

मोतीबाई—'किस प्रसग पर।'

जूही—'उन्होने अपने निवास स्थान पर बुलवाया। पहले कभी ऐसा नही हुआ था। मुझे सकोच हुआ। परन्तु हिम्मत करके चली गई। सामने पहुचने पर मैं शरम मे डूबने लगी। मुश्किल से मुस्कराकर हाथ जोडे और चुपचाप खडी हो गई।'

मोतीबाई—'अभिनय तो बुरा नही था ?'

जूही—अभिनय ही तो नही था—अभिनय करना चाहा, नही कर सकी। मैं अपने को भूल गई। उन्होने भोहे सिकोड़ कर कहा क्या सेना में जाकर ऐसी ही खडी हो जाती हो ? मैंने तब कुछ निवेदन किया।'

मोतीबाई—'वे जल्दी में होगे। उतावली कर गए······'

जूही—'मुझे तो अचरज हुआ। पहले कई बार देखा-देखी हुई थी।'

मोतीबाई—'आजकल में ?'

जूही—'नही, कई महीने पहले जब वे कर्नल साहब के यहा आकर ठहरे थे।'

मोतीबाई—'तब क्या हुआ था, मै समझी नही।'

जूही—'उनको देखकर न जाने मन मे कैसी उथल-पुथल हो जाया करती थी। उन्होने देखा एक क्षण भर। उसी क्षण के भीतर कुछ इस प्रकार हेरे कि मुझको ऐसा लगा मानो घण्टो देखते रहे हो। मैंने तो शीघ्र आख हटा ली थी। फिर मकान के पास से निकले। मै आहट पाकर उनकी आँख के रास्ते में आ गई। उन्होने बहुत कम देखा, परन्तु मैं बहुत देर, बार बार, देखती रही। वे चले गये। मुझे बहुत खला।

मोतीबाई—'होता है। फिर क्या हुआ ?'

जूही—'वे यहा दो-तीन दिन रहे। मैंने निरन्तर उनको अच्छी तरह देख भर लेने की कोशिश की। उन्होने देखा। मैं अघा गई। मैंने फिर उनकी दृष्टि को पकडने का प्रयास किया, परन्तु वह किसी ख्याल में ऐसे मस्त थे, कि उनको जूही के मकान का भी स्मरण न रहा होगा। जिस दिन जाने लगे, मैंने खिडकी में से निर्लज्ज होकर उनको नमस्ते किया। उन्होने विना किसी लिहाज के मुस्कराकर मेरी नमस्ते का जवाब दिया।'

मोतीबाई—'तब और क्या होता ?'

जूही—'उनको जाते-जाते कुछ सयम मिल गया। घर पर आने की कृपा की।'

मोतीबाई—'यह तुमने बतलाया था।'

जूही—'मै सहम गई। सिर नीचा किये खडी रह गई। बोले, यदि मुझको खुश करना चाहती हो, तो मोतीबाई जी जो कुछ काम बतलावें, उसको बहुत होशियारी के साथ किया करो। मैंने हामी का सिर हिला दिया, परन्तु मुँह से बोल नही निकला। उन्होने कहा, हृदय की बात जीभ को न मालूम होने पावे। मुझको तुम्हारा हाल मालूम होता रहेगा। ईश्वर तुम्हारी मदद करे और वे चले गये। मैंने बहुतेरा उनकी आख के चमत्कार को देखने का प्रयत्न किया, पर वे नही मुडे। मैंने उनकी पीठ को इस तरह निगाह गडाकर देखा जैसे वे देख ही रहे हो। चले गये। उसके बाद जो कुछ करती रही हू, आपको मालूम है।'

मोतीबाई—'मै महारानी साहब को सुनाती रही हूँ। वे सरदार साहब को सूचना देती रहती हैं।'

जूही—'अभी बीच में एक दिन के लिये और आये थे।'

मोतीबाई—'हू।'

जूही—'तब भी घर पर आये थे—बहुत थोडी देर के लिये। मैंने निश्चय कर लिया था—उनको जी भरकर देखूंगी। न देख पाया। उन्होने कुछ बाते पूछी। कुछ बतलाई। मेरा सिर और आखे इतनी भारी हो गई थी, कि उठा न पाई। उनकी सुनती गई और मन्जूर करती

चली गई। नीचे नीचे जरा सा देख लेती थी, वे बात करते मुस्कराते थे और मुझको मनमें गुदगुदी सी झकझोरती थी, मै खूब हँस कर कुछ कहना चाहती थी। हँस कतई नही पाई, बात भी कम कर पाई। जो कुछ बात हुई आपको सुना दी थी, परन्तु और सब कहने का उस दिन मौका न आया था।'

मोतीबाई—'अरी पगली, इसमें उदास होने की कौनसी बात हुई?'

जूही—'नही बाई जी! मैं जो कुछ कर रही हूँ आपके हुक्म से और अपने राजा-रानी के निमक से अदा होने के लिये। चाहे मै मार भले ही डाली जाऊँ, परन्तु क्या वे मेरे सिर पर एक बार हाथ भी नही फेर सकते थे?'

मोतीबाई—'यह उनकी गलती है। काम करने वालो का मन रखने के लिये, बढावा देने के लिये बहुत मिठास बरसाना चाहिये।'

जूही—'वह तो आप से मुझको बहुत मिल जाता है।'

मोतीबाई—'किसी दिन रानी साहब के सामने तुमको पेश करूगी। वह बहुत देर बात करेंगी।'

जूही—'मेरा जिकर तो आता होगा?'

मोतीबाई—'बहुत बार, परन्तु वे अभी बहुत लोगो से मिलना उचित नही समझती। एक दिन आवेगा, जब तुम उनकी सहेली-सेना में भर्ती हो जाओगी।'

जूही— मैं चाहती हूँ उनके कदमो में मेरा सिर कटकर गिरे।'

मोतीबाई—'सरदार साहब के पूछने पर तुमने क्या निवेदन किया?'

जूही— उनकी रुखाई से मन टूट सा गया था। इसलिये पहले तो मैं जिमीन को अगूठे से खोदने लगी, फिर हिम्मत करके बतलाया कि फौज के हिन्दू मुसलमानो को ईसाई बनाने की कोशिश की जा रही है, उन्होने ब्योरा मागा। मैने कहा कि सिपाहियो को लोभ दिया जा रहा है, कि यदि वे ईसाई हो जायँ तो उनका वेतन भत्ता बढा दिया जावेगा और जो सिपाही पहले ईसाई होगा उसको तुरन्त हवलदार का पद दे दिया

जावेगा। बाकी कुछ नही कह सकी, क्योकि रो डालने को जी चाहता था। यह कहकर चली आई कि फिर सुनाऊँगी, अभी पूजा करनी है। मुश्किल से लक्ष्मी–पूजन करके दिए धर कर आपके पास चली आई हूं।'

मोतीबाई ने जूही को लिपटा लिया। उसने जूही को रोने नही दिया। बोली, 'योही फुसफुसा नही जाना चाहिये देखो वे कितना कठिन और कितना नाजुक कामकर रहे हैं। नाटकशाला में जो लोग तमाशा देखने आते थे, क्या वे घर से हँसते हँसते आते थे? ससार के दर्द को बिसारने के लिये लोग नाटकशाला में बैठ जाते हैं। उनकी रुखाई या अवहेला को देखकर यदि हम लोग रगमञ्च पर उदास या उदासीन हो जाय, तो खेल बनेगा या बिगडेगा?'

जूही ने मोतीबाई के कन्धे पर अपनी आखें छिपाकर कहा, 'रंगमंच पर हम अपने असली रूप में जाते ही कब हैं?'

मोतीबाई ने जूही की ठेस को समझ लिया। बोली, 'मै उनका जवाब तलब करूँ?'

जूही ने तुरन्त आखे गडाकर कहा, 'आपसे कैसे बनेगा?'

मोतीबाई—'अपने को भूल जाऊँगी और अभिनेत्री बन जाऊँगी। तुम सिपाहियो के सामने क्या किसी प्रकार का भी लाज सकोच करती हो?'

जूही—'बिलकुल नही। मुझको मालूम ही नही पडता कि मै ऐरो-गैरो से बात कर रही हू और क्या खुराफातबके जा रही हू। आखें मेरी कुछ नही देखती–कान अलबत्ता खूब खुले रहते हैं।'

मोतीबाई—'और उनके सामने?'

जूही ने भोलेपन के साथ कहा, 'उनके सामने तो रोमाञ्च हो हो आता है–पसीना सा आ जाता है। सिट्टी सी भूल जाती है। क्या आप उनसे कुछ कहोगी?'

मोतीबाई बोली, 'आज ही मिलूँगी और कहूँगी।'

जूही ने अनुनय के साथ कहा, 'नही मेरी ओर से कुछ न कहियेगा,–कम से कम, मैने जो कुछ कहा है, वह न बतलाइयेगा। शायद मेरा भ्रम

ही हो। वे बुरा मान जायंगे। शायद रानी साहब बुरा मान जावें। मैं रानी साहब को अपना देवी देवता सकझती हूँ।'

'मैं मूर्ख नही हू। इस तरह न कहूँगी कि वे समझे तुमने कोई शिकायत की है। तुम्हारा काम ब्योरेवार बतलाऊँगी। खुश होगे और तुमसे मिलेगे।'

'कर्नल साहब की हवेली पर ?'

मोतीबाई—'फिर कहा ? तुम्हारे मकान पर ?'

जूही—'आपके मकान पर आ जाऊँगी।'

मोतीबाई—'देखू गी, वे जहा उचित समझे।'

[४५]

उसी समय मोतीबाई चादर ओढकर महल गई। रानी पूजन में थी। उनको लक्ष्मी जी का इष्ट था, इसलिये और लोगो की अपेक्षा इस पूजन को वे अधिक समय देती थी।

ड्योढी के एक भाग में तात्या और नाना साहब बैठे हुये थे। तात्या ने मोतीबाई को पहिचान लिया और वह तुरन्त उसको एकान्त में ले जाकर बातचीत करने लगा।

तात्या ने प्रश्न किया, 'यहा का हाल अभी ठीक ठीक मालूम नही हुआ। जूही थोडी देर पहले मिली थी, परन्तु वह तो कुछ ऐसी गड गई कि कुछ कह ही नही सकी। केवल यह आश्वासन दे गई कि फिर बतलाऊँगी।'

मोतीबाई ने निस्सकोच भाव के साथ उत्तर दिया, 'आप स्त्रियो की प्रकृति को नहीं जानते।'

तात्या ने कहा, 'सुना है कि उनकी प्रकृति टेढी होती है। अभी तक इस विषय के अध्ययन करने का समय नही मिला। जब अवसर आवेगा तब समझने का प्रयत्न करूँगा।'

मोतीबाई मुस्कराकर बोली, 'आप शायद ही कभी समझ सकें। परन्तु जरूरत न पडे तो अच्छा ही है। अब काम की बात सुनिये।'

तात्या—'मै ध्यान लगाये हू।'

मोतीबाई— फौज के सिपाहियो को जबरदस्ती ईसाई बनाये जाने की कोशिश की जा रही है। रामचन्द्रजी और मुहम्मद साहब, दोनो को खुलेआम गालियाँ दी जाती हैं। ईसाई बनने के लिये तरह-तरह के प्रलोभन दिये जाते हैं एक अङ्गरेज अफसर तो यहा तक कहता था, कुछ दिनो में सारा हिन्दुस्थान ईसाई हो जावेगा। न एक मन्दिर बचेगा और न एक मस्जिद रहेगी।'

तात्या—'इस तरह के समाचार सब तरफ से आ रहे हैं।'

मोतीबाई—'क्या सचमुच ऐसा दिन आने वाला है ?'

तात्या—'विश्वास रक्खो, वह दिन कभी नही आवेगा। मुझको यह बतलाओ कि यहा के सिपाही खुद क्या भावना रखते हैं ?'

मोतीबाई—'मुझको पक्का भरोसा है कि एक फी सदी भी हिन्दू या मुसलमान सिपाही किसी भी लालच में आकर अपने धर्म-ईमान को नही बिगाडेगा।'

तात्या—'यह तो हम सब लोग जानते हैं। मुझको यह बतलाओ कि गोरो की इस हरकत का यहा की फौज पर असर क्या पडा है ?'

मोतीबाई—'उनमें से कुछ तुरन्त मारना-मरना चाहते थे, परन्तु धीरज धरकर रुक गये।'

तात्या—'अभी मारने-मरने का समय नही आया है। मै चाहता हूँ प्रत्येक पल्टन में से तीन अफसर, जो बिलकुल विश्वास के योग्य हो चुन लिये जावे। उनको कब और क्या करना होगा, वह दो-एक महीने पीछे बतलाया जावेगा। उनसे कह दिया जाय कि वे ईसाई तो होगे ही नहीं पर इस समय अपना सब्र न खो बैठें। क्रोध भरे रहे, परन्तु उसको निकलने किसी प्रकार न दे, नही तो सब किया-कराया मिट्टी में मिल जावेगा। अबकी बार आऊँगा तब जो कुछ करना है, उसकी तारीख और समय बतला जाऊँगा। आप या जूही इस काम को कर सकेंगी ?'

मोतीबाई—'मेरे लिये मशहूर है कि मैं बाहर बहुत कम निकलती हूँ। महलो में आती-जाती हूँ। फौज में नृत्य-गान के लिये, मेरा आना जाना तुरन्त सन्देह उत्पन्न करेगा और बाईसाहब भी यह पसन्द न करेंगी। जूही को इसी कारण महल में नही बुलाया जाता। वह बहुत अच्छा नाचती-गाती है, ईश्वर ने उसको रूप भी दिया है और जबरदस्त सयम। वह आपको चाहती है।'

तात्या—'मुझको ? मोतीबाई, यह जमाना बुद्धि और तलवार को माजने का है, न कि मन को रस में डुबोने का।'

मोतीबाई—'तब आप उसको अपने रस में डूबा रहने दीजिये। तभी तो मैंने कहा कि आप नारी-प्रकृति को नही जानते।'

तात्या—'क्या नारी-प्रकृति पुरुष-प्रकृति से बहुत भिन्न होती है ?'

मोतीबाई—'कह नही सकती। शायद किसी दिन आप इस विषय को समझे।'

तात्या—'ऐसा नही है कि मैं नारी-प्रकृति को बिलकुल ही नही जानता हू। परन्तु सामने इतने महत्व का बडा काम है कि और कुछ सूझता ही नही।'

मोतीबाई—'आप कृपा करके जूही से जरा मीठा बोलिये। एक बार उसके सिर पर शाबाशी का हाथ फेर दीजिये। वह अपने काम का कमाल कर दिखलावेगी।'

तात्या—'मैंने आपसे सबक लिया और गाठ बाध ली।'

मोतीबाई ने हँसकर कहा, 'आपको औरतो से अभी बहुत सीखना है।'

तात्या ने देखा—मोतीबाई के प्रबल सौन्दर्य में विलक्षण शोखी है और शोखी में कोई दृढ सत्य।

हँसकर बोला, 'मानता हूँ। पर आपकी जूही को वह काम करते देखना है, जो मैंने बतलाया है।'

मोतीबाई ने भी हँसकर कहा, 'मेरी नही आपकी—आप लोगो की जूही।'

'बेशक। बेशक।' बतलाइये फौज के देशी अफसरो पर उसका प्रभाव हो गया है ?'

'हो गया है अनेक पर।'

'इस प्रभाव को बढाना है।'

'बढ जायगा।'

'और कोशिश यह करनी है कि अभी भडक न उठें। जो तारीख और समय नियुक्त होगा, उसकी बाट जोहे।'

'हो सकेगा।'

'एक पल्टन के तीन अफसरो को खास तौर पर चुनना है।'

'मुझको जूही की बुद्धि का भरोसा है।'

'मैं उमसे आज ही बात करूंगा। आप तो रानी साहब से बात करने के लिये ठहरेंगी ?'

फिर कभी मिल लूंगी। आप मेरी बात उनसे कह दीजियेगा। मैं जाती हूं।'

मोतीबाई समझ गई थी कि तात्या इत्यादि बिलकुल एकान्त में, रानी से बातचीत करना चाहते हैं, इसलिये वह नही ठहरी।

पूजन के उपरान्त नाना साहब और तात्या की भेंट रानी से हुई। रानी लक्ष्मीबाई आज बिलकुल लक्ष्मी सी भासित होती थी।'

नाना ने कहा, 'मैंने अपने एक विश्वस्त आदमी अज़ीमुल्लाखा को विलायत भेजा था। अर्ज़ी, अपील स्वीकृत नही हुई। हो जाती तो कुछ रुपया मिल जाता। कम से कम दादा साहब के ज़माने का जो छयासठ हज़ार रुपया बाकी है, वही मिल जाता। परन्तु अङ्गरेजी सरकार तो बेईमान और अन्यायी है। उसने सब नामजूर कर दिया। इसका अब अधिक रञ्ज नही है। रुपये की कमी पूरी हो ही जावेगी। अज़ीमुल्ला देश विदेश घूमा है। वह इटली गया, तुर्की में रहा, रूस भी पहुचा और ईरान होकर लौट आया। उसने तुर्की के साथ चिट्ठी पत्री की है। इटली में इस समय एक प्रबल पुरुष गेरीबाल्डी नाम का है। वह अङ्गरेज़ी जहाज़ी बेडे को अपने जहाज़ी बेडे से नष्ट कर देगा। रूस से मदद मिलेगी। सब कहते हैं, कि अङ्गरेज़ हिन्दुस्थान में खुल्लमखुल्ला और आड ओट लेकर बहुत निन्दनीय काम कर रहे हैं। बहादुरशाह बादशाह ने ईरान के शाह से लिखा पढी की है। काबुल तो हतोत्साह है, परन्तु शायद ईरान बादशाह की कुछ सहायता करे।'

रानी—'ऊपर ऊपर इन बातो का प्रभाव अङ्गरेजो पर अच्छा पडेगा, परन्तु वास्तव में कार्य बहुत दृढता और प्रबलता के साथ, अपने देश ही में होना चाहिये। मुझको विश्वास है कि जनता अपने साथ है। वह बहुत बड़ा बल है। अङ्गरेज़ो के हाथ में सीखी सिखाई हिन्दुस्थानी फौज है। वह सपूर्ण रूप में अपने हाथ में आ जानी चाहिये। तोप ढालने वाले

और बारूद बनाने वाले कारीगर, हाथ में हो गये हैं, क्यो कि उपद्रव होते ही अङ्गरेज लोग अपना सामान नष्ट कर देगे। और फिर हम खाली तोपो से कोई काम नही कर सकेगे।'

तात्या—'प्रबन्ध कर लिया है।'

रानी—'हमको ऐमी तोपे चाहनी पडे गी, जो चलते समय धक्का न दें और जल्दी गरम न हो जावे।'

तात्या—'इस प्रकार के कारीगरो को बराबर खोजा है। कुछ मिले भी हैं। खबर लगी है कि झासी में इस चतुराई वाले कारीगर हैं।'

रानी—'हा हैं। मैंने कुछ इकट्ठे किये हैं। ऐसी बारूद बनाने वाले भी मैंने ढूँढे हैं, जो धुआ बहुत कम दे।'

नाना—'अब ज्यादा विलम्ब नही किया जावेगा।'

रानी—'कितने दिन और लगेगे ?'

नाना—'कुछ महीनो से अधिक नही।'

रानी—'मेरी सम्मति में, अभी जरा और सयम और अनुशासन की आवश्यकता है।'

तात्या—'मैं बिलकुल मानता हू बाईसाहब ! परन्तु ऐसा जान पडता है कि विस्फोट जल्दी होगा। अङ्गरेज लोग हिन्दू–मुसलमान सिपाहियो को ईसाई बनाना चाहते हैं। फौज की सही हालत जानने के लिये, मैं अनेक साधन काम में ला रहा हू। उन सबसे एकसा ही समाचार मिल रहा है। अङ्गरेज कर्नल और कप्तान पादरी बने हुये हैं। अपने छापे की कलो मे सहस्त्रो लाखो की सख्या में, छोटी बडी पुस्तकें छाप छाप कर, फौज में बाट रहे हैं। जिनमें हिन्दू-और मुसलमानो के धर्मों की, बेहद निन्दा की जाती है। इसके ऊपर सिपाहियो को भाति भाति के प्रलोभन देकर, ईसाई बनाने की कोशिश की जा रही है। चर्बी वाले कार्तूस अब भी बन रहे हैं। पहले मैं समझता था कि बन्द कर दिये गये हैं। और चर्बी वाली बात बहुत बढा बढा कर फैलाई गई है। पर अब तो निश्चय हो गया है कि बात सच्ची है सिपाहियो को यह सब बहुत अधिक खटक रहा है।

वे धर्म के पीछे प्राण गँवाने को उठ–उठ पड़ते हैं। अब उनको बहुत अधिक रोका नही जा सकेगा।'

रानी—'जब शीघ्रता करने की अटक होगी, मैं कहूगी कि अब काम करने में आंधी से होड लगाओ। तब वैसा करना। परन्तु अभी जैसे बने तैसे सयम से काम लो। नीति और युद्ध का समन्वय होना चाहिये।'

नाना—'प्रयत्न तो यही किया जा रहा है। हम लोग इधर–उधर घूमते–घामते, दक्षिण के तीर्थों को जा रहे हैं। राजाओ से कम बात करेंगे, जन-नायको से मिलेगे। क्योकि बहुत दिनो तक स्वराज्य-युद्ध को चलाते रहने के लिये, हम लोगो को प्राण बुन्देलखण्ड, अवध और महाराष्ट्र से प्राप्त होगे।'

तात्या—'यहा की स्त्रिया तो ऐसा काम कर रही हैं कि मैं दंग हो हो जाता हूँ।'

रानी—'हां, मोतीबाई और उसकी संगिने काम कर रही हैं।'

तात्या—'मोतीबाई अभी आई थी। आप पूजा में थी। उसने बत–लाया कि फौज़ में ईसाई मत फैलाने का किस रूप में प्रयत्न हो रहा है। हमारे और लोग भी काम कर रहे हैं। उनमें मैंने अलग खोज की थी। मोतीबाई की बातो से उनके समाचारो की पुष्टि होती है।'

रानी—'मोतीबाई को यह मालूम है कि हमारे कुछ और लोग भी काम कर रहे हैं ?'

तात्या—'नही बाईसाहब।'

नाना—'ऐसा प्रबन्ध रक्खा है कि एक विभाग वाले दूसरे विभाग वालो की बात न जान सकें।'

रानी—'एक-एक पल्टन में तीन-तीन अफसर क्यो चुन रहे हो ? दो–दो काफी थे।'

नाना—'तीन इसलिये, कि दो दो मार दिपे गये या बदल लिये गये तो काम करने के लिये एक एक तो बच ही जावेगा।'

रानी—'तो अब आग को भडकाने की आवश्यकता नही है। उसको ढाँकने की आवश्यकता है।'

तात्या—'कही कही दोनो की अटक है।'

रानी—'अङ्गरेजो ने भी जासूस छोड रक्खे हैं।'

नाना—'अन्तर इतना ही कि उनका जासूस विभाग, महज पैसे के लिये अपना ईमान और अपना देश बेचने को तैयार है और हम लोगो का जासूसी विभाग, कुछ भी न लेकर अपने धर्म, अपने देश और स्वराज्य के लिये, अपने तन, मन, धन को आग में झोकने के लिये प्रस्तुत हैं। पुलिस, जो शासन का सबसे अधिक प्रचण्ड कुत्ता होता है, वह भी हमारे साथ होता चला जाता है।'

रानी—'इसलिये कि हम सबके धर्म का और रोटी का सवाल है।'

नाना—'मुसलमान और भी अधिक कुढे हुये हैं। बादशाह की जो नजर-न्योछावर ईद और नौरोज के दिन होती थी, वह तो बारह-चौदह साल से बन्द है। अब अङ्गरेज चाहते हैं कि बादशाह दिल्ली का लाल किला खाली करके मुङ्गेर चला जावे और गोरे लोग किले में बैठकर हिन्दुस्थान भर को लाल आखे आराम के साथ दिखलाते रहे। जो अपने को कभी 'फिदवी खास' कह कहकर बल खाते थे, वे अब अपने को तान कर, मालिक खास कहते हैं।'

रानी—'क्या वे लोग यह सब खुल्लमखुल्ला कर रहे हैं?'

नाना—'बिलकुल। उनको अब कोई डर नही रहा। जनता में, विविध उपायो से, हिन्दू-मुसलमानो को लडाने का सिलसिला जारी है।'

रानी सोचने लगी।

बोली, 'बहुत सावधानी और सयम से काम लेने की आवश्यकता है। हम लोगो के अपने कार्य की प्रगति के समाचार, बराबर मिलते रहने चाहिये।'

रानी ने खिडकी के बाहर दृष्टि डाली। रात कुछ अधिक गई समझ कर, ये दोनो उठ खडे हुये और रानी का चरण स्पर्श करके चले गये।

यह पहला दिन था जब नाना और तात्या ने सहसा लक्ष्मीबाई के पैर छुये—यद्यपि वे दोनो आयु में उनसे बडे थे।

तात्या वहा से आकर सीधा अपने प्रवास स्थान को नही गया। पहले जूही के घर पहुचा।

समय कुछ अधिक हो गया था, परन्तु जूही सोई न थी।

तात्या के भीतर आते ही जूही सहमी। लाज की अरुणिमा चेहरे पर बिखर गई।

तात्या ने बैठते ही मुस्कराकर कहा, 'तुमने उस समय कुछ नही बतला पाया था। मै बहुत जल्दी में था, इसलिये उतावली में ठीक तौर से पूछ भी नही पाया।'

जूही ने नीची पलको को ऊँचा किया। उसकी आखो से मोहक, मादक मधु सा छलक पडा।

जरा एक ओर देखते हुये उसने कहा, 'नही कोई बात नही। मुझे लक्ष्मी पूजन के लिये घर आना था, इसलिये चली आई थी। अब सब सुनाती हू।'

वह खडी थी। तात्या के कहने पर एक ओर बैठ गई। नृत्यगान द्वारा झासी स्थित अङ्गरेजी सेना में वह जो कुछ किया करती थी वह उसने ब्योरेवार सुनाया। जब वह बात कर रही थी, केशजूटो में बधे हुये चमेली के फूल, हिल हिल जाते।

बात की समाप्ति पर तात्या ने उठकर, जूही के सिर पर हाथ फेरा। हाथ फेरने में एक फूल टूटकर नीचे गिर पडा। तात्या ने फिर खोसने की कोशिश की।

जूही ने पलकें नीची किये हुये कहा, 'जाने दीजिये।'

'वह तो मैने खोस दिया जूही,' तात्या बोला, 'मैं लक्ष्मी से मनाता हूं एक दिन आवे, जब इस देश की मुक्ति और तुम्हारे फूलो की महक का सम्मेलन हो।'

जूही खडी हो गई। आखे निश्चल रूप से खुल गईं। श्वेत भूमिकायें काली पुतलियो से प्रकाश भर सा पडा।

'यदि उस काम के करने में, मै या मेरी तरह की और स्त्रिया मर जायँ, तो इस टूटे हुये फूल की महक और देश की मुक्ति के सम्मेलन के वचन को न भूलियेगा।' जूही ने कहा।

तात्या बोला 'कभी नही जूही!'

जूही—'आप जारहे हैं? कब? फिर कब आइयेगा?'

तात्या—'कल चला जाऊँगा। जल्दी ही आऊँगा। कब आऊगा? यह ठीक ठीक अभी नही कह सकता।'

तात्या नमस्ते करके चला गया। उस दिन तात्या को मालूम हुआ कि वास्तव में जूही का बोधक नाम मंगलामुखी सार्थक है।

[४६]

जूही का छावनी में आना जाना बढ़ गया। उसके नृत्य गान की कला में और भी मोहकता आगई। परन्तु किसी सिपाही या अफसर में उसने अपने को बाल बराबर भी नही खोया। वे समझते थे कि जूही हृदय-हीन है।

जूही को हर पल्टन मे तीन तीन उपयुक्त अफसर ढूँढने मे बहुत दिन नही लगे। उन अफसरो को यह भी मालूम हो गया कि हम लोगो को किसी दिन एक महान कार्य करना है, परन्तु उनको ठीक ठीक यह नही मालूम था कि कब। जूही स्वयं नही जानती थी। कुछ और लोग जो पल्टनो के लिये इसी कर्त्तव्य पर नियुक्त थे उनको भी मालूम न था, परन्तु वे यह जानते थे कि जूही का काम, उसी योजना का एक अङ्ग है, जिसका एक भाग उन लोगो का भी काम था। परन्तु वे एक दूसरे से मिलते न थे। निषेध था।

एक दिन जूही के नृत्य-गान का आनन्द लेने के लिये कप्तान डनलप भी आ गया। एक क्षण के लिये जूही सकपकाई। परन्तु उसने अपना नियन्त्रण शीघ्र कर लिया और वह बहुत मजे में नृत्य गान करती रही।

असल में डनलप को उसके जासूस ने खबर दी कि छावनी में नर्तकियां आती हैं और अफसरो से दीन धर्म सम्बन्धी कुछ बाते भी किया करती हैं। इसलिये वह सहसा वहा आ गया था।

नृत्य गान से उसका मन शीघ्र ऊब गया, क्योकि अधिकाश अङ्गरेजो की तरह उसको भारतीय कलाओ के प्रति उपेक्षा थी। परन्तु जूही बहुत सुन्दर थी। उसको सहज ही विश्वास न होता था कि ऐसा सौन्दर्य अपने परिधान में किसी छल कपट को छिपाये होगा। तो भी उसने सवाल किये—

डनलप—'तुम छावनी से कितना पैसा कमा ले जाती हो?'

जूही—'जब जो मिल जाय हुजूर?'

डनलप—'नाचने गाने के सिवाय कोई और पेशा करती हो?'

जूही—'नही तो। मै अविवाहित हूँ। कुमारी।'

डनलप—'तुम लोगो मे विवाह भी होते हैं ?'

जूही—'ज़रूर। हम लोग तो केवल नाचने-गाने का पेशा करती हैं।'

डनलप—'तुम रानी साहब के यहा भी नाचने-गाने जाती हो ? मैंने सुना है कि उनको गाना सुनने और नाच देखने का शौक है।'

जूही—'मैं वहा नही जाती। कभी नही गई। उनको भगवान के भजन सुनने का शौक है। नृत्य का कोई शौक नही।'

डनलप—'रानी साहब गाती हैं ?'

जूही—'बिलकुल नही। मुझको क्या मालूम।'

डनलप—'रानी साहब ने तुमको घोडे की सवारी नही सिखलाई ?'

जूही—'मैं उनके पास कभी जाती ही नही। घोडे की सवारी क्यो सिखलाती ?'

डनलप—'और औरतो को तो सिखलाती हैं ?'

जूही—'सुना है।'

डनलप—'मोतीबाई नाम की वेश्या को जानती हो ?'

जूही—'वह वेश्या नही है। आपसे किसने कहा ?'

डनलप—'मुझसे सवाल करती है! जानती है कि धक्के देकर निकलवा दूँगा।'

जूही—'मैंने आपका क्या बिगाडा है ?'

डनलप—'अच्छा हटो। आगे कभी छावनी में मत आना।'

जूही ने मुंह उदास बना लिया और वह चली गई। परन्तु डनलप के ओट होते ही उसके होठो पर, गालो पर, मुस्कराहट की छटा छा गई। उसको याद आ गया—'एक दिन आवेगा जब फूलो की महक और देश की मुक्ति का सम्मेलन होगा।'

वह चाहती थी कि धक्के देकर निकाली जाती तो अच्छा होता, उसके शरीर से, कही से, थोड़ा-सा खून निकल पडता तो और भी अच्छा होता।

नर्तकी चली गई, परन्तु उसका सौन्दर्य डनलप के भीतर एक कोने में हलकी छाप, एक टीस, छोड गया। उस टीसने सिपाहियो के प्रति क्षोभ का रूप पकडा।

डनलप बोला, 'तुम लोग इन टके वाली औरतो के मोह मे अपना पैसा और समय नष्ट करते हो। इन औरतो का झूठा जादू ही तुमको ईसाई होने से रोक रहा है। इन शैतानो को छोडकर सच्चे धर्म पर ईमान लाओ, तो मुक्ति भी मिलेगी और पैसा अलग।'

पैसा और मुक्ति का घनिष्ठ सम्बन्ध सिपाही लोग बहुत दिनो से सुन रहे थे। पहले तो इस सम्बन्ध की बात पर उनको हँसी आया करती थी, अब वे खीजने लगे, जलने लगे। परन्तु सिपाहियो ने चुपचाप सुन लिया।

डनलप ने सोचा उसकी बात घर कर रही है।

डनलप कहता गया, 'तुम्हारे देवी—देवता सब बदसूरत और व्यर्थ हैं। उन पर विश्वास करने के कारण तुम मूर्ख बने हुये हो। इसलिये तुम्हारी तरक्की नही हो पाती। ईसाई होते ही तुमको एक ईश्वर और उसके एक पुत्र पर ही विश्वास लाने की जरूरत है। दुनिया भर की डाकिनी, पिशाचिनो और भूत-प्रेतो से पीछा छूट जावेगा। हिन्दू-मुसलमान सब बेवकूफ हो। इन्जील पढो तो आखे खुल जावेगी।'

सिपाहियो ने इस पर भी कुछ नही कहा।

डनलप बोला, 'रिसालदार, तुमको खुद ईसाई धर्म कबूल करना चाहिये, वरना तुम्हारे हक में अच्छा नही होगा। जैसे ही कोई ईसाई अफसर मिला तुम, बरखास्त कर दिये जाओगे।'

रिसालदार ने कहा, 'जो हुकुम।'

डनलप समझा, रिसालदार ईसाई होने के लिये लगभग राजी हो गया है।

पूछा, 'कब तक ?'

रिसालदार ने उत्तर दिया, 'कुछ महीनो की ही कसर है हजूर !'

डनलप इस वाक्य के भीतरी अर्थ को नही समझा।

डनलप के जाते ही सारा सिपाही समाज व्यङ्ग और क्षोभ में प्रमत्त हो गया। सुरीली और रूप वाली नर्तकी के अपमान का उनको रञ्ज था। अपने धर्म की अवहेलना पर उनको क्रोध था और अङ्गरेज के मुँह से रानी का नाम तक लेने पर, उनको क्षोभ था।

'उस विचारी को धक्के देकर निकालने की धमकी दी! बडा हूश है।'

'अरे पाजी है। कहता है, धर्म-ईमान छोड दो। ये शराबी कबाबी धर्म-ईमान को क्या जाने।'

'मेरी तबियत में तो आ गया था कि पीदो पर दुलत्ती कस दूँ।'

'जरा ठहरो। समय आ रहा है। फिलहाल मनाही है। सहते जाओ। थोडी सी कसर रह गई है। हमारे मुखिया लोग इलाज सोच रहे हैं।'

'खाक सोच रहे हैं। जब धर्म न रहेगा, मन्दिर मसजिद साफ हो जावेंगे, तब हकीमजी इलाज करने आवेंगे।'

'कारतूस फिर जारी किये गये हैं। सुनता हू, कलकत्ते के कारखाने में लाखो करोडो की तादाद में बनाये जा रहे है और एक अङ्गरेज या ईसाई को चार आना सेर के हिसाब से, गाय और सुअर की चर्बी इकट्ठी करके कारखाने मे देने का ठेका भी दे दिया गया है।'

'आने दो आने दो कारतूसो को। जीते जी तो उन कारतूसो को छुयेंगे नही। और यदि खोलने के लिये मजबूर किये गये, तो पहली गोली इस पाजी डनलप पर।'

'ईश्वर एक है सो तो बिलकुल ठीक है। न हिन्दू इसके खिलाफ कुछ मानते हैं और न मुसलमान। लेकिन ईश्वर के एक ही बेटा हुआ यह कुर्सीनामा इस डनलप को कहा से मालूम हुआ?'

'जिस कारखाने से भ्रष्ट कारतूस निकले, उसी से इस तरह का मजहब निकला होगा।'

'हमारे यहाँ ईसा को पैग़म्बर माना गया है, लेकिन खुदा का बेटा नही माना गया।'

'उसके बेटे तो मियां हम सब लोग हैं।'

'यह डनलप असल में अपने और अपने अङ्गरेज़ भाइयो के सिवाय किसी को खुदा का वेटा नही मानता।'

'हाय न जाने वह दिन कव आवेगा !'

'वहुत दिनो अपने ही भाइयो से लडे और इन लोगो के वहकाने से उनको तवाह किया।'

'कहते हैं हमारा निमक खाते हो, निमक को बजाना--हम कहते हैं निमक तुम्हारे वाप का है ?'

'वेशक है। ये लोग अगर कुर्सीनामे में से साबित करदे कि ये खुदा के नाती पोते पन्ती वन्ती कुछ हैं तो बेशक है।'

'यह तो हम लोग साबित कर सकते हैं क्योकि हम उसकी पूजा करते हैं, उसके कदमो में नमाज़ कहते हैं, लेकिन ये लोग—मौका मिला और शराव गटकी, क्लव घर में पहुचे और नाचे मटके। इतवार को गिरजा में सातवे दिन जाकर तोवा करली और फिर वही रफ्तार जारी।'

'कूडा हम साफ करे और मोटी मोटी तनख्वाहे ये मारे।'

'हम हिन्दुस्थानी सिपाहियो की वारक देखो और इन के बंगले। हमारी रोटी, चपाती और दाल देखो और इनके अन्डे बिस्कुट। हमारी छोटी सी तनख्वाह देखो और इनका मुहरो का ढेर, जो रोज़ रोज़ विलायत चला जा रहा है।'

'और इस पर वदमाशो की 'डैमफूल'। तहज़ीव के साथ वात करना जानते ही नही। इनका मुल्क तो विलकुल हव्शी है।'

'सवको तवाह कर दिया। झासी की देवी को देखो, किस मुसीवत में अपने दिन गुज़ार रही है।'

'मिया तुमने देवी सच कहा। एक दिन कमासिन टौरिया की तरफ घोडा दौडाये जा रही थी। मेरी आखो में चकाचोध लग गई। जी चाहता था कि पैर छू लूं।'

'सच कहता हूँ डनलप सरीखे शेखीवाजो को तो वह एक तमाचे में ढीला करदे।'

'न जाने वह दिन कब आवेगा कि फिर रानी का झण्डा किले पर फहरावें।'

'किले में गोरो की वसीगत देखकर मेरा तो खून जल उठता है।'

'लोगो को किले में जाने की मनाही है।'

'जब हमारा राज हो जावेगा, हम इन लोगो को किले की हवा के पास भी न फटकने देंगे।'

'महीना, तारीख, वक्त कुछ मुकर्रर हुआ ?'

'चुप, चुप, अभी नही। ठहरे रहने का हुक्म है। इन्तज़ार करने का।'

'अब तो सहा नहीं जाता। कब तक अपने धर्म और मजहब की तौहीन बरदास्त करते रहे ?'

[४७]

सन् १८५६ में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कर्णधार, भारतवर्ष भर को ओर मे लेकर छोर तक, ईसाई बनाने के स्वप्न देखने लगे थे। अस्पृश्य चर्वी वाले कारतूसो की वास्तविकता को, स्वय कई ज़िम्मेदार अङ्गरेज़ लेखक स्वीकार करते हैं। यह ठीक है कि उनके बन्द करने का प्रयत्न किया गया, परन्तु वह था शिथिल।

कम्पनी के बोर्ड के चेयरमैन तो उस स्वर्ण-घडी की प्रतीक्षा में आखें अटकाये हुये थे, जब सारा भारतवर्ष– हिन्दू और मुसलमान–अपने धर्म को छोडकर कम्पनी के धर्म को कबूल करके उनकी शासन सत्ता को प्रलय पयन्त, अपने कन्धो पर धारण किये रहे।

परन्तु इंगलेंड के कुछ लोगो को भारत में आने वाली विपत्ति के बादल का एक छोटा सा टुकडा दिखलाई पडने लगा था। उनके मुनीम डलहौज़ी ने दूकान को भारत में इतना काफी पसारा दे दिया था, कि अब उनकी रोकड बाकी खीचने और बहीखाता सँभालने के लिये भी, उनको कुछ समय चाहिये था। इसलिये डलहौज़ी को बुलाकर कैनिंग को भेजा।

कैनिंग ने विपत्ति के बादल के उस टुकडे को स्पष्ट देख लिया। परन्तु उसको आत्म विश्वास था इसलिये वह भारत में आया, और आने पर ईसाई मत प्रचार के लिये एक काफी रकम हिन्दुस्थान के खज़ाने से निकाल कर रख दी। पञ्जाब को कम्पनी–भक्त समझा जाता था। ईसाईयत के प्रचार वेग से वह भी न बचा।

इधर नाना साहब, तात्या, बहादुरशाह और उनकी बेगम ज़ीनत-महल, अवध की बेगम हज़रतमहल और रानी लक्ष्मीबाई का व्यापक और सूक्ष्म प्रचार जारी था। स्वाधीनता के युद्ध के लिये क्षेत्र तैयार हो रहा था, थोडी सी ही कसर थी जब नियत दिन और समय पर एक साथ सम्पूर्ण हिन्दुस्थान में विस्फोट होना था। वह दिन और समय अभी नियुक्त नही हुआ था।

सन् १८५७ का जनवरी मास आ गया। दमदम की छावनी में एक घटना हो पडी।

एक मेहतर ने ब्राह्मण सिपाही से पानी पीने के लिये लोटा मागा। ब्राह्मण सिपाही मेहतर को लोटा कैसे दे देता! वह मेहतर हो या न हो प्रचारक अवश्य था। वह भागा या हटा नही। दृढता पूर्वक डटा रहा। बोला, 'ओहो, जातपात का यह घमण्ड! आ रहे है कारतूस जिनको दात से खोलना पडेगा। उनमें सुअर और गाय की चर्बी लगी है। देखें तुम्हारी जात उन कारतूसो के प्रयोग के बाद रहती है या जाती है।'

कारतूसो की सनसनी चल तो बहुत दिनो से रही थी और अकेले दमदम में नही किन्तु लगभग सारी छावनियो के हिन्दुस्थानी सिपाहियो में। दमदम मे कारतूसो के बनाने का कारखाना था और उन दिनो बहुत सख्या में कारतूस बनाये भी जा रहे थे। इसलिये ब्राह्मण सिपाही के मन में यह भर्त्सना खप गई। वह अपने बेडे के अन्य सिपाहियो से कहता फिरा। क्षोभ फैलता गया और बढता गया। सिपाहियो की बात उनके अङ्गरेज अफसरो तक पहुँची। उन्होने इसको महज गप बतलाया। सिपाहियो ने कारखाने के हिन्दुस्थानी मजदूरो से तलाश किया। उन्होने बात को सच बतलाया। दमदम के इन सिपाहियो ने हजारो चिट्ठिया हिन्दुस्थान भर की छावनियो में भिजवाई। सिपाही कुछ कर उठने के लिये बेचैन हो उठे।

झासी की छावनी में भी चिट्ठी आई। आश्चर्य होता है कि थोडे दिनो में ये चिट्ठिया गुप्त रूप मे कैसे सर्वत्र फैल गई। जूही इत्यादि अब छावनी में नही आ-जा पाती थी, पर उनके पता देने वाले लोग छावनी के सम्पर्क में थे।

रानी को इस घटना का समाचार मिल गया। उनको चिन्ता हुई कही ऐसा न हो कि ये लोग कुसमय कुछ कर बैठें।

वसन्त पञ्चमी हो चुकी थी। फरवरी का महीना था। चाँदनी डूब चुकी थी। रात बिलकुल अन्धेरी। हवा ठडी मन्द मन्द। तारे दमक रहे थे। कुछ बडे बडे, असख्य छोटे छोटे। जैसे चादनी अपनी चादर छितरा

कर छोड गई हो। नीचे सघन अन्धकार। सब दिशाओ में गुलाई सी बाधे हुये। झीगुर झकार रहे थे।

रानी को नीद नही आ रही थी। कठिन व्यायाम से तप्त देह को ठड भली लग रही थी। खिडकी खुली हुई थी। उसमें से कई वडे वडे तारे दिखलाई पड़ रहे थे। झीगुर की झनकार के ऊपर दूर से आनेवाला किसानो और चरवाहो के फाग--गीत का स्वर सुनाई पड जाता था।

रानी ने सोचा, 'क्या ये लोग ईसाई बना लिये जावेगे ? ईसाई होने पर फिर क्या अपनी फागें गा सकेगे ? इनके बच्चे किल्ली-डडा और कबड्डी छोडकर फिर क्या खेलेगे ? होली, दिवाली, दशहरा ईद, सब यहा से चलदेंगे ? स्त्रियो का क्या होगा ? ऐसी सुन्दर वेश भूषा को छोड कर ये सब क्या किरानी पोशाक करेंगी ? ईसाई आवागमन नही मानते, फिर मुक्ति का क्या अर्थ ? और गीता, रामायण इत्यादि का क्या होगा ?'

रानी बिस्तरो मे बैठ गईं। निबिड अन्धकार में भी महल के सामने वाला ऊँचा पुस्तक--भवन, अपनी थोडी सी रूप-रेखा प्रकट कर रहा था।

'क्या वेद--शास्त्र, गीता, पुराण, दर्शन, काव्य ये सब व्यर्थ हो जायँगे ? जला दिये जायँगे या फेक दिये जायँगे ?'

रानी ने होठ से होठ दबाया। नथनो से भभक निकली।

'कदापि नही। कभी नही। मै लडूगी। उन गरीबो के गीतो की रक्षा के लिये। इन पुस्तको के लिये और जो कुछ इनके भीतर लिखा है उसके लिये। ऋषियो का रक्त ऐसा हीन और क्षीण नही हो गया है कि उनकी सन्तान तपस्या न कर सके। कीडो--मकोडो की तरह यो ही विलीन हो जाय।'

'नही कृष्ण अमर है। गीता अक्षय है। हम लोग अमिट हैं। भगवान की दया से, शंकर के प्रताप से मै बतलाऊँगी कि अभी भारत में कितनी लौ शेष है। और यदि मै इस प्रयत्न में मर गई तो क्या होगा। कोई दूसरा तपस्वी मुझसे अच्छा खडा हो जावेगा और इस भूमि का उद्धार करेगा। तपस्या का क्रम कभी खण्डित नही होगा।'

रानी फिर लेट गईं।

'नैन छिन्दन्ति शस्त्राणि नैन दहति पावक' सोचते हुए निद्रा लाने की चेष्टा करने लगी। इतने में पहरे वाली स्त्री-सैनिक ने द्वार के पास आकर खासा। रानी ने अनसुनी कर दी। वह फिर खासी। रानी बैठ गई।

पूछा, 'क्या है?'

पहरे वाली भीतर आई।

उसने कहा, 'श्रीमन्त सरकार, मोतीबाई दर्शन के लिये आई है। मैंने मना किया। नही मानी। हठ कर रही हैं। कहती हैं आधी घडी का तुरन्त समय दिया जाय। जैसी आज्ञा हो।'

रानी ने मोतीबाई को बुला लिया। पास काठ की एक चौकी पडी थी। मोतीबाई से उसी पर बैठने को कहा। वह नही बैठी।

बोली, 'सरकार इस चिट्ठी को पढले।'

मोतीबाई दीपक उठा लाई चिट्ठी पर किसी के हस्ताक्षर नही थे। उसमें लिखा था:—

'अब और नही सहा जाता। कब तक कलेजे में छुरी चुभाये रहे। उठो और धर्म के लिये कट मरो। थोडे से विदेशियो ने इस विशाल देश को घेर रक्खा है। निकाल दो। देश को स्वतन्त्र करो। धर्म की रक्षा करो।'

रानी—'यह चिट्ठी कहा मिली?'

मोतीबाई—'इस प्रकार की कई चिट्ठियां छावनी में आई हैं। मुझको भरोसे के लोगो ने आज दिन में बतलाया था। इस चिट्ठी को सरदार तात्या साहब ने दिया है।'

रानी—'तात्या टोपे! कहा हैं? झासी कब आये?'

मोतीबाई—'सन्ध्या के समय आये और प्रातःकाल के पहले चले जायेंगे। वह इसी समय दर्शन करना चाहते हैं। बाहर खडे हैं।'

रानी—'बाहरी कमरे में बिठलाओ। मैं आती हू।'

रानी ने सफेद साडी पर एक मोटा सफेद दुशाला ओढा और वह बाहरी कमरे में तात्या के पास पहुची। मोतीबाई को रानी ने उसी कमरे में बिठला लिया।

रानी ने पूछा, 'इस चिट्ठी का क्या प्रयोजन है ? मुझको तो असमय जान पडता है।'

'हा बाईसाहब,' तात्या ने उत्तर दिया, इसीलिये ले आया हूँ। मोतीबाई ने बतलाया कि इस प्रकार की चिट्ठिया यहा की छावनी में भी आई हैं। सिपाहियो में बेहद जोश फैला हुआ है, परन्तु न तो अभी कोई व्यवस्था हो पाई है और न काफी सगठन हुआ है। समय के पहले यदि विस्फोट हो गया तो अनेक सिपाही व्यर्थ मारे जावेगे। असफलता और निराशा देश को दबा लेगी और न जाने कितने समय के लिये यह देश विपदग्रस्त हो जावेगा।'

रानी—'इसको रोकना चाहिये और सगठन शीघ्र कर लिया जाना चाहिये।'

तात्या—रुपये पैसे की कोई असुविधा नही रही। काफी समय तक लडाई चलाते रहने के लिये धन इकट्ठा हो गया है। बारूद का और शस्त्रो का बहुत अच्छा प्रबन्ध है। इसलिये जल्दी से जल्दी की जो हो सकती थी नियुक्त कर ली गई है। दिल्ली, लखनऊ इत्यादि वाले सहमत हैं। आपकी सहमति लेकर सबेरे के पहले रवाना हो जाऊगा।'

'कौनसी तारीख ?' रानी ने प्रसन्न होकर पूछा।

'इकतीस मई रविवार, ११ बजे दिन', तात्या ने बतलाया।

रानी—'तीन-चार महीने हैं। मुझको यह तारीख पसन्द है। देश भर में सब जगह एक साथ ?'

तात्या—'सब जगह एक साथ। तब तक हम लोग मनाते हैं कि सिपाही और जनता, आत्म-नियत्रण से काम लें'

रानी—'मोतीबाई, अब तुम लोगो को ऐसे साधन काम में लाने पड़ेंगे, 'जिसमें छावनी में कोई भी उपद्रव उस दिन और उस समय तक न होने पावे।'

तात्या—'हर पल्टन के तीन-तीन अफसरो को इस तारीख और समय की सूचना कर दी जावे और उनको समझा दिया जावे कि तब तक सब प्रकार के अपमान चुपचाप सहते चले जावे। त्राण की घडी वही है और उनसे कह देना कि जब तक कमल का फूल छावनी में न आवे, किसी को भी तारीख और समय न बतलाया जावे और सिपाहियो को उत्तेजित होने से बरकाया जावे। कमल का फूल वैशाख से खिलने लगता है। प्रत्येक तालाब मे काफी मिलता है वह ठीक समय पर छावनी से छावनी घुमाया जावेगा। उसका आना समग्र सिपाहियो को कर्तव्य के लिये जाग्रत करना है और तारीख तथा ११ बजे के समय की सूचना देना है।'

मोतीबाई—'मैं अच्छी तरह समझ गई।'

रानी—'अब कहा जाओगे ?'

तात्या—'ग्वालियर। वहा से राजपूताने की ओर। एक चक्कर चैत के उपरान्त और लगेगा। नाना साहब तीर्थ-यात्रा के लिये निकलेंगे। उसी की आड में सब कार्यक्रम हर जगह बतला आवेंगे।

[४८]

फरवरी में एक दुर्घटना हो गई। वारकपूर की १९ नम्बर पल्टन को कारतूस प्रयोग करने के लिये दिये गये। सिपाहियो ने प्रयोग करने से दृढतापूर्वक इनकार कर दिया। बङ्गाल में उस समय कोई गोरी पल्टन न थी। इसलिये जनरल ने तुरन्त वरमा से एक गोरी पल्टन मंगवाकर १९ नम्बर पल्टन से हथियार रखवा लेने और सिपाहियो को वरखास्त कर देने का निश्चय कर लिया। सिपाहियो को मालूम हो गया। उनमें से कुछ ने चुपचाप हथियार रख देने की अपेक्षा तुरन्त क्राति कर डालने का संकल्प किया। उनके हिन्दुस्थानी अफसरो ने ३१ मई तक सब्र करने की सलाह दी। परन्तु उस पल्टन का एक सिपाही मङ्गल पांडे आपे से वाहर हो गया। उसने कुछ अफसर मार डाले। उसको फासी देदी गई।

इस घटना की सूचना वहुत शीघ्र उत्तर-भारत मे फैल गई।

नाना साहब और अजीमुल्ला मार्च के महीने में तीर्थ यात्रा के लिये निकल पड़े। दिल्ली में गुप्त मन्त्रणाये हुई। फिर अम्बाला गये। इसके उपरान्त मध्य अप्रैल में लखनऊ पहुँचे। वहा नाना साहब का समारोह के साथ जलूस निकला। नाना अङ्गरेजों से प्रत्येक स्थान पर मिलता था, जिसमें वे लोग निश्चिन्त बने रहे।

लखनऊ के वाद कालपी और झांसी आये। योजना का कार्य-क्रम निश्चित करके चले गये। उत्तर हिन्द की लगभग समस्त छावनियो में होते हुये नाना और अजीमुल्ला विठूर आ गये। स्थान-स्थान और प्रदेश प्रदेश में प्रभाव वाले व्यक्ति प्रचार के कार्य में जुट गये। अभी तक अङ्गरेजो को क्रांति के सामूहिक रूप का विलकुल पता न था।

गरमी आ गई। सरोवरो में कमल खिल उठे। फसल भी कट कर घरो में आने लगी। स्वाधीनता-युद्ध के दो चिह्न प्रकट हुये। एक कमल, दूसरा रोटी।

असख्य कमल के फूल भारतवर्ष भर की छावनियो में फैल गये।

कमल फूलो का राजा। सरस्वती की महानता, लक्ष्मी की विशालता उसके पराग और केशर में कही अदृष्ट रूप से निहित है। वह विष्णु की नाभि से निकला और अनन्त समय के उपरान्त वही वापिस जायगा। वह हिन्दुस्थान की प्रकृति का, सस्कृति का, मृदुल, मजुल, मांगलिक और पावन प्रतीक है। उसका रग हलका लाल है। वह विलकुल रक्त नही है। हिन्दुस्थान में होने वाली क्रान्ति खूनी जरूर थी, परन्तु उस खूनी क्राति के गर्भ में मंजुलता और पावनता गढी हुई थी। इसीलिये सन् ५७ की क्राति का यह प्रतिविम्व चुना गया। क्राति करेंगे—मानवीयता की रक्षा के लिये, क्राति होगी—मानवीयता लिये हुये।

कमल के साथ रोटी भी चलती थी। एक गाव से दूसरे गाव एक रोटी भेजी जाती थी। दूसरे गाव में फिर ताजी रोटी बनी और तीसरे गाव भेज दी गई। हिन्दुस्थान की वह क्राति हिन्दुस्थानियो की रोटी की रक्षा के लिये हुई थी। रोटी उस रक्षा के प्रयत्न का प्रतीक थी।

जिसने सोचा उसने कल्पना का कमाल कर दिया। यह उपज हिंदुओं और मुसलमानो, दोनो की थी।

कमल और रोटी का दौरा समाप्त नही हुआ था कि छ मई को मेरठ में विस्फोट हो गया।

मेरठ में बडी छावनी थी। कई हिन्दुस्थानी और अङ्गरेजी पल्टनें थी। एक हिन्दुस्थानी पल्टन के नब्बे सिपाहियो को कारतूस दिये गये। सिपाहियों को विश्वास था कि कारतूस अस्पृश्य चर्वी वाले हैं। अङ्गरेजो ने उन्हे आश्वासन दिया, कि नही हैं। पचासी सिपाहियो ने कारतूसो को छूने से इनकार कर दिया। उनका कोर्टमार्शल हुआ। आज्ञा न मानने के अपराध में उनको दस दस वरस के कठोर कारावास का दंड मिला। नौ मई के दिन इन सिपाहियों को गोरी फौज और तोपखाने के सामने लाकर खडा किया गया। वरदियाँ उतरवा ली गईं और हथकडी वेडियां डाल दी गईं। छावनी के वाकी हिन्दुस्थानी सिपाही भी इस दृश्य को देखने के लिये वुला लिये गये थे।

इसके बाद वे लोग जेलखाने भेज दिये गये।

उनके साथी सिपाही क्षुब्ध हो गये, परन्तु उनको ३१ मई तक रुके रहनेकी आज्ञा थी, इसलिये वे गुस्सा पी गये। घटना सुबह् की थी।

सन्ध्या समय हिन्दुस्थानी सिपाही बाजार में गये। सबसे पहले कुछ वेश्याओ ने आवाजें कसी।

'आहा ! आपकी मूछें देखिये ! कैसी भाजी हैं !! भाइयो को जेल-खाने भेजकर मुए किसी पोखरे में न डूब मरे !!!'

फिर गृहस्थ स्त्रियो ने। पुरुषो ने भी ताने कसे।

सिपाही बारको को लौट आये। धैर्य ने साथ छोड दिया। स्त्रियो के शब्द कलेजे में विध गये। रात को गुप्त मन्त्रणा हुई। निश्चय हुआ कि ३१ मई तक नही ठहरेगे। उसी रात उन लोगो ने दिल्ली खबर भेजी कि कल परसो तक दिल्ली पहुँचते हैं, सब लोग तैयार रहे।

दस मई को मेरठ में तलवार बन्दूक चल गई। अङ्गरेजो को मारमूर कर सिपाही दूसरे दिन दिल्ली पहुच गये। वहा की हिन्दुस्थानी सेना उनसे मिल गई। दिल्ली निवासियो ने उनका साथ दिया।

चारो ओर 'दीन दीन,' 'अल्ला हो अकबर' और 'हर हर महादेव' की पुकारें एक दूसरे में होकर गूंज गई। दिल्ली की अग्रेजी फौज मुहासिरे में पड गई।

मेरठ और दिल्ली की सम्मिलित हिन्दुस्थानी फौज ने दिल्ली के लाल किले पर अधिकार कर लिया। बादशाह बहादुरशाह को भारत का सम्राट घोपित किया और २१ तोपो की सलामी दी। बादशाह ने क्रांति का नेतृत्व स्वीकार किया और उसने सबसे पहला जो काम किया, वह था गो-वध का क़तई बन्द कर देना।

मई के महीने में लगभग सारे उत्तर हिन्द में क्राति की आग भड़क उठी—किसी दिन कही, और किसी दिन कही।

कानपूर में चौथी जून की रात को यकायक आधी रात के समय तीन फायर हुये। हिन्दुस्थानी सेना ने कानपूर में क्रांति का आरम्भ कर दिया। सवेरे खजाना और शस्त्रागार क्रांतिकारियो के हाथ में आ गये और नाना को राजा घोषित कर दिया गया।

[४६ [

स्कीन, गार्डन डनलप इत्यादि को झाँसी में मई की खबरे मिल गई और रानी को उनसे पहले ही ! रानी ने एक विशेष समय तक के लिये, लगभग सब आने—जाने वालो का महल आना बन्द कर दिया। जो थोडे से लोग आते-जाते थे, उनमें एक मोतीबाई थी। उसी के द्वारा रानी सब महत्वपूर्ण समाचार लेती और देती थी। मोतीबाई, खुदाबख्श और रघुनाथसिंह के सम्पर्क में थी। वह इन लोगो को सब बाते भुगता देती थी—स्वाभाविक था। ये दोनो दूसरे लोगो के सम्पर्क में थे। इस प्रकार काम जारी था।

मोतीबाई ने खुदाबख्श को महल में आगन्तुको वाले निषेध का वास्तविक कारण बतलाया। खुदाबख्श ने पीरअली को सुनाया और पीरअली ने नवाब अलीबहादुर को। ३१ मई के दिन और समय वाली बात भी उन अङ्गरेज अफसरो को मालूम हो गई। परन्तु मेरठ और दिल्ली इत्यादि स्थानो में इसके काफी पहले ही काण्ड हो चुके थे इसलिये उन लोगो ने ३१ मई सम्बन्धी सावधानी पर ध्यान नही दिया।

स्कीन ने जो चिट्ठिया मई के महीने में लैफ्टिनेंट गवर्नर के पास आगरे भेजी उनमें साफ लिखा कि झासी में विद्रोह का कोई भी चिन्ह नही है और सिपाहियो का पूरा विश्वास किया जा सकता है। पहली जून की चिट्ठी में उसने सबसे पहले कुछ झझट की सूचना दी।

'रात को मुझे खबर मिली कि कुछ ठाकुर लोग कोच पर धावा करने वाले हैं। मैंने तुरन्त डनलप को सूचित किया। सबेरे ही कुछ फौज गाव की रक्षा के लिये भेज दी। फौज के पहुचते ही ठाकुरो का विचार बदल गया। इधर-उधर भले ही विद्रोह फैला हो, परन्तु यहा के लोग हमसे कभी नही बिगडेंगे।'

असल में रानी की दृढ सावधानी के कारण, झाँसी में असमय विस्फोट नही हो पाया। महल में आगुन्तुको के निषेध की बात सुनकर, इन लोगो को और भी विश्वास हो गया कि रानी को आन्दोलन से

सरोकार नही है कोच पर इकतीस मई को 'कुछ ठाकुरो' का पहुच जाना, जिसका समाचार स्कीन को पहली जून की रात को मिला, काफी अर्थ रखता था। परन्तु जान पडता है कि उन ठाकुरो को यह नही मालूम था कि ३१ मार्च के आगे के लिये कार्यक्रम स्थगित हो गया है। और फिर दूसरे ही दिन कुछ हिन्दुस्थानी फौज का डनलप के साथ कोच पहुच जाना ठाकुरो के हतोत्साहक होने का कारण हो गया।

चौथी जून को कानपूर में और उसी दिन झासी में क्रान्ति के लक्षण प्रकट हुये। गुरबख्शसिंह नाम का हवलदार कुछ सैनिको को लेकर कम्पनी निर्मित छोटे से किले में, जो पुराने किले से एक मील शहर बाहर है, और जिसे अङ्गरेज लोग उसकी बनावट के कारण 'स्टार फोर्ट' (तारा-गढ) कहते थे, घुस पडा और लडाई का सब सामान और रुपया-पैसा उठवाकर ले आया। डनलप बची–बचाई सेना लेकर मुकाबिले के लिये आया।

स्टार फोर्ट में कोई भी सामान न पाकर वह लौट गया। कमिश्नर को सूचना मिली। उसकी सलाह पर छावनी के सब अङ्गरेज अपने बाल-बच्चे लेकर किले में जाने को तैयार हुये। डनलप ने नौगाव छावनी, सहायता पाने के लिये, पत्र लिखा।

अब इन लोगो को रानी की, रानी के शौर्य की, उनकी योग्यता की और उसकी तेजस्विता की याद आई।

गार्डन कई अङ्गरेजो को लेकर रानी के महल पर पहुचा।

गार्डन ने कहलवाया, 'अभी हमको भरोसा है कि फौज में जो थोड़ी सी गडबड हुई है उसको दबा लेंगे, परन्तु यदि कोई बडी विपद आवे तो आप हमारी सहायता करियेगा।

रानी ने उत्तर दिलवाया, 'इस समय हमारे पास न तो काफी शस्त्र हैं और न लडने वाले आदमी। देश में उपद्रव फैल रहा है। यदि अनुमति मिल जाय तो मै अपनी और जनता की रक्षा के लिये एक अच्छी सेना भर्ती करलूँ।'

डनलप सहमत होकर चला आया।

दूसरे दिन छावनी में स्कीन, गार्डन और डनलप की बैठक हुई। उन लोगो को अब भी विश्वास था कि हिन्दुस्थानी का व्यक्तिगत रूप से अपमान करना किसी भी नुकसान का कारण नही बनता। वे समझते थे कि सारी फौज में कुछ व्यक्ति नाराज़ हो सकते हैं, सब नही।

इसी भरोसे डनलप एक और अङ्गरेज को साथ लेकर पल्टन में पहुचा। सिपाहियो ने, जिनमें रिसालदार कालेखां सबसे आगे था, तुरन्त गोली से मार दिया।

अङ्गरेजो में भगदड मच गई।

गार्डन अकेला रानी के पास दौड़ा गया। मुन्दर द्वारा बातचीत हुई।

गार्डन—'हम लोग पुरुप हैं। हमको अपनी चिन्ता नही। हमारी स्त्रियो और बच्चो को अपने महल में आश्रय दे दीजिये।'

मुन्दर ने रानी को आगा-पीछा सुझाया, 'सरकार, इस आफत से दूर रहिये। फौज के लोग हमारे महल पर टूट पडेंगे।

रानी ने धीमे, परन्तु दृढ स्वर में मुन्दर से कहा, 'हमारी लड़ाई अङ्गरेज पुरुपो मे है, उनके बाल-बच्चो से नही। यदि मैंने सिपाहियो का नियन्त्रण न कर पाया तो उनका नेतृत्व क्या करूँगी ? कह दो गार्डन से कि स्त्रियो और बालको को तुरन्त महल में भेज दे।'

मुन्दर ने सम्वाद दे दिया।

गार्डन तुरन्त स्त्रियो और बच्चो को छावनी से निकाल कर शहर ले आया और उनको महल में दाखिल कर दिया। रानी ने उनको भोजन करवाया और ढांढस दिया।

परन्तु स्कीन ने हठ किया, इसलिये वे सब महल से हटा लिये गये और किले में भेज दिये गये।

इस बीच में सिपाही छावनी के तहस-नहस में उलझे थे। फारिग होकर वे किले पर धावा करने के लिये बढे। गार्डन इत्यादि ने सब

फाटक बन्द कर लिए। लेकिन सिपाही बहुत थे। उनके पास तोपखाना था और किले में तोप न थी—युद्ध सामग्री भी थोडी, खाने के लिए क़रीब करीब कुछ नही।

नवाब अलीबहादुर ने उसी समय पीरअली को भेजा और कहलवाया कि हुक्म हो तो ओर्छा और दतिया से सेना बुलवा ली जावे।*

अङ्गरेज इतने भयभीत हो गये थे या इतनी हेकडी में थे कि उन्होने जवाब दिया, 'कोई जरूरत नही है। छोटा सा बलवा है। दबा लेंगे।'

पीरअली ने नवाब साहब को वह उत्तर भुगता दिया। खुदाबख्श मिल गया। उसको भी सुनाया। खुदाबख्श ने मोतीबाई को रानी के पास भेजा और स्वय रघुनाथसिंह के पास चला गया।

मोतीबाई ने कहा, 'सरकार अब समय आगया है।' और खुदाबख्श की कही बात सुनाई।

रानी बोली, 'नियुक्त तारीख पर आरभ न होने के कारण कार्यक्रम का रूप बदल गया है। तो भी, अपनी सेना तुरन्त तैयार करने का प्रयत्न इसी समय किया जाना चाहिये। रघुनाथसिंह को समाचार दो कि कटीली से दीवान जवाहरसिंह को बुलाले और जितनी विश्वनीय सेना इकट्ठी हो सके आठ मील पर, रकसा के निकट, जमा करे। घुडसवार अधिक हो। जब तक मेरी आज्ञा न मिले झासी की ओर न आवे।'

मोतीबाई ने दीवान रघुनाथसिंह को आज्ञा सुना दी। वह खुदाबख्श को लेकर चला गया।

उस दिन सिपाही किले पर बराबर आक्रमण करते रहे। परन्तु अङ्गरेज उनको गोलियो की बौछार से पीछे हटाते रहे।

दूसरे दिन भी लडाई चलती रही। दोपहर के उपरान्त अङ्गरेजो के पास खाने के लिये एक दाना भी न रहा। किले वाला महल दुबारा-तिवारा

---

*नवाब अलीबहादुर का बयान जो उन्होने सन् १८५६ में दिया था और जिसकी नकल नवाब बन्ने के पास है।

छाना कि कहीं कुछ रक्खा हो । वहा कुछ भी न मिला । शाम के बाद लडाई कुछ ढीली हुई । अङ्गरेजो ने किसी प्रकार रानी के पास अपनी भूख का समाचार भेजा ।

रानी ने दो मन रोटिया तत्काल बनवाई । काशीबाई से कहा, 'तू इन रोटियो को किसी प्रकार अङ्गरेजो के पास पहुँचा । तुझको सारे गुप्त मार्ग मालूम हैं, सुन्दर और मुन्दर को साथ लेजा, और कोई न जावे । जहां मशाल की अटक पडे जला लेना ।'

सहेलिया रानी की दया को जानती थी, परन्तु उसकी सीमा को नही देखा था ।

काशी ने विनम्र शात स्वर में कहा, 'सरकार, यदि हम लोग इस परिस्थिति में पडे होते तो क्या अङ्गरेज़ लोग हमको दाना-पानी देते ?'

रानी मे उत्तर दिया, 'अङ्गरेजो जैसे बनकर हम अपने और उनके बीच के अन्तर को-क्यो मिटाएँ ? और फिर इन लोगो को भूखा मारकर आगे वढना अनुष्ठान को कलुषित करना है ।'

रानी मुस्कराई । काशी का हृदय आभासमय हो गया ।'

परन्तु फिर भी उसने सवाल किया, कव तक आप इनको इस प्रकार खिलायँगी ?'

'जव तक मेरी निज की सेना तैयार नही हो गई,' रानी ने कहा 'जव सेना तैयार हो जावेगी, मैं उन लोगो के हथियार रखवालूँगी और कही सुरक्षित स्थान में क़ैद कर दूँगी ।'

उन तीनो सहेलियो ने रोटियो के गट्ठर पीठ पर लादे और गुप्त मार्ग में होकर किले में ले गई । गार्डन इत्यादि ने उन लोगो को प्रणाम किया । उनमें एक व्यक्ति मार्टिन नाम का था । मार्टिन ने सुरंग का रास्ता देख लिया । दूसरे दिन फिर ये तीनो किले में दो मन रोटिया दे आई । मार्टिन चुप चाप पीछे पीछे आया और गुप्त मार्ग से वाहर निकल कर आगरा चला गया । सहेलियो को या किसी को भी नही मालूम पड़ा ।

उस दिन घोर युद्ध हुआ। गार्डन उत्तरी फाटक के ऊपर की खिडकी में से ताक ताक कर बन्दूक का निशाना लगा रहा था और सिपाही उसके मारे हैरान हो रहे थे। उनको शहर का एक पुराना तीरन्दाज मिल गया। उस तीरन्दाज ने एक पत्थर की ओट लेकर गार्डन पर तीर छोडा। तीर गार्डन की गर्दन को फोडकर पार हो गया। गार्डन के मरते ही समस्त अङ्गरेजो में उदासी और निराशा छा गई।

उधर रिसालदार कालेखा ने किले के उत्तर–पश्चिमी कोने पर, जिसे शंकर-किला कहते हैं, भयानक दाब बोली और अपनी सेना की एक टुकडी सहित किले में घुस गया। अङ्गरेजो ने देखा कि अब कोई बचत नहीं, इसलिये उन्होने सुलह की चर्चा छेडी। सिपाहियो ने रक्षा का आश्वासन दिया। स्कीन ने ८ जून के सबेरे किले का सदर फाटक, जो दक्षिण की ओर है, खोला और कहा कि हमको सागर चले जाने दो।

सिपाहियो ने उन लोगो को कैद कर लिया। सिपाहियो का मुखिया रिसालदार कालेखा छावनी चला गया।

थोडी देर में वहा जेल-दरोगा बख्शिशअली आया। उसकी आखे लाल थी और मुँह झुलसा हुआ। उसने अङ्गरेजो की ओर देखा।

सिपाहियो से बोला, 'रिसालदार साहब रास्ते मे मुझे मिले थे। हुकुम दे गये हैं कि इन सब को झोखनबाग ले चलो।'

सिपाही अङ्गरेजो को झोखनबाग ले आये। वहा एक सिपाही घोडे पर सवार आया। बख्शिशअली ने उसके कान में कुछ कहा। सवार हिचका।

बख्शिशअली बोला, 'भाइयो, यह जो स्कीन कमिश्नर खडा है, इसने मुझको जूतो की ठोलो से पीटा था, अब क्या देखते हो ?'

सिपाही एक दूसरे का मुँह ताकने लगे।

बख्शिशअली—'और इसने जूते की ठोल से मुझको इतना मारा था कि मैं गिर पड़ा था। मारने के पहले इसने मुझको सुअर की गाली दी थी।'

स्कीन भयभीत खडा था। परन्तु इस आरोप ने उसको जगा दिया। बोला, 'मैंने गाली कभी नही दी। मारा शायद हो, मगर याद नही आता। काम में गफलत करने पर तो कभी कभी मारना भी पडता है।'

वह जो सवार आया था, उसकी ओर बख्शिशअली ने भयानक दृष्टि से देखा।

सवार ने कडकती हुई आवाज मे कहा, 'रिसालदार साहब ने इन सबके कतल का फरमान किया है।'

बख्शिशअली ने सबसे पहले स्कीन को मारा, और फिर सब काट दिये गये। उस समय वहा सिवाय उन सिपाहियो के और कोई न था।

उसी समय रिसालदार कालेखा आ गया। खून में रगी तलवारो को देखकर क्रुद्ध स्वर में बोला, 'यह क्या किया!'

बख्शिशअली ने कहा, 'और क्या करते?'

रिसालदार ने अपने स्वर को सयत करके पूछा, 'किसके हुकुम से? क्या रानी साहब ने हुकुम दिया था?'

बख्शिशअली के पास ही वह सवार खडा था। उसने उत्तर दिया, 'रानी साहब को कुछ नही मालूम। वे तो हम लोगो से कुछ कटी कटी सी जान पडती हैं।'

'तब किसके हुकुम से?' रिसालदार ने और भी सयत स्वर में पूछा।

बख्शिशअली ने जवाब दिया, 'आपके नाम पर मेरे हुकुम से!'

'ओफ!', रिसालदार ने धीरे से कहा, 'हमारे बडे मुखिया जब सुनेंगे क्या कहेगे? मगर...मगर...'

रिसालदार थोडी देर चुप रहा। सूर्य की किरणो में जलन बढती चली जा रही थी। रिसालदार ने मुँह पर हाथ फेरा। माथा दबाया। थोडी देर खामोश रहा।

बोला, 'जो हुआ सो हुआ। आगे विना हुकुम के कोई काम न करना। रानी साहब के महल पर चलो।'

वैसी ही तलवारे लिये सिपाही महल की ओर चल पडे।

[५०]

सिपाहियो मे अनुशासन न था। घिन और गुस्सा मनको घेरे थे। अपनी विजय पर उनको पागलो जैसा हर्ष था।

रानी के महल पर वे पीछे पहुँचे, उनका शोरगुल पहले पहुँच गया। पहरेदार ने फाटक बन्द कर लिये। सेना के कुछ सिपाही शहर को लूटने की बातचीत करने लगे। कवायद परेड सीखे हुये वे सिपाही अच्छे नेता की कमी के कारण महज हुल्लड और भम्भड की भूमिका भरने लगे। कोई किसी की नही सुन रहा था। हर एक आदमी अपना अपना गुबार निकालने की धुन में था।

इतने में कालेखा चिल्लाया, 'खलक खुदा का, मुलक बादशाह का, राज महारानी लक्ष्मीबाई का।'

सब सिपाहियो ने यही नारा लगाया। सिपाहियो की विचारधारा इसी नारे की ओर मुड गई—उस नारे ने अनुशासन की कमी को कुछ पूरा किया। खिडकी की झरप हटी। हाथ जोडे हुये लक्ष्मीबाई दिखलाई दी। पीछे सशस्त्र सहेलिया।

बिलकुल गौर-वदन। गले मे हीरो का कण्ठा। होठ एक दूसरे से सटे हुये। सिपाहियो ने फिर नारा लगाया।

रानी ने नमस्कार किया। हाथ उठाकर चुप रहने का सकेत किया। भीड में सन्नाटा छा गया। रिसालदार आगे बढा।

रानी ने तीव्र स्वर में पूछा, 'क्या है ? तुम रिसालदार कालेखा हो ?' स्वर में तीव्रता होते हुये भी कठ का प्राकृतिक सुरीलापन था।

कालेखा ने सैनिक-प्रणाम किया। बोला, 'हुजूर का ताबेदार कालेखा रिसालदार मैं ही हूँ।'

रानी की अनिमेष दृष्टि से कालेखा ने अपनी आख मिलाई। कालेखां की आख झरप गई। नीची हो गई। रानी ने कहा, 'इन तलवारो में रक्त कैसे लगा ?'

कालेखा ने बतलाया।

रानी बोली, 'इन्हीं कर्मों से स्वराज्य और बादशाही स्थापित करोगे? तुम लोगो ने घोर दुष्कर्म किया है। क्या तुम यह समझते हो कि संसार से सब नियम सयम उठ गये?'

कालेखा—'हुजूर .....'

रानी—'और अभी तुम लोगो में से कुछ झासी नगर को लूटने की भी चर्चा कर रहे थे। तुम अपने को इतना भूल गये! क्या तुम लोगो को यही सिखलाया गया है?'

कालेखा—'हुजूर के हुकुम के खिलाफ अगर अब कुछ हो तो हम सबको तोप से उडा दिया जाय। जो आज्ञा हो उसका हम लोग पालन करेंगे।'

रानी—'तो मैं यह कहती हू कि छावनी को लौट जाओ। सोच विचार कर सन्ध्या तक आज्ञा दूँगी कि आगे तुम्हे क्या करना है।'

कालेखा सिपाहियों से बातचीत करने लगा।

कुछ ने कहा, 'छावनी चलो।'

कुछ बोले, 'दिल्ली चलो। वहा मजा रहेगा।'

कुछ ने सलाह दी, 'कुछ रुपया तो पहले गाँठ में कर लो।'

अन्त में सिपाहियो ने निश्चय किया 'रानी साहब से रुपया लो और दिल्ली चल दो। रानी साहब रुपया न दें तो जितना शहर से वसूल करते बने वसूल कर के, झासी को रानी के हवाले करो और आगे बढो।'

कालेखा ने सिपाहियो का निर्णय रानी को सुना दिया कहा। कहा, 'सरकार, सिपाही भूखे हैं।'

रानी परस्थिति को समझ गईं। उन्होने दूरदर्शिता से काम लिया।

बोली, 'अङ्गरेजो ने मेरे पास रुपया नही छोड़ा। राज्य अङ्गरेज़ो के अधीन रहा है। मैं कहा से रुपया लाऊँ?'

कालेखा ने कहा, 'हम लोग मजबूर हैं। आप मालिक हैं। आपसे कुछ नही कह सकते। यदि यहां से रुपया नही मिलता है तो हम लोग शहर से उगावेंगे।'

रानी समझ गई कि शहर लुटने वाला है। उन्होंने गले से हीरों का कंठा उतारा और कालेखां की अञ्जलि में डाल दिया।

बोली, 'इससे तुम्हारी सारी अटके पूरी हो जायगी। मनुष्यो की तरह यहा से जाओ। कही लूटमार बिलकुल न करना, अदब कायदे के साथ दिल्ली पहुँचो। हिन्दुओ को गगा की और मुसलमानो को कुरान की सौगन्ध है।'

कुछ सिपाहियो ने रानी की नौकरी करनी चाही। परन्तु बहुमत दिल्ली जाने के पक्ष में था। इसलिये लगभग सब दिल्ली चले गये—केवल थोडे से रह गये। उनमें से एक लालता तोपची था।

सिपाहियो के चले जाने पर रानी ने रकसा से दीवान जवाहरसिंह इत्यादि को तुरत ससैन्य बुलवाया। सिपाही फौजी सामान तोपें इत्यादि अपने साथ ले गये।

[५१]

रात में दीवान जवाहरसिंह ससैन्य आ गया। रानी ने आदेश भेजा कि नगर और किले का प्रबन्ध करो और कल दिन में मिलो।

दूसरे दिन महल में बहुत लोग उपस्थित हुये। सेना और शासन से सम्बन्ध रखने वाले सरदार, कर्मचारी, जागीरदार, जनता के साहूकार मुखिया और पञ्च।

रानी पर्दे के पीछे बैठी।

रानी ने कहा, 'कल कठिनाई के साथ मैंने नगर को लुटने से बचा पाया। विद्रोही तो यहाँ से चले गये, परन्तु अव्यवस्था छोड गये हैं। डकैती और लूटमार बढने का बहुत भय है। मै चाहती हूँ जनता त्रस्त न होने पावे। इसलिये मैंने झासी राज्य के पुराने जागीरदार और सरदारो को कुछ सेना लेकर बुलवाया है, जिसमें अव्यवस्था न रहने पावे। आप लोगो को और जनता के मुखिया पञ्चो को सम्मति के लिये बुलाया है। बतलाइये अब क्या करना चाहिये ?'

गार्डन के सरिश्तेदार ने कहा, 'मै तो यह सलाह दूँगा कि सागर के डिप्टी कमिश्नर को बलवे की सूचना दी जावे और जबलपुर के कमिश्नर को लिखा जावे कि आपने अङ्गरेजो की ओर से शासन की बागडोर हाथ में ले ली है।'

माल के सरिश्तेदार ने समर्थन किया।

कोरियो का सरपञ्च पूरन बोला, 'मुसकिल से तो कम्पनी को राज हटपाओ है अब उन्हे जा खबर काये दई जाय कै हम तुमाये लानें अपनो मूँड सँजो रये, आओ, और फिर किड बिड़ करके झाँसी के प्रान खाओ ?'

दोनो सरिश्तेदारो ने आँखे तरेरी।

काछियो के मुखिया ने कहा, 'हमै नई चाउने काऊ और को राज झासी में। करे राज तो हमाई बाई साब, न करे तो हमाई बाई साब।'

तेलियो के पञ्च ने मत प्रकट किया, हमैं तो अपनौं पुरानौं राज लौटाउनें, चाए पृथी इतै की उतै हो जाय।'

प्रमुख साहूकार मगन गन्धी बोला, 'बाट जोहते जोहते आखें पथरा गई'। आज कितनी मानताओ के बाद यह दिन देखने को मिला। हम लोग तो अपना राज्य चाहते हैं।'

सरिश्तेदारो ने फिर आखे तरेरी।

चमारों के मुखिया ने कहा, 'एओ, ऊसई आखे नटेर रये ! राज बाई साब को और फिर बाई साब को और हम सब बाई साब के।'

माल का सरिश्तेदार बोला, 'नवाब अलीबहादुर साहब को भी बुला लीजिये। वे दुनिया देखे हुये हैं। ठीक सलाह दे दें। इन बेपढो की सलाह पर अमल करना गलत होगा।'

'हौ, तै है बडो मौलबी पडित,' अहीरो के नायक ने रुष्ट होकर कहा, 'हमें परदेसियन की हकूमत नई चावनें। जो उनकी पिच्छदारी करें तीको करिया मो हो जाय।'

मोरोपन्त ने जन-मत का समर्थन किया। एक लक्ष्मणराव बाडे नामका, चतुर काइया भी उस सभा में था।

बोला, 'सरिश्तेदार साहब अगरेज़ी और अगरेज़ को जानते हैं। वे वास्तव में यह चाहते हैं कि बाईसाहब दो चार रोज़ यह मुफ्त का झमेला अपने सिर लिये रहे और सागर के डिप्टी कमिश्नर को बुला कर उनको पेशकारी दिलवादे ताकि कसकर रोज़गार चले।'

अब सरिश्तेदारो का कोई कुछ कहने लगा और कोई कुछ।

वृद्ध नाना भोपटकर ने, जो अब भी काफी स्वस्थ था, कहा, 'हमलोग सरिश्तेदार साहब की सलाह पर भी विचार करेंगे। इस समय इतना तो अवश्य तै कर लेना चाहिये कि राज्य का सर्वांगीन शासन बाईसाहब के हाथ में रहे और सब लोग अपने को उनकी प्रजा मानकर दृढतापूर्वक अपने जीवन का निर्वाह करे।'

उपस्थित जनता ने हर्ष और उत्साह के साथ इस मत को स्वीकार किया।

वे दोनो सरिश्तेदार दरबार से हटा दिये गये।

रानी बोली, 'आप लोग जो भार मुझे दे रहे हैं, उसको मैं अपना गौरव मानती हूँ और परमात्मा की कृपा से उसको निभाऊँगी।'

लोगो ने जय-जयकार किया।

गुलाम गौसखा तोपची हाथ बाधकर खडा हो गया।

उसने कहा, 'श्रीमन्त सरकार, मुझको मेरी पुरानी नौकरी मिलनी चाहिये।'

रानी उसको पहिचानती थी।

बोली, 'तुम सदर तोपची नियुक्त किये जाते हो सब तोपो को संभालो। जो तोपे खराब कर दी गई हैं उनको ठीक करो।'

'जो आज्ञा', गुलाम गौसखा ने गद्गद होकर कहा,—'एक विनय और है, साढे तीन साल से ऊपर हुये एलिस किले वाले महल में आया और हम लोगो के मनमें आशा बँधी कि झाँसी के राज्य को लौटाने की चिट्ठी लाया होगा, तब मैंने तोपो मे बारूद डाल ली थी—सलामी दागने के लिये। आज मुझको अपने मन की करने का हुक्म दिया जाय।'

रानी ने सुरीले मधुर स्वर मे कहा, 'अभी ऐसा क्या हो गया है?'

गुलाम गौस—'हो गया है सरकार। हमारे दिलो में हो गया है। दिलो के बाहर हो गया है।'

मोरोपन्त—'हो गया है।'

लक्ष्मणराव—'हो गया है।'

नाना भोपटकर—'हो गया है।'

उपस्थित जनता ने उसी को दुहराया और जय-जयकार की।

रानी ने अनुमति दे दी।

गुलाम गौस ने थोडी देर में तोपो को सभाला। जो चलाने लायक थी, उसने सलामी दाग दी।

जब भीड छट गई, रानी ने एकान्त में अपने सरदारो से विचार-विमर्श किया।

नाना भोपटकर—'अभी लक्षणो से ऐसा प्रतीत नही होता कि अङ्गरेजी राज्य उठ गया। इसलिये एक चिट्ठी जबलपुर के कमिश्नर के पास इस विषय की भेज दी जावे कि बाईसाहब झासी में अङ्गरेजो की ओर से राज्य कर रही हैं, जिससे डकैती, बटमारी और अव्यवस्था जनता को त्रस्त न कर सकें। यदि अङ्गरेज देश से निकाल दिये गये तो झासी हाथ से कही गई नही और यदि अङ्गरेज झासी वापिस आ गये तो बाईसाहब का कोई नुकसान नही हो पावेगा।'

मोरोपन्त—'मै इस मत को अनुचित समझता हू। नाना साहब और दिल्ली, लखनऊ इत्यादि के अपने सहयोगी सुनेंगे तो क्या कहेगे ?'

रघुनाथसिह- 'नाना साहब इत्यादि हम लोगो को अच्छी तरह जानते हैं। उनके मन मँजे हुये हैं। भ्रम नही हो सकता। मेरे पास रानी विक्टोरिया की दी हुई सनद और तलवार है। सनद को परवाने का काम करने दीजिये और तलवार को देश की स्वाधीनता का।'

दीवान दूल्हाजू—'मैं अपने शरीर के टुकडे टुकडे करने कराने को तैयार हूँ। खूब डट कर राज्य हो और कसकर लडाई। मै तो आज हर्ष के मारे बेकाबू हुआ जा रहा हू।'

जवाहरसिह—'दीवान साहब समय पडने पर सब देखा जायगा।'

दूल्हाजू—'कैसे दीवान साहब ?'

जवाहरसिह—'आप तो रुष्ट होने लगे! लडना मरना सबको आता है। यह समय शान्ति के साथ सलाह करने का है, मेरे निवेदन का इतना ही अर्थ है।'

भाऊबख्शी—'मेरी समझ में नाना भोपटकर जो कह रहे हैं, वह ध्यान देने योग्य है।'

मोरोपन्त—'मैं इस सलाह के विरुद्ध नही हूं। परन्तु झडे का सवाल उठता है। जगह जगह बादशाह का हरा झडा फहराया जा रहा है।'

रानी—'झासी पर केवल भगवा झंडा उडाया जावे।'

नाना भोपटकर—'मेरी भी यही राय है।'

रानी—'नीति का काम नाना भोपटकर जी को सौपा जाय वे जैसा ठीक समझे करें। मैं स्वय रणनीति और राजनीति के समीकरण में विश्वास करती हू। एक का पलडा भारी हुआ कि दूसरा झमेले में पड़ा।'

नाना भोपटकर—'मै स्वय चिट्ठी नही लिखूगा। गार्डन के सरिश्तेदार से लिखवा कर भेजूंगा। वह यहा से खिसिया कर गया है। मना लूंगा।'

इस बात के तै होने पर राजकार्य का विभाग किया गया और पधाधिकारी नियुक्त किए। लक्ष्मणराव प्रधान मन्त्री, बख्शी और तोपे ढालने वाला भाऊ, प्रधान सेनापति दीवान जवाहरसिह, पैदल सेना के तीन कर्नल–एक दीवान रघुनाथसिह दूसरा मुहम्मद जमाखा तीसरा खुदाबख्श। घुड सवारो की प्रधान स्वय रानी। कर्नल-सुन्दर, मुन्दर और काशीबाई। तोपखाने का प्रधान गुलाम गौसखा, नायब दीवान दूल्हाजू। न्यायाधीश नाना–भोपटकर। मोरोपन्त कमठाने के प्रधान। जासूसी विभाग मोतीबाई के हाथ मे, नायब जूही।

पुलिस, माल विभाग, दानधर्म विभाग इत्यादि के भी कर्मचारी नियुक्त कर दिये गये। तहसीलो के तहसीलदार भी। मऊ का परगना काशीनाथ भैया नामक एफ महाराष्ट्र और आनन्दराय के हाथ में दिया गया। उस दिन खूब लू चली। काफी गरमी पडी। परन्तु किसी ने यह न जाना कि दिन कैसे निकल गया। जब सब काम अच्छी तरह से निबटा लिया तब रानी ने सभा विसर्जित की।

[५२]

सब कर्मचारियो को अपने अपने विभागो को दृढता और सावधानी के साथ सभालने और चलाने का आदेश रानी ने कर दिया।

सवेरे से ही रिसाले और पैदल पल्टनो की कवायद और निशानेबाजी शुरू हो गई। समय पर बिगुल बजा और ठीक समय पर सब काम हुआ और होता रहा। सेना में लगभग सब पुराने सिपाही आ गये। नई भर्ती भी बहुत हुई। सब जातियो और वर्गों के आदमी लिये गये। रानी की हिदायत थी कि सेना को सारे राज्य की जनता अपना समझे और यह तभी हो सकता था जब सेना में सब जातियो के लोग रक्खे जाते।

झासी का राज्य लेने पर अङ्गरेजो ने लगभग सब पुरानी तोपो को कीले ठोककर, बेकार कर दिया था। तोपो के ढालने के कारखानो को चालू करने का कार्य तुरन्त शुरू कर दिया गया। गोले गोलिया बनाने का, तलवारे-बन्दूके, पिस्तौले इत्यादि तैयार करने का भी काम जारी हो गया। परन्तु नये हथियारो का कारखानो से बनकर निकलना शीघ्र सम्पादित नही हो सकता था। इसलिये रानी ने, जहा मिले, पुराने हथियार इकट्ठे किये। जनता ने जी खोलकर रुपया दिया।

गुलाम गौसखा ने दो दिन में तोपो को ठीक कर लिया। कुछ तोपें गडी हुई पडी थी। उनको भी सभाल लिया।

यह अच्छा हुआ क्योंकि राज्य को हाथ में लेने के ठीक पाच दिन बाद (१३ जून की रात को) रानी को मोतीबाई ने खबर दी कि करेरा के किले पर सदाशिवराव नेवालकर ने हमला किया है और काफी सेना इकट्ठी करली है।

सदाशिवराव झासी की गद्दी का दावेदार था। झासी में ही रहता था। २१ मई की हलचल की उसको खबर थी। वह अपनी लुडिया मारने के लिये झासी से निकल गया। गाँव में लोग क्रान्ति के लिये तैयार थे ही, बहुत से मनचले नौजवान हथियार बाधकर सदाशिव के साथ हो गये।

करेरा में थानेदार और तहसीलदार अङ्गरेज़ों की ओर से नियुक्त थे। उनको सदाशिव ने मार भगाया। तुरन्त अडोस-पडोस के जागीरदारो से रुपया वसूल किया और दो एक दिन के भीतर ही अभिषेक करवा लिया। पदवी धारण की—महाराजा श्री सदाशिव नारायण! और प्रसिद्ध किया कि मैं ही झासी राज्य का सच्चा और सही अधिकारी हूं। गांव-गाव में अपने 'महाराज' होने के घोषणा पत्र भिजवाये। जिसने उसको झासी का राजा न माना उसकी तुरन्त जायदाद जब्त करली। ऐसे सपाटे के साथ कदम बढाया मानो दो चार हफ्ते में ही सारे हिन्दुस्थान का चक्रवर्ती हो जायगा।

उसने समझा झासी अनाथ है—एक महज़ अल्प वयस्क स्त्री के हाथ में है।

खबर पाते ही रानी ने तैयारी करदी। नगर का प्रबन्ध मज़बूत था ही। उत्तर, पूर्व और दक्षिण के भागो का शीघ्र सन्तोष जनक प्रबन्ध कर लिया। करेरा पश्चिम में था। गडबड केवल इसी दिशा में 'महाराजा' सदाशिव के कारण थी।

झासी की सेना अधकचरी थी, परन्तु सेनापति चतुर और उत्साही थे। करेरा कूच करने के पहले तीनो सहेलियो से मुस्कराकर रानी ने कहा, 'तुम तीनो कर्नलो की परीक्षा महाराजा सदाशिव नारायण के सामने होगी।'

मुन्दर बोली, 'यदि महाराजा साहब हमारे जनरल का नाम सुनते ही भाग गये तो?'

रानी हँसी। जैसे मोतियो ने आभा बरसाई हो। काशी शान्त प्रकृति की होते हुये भी बहुत हँसी।

रानी ने कहा, 'काशी, मैं बिल्कुल पीछे रहूँगी। तुमको आगे जाकर लोहा लेना पडेगा।'

काशी बोली, 'बाईसाहब, उस समय या तो आपका घोड़ा न मानेगा या आप न मानेंगी।'

रानी ने काशी के कन्धे की चुटकी भरी और कहा, 'तेरी एक बात तो सच्ची हो गई। उस दिन तूने कहा था—जवाहरसिंह सेनापति होगा। सो हो गया। अब देखू करेरा के सम्बन्ध मे मुन्दर की बात ठीक निकलती है या नही। युद्ध होगा।'

'सरकार', मुन्दर उत्साह के साथ बोली, अबकी बार मेरी वाणी सच्ची होगी।'

'तो अपने हाथ से लड्डू बनाकर खिलाऊँगी', रानी ने कहा।

मुन्दर को उन थाल भर लड्डुओ की याद आ गई जो रानी ने अपने हाथ से उस दिन बनाये थे और रघुनाथसिंह इत्यादि को खिला दिये थे।

रानी ने कूच कर दिया।

वे इतने वेग के साथ अपने घुडसवारो को लेकर करेरा पहुची कि 'महाराज' सदाशिवराव को लड़ने तक का मौका नही दिया!

रानी ने पहुँचते ही करेरा के किले को ऐसा घेरा कि सदाशिव ने मुश्किल से भाग कर अपनी जान बचा पाई। सिन्धिया के राज्य में, नरवर में, जाकर दम ली।

वहा से सदाशिव ने सिन्धिया से सहायता की याचना की। ग्वालियर से थोडी सी सहायता आई थी। परन्तु रानी ने सदाशिव को नरवर में घेर लिया—और पकड कर झासी ले आई। झासी के किले में कैद कर दिया।

मुन्दर ने कहा, 'बाईसाहब, मेरी भविष्यवाणी कैसी अक्षर अक्षर सत्य निकली?'

काशी बोली, 'और मेरी भी। मैंने कहा था न कि बाईसाहब सबसे आगे होगी।'

रानी ने कहा, 'मेरे दोनो कर्नल सच्चे।' सुन्दर ने अपनी सुन्दर आँखो से ज़रा तृष्णा प्रकट की।

रानी बोली, 'तू भी नाम करेगी सुन्दर। अबकी तेरी बारी है।'

[५३]

कानपूर की सेना के जनरल व्हीलर ने किलेबन्दी की और उसके अन्दर अंग्रेजो को बाल बच्चो सहित ले गया।

नाना ने व्हीलर को चेतावनी दी कि शाम तक आत्मसमर्पण कर दो वरना किले पर हमला किया जावेगा। व्हीलर ने नही माना। किलेबन्दी का मुहासिरा कर दिया गया और गोले बरसाए जाने लगे। व्हीलर भी खूब लडा। २१ दिन युद्ध हुआ।

इलाहाबाद मे भी विप्लव हो गया था। बंगाल की ओर से जनरल नील फौज लेकर आया। उसने अत्यन्त निर्दयता के साथ मार्ग में पडते हुए ग्रामो को जलाया, अपराधी और निरपराधी ग्रामीणो की हत्यायें की। जब इलाहाबाद के विजन से घबराकर हिन्दुस्थानी पुरुष स्त्री और बालक नावो में बैठकर भागे उसके सैनिको ने गोलाबारी की और उनमें से अधिकाश को मार दिया। इतना अन्याय और ऐसा नरसहार किया कि सर्वत्र सनसनी, भय और क्रोध फैल गया। कानपूर मे भी नील और उसके सहयोगियो के नृशस कुकृत्यो के समाचार पहुचे। आग-सी लग गई।

हिन्दू मुसलमान स्त्रियो के भी कलेजे दहक उठे। अजीजन नाम की एक वेश्या घोडे पर सवार, तलवार बाधे शहर की गलियो और छावनी में उत्तेजना और प्रोत्साहन देने के लिये दौड धूप करने लगी।

व्हीलर ने लखनऊ से सहायता मागी। लखनऊ खुद घिरी हुई थी। सहायता न आई। व्हीलर ने अपनी किले बन्दी पर सुलह का सफेद झडा गाड दिया।

इसी समय इलाहाबाद के आसपास से नील की पल्टन के वीभत्स-अत्याचारो के समाचार आए। हिन्दुस्थानी सेना क्रोध में और भी पागल हो गई।

कानपूर की घिरी हुई अग्रेज सेना ने आत्मसमर्पण कर दिया। उनको इलाहाबाद भेज देने के लिए ४० नावे तैयार करा दी गई। नाना अपने विठूर वाले महल में था। सिपाहियो ने गुस्से मे आकर अग्रेज पुरुषो को

मार डाला। इस क्रूर दुष्कृत्य के उपरान्त उन लोगो ने स्त्रियो और बच्चो का वध करना चाहा, परन्तु नाना को खबर लग गई और उसने तुरन्त प्रयत्न करके इनको बचा लिया। फिर कुछ समय उपरान्त जब इनको नावो में बिठला कर इलाहाबाद की ओर भेजा जा रहा था, सिपाहियो ने, नाना की आज्ञा बिना, बल्कि उसकी आज्ञा के प्रतिकूल, कतल करके अपने को कलङ्कित किया।

कानपूर के कुल अङ्गरेज़ो में से एक स्त्री और चार पुरुष बचकर निकल पाये थे।

इन घटनाओ ने अङ्गरेज़ और हिन्दुस्थानी की परस्पर हिंसा को बेहद बढा दिया।

लखनऊ में विप्लव ३० मई को आरम्भ हुआ था। अवध भर में विप्लव की आग फैल गई। तो भी कई स्थानो पर विप्लवकारियो ने अङ्गरेज़ स्त्री-बच्चो की प्राणपण से रक्षा की।

इलाहाबाद को कब्जे मे करके नील लखनऊ की ओर बढा और जनरल हैवलाक कानपुर की ओर।

अवध अदम्य जान पडता था।

पञ्जाब की छावनियो में भी गडबड हुई, लेकिन उसको दबाने में अङ्गरेजो को ज़्यादा मुश्किल का सामना नही करना पडा।

झासी के विप्लव का समाचार सागर और बुन्देलखण्ड के अन्य ज़िलो में पहुचा। गार्डन के सरिश्तेदार ने सागर चिट्ठी भेजी, जिसमें अङ्गरजो की ओर से रानी द्वारा झासी का प्रबन्ध किये जाने की ओर सकेत था। सागर के अङ्गरेजो को यह भी विदित कर दिया कि झासी के अङ्गरेज़ स्त्री-पुरुषो और बालको की हत्या में रानी का बिलकुल भी हाथ नही था। इस चिट्ठी के पहुचने पर सागर के अङ्गरेज सावधान हुये, परन्तु वे विप्लव को थोडे समय तक ही रोकने में सफल हो पाये। सागर की एक हिन्दुस्थानी पल्टन विप्लव में शामिल हो गई। दूसरी पल्टन सरकार-भक्त बनी रही।

[५४]

विन्ध्यखण्ड की समग्र जनता में सनसनी फैली हुई थी। यहा की जनता ने कभी किसी अत्याचारी का शासन आसानी के साथ नही माना। स्वाभिमान को आघात पहुचा कि व्यक्ति ने सिर उठाया और हथियार हाथ में लिया। शायद भारत का यही खण्ड एक ऐसा है जहा डाकू को 'वागी' कहते हैं।

विन्ध्यखण्ड छोटी–बडी रियासतो में बिखरा हुआ था। सब बडी वडी रियासते कम्पनी सरकार का साथ दिये थी। बानपूर और शाहगढ साधारण राज्य थे। ये राज्य विप्लव मे शामिल हुये।

रानी को इन दोनो राजाओ के स्वाधीनता–प्रिय विचारो का पता था। इन दोनो को उन्होने स्वराज्य–स्थापना के सग्राम में भाग लेने के लिये पत्र भेजे। वे दोनो लडने के लिये उद्यत हो गये।

बानपूर राज्य के राजा मर्दनसिह ने अपनी सेना को लेकर सागर जिले में प्रवेश किया और खुरई तहसील तथा नरयावली के परगने पर अधिकार कर लिया। इसके उपरान्त वह झासी जिले के दक्षिण में ललितपूर आया और चन्देरी की ओर बढा। चन्देरी अगरेज़ो के अधिकार मे थी। वहा विप्लव नही हुआ था।

वहा के हाकिम परगना को राजा मर्दनसिह के आने की खबर एक चन्देरी निवासी ने दी। वह कचहरी में था। रैडटेपिज्म (लाल फीता–जाल्ला) का पुजारी था।

खबर देने वाले ने कहा, 'साहव वलवा हो गया है। फौज चढी चली आ रही है।'

साहब उपेक्षा के साथ वोला, 'अर्जी लिखवाकर लाओ। जवानी नही सुना जायगा।'

थोडी देर में राजा मर्दनसिह आ गया। उसने विना किसी अर्ज़ी–दरख्वास्त के चन्देरी को घेर लिया और विना किसी अर्जी–पुर्जी के चन्देरी में अग्रेजी शासन को खतम कर दिया।

शाहगढ का राजा बखतबली था। उसने भी विप्लव किया।

सागर, दमोह, जबलपूर के जिले में विद्रोहियो की सख्या बहुत बढ गई। दमोह जिले के तो समस्त लोधी क्रान्ति में सम्मिलित हो गये। ये सब शाहगढ के राजा के साथ थे। उससे लडने के लिये सागर से पल्टन आई, पर राजा बखतबली ने उसको आसानी से हरा दिया। इस राजा के एक सरदार बोधन दौआ ने गढा कोटा पर चढाई की और उस पर अधिकार कर लिया। राजा मर्दनसिंह चन्देरी को अधिकृत करके सागर लौटा। उसी समय जबलपूर की हिन्दुस्थानी पल्टन ने भी विप्लव कर दिया। अङ्गरेजो ने पन्ना राज्य से सहायता मागी। पन्ना के राजा ने अङ्गरेजो की सहायता के लिये अपनी काफी सेना भेजी। पन्ना की सेना ने विप्लवकारियो को दमोह के जिले में पराजित किया और अङ्गरेजो की ओर से दमोह का शासन किया। पन्ना की सेना जबलपूर की विप्लव-कारिणी पल्टन से भी लडी और उसको भी हरा दिया।

झासी के चारो ओर, दूर और पास, इसी प्रकार की परिस्थिति थी। इस परिस्थिति में रानी लक्ष्मीबाई झासी में एक सुदृढ स्फटिक सी थी। झासी जिले में उन्होने प्रबलता के साथ शान्ति स्थापित की।

उनकी दिनचर्या वैसे ही नियम–सयम के साथ चली जा रही थी। उनकी चर्या में केवल दो अन्तर आये। एक तो वे सुबह के नित्य कृत्यो और पूजा ध्यान के उपरान्त राज्य के कर्मचारियो को मिलने और उनकी समस्याओ को सुनने के लिये समय देने लगी, दूसरे ठीक तीन बजे के पश्चात् वे कचहरी करने लगी। बडे और महत्वपूर्ण मुकद्दमे वे स्वय करती थी और तुरन्त निर्णय कर देती थी। कभी कभी दण्ड भी स्वय अपने हाथ से दे देती थी परन्तु केवल उन मामलो में जिनमें किसी ने बालक या स्त्री को सताया हो।

वे कचहरी में टोपी लगाकर बैठती थी। भीतर लोहा ऊपर लाल रेशम। टोपी झालरदार-मोतियो और जवाहरो की। कठ मे हीरो की माला। सुडौल और भरे हुये वक्षस्थल पर कचुकी, जो सुनहरी जरीदार

कमरपेटी से कसी रहती थी। कभी साड़ी और कभी ढीला पैजामा पहिन आती थी।

रानी के आसन के पास ही दीवान लक्ष्मणराव कागज, कलम, दावात लिये बैठता था।

यद्यपि वह पढा लिखा बहुत कम था, परन्तु वह अपनी निरक्षरता को खूबी के साथ छिपाये रहता था। कभी कभी रानी अपने हाथ से फैसला लिखती थी और कभी बोल देती थी। लक्ष्मणराव लिखने का बहाना करता था और नीचे बैठे हुये मुसद्दियो से लिखवा कर झटपट मुहर लगा देता था!

आये गये की उनको जबरदस्त याद रहती थी। नित्य का आने वाला यदि एक दिन भी चूक जाय तो वह उसके आते ही गैरहाजिरी का कारण पूछती थी, और समय की वे कठोर पाबन्दी करती थी।

वर्षा का आरम्भ विलम्ब से हुआ, परन्तु प्रचण्डता के साथ। फिर भी उनके कार्यों में शिथिलता न आई—घोडे की सवारी करने से जरूर विवश थी।

ऐसी ऋतु में प्राय: डकैती बटमारी बन्द हो जाती है, परन्तु इन्ही दिनो उनको सूचना मिली कि बरवासागर के पास सागरसिंह-कुंवर सागरसिंह-डाकू ने लगातार कई डाके डाले हैं और बरवासागर का थानेदार उसका कुछ नही कर पा रहा है। रानी ने तुरन्त निश्चय किया। मोतीबाई द्वारा खुदाबख्श को बुलवाया।

आने पर खुदाबख्श से कहा, 'सागरसिंह का शीघ्र दमन किया जाना चाहिये।'

खुदाबख्श ने हाथ जोड कर स्वीकार किया।

रानी—'तुम इसी समय २५ सिपाही लेकर बरवासागर जाओ और सागरसिंह को जीवित या मृत ले आओ। उसकी दुष्टता के कारण बरवासागर और बरवासागर का त्रस्त और सन्तप्त हो उठा है। इस काम को कितने दिन में पूरा कर सकोगे?—एक महीने में?'

खुदाबख्श—'श्रीमंत सरकार, जितनी जल्दी हो सकेगा उतनी जल्दी। केवल वर्षा की कठिनाई है।'

रानी—'परन्तु सागरसिंह को वर्षा कोई विघ्न बाधा नही पहुँचाती!'

खुदाबख्श—'सरकार—'

रानी—'कहो, कहो।'

खुदाबख्श—सरकार, ये लोग कुछ ग्रामीणो से मिलकर बनियो महाजनो को लूटते हैं और सघन जंगलो में भाग कर छिप जाते हैं।'

रानी—'पानी बरसते घने जगलो मे वे सोते खाते कहा होगे? यदि तुम उन्हे उनके अड्डो पर ढूढो तो वे जगलो मे नही मिलेगे वल्कि अपने अड्डो पर। कुछ और सिपाही चाहिये हो तो ले जाओ।'

खुदाबख्श—'नही सरकार इतने ही बहुत हैं। यदि अटक पडेगी तो समाचार दूंगा।'

खुदाबख्श चला गया।

रानी ने अपनी सहेलियो से एकान्त में सलाह की।

रानी ने प्रश्न किया, 'खूब वरसते पानी में घोडा दौडा सकोगी?'

मुन्दर ने उत्तर दिया, 'दौडा लूंगी। अभ्यास तो किया है।'

'तुम सुन्दर, और काशीबाई?' रानी ने पूछा।

उन दोनो ने भी हा भरी, परन्तु काशीबाई की हा में कुछ दुर्बलता थी।

रानी ने मुस्करा कर कहा, 'काशी हाल मे कुछ अस्वस्थ रही है इसलिये वह महल में ही रहेगी और यहां का काम काज देखेगी। मेरी अनुपस्थिति का समाचार झाँसी से बाहर न जाने पावे। खुदाबख्श के बरवासागर पहुँचने के बाद किसी दिन हम लोग यहा से चलेंगे।'

खुदाबख्श उसी दिन चला गया। सन्ध्या तक बरवासागर पहुँचा। भीगा हुआ और भूखा। परन्तु उसको मानसिक क्लेश कुछ न था।

जरा सुस्ता कर भोजन किया। थानेदार से सागरसिंह की गतिविधि पर बात चीत की। खुदाबख्श झाँसी से वह ख्याल लेकर आया था कि बरवासागर का थानेदार किंकर्तव्य विमूढ हो गया है, परन्तु उसका यह

भ्रम निकला। सागरसिंह बहुत चालाक और बड़ा साहसी था। उसके साथ उत्पातियो का काफी बडा गिरोह था। बरवासागर का थाना प्रयास करने पर भी उसके कार्यक्रम में बहुत कम बाधा डाल सकता था।

सागरसिंह का घर रावली ग्राम मे, बरवासागर से पाच छ कोस की दूरी पर था, परन्तु वह घर पर रहता बहुत कम था।

खुदाबख्श को बरवासागर आकर अपने आसामी की विकटता का पता लगा। और अधिक सिपाही मँगाने मे नाक सी कटती थी। समय केवल एक महीने का था। मोतीबाई की याद आई। अपने जादू से शायद वह कुछ कर डालती। तुरन्त उसके मन ने इस कल्पना को धिक्कारा।

दूसरे दिन बादल जरा खुला। भरे भरे सावले धूंधरे बादल आते और चले जाते थे। एकाध फुहार छोड जाते। नदिया नाले भरे, इठलाये हुये और सवेग। खुदाबख्श ने बरवासागर के थानेदार, उसके सिपाहियो और अपने सिपाहियो को लेकर सवेरे ही रावली की ओर दौर कर दी। छिपे लुके, भीगे और कीचड में लतपत, बन्दूको को कपडो से ढके, जेबो में भुने चनें और प्याज भरे. ये लोग दुपहरी में रावली के गेवडे पहुँच गये। खेतो में कोई काम नही हो रहा था, इसलिये मार्ग में किसी से भेट नही हुई। सब लोग गाव मे थे और पानी के खुलने की की मना रहे थे। सागरसिंह भी घर पर था।

सागरसिंह का मकान ऊँची टौरिया पर था। सागरसिंह खाना खाने के बाद झपकी ले रहा था। झकोरो हवा चल रही थी और कभी कभी फुहार पड जाती थी, इसलिये खुदाबख्श के दल का शब्द नही सुनाई पडा।

जब तक गाव वाले सागरसिंह को सचेत करे कि खुदाबख्श ने सागरसिंह की हवेली घेर ली। उसको फाटक लगवा लेने का अवसर मिल गया। हवेली में उसके कुछ आदमी थे। वे सब जल्दी तैयार हो गये।

सागरसिंह को आश्चर्य था कि कुऋतु और कुसमय पर किसने घेरा डालने की हिम्मत की। दीवारो के तीरकशो में होकर उसने परख लिया कि घेरने वालो के साथ तोप नही है और वे केवल घर में घुसकर ही

नुकसान पहुचा सकते हैं। सोचा शाम तक यो ही पडा रहने दूँ और देखता रहूँ, फिर उसको ख्याल आया कि घेरने वाले रानी के सिपाही होगे और इनकी पीठ पर कुछ बन कही और लगा होगा। इसलिये उसने तुरन्त लड डालने की ठानी। वह जानता था कि घेरने वाले अधिक समय तक बन्दूक नही चला सकेंगे और वह स्वय सूखी जगह में बैठकर बहुत अच्छा और बडी देर तक लड सकेगा।

हवेली टौरिया की ठीक चोटी पर न थी किन्तु अपराधी से जरा ऊपर। खुदाबख्श ने इस स्थिति से लाभ उठाने का प्रयत्न किया, परन्तु सागरसिह की पहली बाढ ने ही खुदाबख्श के कई सिपाहियो को घायल कर दिया। खुदाबख्श ने तुरन्त हवेली पर चढ जाने की आज्ञा दी। स्वय आगे हो गया। जब तक सागरसिह फिर बन्दूको को भरे, खुदाबख्श हवेली पर चढ गया और उसके कई साथी भी। सागरसिह ने फिर बाढ दागी, परन्तु खाली गई।

सागरसिह ने समझ लिया कि अब गये। उसने तलवार हाथ में ली। खुदाबख्श और उसके साथी आँगन मे कूद पडे।

सागरसिह का मुकाबला न हो सका। खुदाबख्श घायल होकर गिर पडा। और सागरसिह उसके साथियो को चीरता हुआ बाहर निकल गया। तब खुदाबख्श के अन्य सिपाही फाटक से होकर भीतर आगये।

खुदाबख्श और उसके साथियो ने गाव में टिकना ठीक नही समझा। खुदाबख्श बैलगाडी से रात होते बरवासागर आ गया।

घाव बहुत गहरे न थे, परन्तु थे कई, खून काफी निकल चुका था। उसकी और उसके घायल सिपाहियो की मरहम पट्टी की गई। रात में खुदाबख्श को बेहोशी रही।

सवेरे रानी के पास समाचार भेज दिया गया।

[५५]

मेघ छाये हुये थे। हवा सन्न थी। पानी रिमझिम रिमझिम बरस रहा था। महल के ऊपरी खण्ड के हवाई कमरे में रानी आखे मूँदे हुये मोतीबाई का भजन सुन रही थी। मुन्दर जमुहा रही थी। सुन्दर बैठे बैठे सावधानी के साथ निन्द्रामग्न हो गई थी। काशी सचेत थी।

भजन की समाप्ति पर रानी का ध्यान टूटा, मुन्दर की जमुहाई हटी। परन्तु सुन्दर की निद्रा–समाधि भङ्ग न हुई।

रानी ने हँसकर कहा, 'सुन्दर, देख यह भालू कहा से आ गया है?

सुन्दर हडबड़ा गई। भौचक्की होकर बोली, 'कहां है बाईसाहब ?'

'ढूढ तो पता लग जायगा', रानी ने कहा, 'साधारण भालू तो है नही।'

सुन्दर लज्जित हो गई।

हाथ जोडकर बोली, 'सरकार दिन भर की थकी थी, इसलिये अभी अभी थोडी सी नीद आ गई।'

काशीबाई—'सरकार, यह आज दिन भर चक्की चलाती रही है, इसलिये बहुत थक गई।'

सुन्दर—'नही काशीबाई, चक्की नही चलाई तो और काम तो बहुत किया है।'

मुन्दर—तुम अकेली ने !'

उसी समय पहरे वाले ने निवेदन किया, 'बरवासागर से एक सिपाही आवश्यक समाचार लाया है।'

रानी ने दूसरे कमरे में उसको बुलवाया। उनका आदेश था कि आवश्यक समाचार के लिये समय–कुसमय न देखा जावे और उनको तुरन्त सूचना दी जाया करे।'

रानी सहेलियो के साथ दूसरे कमरे में गईं।

समाचार–वाहक ने कहा, 'सरकार, रावली के बागियो से सरदार खुदाबख्श की लडाई हुई। वे घायल हो गये हैं। सात सिपाही भी घायल

हुये हैं। सरदार को तलवार के घाव लगे हैं और सिपाहियो को गोलियो के। भगवान की कृपा से मरे कोई नही हैं। और, न किसी के लिये इस तरह का भय है। सागरसिंह भाग गया है। लड़ाई रावली में सागरसिंह के घर पर हुई थी।'

मोती का चहरा पीला पड गया।

रानी ने पूछा, 'रावली बरवासागर से कितनी दूर है ?'

उसने उत्तर दिया, 'पाच-छ कोस है सरकार। जासूस ने पता दिया कि सागरसिंह अपने घर है। सरदार ने धावा बोल दिया।'

रानी—'खुदाबख्श को कहा चोट आई है और अब क्या हाल है ? लडाई को कितने दिन हो गये ?''

उत्तर—'लडाई को आज चौथा दिन है। घाव बाहो और जांघो में हैं सिर पर भी एक वार है। अच्छे हो रहे हैं। सिपाहियो के घाव अलबत्ता ज्यादा गहरे हैं।'

रानी—'तुमको समाचार लाने मे इतना विलम्ब क्यो हुआ ?'

उत्तर—'बेतवा इतनी चढी हुई है कि नाव नही लग सकी, सरकार आज दोपहर कुछ उतरी तब आ पाया हूँ।'

रानी—'प्रबन्ध करती हू। तुम जाओ।'

रानी अपने कक्ष में लौट आईं।

रानी ने कहा, 'कल बरवासागर चलना चाहिये।'

काशी बोली, 'सरकार न जाये। कुछ ठीक नही किस समय जोर से पानी बरस पडे, नदी चढ आवे। उस दिन जब आपने बरवासागर जाने का निश्चय किया, मैं कुछ न कह सकी थी, परन्तु आज तो मैं हठ करूँगी।'

रानी सोचने लगी। उन्होने मोतीबाई की उदासी देख ली, और पहिचान ली।

रानी—'तुम ठीक कहती हो काशी। परन्तु स्थिति की मांग हम पर प्रबल है। यदि कल पानी न बरसा तो अच्छे घोड़ो पर चल देंगे। हाथी

भी जा सकता है, परन्तु मै इस समय प्रदर्शन वचाना चाहती हूँ, और वह सवारी वहुत धीमी भी है।'

मोतीवाई—'सरकार को कुछ घुडसवार साथ में ले लेने चाहिये।'

रानी—'लूंगी। दीवान रघुनाथसिंह को सवेरे सूचना दे देना।'

काशीवाई—'मै भी चलूंगी।'

रानी—'चलना, मैं क्या रोकती हूँ?'

मोतीवाई--'आज्ञा हो तो मै भी चलूं।'

रानी---'नाव न लगी तो घोडे पर नदी पार कर लेगी?'

मोतीवाई---'सरकार की सेवा में रहते, मुझको आग-पानी, किसी का भी डर नही रहा।'

रानी ने स्वीकृत किया।

रात में पानी थोडा थोडा वरसता रहा। सवेरे वादल खुला सा दिखलाई दिया। रानी सहेलियो समेत बरवासागर की ओर चल दी। पच्चीस घुडसवार साथ में ले लिये। दीवान रघुनाथसिंह सङ्ग में। शीघ्र ही घाट पर यह दस्ता पहुच गया। देखे तो बेतवा दोनो पाट दाबे वेग से चली जा रही है।

ऊपर ज्यादा पानी बरस गया था, इसलिये वेतवा वेतहाशा इठला गई। हवा, आँधी के रूप में चल रही थी। मल्लाहो के लिये नाव का लगाना असम्भव था। अनेक घुडसवारो के दिल टूटने लगे।

उस पार की पहाडियो का लहरियादार सिलासिला हरियाली से ढका हुआ था। वादल के सफेद धूनरे टुकडे पहाडियो की चोटी और हरियाली को चूमने के लिये नभ से उतर उतर कर टकराते चले जा रहे थे। वेतवा का शोर आँधी का साथ पाकर तुमुल हो उठा।

रानी ने मुडकर मोतीवाई की ओर देखा। वह उस पार की पहाडियो से टकराते हुये मेघ खण्डो पर दृष्टि जमाये थी।

रानी ने आज्ञा दी, 'कूद पड़ो।' और वे सबसे आगे घोडे पर पानी में धस गईं।

फिर क्या था, उनकी सहेलियाँ और सब घुडसवार धार को चीरते दिखलाई पडने लगे। रानी सबसे आगे।

बेतवा की धार पुञ्ज के ऊपर पुञ्ज सी दिखलाई पडती थी। क्रम अभग और अनन्त सा। जब एक क्षण में ही अनेक बार एक जलपुञ्ज दूसरे से सघर्ष खाता और एक, दूसरे से, आगे निकल जाने का अनवरत, अथक, अटूट प्रयास करता तब इतना फेनिल हो जाता कि सारी नदी में फेन ही फेन दिखलाई पडता था। झाग की इतनी बडी निरन्तर बहती और उत्पन्न होती हुई राशिया आडे आ जाती थी कि घुडसवारो को सामने का किनारा नही दिखलाई पड पाता था।

लहरो के एक पल्लड को चीरा, उस पर के झाग को बेधा कि दूसरा सामने। शब्दमय प्रवाह की निरर्थक भाषा मानो बार बार कहती थी बचो, बचो। सामने की उथल पुथल से आगे बढे कि बगल से थपेड पडी। घोडे आँखें फाडे नथनो से जल फुफकारते बढ रहे थे। वे अपना और अपने सवार का सकट समझ रहे थे। सवार के पैर घोडे से चिमटे हुये और उनके पैरो के नीचे घोडे की निस्तब्ध टाप। और टाप के नीचे? न जाने कितनी गहराई। सवारो के चारो ओर भँवरे पड पड जा रही थी। एक भवर बनी, पार की, कि दूसरी तुरन्त मौजूद। परन्तु अपनी रानी और उनकी सहेलियो को आगे देखकर किस सिपाही के मनमें अधिक समय तक भय ठहर सकता था?

रानी के घोडे का केवल सिर ऊपर, शेष भाग पानी और झाग में। रानी की कमर तक झाग, पानी और धार के साथ बहकर आया हुआ झाडी-झकाड। धार की बूँदो की झडी उचट उचट कर आखो में, बालो पर और सारे शरीर पर बरस रही थी। जब कभी सिपाहियो और सहेलियो को उत्साह देना होता तो हँस हँसकर शाबाशी देती—मानो प्रचण्ड बेतवा की मलिन अञ्जलि में मुक्ता बरसा दिये हो। धूमरे बादलो के आगे एक ओर बगुलो की पात निकल गई। मानो पहाडियो और पहाडियो से मिलने वाले बादलो को सफेद खौर लगा दी हो।

पहाडो की कन्दराओ में घुसे हुये, उनको आच्छादित किये हुये बादलो में होकर वह बकुलावलि छिपती हुई सी मालूम पडी और फिर तितर-बितर हुई। जैसे हिलती हुई सावली सलोनी चादर में टके हुये सितारे। पहाड पर बडे बडे और सघन पेड। गहरे हरे श्यामल। बगुले एक पेड पर जा बैठे मानो वनदेवी ने प्रभा छिटका दी हो। उस विषम घार के पार थोडी देर में किनारा दिखलाई दिया।

रानी फिर हँसी। बगुलो की सफेदी से रानी के दातो ने तुरन्त होड लगा दी।

चिल्लाकर बोली, 'देखो किनारा आ गया। पडाव मार लिया।'

थोडी देर में पूरा दस्ता नदी पार हो गया। सब भीग गये थे परन्तु पीठ पर कसे ढके हुये हथियार लगभग सूखे थे। घोडे ठिठुर गये थे।

घाट पर कपडे सुखाने, बदलने में और घोडो को आराम देने में थोडा सा समय लगा।

फिर दौड लगी और रानी बरुआसागर के किले में दोपहर के करीब पहुँच गईं।

बरवासागर का किला विशाल झील के ठीक ऊपर है। झील में बरवा नाम का बड़ा नाला पडता है। झील को विशालता इस नाले ने ही दी है।

घायल सिपाही और खुदाबख्श इसी किले में पडे हुये थे।

रानी ने तुरन्त इन सबको देखा। किसी के सिर पर हाथ फेरा, किसी की मरहमपट्टी की देखभाल की। सिपाही अपनी रानी के स्नेह को पाकर मुग्ध और गद्गद् हो गये।

फिर खुदाबख्श के पास पहुँची। खुदाबख्श ने चारपाई से उठने का प्रयत्न किया, परन्तु न उठ सका।

रानी को देखते ही उसके आसू आ गये। चरण स्पर्श करने की कोशिश की।

रानी ने फिर सिर पर हाथ फेरा। चौकी पर बैठ गई। सहेलिया खडी थी। मोतीबाई सहेलियो के पीछे से खुदाबख्श को एकटक देख रही थी। खुदाबख्श ने उसको देख लिया, परन्तु आखे उसकी मोतीबाई की ओर न थी।

खुदाबख्श ने रानी को सागरसिंह की लडाई का ब्योरेवार हाल सुनाया।

रानी—'कुछ पता चला सागरसिंह अब कहा चला गया है ?'

खुदाबख्श—'सरकार गाव वाले पता नही बतलाते। वे ही उसको शरण, भोजन इत्यादि सब देते हैं। इतना तो भी मालूम हो गया है कि वह पडोस के जगल मे है।'

रानी—'गाव वाले डाकुओ से डरते हैं। उनके पास निर्भय होने का कोई साधन नही है। अग्रेजी राज्य ने पञ्चायतो का सर्वनाश कर दिया है इसलिये गावो में पररपर सहायता की प्रणाली उठसी गई है और उसने डाकुओ को सहायता देने का रूप पकड़ लिया है। देखूगी। तुम चिन्ता मत करो।'

खुदाबख्श—'अब मरकार स्वय यहा आगई हैं। मुझको किस बात की चिन्ता ? घाव लगभग अच्छे होगये हैं। एकाध दिन में ठीक हुआ जाता हूँ। फिर देखता हूँ सागरसिंह को।'

रानी ने उसको विश्राम करने का हठ किया। मोतीबाई को खुदाबख्श के पास छोडकर, किले के महल वाले हिस्से में चली गई। स्नान ध्यान में लग गई।

अब मोतीबाई की आखे तरल हुई। रुद्ध कठ मुखरित होने के लिये आकुल हो गया। खुदाबख्श ने देख लिया।

बोला, 'यह क्या! आखो में आसू! आपको तो हर्ष और गर्व से हँसना चाहिये था। आपका कैदी—नही आपकी सरकार का सिपाही अपने मालिक के लिये कुछ तो कर सका।'

मोतीबाई ने आख पोछ कर कहा, 'क्या दर्द बहुत है।'

खुदावख्श ने जवाव दिया, 'ज़रा भी नही। मालिक ने हाथ क्या फेरा, अमृत लुढका दिया। सच कहता हूं, अभी उनकी आज्ञा हो तो घोडे पर वैठकर उस अत्याचारी से दो हाथ करूं।' फिर उसने करवट लेने की कोशिश की। ज़रा कष्ट हुआ।

एक आह को दवाकर वोला, 'जान पडता है कि श्रीमन्त सरकार मेरे स्वस्थ होने तक नही ठहरेंगी।'

मोतीवाई ने सतृष्ण नेत्रो से कहा, 'मै भी उनके साथ जाऊँगी।'

खुदावख्श ने आख मीच ली। वोला, 'आप भी जाओगी।'

'क्यो ? मुझे क्या हुआ ? उनकी छाया में आदमी आधी वन जाता है, तो औरत क्या आदमी भी नही वन सकती।'

मोतीवाई को रत्नावली नाटक में रंगमंच पर रत्नावली का अभिनय करते देखा था। स्मरण हो आया। एक साथ कोमलता और प्रसूनो के चित्र आखो में घूम गये। खुदावख्श ने एक निश्वास लिया।

आखे मूंदे ही वोला, 'मेरी मरहम-पट्टी के लिये रह जाना।'

मोतीवाई ने सस्नेह कहा, 'सरकार से कह देना। मैं खुशी से रह जाऊँगी।'

खुदावख्श ने आख खोली। भ्रुकुटि भंग की। ज़रा रुखाई के साथ वोला, 'श्रीमन्त सरकार से भिक्षा मागूंगा कि रत्नावली को सेवा टहल के लिये दे दीजिये।'

मोतीवाई ने उसकी उपेक्षा की।

कहा, 'रत्नावली कौन ?'

खुदावख्श को आश्चर्य हुआ। वोला, 'क्या मैंने रत्नावली कहा ?'

मोतीवाई हँसी। उसकी हँसी में चमत्कार था परन्तु खुदावख्श पर कोई प्रभाव नही पडा।

मोतीवाई—'रत्नावली ही तो कहा। क्या कोई सपना देख रहे थे ?'

खुदावख्श—'वह सपना था। अव मीठा जागरण सामने है।'

मोतीबाई ने खुदाबख्श की आखो में स्नेह को पकडने का प्रयत्न किया।

बोली, 'तब मैं खुद तो उनसे नही कह सकूँगी। वह सोचेगी, मैं बहुत टुच्ची हूँ।'

'जी हा,' खुदाबख्श ने ज़रा सा सिर उठा कर कहा, 'आप चाहती हैं वह आपको बहादुर समझे और मुझे टुच्चा और निकम्मा।'

'मैंने यह तो नही कहा,' मोतीबाई बोली, 'खुदा करे आप जल्दी अच्छे हो जावें', और वह वहा से चली गई।

ऊपर की छत को घेरे हुये किले की दीवार थी। दीवार में मुडेरदार खिडकी। उसमे होकर मोतीबाई झील की लहरो को परखने लगी—और रोने लगी। जब उसने रत्नावली का अभिनय किया था इतनी नही रोई थी।

नियन्त्रण करके वह अपने काम में लग गई।

[५६]

सन्ध्या के पहले बरवासागर के मुखिया और पञ्च रानी से मिलने के लिये आये। नजर न्योछावर हुई। रानी ने सबसे कुशलक्षेम की वार्ता की।

जब एकान्त पाया थानेदार ने रानी को सागरसिंह के विषय में सूचना दी। मालूम हुआ कि खिसनी के जङ्गल में आश्रय पाये हुये हैं। खिसनी का जङ्गल बरवासागर से १२ मील था। थानेदार को उन्होंने आदेश दिया।

'सवेरे आठ बजे तैयार रहना किसी को मालूम न होने पावे।'

सवेरे सब तैयार हो गये।

ठीक समय पर उन्होंने मोतीबाई को बुलाकर कहा, 'तुम यही रहो। खुदाबख्श की मरहम पट्टी और देख भाल करना।'

मोतीबाई ने पलके नीची की। बोली, 'मै तो सरकार की सेवा में चलूगी। क्या किसी ने प्रार्थना की है ?'

'नही, मैं ही कह रही हू,' रानी ने उत्तर दिया।

मोतीबाई ने चलने का हठ किया। उनकी अन्य सहेलियो ने भी अनुरोध किया। रानी मान गई।

रानी अपनी और बरवासागर के थाने की टुकडी को लिये हुये चल दी। उन्होंने इस टुकडी के दो भाग किये। एक को दीवान रघुनाथसिंह की अधीनता में रावली की ओर रवाना किया और दूसरी को स्वय लेकर खिसनी के जङ्गल का ओर चलदी।

दीवान रघुनाथसिंह ने सागरसिंह की हवेली घेर ली। एक गाव वाले से कहलवा भेजा, 'हथियार डालकर मेरे पास आ जाओ। रानी साहब कुछ रियायत कर देंगी, नही तो हवेली की ईंट से ईंट बजा दूँगा।'

गाव वाले ने कहा, 'कुवर सागरसिंह हवेली में नही हैं।'

रघुनाथसिंह—'तब तो हवेली को पटक देने में और भी सुभीता रहेगा।'

परन्तु जब उसको निश्चय हो गया कि सागरसिंह हवेली में नही है, उसने रानी के पास सन्देशा खिसनी की ओर भेज दिया। खुद हवेली का घेरा डाले रहा।

रानी जब जगल को घेरने की योजना तैयार कर रही थी, तब उनको यह सन्देशा मिला। उनका मन कह रहा था कि सागरसिंह इसी डाग में है।

जासूस ने घटे भर के भीतर सूचना दी, 'दो पहाडियो की दून के सिरे पर एक बडी सी पर्णकुटी बागी खाने पीने की तार मे लगे हुये हैं। उनके पास घोडे हैं।

रानी ने दोनो पहाडियो की ऊँचाइयाँ बन्दूक वालो से घिरवा ली और दून के सिरे पर भी कुछ आदमी भेज दिये। स्वय तीनो सहेलियो और मोतीबाई के साथ दून के निकास पर दो कतारो में ओट लेकर घोडो समेत ठहर गईं।

उनकी आज्ञा थी कि ऊपर वाले सिपाही धीरे धीरे दून के ढाल की ओर बढे और जब डाकुओ के जरा निकट आ जावें तब बन्दूको की बाढ द.गे।

ऐसा ही किया गया।

डाकू बेहद हडबडा गये। खाना-पीना और साज-सामान छोडकर, घोडो पर न गी पीठ सवार हुये और दून के निकास की ओर भागे।

ऊपर, तीन ओर से बन्दूके चल रही थी, परन्तु डाकुओ का एक आदमी भी घायल तक नही हुआ।

निकास पर पहुँचते ही उनके ऊपर सामने से पाँच बन्दूके चली। घोडे मरे, डाकू घायल हुये। उन लोगो ने बन्दूको से जवाब दिया, परन्तु रानी का दल आड लिये हुये था। इसलिये कोई प्रभाव नही पडा।

डाकू सिर पर पैर रखकर इधर-उधर भागे।

काशी, सुन्दर और मोतीबाई ने अलग अलग पीछा किया।

रानी और मुन्दर के पास से जो डाकू घोडे पर सवार, जरा पीछे निकला वह सतर्क था। नगी तलवार हाथ में, गले में सोने का जेवर।

वस्त्र भी उसके अच्छे। जो वर्णन उनको सागरसिंह का मिला था, उससे इस डाकू-सवार की हुलिया मिलती थी। रानी ने निर्णय किया कि यही सागरसिंह है। रानी ने मुन्दर को मुस्कराकर इशारा किया। मुन्दर ने होंठ दावे और सपाटे के साथ उस पर टूटी। रानी दूसरी वगल से। सागरसिंह ने घोडा तेज किया। इन दोनो ने पीछा किया। जब तक मार्ग ऊबड-खाबड रहा सागरसिंह बचता हुआ चला गया। जब मार्ग कुछ समस्थल आया, जमीन मुलायम और कीचड वाली मिली। सागरसिंह का घोडा अटकने लगा। रानी और मुन्दर के घोडे बहुत प्रवल थे—दोनो काठियावाडी। सागरसिंह को एक ओर से मुन्दर ने दवाया और दूसरी ओर से रानी ने।

रानी गले में हीरो का दमदमाता हुआ कण्ठा डाले थी। उनको देखते ही सागरसिंह समझ गया कि जिस रानी के विषय में बहुत सुना करते थे, वह स्वय आज, इसी क्षण उसके प्राणो की गाहक वनकर आ कूदी है।

आत्मरक्षा के भाव से प्रेरित होकर उसने रानी पर वार किया। तुरन्त मुन्दर ने चपल गति से अपनी तलवार उस पर ढाई। वार ओछा पडा, घोडे की पीठ पर। उधर रानी ने घोडे को फुर्ती के साथ जरासा रोका। वह कुछ अगुल पीछे हुई, और सागरसिंह का वार उनसे आगे खिच गया। रानी ने अपनी तलवार ऐसी कसी कि सागरसिंह की तलवार के दो टुकडे हो गये। उसने अपने घोडे को बहुत खीचा दावा, परन्तु उसकी पीठ कट चुकी थी। मुन्दर ने सागरसिंह की गर्दन को ताक कर तलवार उवारी कि रानी ने तुरन्त कहा, 'जीवित पकडना है,' और रानी ने इस तरकीव से अपना घोडा सागरसिंह की वरावरी पर किया कि वह सट गया। रानी ने सागरसिंह की कमर में अपना हाथ डाला। मुन्दर समझ गई कि क्या करना है। दूसरी ओर से उसने अपना हाथ उसकी कमर में लपेट दिया और झटका देकर घोड़े पर से उठा लिया। घोडा पीछे रह गया। सागरसिंह ने इस वज्रपाश में से निकलने, खिसकने की बहुत कोशिश की

परन्तु वह सफल न हो सका। उसने अपने दातो को काम में लाने का प्रयत्न किया। रानी ने तुरन्त कहा, 'सावधान, यदि मुह खोला तो तलवार ठूंस दूंगी।'

सागरसिह को रानी और सुन्दर के बल की प्रतीत हो गई और उसने अपनी रक्षा को अपने भाग्य के हवाले कर दिया। थोडी दूर चलने पर रानी के दस्ते के लोग सिमट आये। सागरसिह उस वज्रपाश में से निकला और रस्सियो से बाध लिया गया। घोडे पर लाद कर यह टुकडी एक जगह ठहर गई। मोतीबाई, काशी और सुन्दर की बाट देखने लगी। रानी ने बिगुल बजवाया। वे तीनो थोडी देर में उस स्थल पर आ गईं। मालूम हुआ कि बाकी डाकू निकल भागे। दीवान रघुनाथसिह को समाचार देकर रानी बरवासागर चली आईं। उन्होने कहा, ये भागे हुये डाकू इस समय हाथ न लगेंगे। समय काफी हो चुका है। बरवासागर सन्ध्या के पहले पहुँच जाना चाहिये।'

रानी सन्या के पहले बरवासागर पहुँच गई। सागरसिह सख्त पहरे में रख दिया गया। रात होने के पहले रघुनाथसिह अपने दल समेत आ गया।

रानी की बुद्धि और विकट वीरता की घर घर महिमा बखानी जाने लगी। दूसरे दिन गाँव गाँव में चर्चा फैल गई।

समय पर सागरसिह रानी के सामने पेश किया गया। उसने प्रणाम किया और पैर छूने के लिये हाथ बढाने चाहे। पहरे वालो ने रोक लिया।

रानी ने पूछा, 'तुम्हारा नाम ?'

उसने उत्तर दिया, 'कुवर सागरसिह, श्रीमन्त सरकार।'

रानी मुस्कराई। सागरसिह उस मुस्कराहट से कांप गया।'

रानी ने कहा, 'कुवर होकर यह निकृष्ट आचरण कैसा ?'

सागरसिह बोला, 'सरकार, हमारा वश सदा लडाइयो में भाग लेता रहा है। महाराजा ओरछा की सेवा में लडा महाराज छत्रसाल की सेवा में रहकर युद्ध किये। जब अङ्गरेज आये तब उनकी आधीनता जिन

ठाकुरो ने स्वीकार नही की, उनमे हम लोग भी थे। हमको जब दवाया गया, हम लोग विगड खडे हुये और डाके डालने लगे। मैं अपने लिये और अपने साथियो के लिये गङ्गाजी की शपथ लेकर कह सकता हूँ कि हम–लोगो ने स्त्रियो और दीन-दरिद्रो को कभी नही सताया।'

रानी ने कहा, 'इन दिनो जिन लोगो पर तुमने डाके डाले वे सब मेरी प्रजा है, अङ्गरेजो की नही। डाके के लिये दण्ड प्राणो का है। तैयार हो आजो। तुम्हारे साथी भी न वचेगे और न तुम्हारे और उनके घर। मिट्टी मे मिलवा दूंगी।'

सागरसिह ने कनखियो रानी को देखा। उसने इतनी बडी, ऐसी करारी और प्रभापूर्ण आंख न देखी थी। उसको ऐसा लगा मानो साक्षात् दुर्गा सामने खडी है।

सागरसिह बोला, 'सरकार, मै कुछ प्रार्थना कर सकता हू ?'

रानी ने अनुमति दी।

सागरसिह ने प्रार्थना की, 'मुझको प्राणदण्ड गोली या तलवार से दिया जाय, फांसी से नही। यदि फांसी दी गई तो मेरा और जाति भर का अपमान होगा। वागी वढ जावेगे। घटेंगे नही सरकार।'

रानी—तुमको यदि छोडदूं तो क्या करोगे ?'

सागरसिह—'श्रीमन्त सरकार के सामने झूठ नही वोलूगा। यदि काम न मिला तो फिर डाके डालूंगा, परन्तु सरकार के राज्य मे नही।

रानी—'यदि मैं कहूँ कि तुम डाके विलकुल न डालो तो इसके वदले मे क्या चाहोगे ?'

सागरसिह—'सरकार के चरणो की नोकरी, जहा रह कर लडाई में कल की अपेक्षा अधिक पराक्रम दिखला सकूगा।'

रानी—'तुम्हारे साथी कितने हैं ?'

सागरसिह—'जङ्गल में १५,१६ थे। गावो में ६०,६५ है और अदृष्ट सहायक मेरे सव नातेदार।'

रानी—'वे लोग क्या करेंगे ?'

सागरसिंह—'सरकार की आज्ञा हुई तो सरकार की सेना में मेरे साथ नौकरी।'

रानी—'यदि मैंने आज्ञा न दी तो?'

सागरसिंह—सरकार के राज्य के सिवाय और सब जगह उनकी बगावत का अधिकार-क्षेत्र चाहूगा।'

रानी—'तुमको मैं इसी समय छोड दूँ तो सीधे कहा जाओगे?'

सागरसिंह—'सरकार, झासी।'

रानी—'तुम सबसे बडी सौगन्ध किसकी मानते हो?'

सागरसिंह—'गगाजी की। सरकार के चरणो की, अपनी तलवार की।'

रानी—'मैं तुमको छोडती हू सागरसिंह। सौगन्ध खाओ और अपने साथियो सहित झासी की सेना में भर्ती होजाओ।'

सागरसिंह ने सौगन्ध खाई। रानी ने उसको छोड दिया। वह उसके पैरो में गिर पडा। हाथ जोड कर बोला, 'सरकार मैं झासी चलूँगा। वहा सेना में भर्ती होने के उपरान्त घर लौटूँगा और अपने साथियो को बटोर कर झासी ले आऊँगा। और उन सबको भर्ती कराऊँगा।'

'नही सागरसिंह,' रानी ने कहा, मैं बरवासागर तब छोडूँगी जब तुम्हारे सब साथी मेरे सामने आ जायें और सौगन्ध खा जाये नही तो मैं उनको पकडूँगी और दड दूँगी।'

'मेरा नाम कुवर सागरसिंह नहीं जो मैंने सरकार के सामने सबो को पेश न किया।' सागरसिंह ने दम्भ को दबाते हुए कहा।

आख में झेंप थी।

रानी जरा हँसी। सोचने लगी।

बोली, 'तुमको कुँवर शब्द से सम्बोधन करने के पहले मेरा एक और सामन्त इस पदवी के पाने का पात्र है। वही जो तुमको पकडने के लिए तुम्हारी हवेली में पहुँच गया था और जिसको तमने घायल कर दिया था।'

'सरकार' सागरसिंह बोला, 'उस दिन यदि मैंने उस सामन्त को घायल न कर पाया होता तो मैं किसी प्रकार भी न बच पाता।'

रानी—'वह यही है। अभी अस्वस्थ है।'

सागरसिंह—'मैं उसके दर्शन करना चाहता हूं। क्षमा मागूंगा।'

रानी ने खुदाबख्श की कुशलवार्ता मँगवाई। वह एक सिपाही का सहारा लेकर आ गया। सागरसिंह ने उसको अभिवादन किया।

रानी ने कहा, 'क्या हाल है ?'

खुदाबख्श ने उत्तर दिया, 'इतने बडे स्वामी की रक्षा होते हुये हाल बुरा हो ही नही सकता। जिस समय सरकार के पराक्रम की बात मालूम हुई उसी समय दुःख दर्द एक स्वप्न सा हो गया।'

रानी ने कहा, 'तुमने सुन लिया होगा कि मैंने अपराधी को छोड दिया है।'

खुदाबख्श बोला, 'मैंने सरकार की दया का सब हाल सुन लिया।'

रानी ने कहा, 'आज से तुम कुंवर खुदाबख्श कहलाओगे और यह कुँवर सागरसिंह। जितने लोग अनोखी सूरवीरी के काम करेंगे, वे सब कुंवर कहलावेंगे और उनका वर्ग कुँवर मडली के नाम से राज्य के कागज़ पत्रो में सम्बोधित होगा।'

खुदाबख्श गद्गद् हो गया। पैर छुये और बोला, 'सरकार, कुंवर मँडली का नाम सच्चा तब होगा जब कदमो की सेवा करते हुये हम सबके सिर कटे।'

रानी ने कहा, 'जाओ कुँवर खुदाबख्श आराम करो।'

खुदाबख्श बोला, 'माता का आशीर्वाद मिल गया अब आराम ही आराम है।'

'सागरसिंह,' रानी ने कहा, 'तुम्हारा नाम हमारे कागजो में कुँवर युक्त लिखा जावेगा, परन्तु मुझको बारबार कुँवर, राव, दीवान इत्यादि कहने में अडचन जान पडती है। क्या बुरा मानोगे ?'

सागरसिंह का गला रुद्ध हो गया। जिस मनुष्य ने एक दीर्घ समय डकैती और बटमारी में बिताया था उसको जान पड़ा मेरे भीतर कुछ पवित्र भी है।

हाथ जोड़ कर बोला, 'नहीं सरकार, कभी नहीं। यदि मेरा आधा नाम ही लिया जायगा तो बहुत है। मुझको क्षमा किया जाय।'

कुंवर रघुनाथसिंह ने कहा, 'जब हम लोग पूरे कुंवर की पदवी पर पहुँच जावेंगे तब हमारा नाम आधा लिया जावेगा।'

[५७]

बरवासागर मे रानी कुल पंद्रह दिन रही। सागरसिह का पूरा गिरोह हथियार डालकर उनकी शरण मे आ गया और सेना मे भर्ती हो गया।

खुदाबख्श चगा तो उसी दिन से हो चला था, अब स्वस्थ हो गया। रानी झासी ससैन्य लौट आई। लोगो की छाती रानी के पराक्रम से उमङ्ग उठी।

नवाब अलीबहादुर रानी को बधाई देने आये। इत्रपान लेकर चले गये। कम से कम मोतीबाई को उनकी बधाई की सचाई में विश्वास नही था।

अलीबहादुर और पीरअली में सलाह हुई।

अलीबहादुर—पीरअली यह वही सागरसिह है, जो झाँसी का जेल तोडकर भागा था। रानी ने उसी को नही बल्कि उसके सारे गिरोही डाकुओ को, फौज मे भर्ती कर लिया है। यह सब सरकार बहादुर के खिलाफ तैयारी का सबूत है।'

पीरअली— और हुजूर, तुर्रा यह कि उनके नये पुराने कामदार, अङ्गरेज सरकार को इस धोखे मे रखना चाहते हैं कि झासी का राज नवाब गवर्नर जनरल बहादुर की तरफ से किया जा रहा है और रानी साहब तो केवल मुन्तजिम हैं।'

अलीबहादुर—'असली बात की इत्तला जबलपूर पहुँचनी चाहिये, जसे हो तैसे।'

पीरअली—'हुजूर का हुक्म हो तो मैं चला जाऊँ। मगर मेरे जाने से शक हो जावेगा।'

अलीबहादुर—'माल का सरिश्तेदार रानी के बुरे सलूक की वजह से नाराज़ है। वह इस काम के करने के लिये तैयार हो जावेगा। अगर जाये तो खर्चा मै दे दूँगा।

पीरअली—'मै कहूँगा। वे मान जायेगे। उनको टीकमगढ होकर भेजा जाय। वहा से दीवान नत्थेखा की चिट्ठी और उनके कुछ आदमियो को साथ लेते जावे, क्योकि रास्ते में खतरा है।'

अलीबहादुर—'बिलकुल ठीक है। तुमने इस बात को तलाश किया कि झांसी खास में रानी के खिलाफ कितने आदमी हैं?'

पीरअली—'ऐसे किसी खास आदमी का नाम नही ले सकता। मगर औरतो में रानी साहब ने जो इतनी आजादी फैला रक्खी है वह जरूर बहुत लोगो को खटकती है।'

अलीबहादुर—'रानी के खिलाफ बहुत लोग होगे, मगर तुमको वे लोग रानी का आदमी समझने लगे हैं इसलिये अपने मन की बात नही बतलाते।'

पीरअली—ऐसी हालत में कम से कम कुछ ऐसे आदमी हुजूर के पास तो जरूर आते, जो रानी से बैर मानते हो।

अलीबहादुर—'हो सकता है। सम्भव है। कम से कम सरश्तिेदार वगैरह उनके बहुत खिलाफ हैं।'

नबाब अलीबहादुर ने सरिश्तेदार को इस प्रपञ्च के लिये राजी कर लिया। अपनी चिट्ठी दी। वह पहले टीकमगढ गया। टीकमगढ़ से उसने आदमी लिये और रुपया भी। दीवान नत्थेखा को अलीबहादुर की योजना पसन्द आई। उसने अलीबहादुर के पास अपना एक विश्वास्त आदमी भेजा। उसके द्वारा परस्पर सहायता देने की बात निश्चित हो गई। नवाब साहब को आशा हो गई कि किसी दिन नत्थेखा झासी पर आक्रमण करेगा। वे उस दिन की बाट जोहने लगे।

ओर्छे के राजा भारतीचन्द के पीछे सन् १७७६ में विक्रमाजीत राजा हुये। राज्य की बहुत हीन अवस्था हो गई थी। राजा के पास केवल ५० सैनिक, १ हाथी और दो घोडे रह गये थे। छ सात बरस में इन्होने अपने राज्य का फिर विस्तार कर लिया। राजधानी टीकमगढ मे कायम की। सन् १८१२ में अगरेजो से सन्धि हुई। इन्होने अपने जीवनकाल में अपने लडके धर्मपाल को गद्दी दे दी, परन्तु उसका देहान्त हो गया और फिर बहुत वृद्धावस्था में मर गये। इनके भाई ने ७ वर्ष राज्य किया। सन् १८४१ में गद्दी खाली थी। धर्मपाल की विधवा रानी लड़ई दावेदार

हुई। सुजानसिंह उक्त वृद्ध राजा के भतीजे थे। उनका रानी लडई से झगडा था। वे झासी चले आये। राजा रघुनाथराव वाले महलो में, नईबस्ती मे, गगाधरराव ने इनको ठहराया था। अलीबहादुर को अपना ठौर छोड़ना पडा था, इसलिये उनके मनमें भासी के राजा के प्रति क्षोभ और भी सघन हो गया। सुजानसिह के देहान्त के बाद सन् १८५४ में रानी लडई को गोद लेने की अनुमति मिल गई और उन्होने हमीरसिंह को गोद ले लिया। सन् ५७ के विप्लव के समय रानी लडई हमीरसिंह की ओर से अभिभावक थी और नत्थेखा मन्त्री था। इधर–उधर से कुछ अगरेज़ अफसर भागकर टीकमगढ आये। राज्य ने उनको शरण दी।

इन लोगो की सलाह से अलीबहादुर की चिट्ठी जबलपूर भेज दी गई और एक खास दूत द्वारा इनको वहला भेजा कि झासी में अपने अनुकूल एक गिरोहबन्दी कर लो, एकाध झगडा–बखेडा हो जाय तो और भी अच्छा, हम ठीक मौके पर टीकमगढ से सेना लेकर आते हैं। नत्थेखा ने तैयारी शुरू कर दी।

अलीबहादुर को खुशी हुई। मुहर्रम आने वाला था। उपयुक्त अवसर की कमी न थी। पानी खूब बरस कर यकायक रुक गया। बादल खुल गये। दिन को कडी धूप, रात को घुले हुये निर्मल तारे और शीतल पवन। जनता दिन में परिश्रम करती सन्ध्या समय आमोद–प्रमोद। रात को गहरी नीद में सो जाती।

उसके नीचे जो सुरग तैयार की जा रही थी उसका बिचारी जनता को पता न था।

हिन्दू रियासतो में एक ज़माने से शिया मुसलमान काफी सख्या में आ बसे थे। कोई नौकर थे, कोई कारीगर, हकीम, जर्राह इत्यादि। परन्तु संख्या सुन्नी मुसलमानो की अधिक थी। इनमें भी उनाव–दरवाजे की तरफ मेवाती और बडागाव दरबाज़े के निकट पठान। इन मुहल्लो में केवल मुसलमान ही न बसते थे—मराठे, ठाकुर तेली, काछी इत्यादि हिन्दू बीच बीच में। बडेगाव दरवाजे मसज़िद थी और थोडी दूर पर बिहारी

जी का मन्दिर। हिन्दू और मुसलमान, सब, अपने अपने विश्वास के अनुसार परम्परा क्रमागत त्योहारो को मनाते आये थे कभी कोई झझट खडा नही हुआ।

उस साल डोल एकादशी और मुहर्रम एक ही दिन–सोमवार को पडे। सुन्नी मुसल्मान ६-१० दिन पहले से ताजियो की तैयारी में लगे–अबकी साल उनको ताजिये और भी अधिक धूमधाम के साथ निकालने थे क्योकि उनकी झासी स्वतन्त्र हो गई थी, उनकी रानी राज्य कर रही थी। मन्दिरो में भी खूब नाच और गान के साथ मनकी ओज प्रस्फुटित हो रही थी। इन दिनो भी झासी के मन्दिरो में जो नित्य नई सजावट की जाती है उनको 'घटा' कहते हैं। किसी दिन नीली घटा, किसी दिन पीली घटा, किसी दिन कोई और। सारे मन्दिर में एक ही प्रकार के रंग के वस्त्र और फूल। यह सब कई दिन एकादशी तक चलता रहा। सोमवार के रोज शाम के समय ताजिये दफनाये जाने को थे और उसी समय विमानो का जलविहार होना था। यदि दोनो धर्म वालो मे मेल-जोल हो तो मजे मे सब रस्में निभा ली जायँ, और यदि एक दूसरे से अनमने हो, तो एक डग भी रखने को जगह नही।

मोतीबाई और जूही जैसे दिवाली मनाती थी वैसे ही ताजियादारी भी करती थी। और उसी उत्साह के साथ वे मुरली मनोहर के मन्दिर में, जिस समय रानी दर्शन के लिये जाती थी, नृत्य और गान भी करती थी—उन्ही दिनो मुहर्रम के जमाने में। परन्तु उनके इस कार्य पर मुसलमान किसी प्रकार का आक्षेप नही कर रहे थे, क्योकि वे प्राय: रानी के साथ रहा करती थी।

दुर्गाबाई सुन्नी मुसलमान थी। वह भी ताजियादारी करती थी और नाचना उसका पेशा था। मन्दिरो में उसके नृत्य की माग थी। वह मन्दिरो में नृत्य के लिये जाने लगी।

कुछ मुसलमानो को असगत लगा। चर्चा शुरू हो गई। इस चर्चा में पीरअली ने प्रधान भाग लिया।

सवेरे का समय था। ठडी हवा चल रही थी, धूप मे तेजी न आई थी। हलवाइयो की दूकान पर ताजी मिठाइया थालो में सजती और बिकती चली जा रही थी। दूसरी ओर मालिनो की, फूलो से भरी हुईं डलिया थोडी ही देर में खाली होने को थी।

दुर्गा नर्तकी ने हलवाई के यहाँ से मिठाई ली और मालिकन के यहा से फूल। मार्ग में एक जगह ठेवा लगा। पैर में जरा सी चोट आई। साथ ही मिठाई के दोने में से कुछ सामान नीचे जा गिरा। उसका मुँह बिदरा। पास से जाने वाला एक आदमी हँस पडा। दूसरे का कष्ट उसका विनोद बना। और भी कुछ लोग हँसे। एक ने कहा, 'उठालो दुर्गा नीचे पड़ा हुआ सामान, वह भी एक अदा ही होगी।'

'अरे रे मुझको तो लग गई तुम हँसते हो।' दुर्गा हंसती हुई बोली।

वही पीरअली भी था। वह भी हँसा था।

'अभी क्या हुआ दुर्गाबाई जी' पीरअली ने कहा, 'जैसा करोगी वैसा पाओगी।'

बात कुछ नही थी, परन्तु दुर्गा को आग सी लग गई। पीरअली शिया था। उसकी व्यर्थ बात में कोई गूढ प्रच्छन्नव्यङ्ग अवगत करके बोली, 'तुम कहां के दूध के धुले हो मिया। किसी दिन तुमको भी खुदा ऐसा समझेगा कि याद करोगे।'

पीरअली—'मैं तुम सरीखी औरत को मुँह नही लगाना चाहता, अपनी राह देखो।'

दुर्गा—'तुम्ही मुँह लगने को फिरते हो। मैं तो ऐसो पर लानत भेजती हू।'

पीरअली—'खबरदार जो बदजमानी की। जीभ काटकर फेक दूगा।'

दुर्गा—'हां बल-पौरस औरतो पर ही चलाने आये हो पर मेरी जबान काटने आओगे तो मै कौन तुम्हारी जीभ की पूजा करने बैठ जाऊँगी। जानते हो किसका राज है?'

पीरअली दात पीस कर रह गया।

कई लोगो ने 'जाओ जाओ,' 'रहने दो, रहने दो' कहा ।

ऊपर से झगडा रफा दफा हो गया लेकिन भीतर भीतर आग सुलग उठी ।

'एक सुन्नी औरत ने, सो भी नर्तकी, वेश्या ने, एक शिया मर्द पर, मुहर्रम के दिनो में लातन भेजी !'

'शिया सुन्नियो के झगडे का इस अत्यन्त क्षुद्र घटना के कारण सूत्रपात हुआ ।

शिया लोग घरो में चुपचाप मातम मनाते हैं। सुन्नियो में भी मातम मनाया जाता है । परन्तु ताज़िया इत्यादि बनाने की कोई पाबन्दी नही । तो भी बनाये जाते थे और धूमधाम के साथ निकाले जाते थे ।

रघुनाथराव के समय में अलीबहादुर का बहुत प्रभाव था । शिया थे । कदाचित् इसलिये भी राज्य की ओर से ताजियो की कोई धूमधाम नही की जाती थी । अलीबहादुर का प्रभाव उठ गया था, परन्तु ताजिया सम्बन्धी परम्परा अवशिष्ट थी । शिया अपने ताजिये चुपचाप निकाल ले जाते थे और उनका समय भी सुन्नियो के ताजियो के निकालने के समय से टक्कर न खाता था । परन्तु एकादशी के दिन डोल भी निकलने थे । दिन में । दिन ही में शिया-सुन्नियो के ताज़िये भी निकलने थे । दोपहर दोपहर तक दोनो फिर्कों के ताज़िये निकल जाये और २ बजे से विमान निकले, यही योजना सम्भव जान पडती थी । पर शिया-सुन्नी इस पर राजी नही दिखलाई पडते थे । दीवान ने समझाने—बुझाने और मनाने की कोशिश की । विफल हुआ ।

ताजियादार कहते थे —

'हमारा ताज़िया तीसरे नम्बर पर उठा करता है । पहले नम्बर वाला पहले उठे और चल पडे और उसके पीछे दूसरे नम्बर वाला, हम तुरन्त उसके पीछे हो जायेगे ।'

हमारा पहला नम्बर जरूर है, परन्तु ताज़िया हमारा हमेशा तब उठा है जब शियो के ताज़िये निकल गये । आप कहते हैं कि नौ बजे

से ताज़िये निकालना शुरू कर दो। हम तैयार हैं, परन्तु शियो के ताज़िये पहले निकलवा दीजिये।'

और शियो के ताज़िये उतने सवेरे निकल नही सकते थे। विवश कोई किसी को कर नही सकता था। धर्म का मामला ठहरा!

अच्छा यही था कि यह झझट दो दिन पहले खडा हो गया था।

शिया लोग अपने ताजिये यदि आतुरता के साथ बडे भोर निकाल भी ले जाते तो भी इसमें सन्देह था कि सुन्नी अपने ताज़िये हर साल के समय के प्रतिकूल दफना देते या नही।

पीरअली इस झझट में कही भी ऊपर नही दिखलाई पडता था, परन्तु भीतर भीतर उसकी उत्प्रेरणा मौजूद थी।

जब दीवान समस्या को न हल कर सका तब उसने कोतवाली से पुराने कागज मँगवाये। परन्तु पुराने कागज विप्लव के आरम्भ में ही भस्मीभूत हो चुके थे—और उनसे कुछ सहायता मिल भी नही सकती थी। दीवान हैरान था।

निदान मामला रानी के सामने पहुँचा।

हिन्दू-मुसलमानो की भीड इकट्ठी हो गई।

रानी ने समझने का यत्न किया। लडाना-भिडाना चाहती तो सहज ही ऐसा कर सकती थी, परन्तु वे तो मेल कराने पर तुली हुई थी।

जब वे कोई सुझाव देती तो सब 'बहुत ठीक सरकार,' बहुत ठीक सरकार' कह देते और थोडी देर चुप रहने के बाद 'किन्तु' 'परन्तु' करने लगते।

रानी ने यकायक कहा 'क्या इतने हिन्दू-मुसलमानो में कोई ऐसा नही जो इस कठिनाई को हल कर दे?'

महल के पडोस मे एक बढई रहता था। वह आगे आया। उसने विनय की, 'सरकार मै कुछ निवेदन करना चाहता हू।'

रानी—'कहो।'

बढई—'सरकार राम और रहीम सबसे बडे हैं। उसी तरह उनका मन्दिर विमान से बडा और इनकी मसजिद ताजिया से बडी। मसजिद में रहीम की पूजा की जाती है। मैं मसजिद बनाकर ठीक समय पर निकाल दूँगा। सब ताजिये उसके साथ निकल जाना चाहिये। आगे पीछे का कोई सवाल नही खडा होता।'

सुन्नी ताजियेदार सहमत हो गये।

'मसजिद बेशक सबसे बडी।'

'मसजिद ज़रूर सबसे आगे रहेगी।'

'मसजिद के पीछे पीछे हम सबके ताजिये चलेंगे।'

उस बढई ने दो दिन के भीतर कागज और भोडर की एक सुन्दर मसजिद बनाई। एकादशी के दिन ठीक समय पर सब ताजिये निकल गये। सबसे आगे बढई की मसजिद थी। हिन्दुओ के विमानो को निकलने में कुछ विलम्ब हो गया, परन्तु इसका किसी ने बुरा न माना। इस प्रकार वह उठता हुआ तूफान बिना प्रयास के ठडा हो गया।

परन्तु दूसरा तूफान जो उठ खडा हुआ था वह न बैठ सका।

नत्थे खा ने तैयारी करली थी। झाँसी में झगडा खडा हो जाता तो अच्छा ही था, नही खडा हुआ तो भी उसको प्रहार करना ही था। वह एकादशी के दो दिन बाद ओर्छा में ससैन्य आगया। तीसरे दिन अनन्त चतुर्दशी थी।×*

अनन्त चतुर्दशी के दिन भोर होते ही नत्थेखा का दूत दीवान के पास आया।

× कहते हैं कि यह बीस सहस्र सेना लेकर आया था।

*अनन्त चतुर्दशी उस साल तीन सितम्बर को थी।

[५८]

नत्थेख़ा के दूत ने जो सदेसा दिया, उसका सार यह था कि झाँसी पहले ओर्छा का अश था, वह अनुचित प्रकार से ओर्छा से काट दिया गया, अब ओर्छा को वापिस मिलना चाहिये। अङ्गरेज जो पाच सहस्र मासिक वृत्ति रानी साहब को देते थे उन्हे ज्यो की त्यो मिलती रहेगी, किला नगर और शस्त्र हमारे हवाले करदो।

नगर में समाचार फैलते देर न लगी। नईबस्ती से, जहा अलीबहादुर का निवास था, ख़बर फैली कि नत्थेख़ा फौज लेकर आ भी गया है और शहर के चारो ओर घेरा पड गया है। लोग घबरा गये।

मोतीबाई ने रानी को समाचार दिया, 'नत्थेख़ा बीस सहस्र सेना और अनेक तोपे लेकर ओर्छा से कूच करने वाला है।'

रानी ने पूछा, 'वह ओर्छे में आया कब ?'

'कल आया था,' मोतीबाई ने उत्तर दिया।

रानी ने कर्मचारियो से विचार–विमर्श किया। झासी में अच्छी तैयारी न थी। कर्मचारी सब घबराहट में थे।

अकेली रानी धैर्य धारण किये थी। उन्होने कहा, 'राजनीति की आप लोग जानो। युद्ध का संचालन मैं करती हूँ। नत्थेख़ा को भागने के लिये कठिनता से गली मिलेगी।'

नाना भोपटकर ने अनुरोध किया, 'सरकार विजय की मूर्ति हैं। हमको युद्ध के अन्तिम परिणाम के विषय मे कोई सन्देह नही। यदि सरकार को मेरी राजनीति मे विश्वास है, तो मेरी एक प्रार्थना मानी जाय।'

रानी ने स्वीकार किया।

भोपटकर ने कहा, हमारे यहा अङ्गरेज झडा, यूनियन–जैक रक्खा हुआ है। अपने झडे के साथ हम उसको भी खडा करेगे। किले में जो अङ्गरेज वन्द हो गये थे उनमे से एक मार्टिन नाम का व्यक्ति, फौज वालो के हाथ से भाग निकला था। वह आगरा में है। एक चिट्ठी मे उसको इस प्रकार की लिखूँगा कि हम लोग नत्थेख़ा के विरुद्ध अगरेजो की ओर

से लड रहे हैं। मेरी राजनीति को इस चिट्ठी से सहायता मिलेगी।'

रानी बोली, 'परन्तु यह राजनीति चलेगी कितने दिनो ? हमारी अन्त में, सारे देश में स्वराज्य स्थापित करना है। यूनियन जैक झडे के नीचे स्वराज्य की स्थापना असभव है। चिट्ठी चाहे जिसको मनमानी लिखो, परन्तु झडा तो चिट्ठी से बहुत बडा होता है।'

'सरकार,' भोपटकर ने कहा, चिट्ठी और झडे का सामञ्जस्य है। हम कुछ समय तक अपने आदर्श को ढका मुँदा रखना चाहते हैं। यदि स्वराज्य का प्रयत्न देश भर मे ३१ मई को एक साथ ही हो गया होता, तो राजनीति की दिशा कुछ और होती, परन्तु अब उसमे परिवर्तन आवश्यक है।'

लालाभाऊ बख्शी बोला, 'सरकार देखने के दात कुछ और, खाने कुछ और। भोपटकर साहब का यही तात्पर्य है।'

रानी मुस्कराईं। दरबारियो ने समझ लिया कि उन्होने कोई दृढ निश्चय कर लिया है।

'नाना की बात को मैं नही टाल सकती हू,' रानी ने कहा, 'परन्तु गेरुआ झडा सबसे ऊपर की बुर्ज पर रहेगा और अङ्गरेजो का झडा चाहे जहा, नीचे की बुर्ज पर लगा लो।'

मन्त्रिमडल ने स्वीकार किया।

रानी बोली, 'लालाभाऊ, तोपो का तुरन्त प्रबन्ध करो। जवाहरसिंह रघुनाथसिंह इत्यादि को सावधान करो। सब फाटक बन्द करके फाटको की बुर्जो पर गोला बारूद इसी समय जमा करो। नत्थेखा कई ओर से आक्रमण करेगा। किले पर बडी तोपें चढी हैं ?'

भाऊ ने उत्तर दिया, 'सरकार, केवल कडक बिजली नीचे रक्खी है। उसको अभी चढवाता हू और सरकार की अन्य आज्ञाओ का पालन करता हू। दीवान जवाहरसिंह यही हैं, परन्तु दीवान रघुनाथसिंह उनाव की ओर गये हुये हैं।'

रानी—'तुरन्त बुलाओ।'

भाऊ—'जो आज्ञा सरकार।'

रानी—'बरुवासागर वाला सागरसिंह कहा है ?'

भाऊ—'मऊवाले काशीनाथ भैया के साथ करेरा की ओर गये हुये हैं।'

रानी—'दोनो को वहा से बुलवाओ। सेना हमारे पास बहुत थोडी है। यदि नत्थेखा वास्तव में २० सहस्र सेना लेकर आ रहा है, तो कर्रा सामना पडेगा, परन्तु चिन्ता मत करो। हमारे पास किला है। बुर्जे और तोपे हैं। और गोलन्दाज अच्छे हैं।'

भाऊ—'गोलन्दाज हमारे पास कुछ कम हैं, परन्तु सरकार का जैसा आदेश होगा, उनकी वैसी ही नियुक्ति कर ली जावेगी।'

रानी—'मै कुछ स्त्रियो को तोपची का काम सिखलाना चाहती थी, अभी उनकी शिक्षा पूरी नही हो पाई है, इसलिये गुलाम गौसखा को ओर्छे दरवाजे के लिये तैयार रक्खो और तुम स्वय किले की दक्षिणी बुर्ज पर कडक बिजली चढाकर काम करो। मै अपनी स्त्री सेना को लेकर सब मोर्चो पर जवाहरसिंह की और गौस की सहायता करूंगी। बस्ती वालो से कह दो कि निश्चिन्त रहे परन्तु भीड बाधकर बाहर न चले फिरे।'

भोपटकर ने मार्टिन के नाम एक पत्र आगरा भेजा, और नीचे वाली बुर्ज पर यूनियन जैक झंडा चढा दिया।

ओर्छा के दूत को नत्थेखा के सन्देसे का उत्तर दिया कि लक्ष्मीबाई एक स्त्री हैं, खासाहब को अवला की रक्षा करनी चाहिये न कि उसके साथ इस प्रकार का व्यवहार। रानी अङ्गरेजो की ओर से झासी का प्रबन्ध कर रही हैं, ओर्छा अङ्गरेजो का मित्र राज्य है, इसलिये ओर्छा की ओर से झासी पर आक्रमण होना बिलकुल अनुचित है यदि आक्रमण हुआ तो झासी अपनी रक्षा करेगी।

दूत संदेसे का उत्तर लेकर तुरन्त चला गया।

रानी ने दीवान से कहा, 'मुझे खेद है कि झासी के समग्र निवासी युद्ध विद्या में निपुण नहीं किये जा सके है। मै नत्थेखा से निबटलू तब अवश्य इस ओर अधिक ध्यान दूगी।'

इसके उपरान्त वह अनन्त चतुर्दशा की पूजा के उपकरणो में सलग्न हो गई ।

जवाहरसिंह, कर्नल ज़माखा, भाऊ बख्शी, गुलाम गौसखा इत्यादि अपने काम में जोर के साथ जुट पडे। उनके लिये एक एक क्षण महत्व का था।

भाऊ बख्शी ने कडकबिजली दक्षिण की ऊँची बुर्ज पर चढादी। गुलाम गौसखा एक बडी तोप और कई छोटी तोपे लेकर ओर्छे दरवाजे पर पहुच गया। सब फाटको की बुर्जो पर तोपें रख दी गईं। उनका मसाला तथा गोलन्दाज़ भी तथा स्थान नियुक्त कर दिये गये। जवाहरसिंह की सेना फाटको और परकोटे के दीवारो के छेदो के पास बन्दूकें लेकर डट गई। उन सब के भोजन और शयन का वही प्रबन्ध हो गया। चार पाच घण्टे के भीतर झासी ने रणक्षेत्र का रूप धारण कर लिया।

तीसरे पहर लगभग ३ बजे रानी अनन्त चतुर्दशी का पूजन समाप्त करने को ही थी कि एक धडाका हुआ। दामोदरराव को अनन्त रक्षा का गडा बँधवा कर बाहर हुई थी कि समाचार मिला, 'नत्थेखा ने चढाई करदी है और गोला शायद शहर में गिरा है।'

रानी ने दिन भर उपवास किया था। थोडा सा फलाहार किया। इतने में समाचार आया कि टकसाल के पीछे एक सेठ के मकान में गोला गिरा है। रानी ने कल्पना की कि या तो नत्थेखा का गोलन्दाज़ अजान है, इतने बडे किले को उसने अनी पर नही साध पाया या काफी चतुर है—अनुमान से महल को निशाना बनाया, परन्तु गोले ने करवट ले ली और महल को बचा गया।

योधा वेश में तुरन्त घोडे पर सवार हुईं और अपनी तीनो सहेलियो को लेकर ओर्छे दरवाज़े पहुची। गुलाम गौसखा को आज्ञा दी, 'शत्रु इसी ओर हैं। गोलो की लगातार वर्षा करो।'

काशीबाई से कहा, 'तू तुरन्त किले पर जा। बख्शी से कहना कि जैसे ही नत्थेखा की सेना टौरियो का आश्रय लेने के लिये पश्चिम में

सैंयर फाटक की ओर बढे, कडकबिजली की मार करे। जब तक उसकी सेना ओर्छा फाटक से पश्चिम की ओर न बढे, कडकबिजली चुप बनी रहे।'

काशीबाई तुरन्त गई।

गौस ने अपने तोपखाने को सभाला। एक के बाद दूसरी तोप पर पलीता पडना शुरू हुआ ११ तोपे थी। जब तक अन्तिम तोप गोला उगलती तब तक पहली विनाश–वमन के लिये तैयार हो जाती।

गोला, बारूद और काम करने वाले सुव्यवस्थित।

ओर्छा फाटक के पूर्व उत्तर की ओर थोडी दूरी पर सागर खिडकी और उससे कुछ अधिक दूरी पर लक्ष्मी फाटक था। सुन्दर और मुन्दर के साथ रानी सागर खिडकी पर आई। इस खिडकी से पश्चिम की ओर ओर्छा फाटक की तरफ–कुछ ही डग के फासले पर एक मुहरी थी। नगर के दक्षिणी भाग के पानी का बहाव इसी में होकर था। यह मुहरी इतनी बड़ी थी कि नाटे कद का आदमी आसानी से इसमें होकर निकल सकता था। सागर खिडकी के ऊपर जो तोपे थी, उनमे से एक को रानी ने, इस मुहरी के ऊपर दीवार के पीछे लगा दिया। एक से अधिक तोपें वहा रक्खी भी नही जा सकती थी।

सागर खिडकी पर दीवान दूल्हाजू गोलन्दाज था। उसको रानी ने आदेश दिया, 'तुम पश्चिम दक्षिण की ओर कुछ अन्तर से तोप दागो। कोई दिखलाई पडे या नही, परन्तु जब तक मेरा निषेध न मिले, ऐसा ही करते जाना।'

दूल्हाजू जरा ठमठमाया।

रानी ने समझाया, 'मै चाहती हू कि नत्थेखा की सेना और तोपे दक्षिण की ओर ओर्छा फाटक और सैंयर फाटक के बीच में ही बनी रहे। तुम्हारे पास से होकर पूर्व और उत्तर की ओर न बढने पावे। मैं जहा चाहती हू, युद्ध वही हो। समझ गये ?'

दूल्हाजू ने कहा, 'हा सरकार।'

इसी प्रकार सब फाटको पर आवश्यक आज्ञा देकर रानी ओर्छा फाटक पर फिर आ गई । नत्थेखा की सेना मार खाकर पीछे हटी, परन्तु टौरिया पर नही चढी। उनके बीच में जो खाइया थी, उनमें रक्षा का यत्न करने लगी।

इतने में रात हो गई । रानी मुन्दर को वही छोडकर महल चली आई । गीता के अठारहवें अध्याय का परायण या श्रवण वह यथासभव नित्य करती थी। पाठ समाप्त करके आधी घडी विश्राम किया था कि मुन्दर ने समाचार दिया—'नत्थेखा ने नगर-कोट पर चारो ओर से आक्रमण किया है, ओर्छा फाटक पर आक्रमण सबसे अधिक भयकर है।'

रानी सहेलियो समेत सवार होकर तुरन्त ओर्छा फाटक पर पहुँची।

चादनी रात। आकाश निर्मल। पास का काफी अच्छा दिखलाई पड रहा था और दूर का धूमरा धूमरा। सागर-खिडकी पर गोले बरस रहे थे और ओर्छा-फाटक तो ऐसा जान पडता था कि अब गया, अब गया।

रानी ने गुलामगौस और उसके तोपचियो को समझाया, 'दो बाढे जल्दी जल्दी दाग कर बिलकुल चुप हो जाओ। बैरी समझेगा कि तोपे बन्द करली । बढेगा । बढते ही दीवार के छेदो में से बन्दूको की बाढ दागी जाय। बैरी अपनी तोपे ऊँची टौरिया पर चढा कर ले जावेगा और वहा से फाटक और बुर्ज को धुस्स करने का उपाय करेगा। उस समय तोपे दागना।

काशीबाई से कहा, 'तुम भाऊ बख्शी से किले में जाकर कहो कि कडकबिजली के प्रयोग का समय आ गया। जैसे ही ओर्छा-फाटक की हमारी तोपे बन्द हो और अपनी बन्दूको की बाढ के उपरान्त शत्रु के तोपखाने से बाढ दगे, वह कड़कबिजली और उसी बुर्ज के तोपखाने से ओर्छा-फाटक के बाहर की दाई ओर वाली ऊँची टौरिया को अपना अचूक निशाना बनावे और अनवरत गोलाबारी करे।'

काशीबाई सम्वाद लेकर गई।

रानी ने मुन्दर और सुन्दर को कुछ हिदायते देकर दूसरी दिशाओ में भेजा।

गुलामगौस ने अपनी तोपो से जल्दी जल्दी दो बाढे छोडी। नत्थेखां की सेना ने जवाब दिया। गौस की तोपे बिलकुल बन्द हो गई। नत्थेखा ने सोचा तोपची मारे गये। उसके सिपाही दीवार पर चढने के लिये बढे। इधर से बन्दूको की बाढ दगी। उसका कोई बडा असर नही हुआ। जब बाढो पर बाढे दगी तब उसके सिपाही पीछे हटे। नत्थेखा ने निश्चय किया कि ऊँची टौरिया पर तोपखाना चढा कर ओर्छा–फाटक और अगल-बगल की दीवारो पर गोलाबारी करने से शहर के लिये मार्ग मिल जायगा और फिर किले को अधिकृत कर लेना सहज हो जायगा। सागर–खिडकी की ओर से बराबर गोलाबारी हो रही थी और उसका एक तोपखाना उस ओर मोर्चा लगाये था। ओर्छा–फाटक की तोपे वन्द थी, इसलिये उसको अपना यही उपाय महाफलदायक जान पडा।

उसने ऊँची टौरिया पर अपनी तोपे चढा दी और फाटक पर बाढ दागी। दीवारो पर उस बाढ का विनाशकारी प्रभाव पडा। तोपची उकता उठे। रानी ने वर्जित किया।

नत्थेखा की तोपो से दूसरी बाढ नही दगने पाई। टौरिया पर धम धम हुआ और विकट चीत्कार और तुरन्त किले से चली हुई तोपो का भयंकर गर्जन–तर्जन सुनाई पडा। भाऊ का निशाना अचूक बैठा। फिर बाढ आई। इधर रानी ने गुलाम गौस को अपनी तोपो पर पलीता देने की आज्ञा दी।

अब नत्थेखा को मालूम हुआ कि किसका सामना कर रहा हूँ।

उसने स्थिति को सँभालने का प्रयत्न किया, परन्तु कुछ न बन पडा। तोपो और सामान को छोडकर नत्थेखा भागा। वह केवल एक दाग लगा गया—लक्ष्मी–फाटक पर कर्नल जमाखा मारा गया।

रात को लडाई बहुत धीमी गति से चली। परन्तु रानी की सावधानी में रत्ती भर भी अन्तर नही आया।

दूसरे दिन भी लडाई चली, परन्तु शहर से जरा हटकर। नत्थेखा की सेना का एक वडा भाग झासी के उत्तर में जाकर प्रताप मिश्र के परकोटे की आड पा गया, परन्तु यही उसके नाश का भी कारण हुआ।

दीवान रघुनाथसिंह एक दूर गाव में था, इसलिये विलम्व से समाचार मिला था। वह लडाई के दूसरे दिन उनाव की ओर से, जो झासी के उत्तर में है, आ गया। फाटक सव वन्द थे। खुलवाने की जरूरत भी न थी। उसने नत्थेखा की सेना की उस टुकडी पर जोर के साथ हमला किया, जो प्रताप मिश्र के परकोटे से झासी के उत्तरी भाग को परेशानी में डाले थी। इस परकोटे के करीव एक पहाडी है। इस पहाडी की ओट से रघुनाथसिंह और नगर-कोट के पीछे से झासी की सेना की वन्दूको ने नत्थेखा की सेना को छलनी कर दिया। ठीक अवसर पाकर रघुनाथसिंह ने प्रचण्ड वेग के साथ प्रहार किया और उस टुकडी को तहस-नहस कर डाला। दक्षिण-पश्चिम की ओर से काशीनाथ भैया आ पहुँचा। सर्वनाश में जो कसर रह गई थी वह उसने पूरी कर दी।

फिर कई दिन तक झासी से जरा दूर नत्थेखा की सेना की छोटी-बडी टुकडिया भागते भागते लड़ती रही। परन्तु तोपें और वहुत सी युद्ध-सामग्री छोडकर नत्थेखा को पराजित होकर भागना पडा।

नत्थेखाँ एक टुकडी समेत नवाव अलीवहादुर के नईबस्ती वाले महल में आ गया था। नवाव अलीवहादुर नही चाहते थे, परन्तु विवश थे।

नत्थेखा के भागने पर उनके महल पर काशीनाथ भैया के दस्ते ने आक्रमण किया। अलीवहादुर ने समझ लिया कि सव गया। वच निकलने का प्रयत्न किया। उनके महल के पीछे वहुत निचाई पर मेहदीवाग नाम का उद्यान था। एक सुरङ्ग में होकर इस वगीचे से निकल जाने का मार्ग था। जवाहर इत्यादि जितना सामान वना लेकर पीरअली के साथ वाहर निकल आये। वालवच्चे और एक नौकर भी।

सुरक्षित स्थान में पहुँचने पर पीरअली ने कहा, 'आप अकेले भाडेर चले जाइये। मै यही रहूँगा। रानी की सेना के साथ मिलकर महल पर

मैं भी हमला करूंगा। उनका भला बन जाऊंगा और महल मे जो कुछ बचाने योग्य है, बचाने की कोशिश करूगा। यहा रह कर आपकी अधिक सेवा कर सकूंगा।'

'किस तरह ?', अलीबहादुर ने आतुरता के साथ पूछा।

पीरअली ने उत्तर दिया, 'आपको समय समय पर समाचार मिलता रहेगा और जब अङ्गरेज यहा रानी से लडने के लिये आवेंगे तब उनको आपके सेवक के द्वारा बडी सहायता मिलेगी। आप फिर झांसी आवेगे ? फिर महल आपके होगे और कोई बडी जागीर भी कम्पनी सरकार की तरफ से आपको मिलेगी, क्योकि रानी का राज थोडे दिन ही और टिकेगा। इस वक्त तो खून का सा घूंट पीकर रह जाइये। अपमान का बदला लिया जायगा आप प्रतीति रखिये।

अलीबहादुर चले गये। पीरअली रानी के सैनिको की ओर लौट पडा। उसको सैनिक पहिचानते थे। मारने पकडने को दौडे। सागरसिंह उस भीड में था।

पीरअली ने कहा, 'क्या करते हो, मै तो तुम्हारा मित्र हू। महारानी साहब का शुभचिन्तक। बस्ती भर जानती है ! नौकरी नवाब साहब की जरूर करता रहा हूँ परन्तु सदा उनको समझाता रहा कि सीधे रास्ते पर चलो। वे नही माने उन्होने भुगता। मै तुम्हारी सहायता करने आया हू। यह महल गोला गोली लायक नही है। इसमें आग लगाओ।'

सैनिको को कुछ आश्वासन हुआ।

सागरसिंह ने पूछा, 'किधर से आग लगाये ? नवाब साहब कहा हैं ?'

'भीतर,' पीरअली ने उत्तर दिया, 'आग फाटक से लगाना शुरू करो। दरवाजा अपने आप खुल जायगा। भीतर काफी माल है। मुझको सब पता है। राई-रत्ती बतलाऊंगा।'

सिपाहियो ने फाटक में आग लगा दी। जल जाने पर घुसने का मार्ग मिल गया। फिर भीतर के फाटको में आग लगाई। एक दो जगह और।

पीरअली ने स्वयं कई जगह अग्नि प्रज्वलित की। जब भीतर पहुचे तो वहा कोई न मिला।

'मालूम होता है गडवड में नवाव साहव निकल भागे। मगर असबाव सामान तो मौजूद है।'

पीरअली ने उनकी साधारण धन सम्पत्ति लुटवा दी। थोडी देर में आग शान्त हो गई, परन्तु काफी क्षति हो गई थी।

पीरअली का नाम हो गया कि रानी की सेना के साथ वह नवाब साहव और नत्थेखा की फौज के खिलाफ लडा। काशीनाथ और सागर-सिह ने विश्वास दिलाया। मोतीबाई को आश्चर्य था। परन्तु विजय के हर्ष में अपने हितचिन्तक पर सन्देह करना ईश्वर के प्रति कृतज्ञता की मात्रा को कम करना था। इसलिये पीरअली शीघ्र विश्वासपात्र लोगो की गिनती में मान लिया गया।

रानी ने गुलाम गौसखा, रघुनाथसिह और भाऊ बख्शी को विशेष तौर पर पुरस्कृत किया।

दीवान खास में जब रघुनाथसिह अकेला रह गया तब उसने रानी से प्रार्थना की।

'सरकार मुझको सब कुछ मिल गया। केवल लड्डू रह गये।'

रानी हँसी मुन्दर पास खडी थी। उससे कहा, 'उस दिन तू ही थाल उठा लाई थी। आज भी तू ही ला।'

मुन्दर थाल ले आई। बहुत प्रसन्न थी।

रानी ने आदेश दिया, 'अब तू ही खिला भी दे।'

मुन्दर ने रघुनाथसिह को लड्डू खिलाये। वह हँस-हँसकर लड्डू खिलाने में सचेष्ट थी, परन्तु रघुनाथसिह अधिक नही खा सका। उसके गले में कुछ अटक अटक जाता था।

[५६]

रात को मोतीबाई आई। रानी ने भजन सुना। समाप्ति पर काशी-बाई ने कहा, 'सरकार मैं बडी तोप चलाने का काम सीखना चाहती हूँ। जब बख्शी जी कडकबिजली चला रहे थे, मै उनके पास थी। निशाना मिलाना, ध्यान के साथ बाहर की स्थिति को परखकर तोप का रुख बदलना और पलीता छुलाकर बैरी की बडी सेना में भी अकेले खलबली उत्पन्न कर देना, मुझको बहुत अच्छा लगा।'

रानी बोली, 'मैने निश्चय कर लिया है। तुम सबको तोप का काम सिखवाऊँगी। परन्तु पूरी शिक्षा के लिये कुछ समय लगेगा।'

सुन्दर ने कहा, 'अपने यहा गुलाम गौस तो बहुत चतुर तोपची है ही, अङ्गरेजी सेना से आया हुआ एक लालता ब्राह्मण भी बहुत अच्छा ज़ानकार है। उसके ज्ञान का भी लाभ उठाया जाय।'

'दीवान रघुनाथसिंह भी इस काम को बहुत अच्छा जानते हैं,' मुन्दर ने उत्साह के साथ कहा।

एक पल के बहुत छोटे अंश के लिये रानी की आख असाधारण सजग हुई, और तुरन्त ही शान्त। मुन्दर ने लक्ष नही किया।

रानी ने मोतीबाई से पूछा, 'तू नाटक खेलना भूल गई कि अभी आता है?'

मोतीबाई—'सरकार, जो एक बार पानी में तैरना सीख लेता है, वह फिर कभी नही भूल सकता। आज्ञा हो तो किसी दिन कोई अच्छा खेल दिखलाऊँ?'

रानी—'सुचित्त हो जाऊँ तो किसी दिन अवश्य देखूंगी। तू किस खेल को सबसे अच्छा समझती है?'

मोतीबाई—'रत्नावली को। वैसे शकुन्तला, हरिश्चन्द्र, प्रबोध-चन्द्रोदय भी बहुत अच्छे हैं।'

रानी—'मैंने सुना है कि ग्वालियर में एक मण्डली हरिश्चन्द्र नाटक बहुत अच्छा खेलती है।'

मोतीवाई—'हम लोगो का और ग्वालियर की मण्डली का भी अभिनय देखा जावे। फिर सरकार तुलना करे। मुझको विश्वास है कि झासी की बात सिरे पर रहेगी।'

रानी—'मोती, मैं झासी को हर बात में आगे देखना चाहती हूँ। अश्वारोहण और अग्नि-विद्या में उस्ताद वजीरखा, अमीरखा; गोलन्दाजी में गुलाम गौस, सैन्य-सञ्चालन में जवाहरसिंह, रघुनाथसिंह, गायन में मुगलखा, शस्त्र बनाने में भाऊ बख्शी, कपडे सीने में बल्देव दर्जी, नृत्य में दुर्गा। ये सब झासी के गौरव हैं। मैं चाहती हूँ कि प्रत्येक विद्या में झासी देश भर में सब से आगे रहे, परन्तु होगा यह तभी जब देश को अङ्गरेजो के पञ्जे से छुटकारा मिल जाय।'

मोतीबाई—'सरकार ने जिस यज्ञ का आरम्भ किया है, वह किसी न किसी दिन वरदान देगा।'

मुन्दर—'सरकार, ब्राह्मण लोग कहते हैं कि एक यज्ञ भी होना चाहिये।'

रानी—ब्राह्मणो को यज्ञ और मिष्ट-भोज चाहिये। करा दूँगी, परन्तु युद्ध के देवता कार्तिकेय, इस युग में बारूद और गोले का होम अधिक पसन्द करने लगे हैं। और ब्राह्मणो को कलयुग की यह बात कम मालूम है।'

मुन्दर—'अपने यहा के भट्ट और शास्त्री लोग अनुष्ठान के लिये बहुत आग्रह कर रहे हैं। कहते हैं कि सब काम छोड कर, पहले उनके विधान का पालन होना चाहिये।'

रानी—'सब काम छोडकर तो ऐसा न होगा, परन्तु और सब कार्यों के साथ साथ अवश्य हो जायगा। तो पहला काम यह है कि कल से तोप चलाना मोतीबाई गौस से, काशीबाई भाऊ बख्शी से, मुन्दर रघुनाथसिंह से, और सुन्दर · ·'

मुन्दर—'सरकार, दीवान दूल्हाजू भी अच्छे जानकार हैं।'

रानी—'उस पर ध्यान नही जम रहा था। उस दिन वह ठमठमा गया था, परन्तु तोप अच्छी चलाता है। ठीक है। उससे सुन्दर सीखे।'

काशीवाई—'उस रात भाऊ बख्शी ने ऐसा प्रहार किया, कि नत्थेखा इस जन्म में तो भूलेगा नही। मेरे कान तो आज तक सनसना रहे हैं।'

रानी—'अब की बार दिखता है कि गोरो का सामना होगा। तुम सब की उस समय परीक्षा होगी।'

काशीवाई—'सरकार, हम लोगो की परीक्षा के फल से निराश न होगी।'

मोतीबाई को एक बात कसक रही थी। उसने प्रसङ्ग-विक्षेप सा करते हुये कहा।

'सरकार ने कहा था कि सब कार्य साथ साथ चलेंगे, तो नाटकशाला का भी काम चालू कर दूँ?'

'तुमको उसके लिये विशेष प्रयत्न करना ही क्या पडेगा?' रानी बोली, 'नृत्य-गान जानती ही हो। अवसर आने पर बतला दूगी।'

मोतीबाई—'सरकार ने दुर्गा के नृत्य के विषय में कहा था। वह कत्थक नृत्य बहुत अच्छा करती है, परन्तु प्राचीन नृत्यकला को बिलकुल नही जानती।'

रानी मुस्कराई।

रानी—'मैं भूल गई थी मोती। नृत्य के विषय में झाँसी का गौरव वास्तव में तुम हो, परन्तु वैरियो को तो गोलो से रिझाना होगा।'

मोतीबाई ने दृढतापूर्वक कहा, 'सरकार, उनको ऐसा रिझाया जावेगा कि अनन्त काल तक उनकी चर्चा होगी।'

मुन्दर ने अनुरोध किया, 'सरकार, नाटक भी किसी दिन खिलवाया जाय।'

'अच्छा मुन्दर,' रानी ने कहा, 'मोतीबाई उसकी भी तैयारी करेगी। यज्ञ की जिस दिन पूर्णाहुति होगी, उसी रात नाटक होगा। मोती, नाटक के सम्बन्ध में, मै तुमसे कुछ पूछना चाहती हू।'

मोतीबाई—'आज्ञा हो सरकार।'

रानी—'तू जब अभिनय करती है, तब क्या अपने को बिलकुल भूल जाती है ?'

मोतीबाई—'बिलकुल तो नही भूल सकती सरकार।'

रानी—'क्या याद रहता है ?'

मोतीबाई—'अपना निजत्व, दर्शक और अभिनय।'

रानी—'क्या सब दर्शक ?'

मोतीबाई—'नहीं सरकार। जो दर्शक विशेष रुचि दिखलाते हैं, उनके ऊपर प्राय ध्यान जाता है। तभी अभिनय अच्छा हो सकता है।'

रानी—'तुमको अपने दर्शक याद रहते हैं ?'

मोतीबाई—'यदि वे बार बार नाटकशाला में आवे तो।'

रानी—'तुम्हे अपने कुछ दर्शको का अब भी स्मरण है ?'

मोतीबाई की आँख जरा लजीली हुई, परन्तु उसने तुरन्त सँभल कर कहा, 'हा सरकार कोई याद रह जाते हैं।'

रानी ने पूछा, 'तुझे कौन सबसे अधिक याद है ?'

क्षण के दशाश के लिये सहेलियो ने एक दूसरे के प्रति दृष्टिपात किया। मोतीबाई की आख परवश नीची पड गई। सिर उठाया। कहने को हुई। जरा सा हँसी। फिर गम्भीर हो गई। खासी।

बोली, 'कोई नाम याद नही आता सरकार।' और हँसी।

रानी को भी हँसी आ गई।

अच्छा जब याद आ जावे तब बतलाना,' रानी ने कहा, 'अभी कोई जल्दी नही।'

मोती ने निष्कृति की सास ली।'

काशीबाई—'सरकार, इनके साथ जूही भी अभिनय किया करती थी।'

रानी—'वह भी अब अपना काम कर रही है।'

मोतीबाई—'उसने खूब काम किया और करेगी।'

रानी—'उसको भी गुलामगौस से तोप चलाना सिखलाओ। हमको बहुत तोपचियो की आवश्यकता पडेगी। जिसके पास तोपें और तोपची, उसी के हाथ विजय।'

काशीबाई—'जहा हमारी श्रीमन्त सरकार होगी, वही विजव होगी।'

[६०]

झासी के दक्षिण में सागर का जिला और सागर के दक्षिण पश्चिम में भोपाल रियासत। भोपाल रियासत में आमापानी नाम की गढी थी। थोडी दूर पर राहतगढ नाम का किला था। आमापानी के अधिकारी ने राहतगढ पर कब्जा कर लिया। राहतगढ में बहुत से पठान इकट्ठे हो गये।

सागर की सेना ने विद्रोह किया और सागर को लूट लिया। जबलपूर में विप्लव हुआ। सारे विन्ध्यखण्ड में विप्लव की लपटें बढी।

सन् १८५८ के मध्य सितम्बर में जनरल सरह्यू रोज ससैन्य इगलैंड से बम्बई उतरा। विप्लवकारियो से बदला लेना और विप्लव का दमन करना उसका दृढ निश्चय था।

उसी महीने में दिल्ली का पतन हुआ। बहादुरशाह कैद कर लिया गया और उसके दो शाहजादे मार डाले गये। लखनऊ का मुहासिरा समाप्त हुआ। कानपूर में तात्या टोपे ने अङ्गरेजो के कम से कम तीन जनरलो को लडाई में हराया। परन्तु दिल्ली के पतन का विप्लवकारियो पर बुरा प्रभाव पडा।

लखनऊ के प्रथम पतन पर भी अवध में जनता ने युद्ध जारी रक्खा अङ्गरेज़ो ने इलाहाबाद फतेहपूर इत्यादि में प्रचण्ड हिंसा वृत्ति से प्रेरित होकर भीषण और वीभत्स क्रूर कृत्य किये। इनके समाचार झासी में आये। बिठूर का पतन हुआ। नाना साहब कठिनाई से रात के समय अपनी पत्नियो और विमाता को नाव में बिठलाकर निकल पाये और लखनऊ की बेगम के पास पहुच पाये। झासी वालो के ससर्ग में फिर कभी नही आये। रावसाहब और तात्या टोपे अपनी सेना लेकर कालपी आ गये और यहाँ से युद्ध की योजनाये प्रयुक्त करने लगे। यह समाचार भी झासी आया।

झासी में हार खाकर नत्थेखा टीकमगढ मे शान्ति के साथ नही बैठा, वरन झाँसी के पूर्वीय परगनो में डेढ दो महीने तक लूटमार करता

रहा। उसकी पडवाहा, गरोठा और नोटा की लूट विख्यात है। परन्तु रानी ने थोडे समय में ही यह सब लूट मार कुचल दी और नत्थेखा को बिलकुल हट जाना पडा।

रानी की छोटी सी सेना को दहलाने और हैरान करने के लिये यह सब काफी था, परन्तु रानी को घबराया हुआ या चिन्तित कभी किसी ने नही देखा। उनका कार्य सतत, अनवरत जारी था।

वही कार्य क्रम। वही दिन चर्या। वही सद्‌भावना और जनता की रक्षा तथा जनता के नायकत्व का वही दृढ सङ्कल्प। 'यदि अकेले ही स्वराज्य की लडाई लडनी पडे तो लडी जायगी'—यह रानी का अटल निश्चय था। और उनका अचल विश्वास था कि एक युद्ध और एक जन्म से ही कार्य पूरी तौर पर सम्पन्न नही होता।

'सभवामि युगे युगे'

उन्होने पड़ा था, उनको याद था और उनके कण-कण में व्याप्त था।

वे अपने युग के उपकरण और साधन काम मे लाती थी। जिस समाज में उनका जन्म हुआ था, उसी में होकर उनको काम करना था, परन्तु उस समाज की हथकडियो और बेडियो की उन्होने पूजा नही की। वे अपने युग से आगे निकल गई थी, किन्तु उन्होने अपने युग और समाज को साथ ले चलने को, भरसक प्रयत्न किया। झासी में विशेषत: और विन्ध्यखण्ड मे साधारणतया, स्त्री की अपेक्षाकृत स्वतन्त्रता और नारीत्व की स्वस्थता लक्ष्मीबाई के नाम के साथ बहुत सम्बद्ध है।

मङ्गल और शुक्र के दिन रानी, महालक्ष्मी के मन्दिर मे जाया करती थी. जो लक्ष्मी–फाटक के बाहर, लक्ष्मीताल के ऊपर है। कभी पालकी मे, कभी घोडे पर। कभी पालकी पर चिक डालकर, कभी बिना चिक के। कभी साडी पहिन कर, कभी पुरुष वेश मे—सुन्दर साफा बाधे हुये। कभी बिलकुल अकेली, और कभी धूमधाम के साथ। जब पालकी पर जाती कुछ स्त्रिया अलङ्कारो से लदी, लाल मखमली जूते पहिने, परतले मे पिस्तौल लटकाये पालकी का पाया पकडे साथ दौडती हुई जाती

थी। पालकी के आगे सवार गेरुआ झंडा फहराता हुआ चलता था। उसके आगे सौ घुडसवार।

साथ में रणवाद्य, नौबत। पीछे पठानो, मेवातियो और बुन्देलखडियो का रिसाला। बगल में प्राय भाऊ बख्शी घोडे पर सवार।

मार्ग में विनती भी सुनती थी।

एक दिन एक भिक्षुक ब्राह्मण आ खडा हुआ। काशी से आया था। पत्नी मर गई थी। दूसरा थिवाह करना चाहता था। दरिद्र होने के कारण लडकी वाला विवाह करने को तैयार न था। चार सौ रुपए की अटक थी।

उन्ही दिनो कुवर मडली में एक नया व्यक्ति भर्ती हुआ था। नाम रामचन्द्र देशमुख। देशमुख को आज्ञा दी, खजाने से इस ब्राह्मण को पाँच सौ रुपया दिलवा दो।

देशमुख ने कहा, 'जो हुकुम।'

ब्राह्मण ने आशीर्वाद दिया।

रानी ने ब्राह्मण से मुस्कराकर कहा, 'विवाह के समय मुझको न्योता देना न भूल जाना।'

ब्राह्मण गद्गद् हो गया। आखो से आसू वह पडे मुँह से एक शब्द न निकला। साथियो में, सहेलियो मे, जनता में, सेना में, ब्राह्मणो में अब्राह्मणो में विद्युत वेग के साथ यह बात फैल गई।

ऐसी रानी के लिये, ऐसी रानी की बात के लिये, ऐसी स्त्री के सिद्धान्त के लिये, क्यो न लोग सहज ही प्राण दे डालने को सन्नद्ध होते? कुवार का महीना आया। रानी ने श्राद्ध किया। नवरात्र में यज्ञ का अनुष्ठान। महल के सामने पुस्तकालय था। निकटवर्ती मैदान में यज्ञ–मडप खडा किया गया। सौ ब्राह्मण हवन करने के लिये नियुक्त किये गये। अन्य ब्राह्मण विविध विधान के लिये।

गणेश मन्दिर में अथर्व का आवर्तन अलग हो रहा था। सप्तशती के पाठके लिये १४ ब्राह्मण दुर्गा के मदिर में चादी के शमइयो में घी

के दिये जलाये पाठ करने पर नियुक्त। जब यज्ञ समाप्त हुआ' मुख्य सकल्प रानी के नाम से और नान्दीश्राद्ध दामोदरराव के हाथ से कराया गया - पूना तरफ के एक ब्राह्मण ने आक्षेप किया और शास्त्रो के वचन उधृत करने आरम्भ किये। उसकी बात मानी गई। वह विजय-गर्व से फूल गया।*

रानी को यह दुस्सह हुआ।

रानी ने काशीबाई से कहा, 'काशी तू शान्ति के साथ सोच विचार किया करती है। ब्राह्मणो का यह विवाद तुझको कैसा लगा?'

काशी ने उत्तर दिया, 'सरकार, इन लोगो का वितडावाद कभी न झुका, देश का दुर्भाग्य कभी न रुका – ये लोग सदा इसी में मस्त रहे। मालूम नही भगवान ने इतनी ना समझी क्यो इन शास्त्रज्ञो के ही पल्ले में परसी है।'

रानी ने कहा, 'कर्म अच्छा है, परन्तु उसके कराने वाले आकर्मण्य हैं'

'बड़ी बात यह है कि राज्य का भार इन लोगो पर नही है, नही तो हम सब डूब जाते जाते,' काशी बोली, 'राजकीय समस्याओ के सुलझाने में यदि ये लोग इतना विवेक खर्च करे तो कितना बडा काम हो।'

'काशी,' रानी ने कहा, 'जब ये लोग राजनीति का व्यायाम करते हैं तब वितण्डा नही करते। धर्म से ही न जाने ये लोग क्यो ऐसे रूठे हैं।'

विजयादशमी के दिन दरबार हुआ। अग्रेजो ने जो जागीरे ज़ब्त कर ली थी, वे वापिस कर दी गईं। नत्थेखा वाली लडाई में जिन लोगो ने बडे काम किये थे, उनको या उनके वारिसो को, जो पहले ही पुरस्कृत नही हो चुके थे, पारितोषिक दिये गये। सागरसिह और पीरअली भी खाली हाथ न लौटे।

जब सागरसिह सामने आया रानी ने कहा, 'तुमको नवाब साहब की हवेली में से कितना माल मिला?'

---

*देखिये परिशिष्ट।

सागरसिंह ने उत्तर दिया, 'बहुत कम सरकार। पीरअली मेरे गवाह हैं। वे साथ थे। नवाब साहब की हवेली में आग लगाने वालो में ये सबसे आगे थे।' पीरअली आगे बढा।

बोला, 'श्रीमन्त सरकार, मैंने नवाब साहब का बहुत दिनो नमक अदा किया, परन्तु जब देखा कि वे श्रीमन्त सरकार के विरुद्ध है, तब उनसे अलग हो गया। बेबस मुझको लडना भी पडा। आग मैंने सबसे पहले नही लगाई। आग लग चुकी थी। माल अवश्य मैंने सिपाहियो को बतलाया, क्योकि यह उचित था। थोडा ही मिला। नवाब साहब पहले ही निकाल ले गये।'

रानी को अच्छा नही लगा, परन्तु उन्होने कहा कुछ नही।

रात को नाटक हुआ। पुरुष और स्त्रियो का—दोनो का-अभिनय स्त्रियो ने ही किया। नाटकशाला भी स्त्रियो के सिवाय पुरुष एक भी न था। खेल शकुन्तला का था। जूही ने शकुन्तला का अभिनय किया, मोती ने उसकी सहेली का और काशी ने दुष्यन्त का।'

नाटक की समाप्ति पर रानी ने मोतीबाई से पूछा, 'पहले भी ऐसा ही अभिनय किया करती थी ?'

मोतीबाई—'आज, सरकार, हम लोगो ने अच्छे से अच्छा प्रयत्न किया है।'

रानी—'जूही तो शकुन्तला जैसी जची, परन्तु इसका दुष्यन्त रद्दी था।'

जूही—'नही सरकार।'

रानी को कुछ स्मरण हो आया।

बोली, 'ठीक कहती है जूही। तेरा और तेरे दुष्यन्त जोहर युद्ध में देखूंगी।'

जूही ने निस्संकोच कहा, 'सरकार मेरा और मेरे दुष्यन्त का जोहर देखकर पुरस्कार देगी।'

काशीबाई हँसकर बोली, 'मुझको तो आगे कभी दुष्यन्त बनना नही।'

रानी ने चुटकी काटी। कहा, 'तव और कोई दुष्यन्द वनेगा।' और मोतीवाई की ओर देखा। मोतीवाई ने गर्दन मोड़ी। जूही झेंपकर पीछे सट गई।

सहेलियो मे विनोद छागया।

जाते जाते रानी ने मोतीबाई से अकेले में कहा, 'खुदावख्श से कहना कि वारूद के कारखाने का ध्यान रक्खे। हमको इतनी वारूद चाहिए कि हम किले में वैठकर महीनो लड सकें।'

मोतीवाई ने नीचा सिर किये हुये पूछा, 'सरकार की इस आज्ञा का कथन मै ही करूँ?'

'और कौन करेगा पगली,' रानी ने हँसकर कहा, 'तात्या टोपे का भी समाचार मँगवा। देख क्या वे अब भी कालपी मे हैं? उनका झासी आना जाना वना रहना चाहिए। न मालूम अङ्गरेज कव आजावे। हम लोग झासी में घिरे हुए अनन्त काल तक तो लड़ नही सकते। उनको इनना समीप रहना चाहिए कि अटक पडने पर सहायता लेकर, शीघ्र आसके।'

दूसरे दिन रानी ने दीवान खास में जवाहरसिंह और रघुनाथसिंह को वुलवाया। रानी कार्य की प्रगति को और तेज़ करना चाहती थी।

रानी— तोपे ऐसी ढल रही हैं न, जो पीछे धक्का न दे और जल्दी गरम न हो?'

जवाहरसिंह—'हा सरकार, वख्शी जी और उनके कारीगर इस विद्या में निपुण हैं।'

रानी—'वारूद?'

रघुनाथसिंह—'तीन महीने की लडाई के लिए तैयार है। आज से कुंवर खुदाबख्श ने और भी तेजी पकडी है।'

रानी—'अच्छी वन्दूके और तलवारें भी वहुत सख्या में चाहिए।'

जवाहरसिंह—'वन गई हैं और वन रही हैं।'

रानी—'गोले?'

जवाहरसिंह—'भाऊ बख्शी आध सेर से लेकर पैंसठ सेर तक गोले तैयार कर रहे हैं। ठोस और पोले–फटने वाले भी।'

रानी—'मैं चाहती हूँ कि इन सब हथियारो के चलाने वाले भी अधिकता से तैयार किये जावें।'

जवाहरसिंह—'जनता में बहुत उत्साह है। ऊँची-नीची सब जातिया युद्ध की उमङ्ग से उमड रही हैं।'

रानी—'सबसे अधिक किन लोगो में उत्साह है ?'

जवाहरसिंह—सरकार यह बतलाना कठिन है। ठाकुरो और पठानो में तो स्वाभाविक ही है। कोरियो, तेलियो और काछियो में भी बहुत उमङ्ग है। बनिये और ब्राह्मण भी पीछे नही हैं।'

रानी—'क्या शास्त्रियो में भी ?'

जवाहरसिंह—वे भी तो झासी के ही हैं, परन्तु उनको जब शास्त्र और पूजन से अवकाश मिलता है तब।'

रानी—'हमारे देश में नीच-ऊँच का भेद न होता तो कितना अच्छा होता।'

जवाहरसिंह—'भेद तो भगवान ने ही बनाया है, सरकार।'

रानी चुप रही। थोडी देर बाद बोली, मै चाहती हूँ कि सब जातियो के चुने हुये लोगो को, तोप बन्दूक का चलाना सिखलाया जावे।'

जवाहरसिंह ने बहुत उत्साह बिना दिखलाए कहा, 'यह काम जारी है सरकार।'

रानी—'मैं अपनी सहेलियो और कुछ अन्य स्त्रियो को, बहुत अच्छा गोलन्दाज बनाना चाहती हू।'

रघुनाथसिंह—'आज्ञा मिल गई है। उसके अनुसार काम किया जायगा। अवश्य।'

रानी—'किले में अन्न इत्यादि भी काफ़ी जमा करलो। कुछ ठीक नही कब घेरा पड़ जाय।'

जवाहरसिंह—'काफी अन्न एकत्र किया जा रहा है। और शीघ्र ही किले के कमठाने में जमा कर लिया जावेगा।'

रानी—'चूना, ईंट, पत्थर भी इकट्ठा कर रखना। कारीगर भी हाथ में रहे।'

जवाहरसिंह—'जो आज्ञा।'

रानी—'सेना का और युद्ध का कोई भी अङ्ग निर्बल न रहने पावे।'

[६१]

उत्तर और पूर्व में अङ्गरेजो की विजय-पराजय का क्रम चालू था। लखनऊ के पतन के उपरान्त उसका फिर उत्थान हुआ। शहर में, बगीचो-बारहदरियो में, महलो में युद्ध होता रहा। कानपूर के सूत्र को तात्या टोपे ने फिर पकडा। वह ग्वालियर गया और वहा की अङ्गरेजी-हिन्दुस्थानी सेना को फोडकर अपने साथ ले आया और उसने अङ्गरेजो के जनरल विढम को हराया। परन्तु अङ्गरेज़ सत्तरह सहस्त्र गोरी सेना, नौ सहस्त्र गोरखो और रहुसख्यक सिक्खो का दल लेकर लखनऊ पर पहुँच गये। विप्लवकारियो ने बहुत करारे युद्ध किये। उत्तर और पूर्व के युद्धो में तात्या टोपे ने बहुत भाग लिया। अन्त में जब बिठूर मिट गया और कानपूर अन्तिम बार अङ्गरेजो की अधीनता में चला गया, तब तात्या कालपी के आसपास से युद्ध करने लगा।

शीत काल आ चुका था। बिहार और अवध में घोर लडाई जारी थी, परन्तु विप्लवकारियो में व्यवस्था न थी। बडे सरदार या राजा के निधन पर छोटी स्थिति वाले नायक का नेतृत्व मान्य न होता था, इसलिये अङ्गरेज धीरे धीरे एक स्थान के बाद दूसरे स्थान को और एक भूखण्ड के उपरान्त दूसरे भूखण्ड को अधिकृत करते चले जा रहे थे। अङ्गरेजो की क्रूरताओ ने भी विप्लव को नही दबा पाया था और न गोरखो और सिक्खो की सहायता से वे इस देश को पुन प्राप्त कर सकते थे। विप्लवकारियो मे सामन्त नेता के देहान्त के पश्चात् ही अनुशासन की कमी उत्पन्न हो जाती थी और इसी कारण उनको हार पर हार खानी पडी। नही तो तात्या टोपे इत्यादि सेनापतियो के होते हुये बडे बडे अङ्गरेज़ जनरल भी मात खा जाते।

यही कारण दक्षिण में काम कर रहा था। जनरल रोज़ ने अपनी सेना के दो भाग किये। एक को उसने मऊ छावनी की ओर भेजा और दूसरे को लेकर वह सागर की ओर बढा। राहतगढ सागर से चौबीस मील के फासले पर था। यहा से पठान जनरल रोज़ का मुकाबिला कर

रहे थे। चार दिन घनघोर युद्ध करने के वाद पठानो को किला छोडना पडा। राहतगढ से १५ मील पर वरोदिया का किला था। यहा वानपूर के राजा मर्दनसिह के आश्रय में अङ्गरेजी फौज के कुछ विद्रोही थे। रोज़ ने इनको भी हरा दिया और फिर वह सागर की ओर वढा। पूर्व की ओर गढ़ाकोटा का क़िला पडता था। वह विप्लवकारियो के हाथ में था। उसको लेने के पहले रोज़ ने सागर पर चढाई की।

नर्मदा के उत्तरी किनारे का अधिकाश भूखण्ड विप्लवकारियो के हाथ में था। इसको अपने हाथ में किये विना जनरल रोज़ झासी की ओर नही वढ सकता था। सागर और झासी के वीच में वानपूर का राजा मर्दनसिह और शाहगढ का राजा वखतवली लोहा लेने को तैयार थे।

अङ्गरेज़ो का प्रधान सेनापति सर कालिन कैम्वेल था। वह उत्तराखंड के विप्लव के दमन में सलग्न था। उसका मत था कि जव तक झासी नही कुचली जाती, तव तक उत्तराखण्ड हाथ नहीं आता। इसलिये रोज़ सागर के द्वार से झासी की ओर आ रहा था। वीच में ऊवड-खावड भूमि और ऊवड-खावड लडाकू जनसमूह। परन्तु रोज इत्यादि अगरेज़ जनरलो को विश्वास था—जहा विप्लवकारियो के नेता राजा, नवाव, जागीरदार मारे गये तही विप्लव समाप्त हो जायगा।

[६२]

विकट ठंड। ऊपर से हड्डी कपाने वाली हवा। कुछ ही दिन पहले पानी बरस चुका था। ठिठुरी हुई घास के ऊपर बडे बडे ओसकण। मृदुल बाल–रवि की रश्मिया उनके ऊपर सरकती हुई। झलकारी कोरिन कन्धे पर बन्दूक रक्खे, बगल में बारूद और गोलियो का झोला लटकाये उनाव फाटक से बाहर हुई। जब हाथ ठिठुर जाते तब बन्दूक को बगल में दाब लेती और दोनो हाथ ओढनी में छिपा लेती। उनाव फाटक के उत्तर में एक टौरिया है, जिसको अञ्जनली की टौरिया कहते हैं। उसके दक्षिणी सिरे पर अंजनी और हनुमान का एक छोटा सा चबूतरा है। थोडी देर में झलकारी इसी चबूतरे के पास पहुची और धूप लेने लगी। ठडी हवा और सूर्य की कोमल किरणे उसकी बड़ी बडी आखो को सुरमा सा लगाने लगी।

जब दिन चढ आया तब वहा से जरा हटकर निशाना बाज़ी करने लगी। काफी समय तक करती रही।

अञ्जनी की टौरिया की उपत्यका विषम थी। वहा ऐसे समय कोई आता जाता न था। लेकिन भेड बकरी और ढोर चरने के लिये आ निकलते थे। अकस्मात् झलकारी की गोली एक पशु को लगी। उसने ठीक तौर पर नही देख पाया कि गोली भेड को लगी या बछिया को। सन्देह था कि बछिया को लगी, परन्तु मन कहता था कि भेड को लगी होगी।

वह बेतहाशा घर आई। पूरन घरू काम कर रहा था। झलकारी ने उसको अपनी घबराहट का कारण बतलाया। पूरन को हद दर्जे की खीझ हुई।

बोला, 'तुमने जा तक न देखी कै बछिया हती कै भेड, और न काऊ से जा पूंछी कि की कौ ढोर हतो ?'

झलकारी ने खिसिया कर कहा, 'मैं उतै कौसें पूछती ? उतै बरेदी तो हतोइ नई। बरेदी होतो तो ढोर उतै कैसें आ जाते ?'

पूरन चिन्तित था। खोज करने के लिये निकला। यदि भेड मरी है तो उसका दाम दे दिया जावेगा, जाति में कुछ दण्ड लगेगा वह भुगत लेगा, परन्तु यदि वछिया मरी है या घायल हो गई है तो आयी महान् विपद। पूरन सोच रहा था।

निशाने से उचट कर एक वछिया के पैर में गोली लगी थी। वह घायल हुई और गिर पडी। वछिया एक ब्राह्मण की थी। मशहूर हुआ कि वछिया मर गई—झलकारी ने मार डाली। वरेदी अपनी अनुपस्थिति अस्वीकृत करता था। उसने कहा, 'मैंने झलकारी को गोली मारते अपनी आखो देखा है।'

शहर में रौरा मच गया। झलकारी कभी कभी रानी के पास जाती थी। रानी ने स्त्रियो की जो सेना वनाई थी, उसकी एक सिपाही झलकारी भी थी। सध्या समय साफ सुथरे और रंगीन कपडे पहिन कर थाली में दिये संवार कर, फूल सजाकर वह मन्दिर में पूजन के लिये आया करती थी और अपने गले में फूलो का हार डाले भी दिखलाई देती थी। अन्य जाति की स्त्रिया भी इस प्रकार की स्वतन्त्रता पाये हुई थी, परन्तु झलकारी की स्वतन्त्रता में एक ओज था—और वह ऊँची जाति वाले अनेक लोगो को खटकता था।

'झलकारी ने एक गरीब ब्राह्मण की वछिया मार डाली।'

'अरे वह इतनी मस्ता गई है कि अपने पति तक की मारपीट करती है।'

'वह अच्छो अच्छो को किसी गिनती में नही लेखती।'

इस प्रकार की स्त्रिया रानी साहब को वदनाम कर रही हैं।' इत्यादि उद्गार वाजार में निसृत हो रहे थे।

'प्रायश्चित्त कराओ।'

'गधे पर विठलाकर काला मुँह करो।'

'जब तक प्रायश्चित्त न हो जाय तव तक कुआ, वाजार, पड़ोस सब बन्द रहे।'

'खाना पकाने के लिये कोई पूरन को आगी तक न दे।'

'कोई उसको छुये नही।' इत्यादि व्यवस्थार्य भी दे डाली गईं।

पूरन ने खोजकर पता लगा लिया कि बछिया मरी नही है। परन्तु लोगो को अपनी बात और व्यवस्था वापिस नही लेनी थी, इसलिये ब्राह्मण को फोड लिया और उसने घायल बछिया को छिपा लिया। कह दिया कि न जाने कहा गई—मर गई।

कोरियो ने पञ्चायत की। बहिष्कार का दण्ड दिया। उस युग के हिन्दू के लिये रौरव नरक से बढकर।

काला मुँह करके गधे पर चढाकर बाजार में जुलूस निकालने की बात तै की। पूरन के बहुत घिघियाने-पतियाने और कुछ और स्त्रियो के आडे आ जाने के कारण काला मुँह करना तो निर्णय में से कम कर दिया गया बाकी सजा बहाल रही।

जिस दिन प्रायश्चित का यह रूप प्रकट होना था, उस दिन शुक्रवार था सन्ध्या का समय निश्चित था।

उसी दिन रानी महालक्ष्मी के मन्दिर को जाने वाली थी वे हलवाई-पुरे के पश्चिमी सिरे पर उस दिन अकेली सवार आ रही थी। थोडी दूर पीछे एक अङ्गरक्षक था।

कुछ अधनगे मगतो ने घेरा।

रानी ने पूछा, 'क्या है ?'

उत्तर मिला—'ठण्ड के मारे मर रहे हैं। कपडा नही है।'

रानी ने अङ्गरक्षक को बुलाकर आज्ञा दी, 'दीवान से कहो कि शहर में जितने मागने, भिखारी साधू, फकीर हो, उन सब को एक एक कुर्ती बनवा दें और एक एक कम्बल दे।'

मगतो को विश्वास हो गया कि आज्ञा का पालन होगा।

हलवाईपुरा के मध्य में पहुची कि पूरन घोडे के सामने जा गिरा।

रानी के पूछने पर उसने अपनी विपत्ति सुनाई। रानी सोच-विचार में पड गई।

'पञ्चायत के निर्णय का कैसे उल्लंघन करूँ ?'

'सरकार, बछिया मरी नइया।'

'ब्राह्मण को बुलवाओ जिसकी बछिया थी।'

जब तक ब्राह्मण आया, तब तक रानी बाजार वालो से, उनके बालबच्चो की कुशलवार्ता पूछती रही।

ब्राह्मण के आने पर रानी ने अपनी सौगन्ध धराकर सच्चा हाल कहने का आग्रह किया। कोई गुञ्जायश झूठ बोलने के लिये न रही।

ब्राह्मण ने कहा, 'महाराज, चाहे मारें चाहे पाले, सच बात यह है कि बछिया मरी नही है। वह मेरे एक नातेदार के यहा दतिया राज्य में भेज दी गई है।'

रानी ब्राह्मण को उसके फरेब के लिये कुछ दण्ड देना चाहती थी, परन्तु बाज़ार के मुखिया–चौधरी आडे आगये। ब्राह्मण छोड दिया गया।

परन्तु बाजार वाले भौचक्के से रह गये। जो लोग झलकारी की गधा-सवारी का जुलूस देखने के आकाक्षी थे, बहुत निराश हुये। पञ्चो को अपना निर्णय वापिस लेने मे असुविधा हुई। वापिस लेना पडा, परन्तु पूरन को एक पगत बछिया के घायल होने के कारण तो भी देनी पडी। प्रायश्चित्त की ऐसी पङ्गतो में कुछ ब्राह्मण और कुछ अन्य जातियो के सरपञ्च बुलाये जाते थे। पूरन ने कुछ ब्राह्मण तो न्योत लिये, परन्तु बाज़ार के सरपञ्च श्याम चौधरी और मगन गन्दी को नही बुलाया। ये दोनो विना निमन्त्रण के पूरन के यहा पहुँच गये। पूरन को आश्चर्य और परिताप हुआ।

श्याम चौधरी ने कहा, 'तुम न्योतना भूल गये तो हम पङ्गत में आना तो नही भूले।'

ऐसे लोगो के लिये भोजन ब्राह्मण बनाता था और ये लोग भोज में शरीक होते थे। इसी प्रकार के सहयोग के कारण तत्कालीन समाज के वे दुखदायक पहलू किसी प्रकार भुगत लिये जाते थे।

[६३]

जब जनरल रोज ने सागर पर आक्रमण करके क़ैदी अङ्गरेजो को मुक्त किया, उनको इतना हर्ष हुआ कि उन्होने तोपो की सलामी दागी ! सागर को अधिकार में कर लेने के बाद रोज़ ने गढाकोटा को हाथ में लिया। परन्तु जगह जगह विप्लवकारियो के सशस्त्र दल बिखरे हुये थे। इनका दमन करने के लिये रोज ने अपनी सेना के कई भाग किये और उनको भिन्न-भिन्न दिशाओ में भेजा। वह स्वय सेना के एक बडे भाग के साथ झासी के लिये नारहट घाटी की ओर आया। उसकी सेना का एक भाग शाहगढ के राजा बखतवली का मुकाबिला करने के लिये गया था। वहा देखा तो बखतवली काफी बडी सेना लिये हुये मौजूद है। नारहट घाटी पर मर्दनसिह की भी सेना बहुसख्यक थी। रोज़ अपनी सेना लेकर मदनपूर घाटी की ओर बढा। मर्दनसिह ने भी उसी ओर बाग मोडी, रोज़ चाहता था कि बखतबली और मर्दनसिह मिलने न पावे, इसलिये उसने सेना का एक भाग मर्दनसिह को अटकाने के लिये नारहट घाटी की ओर लौटाया और स्वय मदनपूर की ओर चल दिया। मदनपूर उस स्थल से पूर्व की ओर लगभग २० मील था।

मर्दनसिह रोज़ की इस चाल को न समझ सका और वह मदनपूर की ओर न बढकर नारहट घाटी पर लौट आया।

बखतवली के साथ रोज़ का घोर युद्ध हुआ। दो पहाडो के बीच में मदनपूर का गाँव और झील है। इस सुहावनी झील के पास ही वह भयकर सग्राम हुआ था। बहुत अङ्गरेजी सेना मारी गई। खुद रोज़ घायल हुआ। परन्तु वह लडाई जीत गया। यदि मर्दनसिह और बखतवली की सेनाओ का मेल हो गया होता तो रोज़ की पराजय निश्चित थी—मदनपूर की झील मे रोज के सेनापतित्व का अन्तिम इतिहास उसी दिन लिख गया होता।

बखतवली के अनेक सरदार पकडे गये और मार डाले गये। बखतवली की पराजय का हाल सुनकर मर्दनसिह नारहट घाटी को छोडकर

भागा। रोज ने अपनी सेना के भिन्न-भिन्न टुकडो को आदेश दिया कि विप्लवकारियो का पीछा करते हुये वे उसको झासी के निकट मिलें।

वानपुर के राजा मर्दनसिंह ने मदनपूर की पराजय और नर-संहार का वृत्तान्त झासी भेजा। झासी में और राज्य के बडे बड़े नगरो और ग्रामो में, जहा जहा गढ और किले थे, तैयारी शुरू हो गई।

उन्ही दिनो ग्वालियर से झासी में एक नाटकमंडली आई।

मुन्दर ने अनुनय पूर्वक कहा, 'सरकार, लडाई के आरम्भ होने के पहले एकाध खेल अपनी नाटकशाला में भी हो जाने की अनुमति दी जाय।'

'यह समय नाटक और तमाशो का नही है,' रानी मिठास के साथ बोली।

सुन्दर ने अनुरोध किया, 'मैं लडाई में मारी गई तो फिर कब नाटक देखूँगी।'

रानी ने हँसकर कहा, 'दूसरे जन्म में। उस समय तुझको स्वराज्य स्थापित किया हुआ मिलेगा।'

काशीबाई ने आग्रह किया,'केवल एक खेल सरकार, और फिर हम लोग जो खेल खेलेगी उसको स्वराज्य वाले सदा स्मरण किया करेंगे।'

'युद्ध वास्तव में है ही किस निमित्त ?' रानी मुस्कराकर बोली, अपने जीवन और धर्म की रक्षा के लिये, अपनी सस्कृति और अपनी कला के बचाने के लिये। नही तो युद्ध एक व्यर्थ का रक्तपात ही है। यह खेल जल्दी हो जाय और फिर उस खेल को ऐसा खेलो कि अङ्गरेजो के छक्के छूट जायें और यह देश उनकी फास मे मुक्त हो जाय।'

मुन्दर ने हर्ष में कहा,'सरकार खेल मराठी में होगा।'

रानी बोली—'झासी में मराठी! महाराष्ट्र यहा बडी सख्या में हैं यह ठीक है, और वे लोग अपने मनोरजन के लिये मराठी में नाटक खिलवावें परन्तु वह नाटकमण्डली राज्य का आश्रय तभी पावेगी जब नाटक हिन्दी में खेले। अवश्य मेरा जन्म महाराष्ट्र कुल में हुआ है, परन्तु मैं अपने को महाराष्ट्र न समझकर विन्ध्यखण्डी समझती हू। मेरी

झासी की भाषा हिन्दी है । नाटक यदि हिन्दी में हो, तो हो, नही तो मुझसे कोई सरोकार न होगा । मेरा निश्चय है ।'

सहेलियो ने स्वीकार कर लिया ।

नाटकमण्डली वालो से कहा गया । उनमें थोडे अभिनेता ही हिन्दी जानते थे । उनकी यह कठिनाई दूर कर दी गई । झासी के हिन्दी जानने वाले अभिनेता शामिल कर लिये गये । उस मण्डली ने हरिश्चन्द्र का अभिनय उत्कृष्टता के साथ किया । मोतीबाई इत्यादि जानकारो तक ने सराहना की । रानी ने मण्डली के प्रबन्धक को चार सहस्र रुपया पुरस्कार दिया । मण्डली ग्वालियर चली गई ।*

रानी ललित कलाओ की प्रबल पोषक थी । उस कठिन और चिन्ताकुल समय में भी रानी प्रत्येक नवागन्तुक गायक, वीणकार, सितारिये इत्यादि को सुनने के लिये थोडा बहुत समय दिया करती थी और उचित पुरस्कार भी । कवि, चित्रकार, शिल्पी कोई भी उन्मुख नही जाता था । शास्त्री, याज्ञिक, ज्योतिषी, वैद्य, हकीम इत्यादि भी पोषण पाते थे । अपनी इसी वृत्ति को वे स्वराज्य में विकसित और प्रसरित देखना चाहती थी ।

पीरअली देर-सवेर सब महात्वपूर्ण समाचार नवाब अलीबहादुर के पास बडी सावधानी के साथ भेजता रहता था । झासी छोडने के कुछ दिनो बाद वे घूमते-घामते दतिया पहुचे । वहा थोडे समय रहकर भाडेर पहुच गये । झासी से दतिया १७ मील और भाडेर चौबीस ।

नवाब अलीबहादुर उन्ही स्थानो से अग्रेजो को काम के समाचार भेजते रहते थे । रोज इत्यादि अग्रेज जनरल झासी को अधिकृत करने के महत्व को जानते थे । उन लोगो को नवाब से निरर्थक और सार्थक—सभी तरह के – हाल समय समय पर मिलते रहते थे । मदनपूर युद्ध के पश्चात झासी रोज का प्रथम लक्ष्य और पहला कर्तव्य बनी ।

---

* देखिये परिशिष्ट ।

अस्त

(क्या सचमुच ?)

[६४]

मदनपूर की लडाई जीतने के बाद रोज की सेना ने शाहगढ को अधिकार में किया। फिर मडावरा की गढी को कब्जे मे करने के उपरान्त बानपूर राज्य को अङ्गरेज़ी राज्य में मिला लिया। बानपूर के महल के कुछ भाग को तोप से उडा दिया, बाकी को जला दिया और इन दोनो राज्यो के बडे कर्मचारियो को फासी पर चढा दिया। इन महलो में पुस्तको और चित्रो का भी सग्रह था, परन्तु विप्लवकारियो की सम्पत्ति होने के कारण वे अस्पृश्य हो गये थे।

वध और अग्नि बरसाती हुई, रोज की सेना १२ मार्च सन् १८५८ को तालबेहट आ पहुँची। तालबेहट का प्राचीन दृढ किला लढाई के लिये उपयुक्त था, परन्तु उसमें विप्लवकारी बहुत थोडी सख्या में थे और उनका नायक कोई बडा आदमी न था। मुकाबिले में रोज़ सरीखा चतुर और विजय प्राप्त सेनापति तथा अङ्गरेज़ो की विशाल सेना और तोपे - विप्लवकारी भाग गये और रोज ने तालबेहट का किला सहज ही अधिकार में कर लिया। चन्देरी में बानपूर के राजा का एक दस्ता था। रोज ने सोचा बग़ल के इस काटे को पहले निकाल डालना चाहिये। उसने चदेरी पर

हमला करने के लिये अपने एक अफसर ब्रिग्रेडियर स्टुअर्ट को भेजा। स्टुअर्ट ने विना किसी कठिनाई के चदेरी को पराजित कर दिया।

झाँसी की पूर्वी तहसील मऊ में एक छोटा सा गढ था। इस गढ में रानी की ओर से काशीनाथ भैया और आनन्दराय इत्यादि छोटे छोटे जागीरदार तैयारी कर चुके थे। मऊ के दमन के लिये रोज ने वानपूर विध्वंस के वाद अपना एक दस्ता सीधा भेज दिया था। रोज ने झासी पर चढाई करने के पहले रानी लक्ष्मीवाई के पास सम्वाद भेजा।

'आप अपने दीवान लक्ष्मणराव, लाला भाऊवख्शी, मोरोपन्त ताम्वे (आपके पिता), नाना भोपटकर, दीवान जवाहरसिह, दीवान रघुनाथसिह, कुवर खुदावख्श और मोतीसाई के साथ निश्शस्त्र चली आवें अन्यथा कठोर और भयकर फल के लिये तैयार रहे।'

इस प्रकार के संवाद के लिये रानी तैयारी थी, परन्तु जिस मोतीसाई को जनरल रोज चाहते थे उसके स्मरण से रानी के दीवान खास में हँसी का तूफान खडा हो गया -

'नाना साहव,' रानी ने हँसी को रोक कर कहा, 'इस मोतीसाई को कहा से पकड़ वुलाऊँ ?'

नाना भोपटकर ने कहा, 'सरकार के यहा यदि वनावट चलती होती और जाली सिक्के ढलते होते तो किसी न किसी को साई का चोगा पहिना दिया जाता।'

मोतीवाई दीवान खास में मौजूद थी झुझलाई हुई सूरत वनाकर वोली, 'सरकार दूत को वुलाकर पूछा जाय कि मोतीसाई किस हुलिया का आदमी है।'

मोरोपन्त ने कहा, 'उसके लम्बी दाढी होगी, वडे वडे केश और रूनी आंखे। सांइयो और साधुओ ने अङ्गरेजी फौज के भडकाने में ज्यादा भाग लिया है, इसलिये रोज को एक साई भी चाहिये।'

दीवान लक्ष्मणराव गभीर होकर वोला, 'सरकार उत्तर जल्दी भेज

दिया जाना चाहिये। दूत को शीघ्र लौटना है, क्योकि उसको कोई भी अपने घर नही ठहराना चाहेगा।

भाऊ बख्शी ने कहा, 'और रोज़ यहा से बहुत दूर भी नही है। शायद दूत के पीछे पीछे आ रहा हो।'

मोतीबाई ने पूछा, 'और यह मोतीसाई कौन सी बला है? इसका क्या उत्तर होगा?'

रानी ने हँसी को दबाकर कहा, 'मैं बतलाऊँगी।'

लक्ष्मणराव फिर बोला, 'क्या उत्तर दिया जाय?'

रानी ने और भी अधिक गंभीर होकर कहा, 'मै अकेली उत्तर देने वाली कौन होती हूँ? झासी के समग्र मुखियो को, सब जातियो के पञ्चो को जोडो। अपने सब सरदार इस समय झासी में ही हैं। वे सब और आप लोग एकमत होकर कहदे तो मै अकेली निश्शस्त्र चली जाऊँगी।'

वाक्य समाप्त होते होते रानी ने श्वास और उच्छ्वास लिये और किसी उखडते हुये भाव का कठिनता के साथ, कठोरता के साथ नियन्त्रण किया।

तुरन्त झासी के मुखिया, पञ्च, सरदार इत्यादि इकट्ठे किये गये। जो कुछ उन लोगो ने कहा उसमे महत्व की बाते ये थी।

'लडेंगे। अपनी झासी के लिये, अपनी रानी के लिये, मरेंगे।'

'हमारे पास जितना रुपया और आभूषण हैं, सब स्वराज्य की लड़ाई के लिये रानी के हाथ सकल्प है।'

'हम दिखलायेंगे कि झासी का पानी कितना स्वच्छ और कितना गहरा है।'

'आप अङ्गरेजो को उत्तर दीजिये कि झासी उन लोगो को मा की छठी के दूध की याद दिलावेगी।'

जनमत रानी के मत से मिला हुआ था ही, इस समय बहुत प्रबल हो गया। परन्तु रानी ने झासी की हुँकार को, वीणा की टङ्कार मे परिवर्तित करके भेजा। उन्होने लिखा।

मिलने के लिये क्यो बुलाया—इसका व्योरा आपने कुछ नही दिया। मिलाप के पर्दे में मुझे धोखा दिखलाई पडता है। मैं स्त्री हू। निश्शस्त्र कैसे आ सकती हू ? राज्य के दीवान और वख्शी ससैन्य आ सकते हैं।' रानी ने इस चिट्ठी पर अपने हस्ताक्षर किये।

भोपटकर से कहा, 'आपकी नीति का क्या फल हुआ ?'

उसने उत्तर दिया 'यही कि अग्रेज लोग बिना सूचना के झाँसी पर नही चढ दौडे।'

'मार्टिन को चिट्ठी लिखी थी ?'

'हा सरकार। उसने जबलपूर के कमिश्नर को और इस जनरल को अवश्य कुछ लिखा होगा।'

'फल ?'

'कुछ समय मिल गया, यही वहुत है।'

दूत को रानी की चिट्ठी देदी गई। दूत गया। उसने प्रस्थान न कर पाया होगा कि पीरअली ने रानी के पास सदेसा भेजा, सरकार की आज्ञा हो तो मैं अग्रेज छावनी की खवर ले आऊँ कि कितनी और कैसी सेना है, तथा कितनी तोपें हैं और वे लोग किस ढँग से झाँसी पर आक्रमण करेगे।'

मोतीवाई ने इन वातो का पता लगाने का सामर्थ्य तो प्रकट किया, परन्तु पीरअली के भेजे जाने पर आक्षेप नही किया। पीरअली को अनुमति मिल गई।

रानी ने मोतीवाई से कहा, 'तेरा नाम कैसे सुन्दर रूप में अग्रेजो के पास पहुचा है। मुझको कोई सन्देह नही मेरे जासूसी विभाग के सरदार को ही नाई' वना लिया गया है।'

मोतीवाई वोली, 'सरकार के सामने गाली नही निकली, परन्तु यदि उन मुँहझोंसे रोज को पा गई तो तोप, वन्दूक या तलवार से सच्चा नाम वतलाये बिना न मानूँगी।'

मैंने तो दरबार में', रानी ने कहा, 'बड़ी कठिनाई से हँसी को रोक पाया। मोतीसाई ! मोतीसाई कैसा बढ़िया नाम है।' और वह खिलखिलाकर हँस पड़ी।

मोतीबाई भी हँसते हँसते बोली, 'सरकार, मेरी चल नहीं सकती थी, नहीं तो मैं चिट्ठी के सिरनामे पर लिखवाती 'मैम साहब रोज को मोतीसाई का सलाम। चुपचाप हिन्दुस्थान को पीठ दिखाओ और अपनी विलायत में झख मारो।' जब यह चिट्ठी उसकी फौज में चर्चा पाती तब उस मुँहजले को मुँह दिखलाने में लाज आती।'

रानी गम्भीर हो गईं।

'पीरअली कल तो लौट आवेगा ?'

'यदि उसको किसी ने मार्ग में ही समाप्त न कर दिया तो।'

'आदमी तो चतुर है।'

'बहुत काइयाँ। मुझको उस पर कभी कभी अविश्वास हो जाता था, परन्तु कुछ दिनों से वह ऐसा जी लगाकर काम करता है कि सन्देह निवृत हो गया।'

'अङ्गरेजों के साथ हिन्दुस्थानी सिपाही भी हैं।'

'मैंने भी सुना है। भोपाल और हैदराबाद की रियासतों के दस्ते हैं। कुछ तिलङ्गा पल्टन हैं, बाक़ी गोरे।'

'सब कितने होंगे ?'

'सरकार ठीक ठीक पता तो नहीं। कई हजार हैं। ठीक बात पीरअली के लौटने पर मालूम होगी।'

[६५]

पीरअली इतनी तेजी के साथ गया कि उसको जनरल रोज़ का दूत मार्ग में मिल गया। उसने जनरल रोज के पास पहुँचने की प्रार्थना की। पीरअली को रोज के पास पहुँचा दिया गया। उसके पास नवाब अलीबहादुर का सन्देसा और पीरअली का नाम पहुँच चुका था। पीरअली को पाकर रोज़ प्रसन्न हुआ। पीरअली ने रोज को झासी की पक्की और कच्ची सब बाते सुनाई। स्त्रियो की सेना का सविस्तार वर्णन सुनकर रोज हैरान हो गया। हिन्दुस्थान की स्त्रिया सिपाहीगिरी का काम करती हैं। उसको विश्वास न होता था, परन्तु अलीबहादुर की चिट्ठियो से और उसने बम्बई में आते ही विप्लकारियो का जो वर्णन सुना था और उस वर्णन में रानी ने जो स्थान पाया था, उससे वह इस असम्भव बात को मानने के लिये तैयार हो गया।

रोज़ ने पूछा, 'रानी ने अङ्गरेज बच्चो और स्त्रियो का कतल करवाया ?

'हर्गिज नही,' पीरअली ने सच्चा उत्तर दिया।

रोज को मार्टिन की चिट्ठी की बात जबलपूर के कमिश्नर ने बतलाई थी, और उसने मार्टिन की चिट्ठी पर अपना अविश्वास भी प्रकट किया था। परन्तु रोज और उसके साथी अङ्गरेज रानी की निर्दोषिता को मानने के लिये तैयार ही न थे।

झासी के कुछ लोगो ने उनके बालबच्चो का वध किया था, इसलिये उनको सारी झासी और सारी भूमि से बदला लेना था। रानी झासी का सजग चिन्ह थी, इसलिये उनको दोषमुक्त कैसे माना जा सकता था ? दूत ने रानी का जो उत्तर दिया, वह शिष्ट और मधुर होते हुये भी स्पष्ट था।

रोज़ ने १७ मार्च को तालबेहट से कूच करके बेतवा पार की। पीरअली आगे किस प्रकार जनरल रोज की सहायता करेगा, यह तै हो गया और वह शीघ्र झाँसी लौट आया। रोज झाँसी की ओर सावधानी के साथ बढा। आसपास का प्रदेश दृढता के साथ अपने अधिकार में करने में उसको दो तीन दिन लग गये।

इसी समय रोज को प्रधान सेनापति कैम्बैल का आदेश मिला—'तात्या टोपे ने चरखारी के राजा को घेर लिया है। पहले चरखारी की सहायता करो।'

रोज ने आदेश का उल्लंघन किया—वह झासी के महत्व को जानता था।

उसने उत्तर दिया, 'मै आज्ञा की अवज्ञा के लिये क्षमा चाहता हूं। चरखारी का गिर पडना या खडा रहना कुछ मूल्य नही रखता। मुझको पहले झासी से निबटना है।'

चरखारी को राजभक्ति का पुरस्कार मिल गया। तात्या टोपे ने चरखारी से २४ तोपें और तीन लाख रुपये छीन लिये, और कालपी लौट आया।

पीरअली ने जो समाचार रानी के पास भिजवाया वह बहुत अनोखा न था, परन्तु उसको काफी महत्व दिया गया।

उसने बतलाया कि पल्टने अमुक-अमुक नम्बर की हैं और प्रत्येक पल्टन में इनने सिपाही। तोपो की गिनती बतलाई और प्रबन्ध की खूबी को प्रकट किया। रोज़ की कुल सेना सात हजार कूती गई।

नाना भोपटकर तक को पीरअली का विश्वास हो गया और वह रहस्य के कार्यों में शामिल किया जाने लगा। जब मोतीबाई को ही पीरअली पर सन्देह न रहा तब रानी को सन्देह हो ही क्यो सकता था?

पीरअली ने नवाब साहब के पास भाडेर समाचार भेज दिया और कहला भेजा कि अब बहुत समय तक कोई खबर न मिल सकेगी। पीरअली भयानक खेल खेल रहा था।

जिस दिन पीरअली लौटकर आया उसी दिन राहतगढ के भागे हुये लगभग पाच सौ पठान रानी के शरणार्थी हुये। रानी ने उनको नौकर रख लिया। उनके एक सरदार का नाम गुलमुहम्मद था। इन लोगो का समाचार पीरअली ने रोज को नही भेज पाया और इस बात का उसको खेद था।

रानी के पास जब ये पठान आये तब वे बडी हीन अवस्था में थे। कपडे सब फट गये थे। न जाने कितने दिन से उनको भरपेट भोजन न मिला था। अच्छे हथियार पास न थे। कुछ के पास तो सिवाय लाठी या छुरी के और कुछ न था। रानी ने उनको सब प्रकार की सुविधाये दी। उन्होने प्रण किया, 'स्वराज्य के लिये रानी के कदमो में अपने सबके सिर देगे।' इन पठानो ने अपने प्रण को जैसा निभाया उसको इतिहास जानता है और झासी की लोक परम्परा उसको नही भूली और न कभी भूलेगी।

पीरअली को कुछ पठान मिले। उसने पूछा,
'तुम्हारा कौन मुल्क है खान ?'
'झासी अमारा मुलक है बाबा, तुम्हारा मुलक ?'
'मैं झासी का ही रहने वाला हूँ।'
'तब अम तुम बाई बाई हे बाबा।,
'बाईसाहब का राज्य है खान'
'बेशक हे। और हमारा तुम्हारा बी।'

झासी नगर के कोट के सब फाटको पर बडी और छोटी तोपो का उचित प्रबन्ध कर दिया गया। बारूद और गोले फाटको की बुर्जो में इकट्ठे कर दिये गये और निरन्तर युद्ध सामग्री तथा रसद भेजने का प्रबन्ध कर दिया गया। फसीलो के छेदो मे से बन्दूको की मार का काम जिन सिपाहियो को दिया गया, उनकी तथा उनके अफसरो की उत्कृष्ट व्यवस्था करली गई। सबसे बडी बात यह हुई कि एक स्थान से दूसरे स्थान को और सब स्थानो से रानी के पास तथा उनके पास से सब स्थानो सब मोर्चो को तुरन्त समाचार और आज्ञाये भेजने का बहुत अच्छा बन्दोबस्त कर लिया गया।

ऐसा विश्वास था कि रोज दक्षिण की ओर से आ गया, इसलिये सागर-खिडकी, ओर्छा फाटक और सैयर फाटक का खास इन्तजाम किया गया।

दीवान दूल्हाजू ओर्छा फाटक पर, पीरअली सागर खिडकी पर, कुंवर खुदाबख्श सैयर फाटक पर, कुंवर सागरसिंह खडेराव फाटक पर,

पूरन कोरी उनाव फाटक पर नियुक्त किये गये। दीवान जवाहरसिंह के हाथ में सम्पूर्ण नगर और नगर के फाटको की रक्षा का भार सौंपा गया। किले में हर बुर्ज पर सब मिलाकर इक्कावन बडी बडी तोपे साजी सँभाली गईं। दक्षिणी बुर्ज की तोपे गुलाम गौसखा के सञ्चालन में, पूर्व और उत्तर की तोपे भाऊ बख्शी के हाथ में और पश्चिम की तोपे दीवान रघुनाथसिंह के अधिकार में दी गई। किले में पठान, चुने हुये बुन्देलखण्डी सैनिक और रानी की स्त्री सेना की निपुक्त कर दी गई। सब सैनिक लगभग चार हजार होगे। पानी का प्रबन्ध बहुत अच्छा न था, परन्तु सन्तोषप्रद था—किले के पश्चिमी भाग में—शकरगढ में जहा महादेव जी का मन्दिर है—एक कुआँ था उसी से सारी सेना को पानी पिलाने के लिये ब्राह्मण नियुक्त कर दिये गये।

चैत की अमावस हो गई। नवरात्र का आरम्भ हुआ। किले में गौर की स्थापना हुई। रानी ने धूमधाम के साथ सिन्दूरोत्सव मनाया। गौर के सामने चादी ही चादी के बर्तनो की तडक भडक और मन्दिर के बाहर सबके लिये भीगे चने और बताशो का प्रसाद। नगर की स्त्रिया सजधज के साथ उत्सव में शरीक हुई।

फूलो की सुन्दरता और सुगन्धि से महादेव जी का मन्दिर भर गया। स्त्रिया थोडी देर के लिये आने वाली विपत्ति को भूल गई। वे अहने किले में थी, अपनी हँसती-मुस्कराती रानी के पास। उनकी तोपे, उनके गोलन्दाज, उनके सिपाही आसपास और अपनी रक्षा का पुख्ता हौसला अपने म१ में। फिर किस बात की चिन्ता थी?

महादेव जी के मन्दिर के समीप पलाश का एक वृक्ष था। उसमें इन दिनो प्रति वर्ष बडे बडे लाल फूल लगते थे और तीक्ष्ण ग्रीष्म ऋतु में उसके हरे चिकने बडे पत्ते छाया दिया करते थे। जङ्गल का अवशेष और स्मारक, महादेव के मन्दिर का अकेला पडौसी-वह वृक्ष काटने से बचा दिया गया था। नवरात्र में वह पलाश लाल फूलो से गस गया। स्त्रिया फूलो की एक एक माला उसकी भी डालो को पहिना दे रही थी।

मानो सौन्दर्य को सुगन्धि प्रदान की गई हो। लाल फूलो पर बेला, चमेली, गेंदा और जूही की-रगबिरंगी मालाएँ ऐसी लगती थी जैसे प्रभात के समय ऊषा की किरणो ने गुलाल बिखेर दी हो। इस वृक्ष के नीचे कुआ था और कुएँ के ऊपर एक बारहदरी। इस बारहदरी की रक्षा के लिये ऊँचा परकोटा था। इसके पूर्व में बहुत ऊँचाई पर किले की पश्चिमी बुर्ज और उसके पीछे ज़रा दूर महल।

पूजन के पश्चात स्त्रिया पलाश के वृक्ष के पास से सीढियो द्वारा बारहदारी में इकट्ठी हो हो जा रही थी। रानी वही थी, । वही सिन्दूरोत्सव हो रहा था—हल्दी कूँ कूँ। रानी विधवा थी, इसलिये वह स्वयं सिन्दूर नही दे रही थी, परन्तु वहा भाऊ बख्शी की पत्नी थी और भी अनेक सधवाये थी, जो आपस मे सिन्दूर दे रही थी और किसी न किसी बहाने एक दूसरे के पति का नाम लिवाने का हँस हस कर प्रयत्न कर रही थी।

मोतीबाई ने भाऊ बख्शी की पत्नी से कहा, 'तुम अपने देवर को क्या कहकर पुकारोगी ?'

बख्शिन—मेरे देवर हैं ही नही।

मोतीबाई—'होता, तो बख्शिनजू उसको कैसे पुकारती?'

बख्शिन—'लाला कहती।'

रानी—'और बुन्देलखण्ड में लाला के लिये दूसरा शब्द क्या है ?'

बख्शिन—'सरकार, भउआ।'

सब हँस पडी।

बख्शिन ने क्रोध में मुद्रा बनाकर कहा, 'महारानी साहब की सहायता से हरा लिया, नही तो मै इतना छकाती कि ये सब याद करती।'

रानी बोली, 'तुम इन सबके लिये अकेली ही बहुत हो।'

बख्शिन मोतीबाई के पीछे पड गई। उसे पकड़कर अकेले में ले गई।

बख्शिन—'बतलाओ भगवान का दूसरा नाम क्या है ?'

मोतीबाई—'राम, कृष्ण, मुरारी, परमात्मा, अल्लाह।'

बख्शिन—'और, और ?'

मोतीबाई—'दयासागर, परविरदिगार, रहीम.......'

बख्शिन—'मैं तुम्हारा मुँह मीड दूँगी। बतलाओ वह नाम जिसको मुसलमान लोग दिनरात जपते हैं, नही तो तुम्हारी गत बनाऊँगी।'

मोतीबाई ने धीरे से कहा, 'खुदा।'

बख्शिन ने उसका सिर पकडकर कन्धे से लगा लिया।

बोली, खुदा से दूर हो या उसके पास ?'

मोतीबाई ने उत्तर दिया, 'दूर हूँ दीदी। यदि अच्छे दिन आये तो ब्याह करूंगी।'

रानी के सामने आने को थी कि मोतीबाई ने बख्शिन से कहा, जूही से कुछ मत पूछना। वह सरदार तात्या टोपे को प्राण दिये बैठी है, पर उन्होने आज तक प्यार की दो बाते भी उससे नही की।'

'नही पूछूगी', बख्शिन ने आश्वासन दिया। रानी समझ लिया। छेडछाड नही की।

झलकारी नही आई थी। रानी ने उसको बुलवाया। उसने आते ही रानी के पैर पकड लिये।

रानी ने कहा, 'मैंने इसके लिये नही बुलाया था। तू हरसाल आती थी। इस साल अब तक क्यो नही आई ?'

'सरकार', झलकारी ने उत्तर दिया,'मोसें अपराध हो गओ हतो।'

रानी बोली,'कोई अपराध नही हुआ।'

झलकारी—'बछिया घायल तौ हो गई ती।'

रानी—'हो गई होगी। मरी तो नही—बच गई।'

झलकारी—'सरकार ने मोय और मोरे आदमी खों बचा लओ, नई तर कऊं ठिकानो न हतो।'

रानी—'तुम्हारे आदमी का नाम भूल गई उसको क्या कहते है ?'

झलकारी—'ऊँ ..ऊँ...।'

रानी—'ऊँ ऊँ भी कोई नाम होता है ?'

बख्शिन ने कहा,'सरकार, ईससे बुन्देलखण्डी बोली में बोले।'

मोतीबाई ने आग्रह किया, सरकार के मुँह से यहां की बोली बहुत अच्छी लगती है।'

जूही ने अनुरोध किया।

सुन्दर, मुन्दर और काशीबाई भी पीछे पड गईं।

मुन्दर बोली, 'सरकार बुन्देलखण्डी में बोले तो यह अवश्य अपने पति का नाम बतला देगी। बतलाओगी न झलकारी ? बतला देना भला, नही तो हम लोगो की बात बिगड जायगी।'

झलकारी ने उस बारहदरी के वातावरण को परिहास, सौन्दर्य, सुगन्धि और आग्रह से भरा पाया—उसने हामी का सिर झुकाया।

रानी ने कहा,'तोरे घर वारे को का नाम्रो झलकारी ?'

झलकारी—'हम्रो ऐसे सूदऊँ बताम्रो जात कऊँ ?'

रानी—'तौ कैसे बताये पनमेसरी ?'

झलकारी—'मोए कौनऊँ धोको देम्रो। जैसे एक बेर पूँछी हती तैसें पूँछो अपुन।'

रानी—'आज कौन मिती है ?'

झलकारी—'पाचें महाराज।'

रानी—'दस दिन पाछें का हुइये ?'

झलकारी—'पूनें।'

रानी हँस पडी। उन्होने फूलो की एक माला झलकारी के गले में डाली। सिर पर हाथ फेरा।

विनोद की समाप्ति पर सब स्त्रिया महादेव के मन्दिर के पास उतर आईं। उतरती जाती थी और पलाश के पेड को हिलाती जाती थी। उसके लाल फूल मालाओ समेत झूम झूम जाते थे।

महादेव का मन्दिर छोटा सा है और आसपास का आगन भी सकरा ही है, परन्तु उसमें बहुत स्त्रिया इकट्ठी थी।

चहल पहल को बन्द करके रानी ने स्त्रियो से कहा,'दो चार दिन के भीतर ही अपनी झासी के ऊपर गोरो का प्रहार होने वाला है। तुममें

से अनेक युद्ध विद्या सीख गई हो। जो जिस कार्य को कर सके वह उस कार्य को हाथ मे ले। लडने वालो के पास गोला, बारूद, खाना पानी इत्यादि ठीक समय पर पहुँचता रहना चाहिये। आवश्यकता पडने पर हथियार भी चलाना पडेगा। तुममें से कोई मेरी बहिन के बराबर हो, कोई माता के समान। अपने बाप की, अपने ससुर की, अपने पति की अपने भाई की लाज तुम्हारे हाथ है। ऐसे काम करना जिसमें अपने पुरखो को कीर्ति मिले। मैंने नगर का प्रबन्ध कर दिया है। तुम्हारी आवश्यकता मुझको किले में है। मेरे साथ रहना। बीच बीच में छुट्टी मिल जाया करेगी, तब घर हो आया करो।'

झलकारी बोली, 'मैं सरकार अपने आदमी के पासइ रैहो। अपुन ने उनाव, फाटक की तोप उनखो सौंपी है।'

रानी ने मुस्कराकर कहा, 'ऐसोइ हुइहै झलकारी। अपने आदमी के पास रइयो, पै ऊको नाम्रो तो बताओ।'

झलकारी घू घट काढ कर बोली, 'हू—अबइँ तो बताओ तो।'

सब स्त्रिया हँस पडी।

रानी ने कहा, 'अब एक बार सब भगवान का नाम लो, 'हर हर महादेव।'

सब स्त्रियो के कंठ से ध्वनित हुआ, 'हर हर महादेव।'

उन कोयल, किन्तु दृढ कठो का वह निनाद किले की कठोर दीवालो से जा टकराया। उसकी झाई महादेव के मन्दिर में लौट पड़ी। हुआ 'हर हर महादेव' अनन्त दिशाओ में, अनन्त काल में वह अनन्त, अमर नाद समा गया। महल के पास सिपाहियो के कोठे थे। उनमें नवागन्तुक पठान भी थे। हल्ले को सुनकर हथियार लेकर बाहर निकल आये। बुन्देलखण्डी सिपाहियो ने उस हल्ले का उनको सविस्तार अर्थ समझाया।

उनका अगुआ गुलमुहम्मद बोला, 'बाई जहां की औरत लडने को ऐसा तयार है, वहा का मरद तो आसपास को चक्कर खिला देगा। और अम लोग–अम लोग—खुदाकसम—इस मुलक के लिये सब मर मिटेगा। वकत आने दो, बाई वक़्त!' पठानो ने दात मीसकर मन ही मन प्रण किया।

[६७]

जनरल रोज़ ससैन्य २० मार्च के सबेरे झासी के पूर्व दक्षिण कामासिन देवी की टौरिया के पीछे, झासी से लगभग तीन मील के फासले पर आ गया। थोडी देर में तम्बू तन गये। इन तम्बुओ को रानी ने किले के महल की छत पर से दूरबीन द्वारा देखा। झासी भर में सनसनी फैल गई, परन्तु वह सनसनी भय की न थी, उत्साह की थी।

किले के गोलन्दाजो ने भी दूरबीन लगाई। तोपो पर पलीते डालने के लिये हाथ सुरसुरा उठे, परन्तु उस समय की तोपो के लिये अच्छा निशाना मारने के प्रसङ्ग में तीन मील का फासला बहुत था। स्त्री गोलन्दाजो ने भी दूरबीन पकडी।

मोतीबाई ने उमग के साथ रानी से का, 'सवारो का हमला कर दिया जाय तो सब तम्बू कनातें तितर बितर हो जायँ।'

रानी बोली, 'समझ से काम लो। इन तम्बुओ के बीच में अगल बगल और आगे पीछे तोपें लगी होगी। एक सवार भी लौट कर न आ सकेगा। लडाई किले और परकोटे के भीतर से लडनी पडेगी। घिर जायँगे। परन्तु एक तात्या टोपे राव साहब की सेना लेकर आजावेगे। तब रोज़ की सेना पर दुहरी मार पडेगी।'

'राव साहब के पास सदेशा भिजवा दिया गया?'

'आज ही भेजती हू।'

'पीरअली के हाथ न भेजा जाय। न जाने मन क्यो नही बोलता।'

'सोचती हूँ किसको भेजूँ।' रानी ने कुछ क्षण सोचकर कहा, 'तू बतला मोती किसको भेजूँ।'

मोतीबाई बोली, जो नाम मन में उठते हैं, वे सब किसी न किसी काम पर लिख लिये गये हैं। मैं सोचती हू जूही को सवार के साथ भेज दिया जाय।'

'वह सुकुमार है, कोमल है,' रानी ने कहा।

मोतीबाई ने सतृष्ण नेत्रो से रानी की ओर देखा। बोली,'सरकार संसार की जितनी मंजुलता, है वह हमारे मालिक में निहित है,। उनसे बढ़कर कोई नही। इतनी मृदुल होते हुये भी वे फौलाद से भी बढकर कठोर हैं। तब उनकी चाकरनी क्या सवाद वाहक का भी काम न कर सकेगी ? और फिर वह दृढ भी काफी है। इस कार्य मे उसका मन लगेगा। उसीको भेजने की अनुमति दी जाय। उसको तुरन्त शहर छोड देना चाहिये। अङ्गरेज लोग शीघ्र घेरा डालेगे। सब फाटक बन्द होने ही वाले हैं। फिर कोई भी न आ–जा सकेगा।'

रानी ने स्वीकृति दे दी।

'कहा,'मैं जूही को भेजने की अनुमतिदेती हू। उसके साथ काशी को भेजना चाहती हूँ। तुमको उसके साथ कर देती, परन्तु तुम्हारी यहा अधिक आवश्यकता पडेगी।'

रानी ने काशी और जूही को उसी समय कालपी के लिये रवाना कर दिया उन दोनो के घोडे अच्छे थे। जरूरी सामान साथ था। दोनो सशत्र युवा के वेश में गईं।

काशीबाई और जूही के चले जाने पर नगर के सब फाटक बन्द कर लिये गये।

झासी की—अनेक स्त्रियो ने उसी दिन रानी के पास सैतिक वेश मे अपना निवास बनाया। ये ही स्त्रिया जो घर पर बात में चबड चबड किया करती थी, ज़रा सा कारण पाने पर परस्पर लड बैठती थी, सध्या के समय वस्त्राभूषणो और फूलो से सुसज्जित होकर, थालो में दिये रख रख कर, मन्दिरो मे पूजन के लिये जाती थी, वे ही स्त्रिया सैनिक वेश में, तलवार बाधे और बन्दूक कन्धे पर साधे, चुपचाप अपना अपना कर्तव्य पालन करने मे निरत हो गईं। उनका शृङ्गार और वाक् युद्ध—सब—तलवार के म्यान में समा गया। लोगो की कल्पना थी कि अङ्गरेज रात को झासी पर हमला करेगे। झासी सचेत थी, परन्तु रात को हमला नही हुआ।

२१ मार्च को जनरल रोज़ ने अपने मातहत दलपतियो के साथ दूर से झासी का चक्कर क टा और भूमि का सूक्ष्म निरीक्षण किया। आक्रमण और रक्षा के स्थान में सेना की टुकडिया और तोपे लगा दी। शहर और किले के भीतर के लोगो को जिन जिन मार्गों से सहायता या रसद मिल सकती थी उन सबको उसने अपने अधीन कर लिया। शहर के सब फाटको की नाकेबन्दी करली। उसी दिन चन्देरी से ब्रिगेडियर स्टुअर्ट अपने दस्ते के साथ लौट आया। रोज़ को और बल मिला।

जहा जहा अङ्गरेज फौज के दल लगाये गये थे वहा वहा उनकी रक्षा के लिये खाइया खोद ली गई। एक स्थान से दूसरे स्थान तक तार लगा दिया गया। कामासिन टौरिया पर एक बडी दूरबीन लगाई गई और तार घर क़ायम किया गया। बात की बात में युद्धक्षेत्र के एक स्थल से दूसरे स्थल को समाचार भेजने की पूरी सुविधा हो गई, और दूरबीन से देखने योग्य किले का सब हाल मालूम करना भी सुलभ कर लिया गया।

झासी के आसपास की सब टौरियो की आड से अङ्गरेजी तोपखाने मृत्यु वमन करने के लिये वैज्ञानिक तौर पर सन्नद्ध हो गये और टौरियो के बीच बीच मे जो नीची जगह और खाइया थी उनमें बन्दूक चलाने के लिये छेद और नालिया बनाकर, सैनिक अपने जनरल की आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगे। रोज जैसा योग्य सेनापति था, सेना उसकी उतनी ही सीखी सिखाई हिंसामय और अनुभवी थी।

दूसरे दिन (२२ मार्च को) रोज के बीस पच्चीस घुडसवार निरीक्षण के लिये कोट के कुछ अधिक निकट आ गये। सैयर फाटक के पास दाहनी ओर जहा ऊँची मटीली टौरिया कोट के बाहर और भीतर हैं। यहा से उन घुडसवारो के ऊपर तडातड गोलियो की वर्षा हुई। मरा तो उनमें से कोई नही, परन्तु घायल अनेक हो गये। रोज को तुरन्त समाचार मिल गया। उसने समझ लिया कि झाँसी करीं मुक़ाबिला करने के लिये तैयार है। रोज ने उसी दिन झाँसी पर धावा नही बोला। अपने सम्पूर्ण साधनो

और उपकरणो का फिर से निरीक्षण किया जहां जो त्रुटि पाई उसको सभाला।

मंगलवार (२३ मार्च) को रोज ने हमले की आज्ञा दी। युद्ध आरम्भ हो गया।

सैयर–फाटक की बाईं तरफ एक टेक पर अङ्गरेजो का तोपखाना था। वहा से सैयर–फाटक और ओर्छा–फाटक पर तथा उन फाटको के बीच की दीवार पर गोलो की बरसा हुई। चलते हुये गोलो की चादर के नीचे गोरी पल्टन सगीनी बन्दूके लिये दीगक की तरह चली। खुदाबख्श और दूल्हाजू ने उनको बढने दिया। जब मार के काफी भीतर आ गये तब उन्होने कहर को मानो उढ़ेल दिया। गोरी पल्टन धरती में बिछ गई और फिर खुदाबख्श ने टेक के तोपखाने को अपना लक्ष्य बनाया। अङ्गरेज़ तोपची मारे गये और तोपो का मुँह बन्द हो गया। तोपखाने के पीछे वाली सेना पीछे को भागी। उसके ऊपर गुलामगोस ने 'घनगरज' की मार फेकी। मुश्किल से कुछ आदमी बचकर रोज के पास तक पहुँच पाये। पूर्व की ओर से भी सागर–खिडकी और लक्ष्मी–फाटक पर हमला होता हुआ दिखा, परन्तु उसकी गति धीमी थी—लक्ष्मीताल के दक्षिणी सिरे का छोटा सा चक्कर देना पडा, परन्तु भाऊ बख्शी की 'कड़कबिजली' ने पूर्व का मोर्चा ऐसा साध रक्खा था कि पूर्व की ओर से आक्रमण करने की रोज को साध मनमें ही समा गई।

रोज ने किले के दक्षिण में, जीवनशाह की टौरिया के ठीक बगल में—पूर्व की ओर—किले से तीन सौ गज के फासले पर मोर्चा बनाया, परन्तु इस मोर्चे के बनाने में उसको काफी समय और आदमी खर्च करने पडे। सध्या तक वह बहुत कम काम कर पाया। रात मे मोर्चा बनकर तैयार हो गया। इसके सिवाय रोज ने इस मोर्चे की सहायता के लिये तीन नये मोर्चे और बनाये।

[६८]

झांसी के तोपची और सिपाही रात भर जागते रहे। रानी ने दुहरी कुमुक का प्रबन्ध किया। दिन में अपनी अपनी जगह पर गुलाम गौस, खुदाबख्श, रघुनाथसिंह, भाऊ बख्शी, दूल्हाजू, पूरन और सागरसिंह, रात में उनके स्थानापन्न, रानी के स्त्री गोलन्दाज।

परन्तु यह बदली सुबह होते ही नही हुई। स्त्रिया इन गोलन्दाजो के पास पहुँच गई और काम में मदद करती रही। दोपहर के उपरान्त बदली होनी थी।

गुलाम गौस रात भर का जागा था, जो स्त्री उसके पास काम कर रही थी, उससे गौस का मन नही भर रहा था। उसने उसके बदले में लालता ब्राह्मण को मागा। रानी ने लालता को भेज दिया। लालता के आते ही गौस की खुमारी चली गई।

गौस ने उससे कहा, 'रानी साहब की स्त्री-गोलन्दाज़ चपल बहुत हैं, मुझको ठण्डा आदमी चाहिये जो काम करने के समय गाता न हो।'

लालता हँसकर बोला, 'कभी कभी आल्हा गाते गाते तो मै भी काम करता हू खा साहब।'

'तब वह गीत याद रखना पण्डित जी', गौस ने कहा जननी जनम दियो है तोखो बस आजहि के लानें।'

लालता ने फसील के छेद में होकर देखा कि जीवनशाह की पहाड़ी की आड में होकर बगल वाली टौरियो के पीछे कुछ तोपे और चढाई जा रही हैं। गुलाम गौस ने भी देखा।

गौस की आख एक पल के लिये गीध की आख की तरह सधी।

बोला, 'पडित जी, एक लोटा जल पिलाओ और मेरी घनगरज तोप और उसकी छोटी बहिनो का काम देखो। मै बारह बजे छुट्टी लूँगा। खुदा ने चाहा तो खाना-वाना खाने के बाद शाम को मिलूँगा। फिर रात को सोऊँगा। हा तो एक बार वह गीत तो मन से गादो। एक सतर से ज्यादा नही।

ललता ने स्वर में गाया, 'जननी जनम दियो है तोखो बस आजहि के लानै।' गीत की समाप्ति हुई कि गौस ने तोपखाने को पलीता छुलाया 'घनगरज और उसकी छोटी बहिनो' ने इतनी जोर की गरज की कि जिमीन कॉप गई। दक्षिणी सिरे की सब बुर्जो से एक एक क्षण के बाद बाढ दगना शुरू हो गई। तोपो के भरने का उत्कृष्ट प्रबन्ध था। एक तोपखाने की बाढ और दूसरे की बाढ के दगने मे थोडा ही अन्तर पडता था। रोज के तोपखानो ने ज़वाब दिया, परन्तु जवाब कमजोर था। गौस के तोपखानो ने ऐसी मार बरसाई कि रोज़ का दम फूल उठा। उसका दक्षिणी दस्ता नष्ट भ्रष्ट हो गया। कुछ तोपखाने वन्द हो गये, परन्तु एक तोपख़ाना कोलाहल कर रहा था। समय लगभग दोपहर का हो गया था।

गुलाम गौस ने कहा 'मुझे भूख लग रही है और गोरो का यह तोपख़ाना मानता नही। अच्छा देखता हूँ।'

गुलाम गौस ने 'घनगरज' को एक अंगुल इधर उधर सरकाया। निशाना बाधा और एक फटने वाला गोला छोडा।

बारूदे इन तोपो की ऐसी थी कि धुआ न होता था, इसलिये गौस ने अपने निशाने की सफलता तुरन्त देखली। उछल कर बोला, 'वह मारा।' उसके साथियो ने देखा कि गोरे तोपची मारे गये और तोप भी उलट कर बेकार हो गई।

अङ्गरेजो का दक्षिणी मोर्चा बिलकुल ठन्डा हो गया। गौस भोजन और आराम के लिये चला गया। लालता ने स्थान पकडा।

पूर्व की ओर से अङ्गरेजी तोपो के गोले आने लगे। कुछ किले से टकराते थे और कुछ शहर में गिरकर घरो का और लोगो का नाश करते थे। भाऊ बख्शी ने कडकबिजली का स्थान ज़रासा परिवर्तित किया और निशाना साधकर पलीता दिया। थोडी देर में रोज का पूर्वीय मोर्चा भी ठडा हो गया। तोपची मारे गये और तोपे बेकार हो गई। बख्शी अपनी पत्नी को तोपख़ाना सौप कर भोजन और आराम के लिये चला गया।

सुन्दर ने रघुनाथसिंह की जगह ली। सुन्दर ने दूल्हाजू की, मोतीबाई ने खुदाबख्श की। दीवान जवाहरसिंह को थोडी देर के लिये छुट्टी देदी गई। रानी घोडे पर सवार होकर शहर के सब मोर्चों को देखने और सँभालने के लिये चली गई। तीसरे पहर के अन्त में लौट आईं। जवाहरसिंह फिर अपने काम पर डट गया।

चौथे पहर से लेकर सन्ध्या तक स्त्री तोपचियो ने दृढतापूर्वक काम किया। रात को भी उन्ही को काम पर रहना था। केवल खडेराव फाटक और सागर खिडकी पर स्त्रिया काम नही कर रही थी। खडेराव फाटक पर सागरसिंह ने अपना नायब स्वय चुन लिया और सागर खिडकी पर बरहामुद्दीन नामका एक बुन्देलखडी पठान भेज दिवा गया।

इसका आना पीरअली को अच्छा नही लगा।

पीरअली ने कहा, 'खासाहब आपको नाहक कष्ट दिया गया। मैं तो दिन रात इस छोटी सी खिडकी को सँभालने को तैयार हूँ।'

'मीरसाहब,' बरहामुद्दीन बोला, 'आप थोडा आराम करले, रात भर के जागे हुये हैं।'

'गई रात तो सभी जागे हैं। आप भी तो न सोये होगे?'

'हुकुम है। पालन करना होगा।'

'ऐसा भी क्या! अरे साहब सोइये। कल रहियेगा मेरी मदद पर।'

'नही, जनरल साहब सुनेगे तो नाराज़ होगे। और रानी साहब सुनेंगी तो मैं अपना मुँह ही न दिखा सकूँगा।'

'तो रह जाइये, मगर एक बात है—किसी को मालूम न हो।'

'मुझे किस्से कहानी कहते फिरने से मतलब ही क्या?'

'बात ऐसी है कि अगर फूटकर बाहर निकल जाय तो मेरे टुकडे हो जायँगे।'

'आप कहिये। विश्वास करिये।'

अङ्गरेजी छावनी में क्या हो रहा है, क्या होने वाला है, कहा कहा नए मोर्चे बनाये गये और किस तरह से हमला जोर का होगा इन बातो की

जासूसी करने का भार मेरे सिर है। अङ्गरेज़ी छावनी में भोपाल रियासत के भी सिपाही हैं। उनमें से एक मेरा रिश्तेदार है। जब मैं थोड़े दिन हुए तालबेहट की ओर गया था तब उसको मैने मिला लिया था। वह कुछ और लोगो से मिला हुआ है, इसलिये ठीक ठीक खबर मिल जायगी। वह खबर अपने बड़े काम की होगी। इस खबर के लाने के लिये मैं रात को चुपचाप बाहर जाऊँगा। सबेरे के बहुत पहले आ जाऊँगा। यदि अङ्गरेजो को खबर लग गई, तो मै मार दिया जाऊँगा और अङ्गरज़ी फौज में मेरा जो रिश्तेदार है, वह, और उसके साथी, सब मारे जायगे। रानी साहब का नुकसान होगा।'

'मैं किसी से न कहूँगा, मगर मै चला जाऊँ या सो जाऊँ तो आपके ठौर खाली हो जायगा। फिर यदि दुश्मन यहा होकर रात में धावा बोलदे तो अपना किनना वडा नुकसान न होगा ?'

'यह तो छोटी सी खिडकी है। इसकी खबर भी अङ्गरेजो को न होगी।'

'जैसा आप उचित समझे। मैं सोचता हूँ, हर हालत मे मरा इस ठिये पर रहना आपके लिये लाभ दायक होगा।'

'खूब। आप रहिये। मगर जब सब लोग सो जायगे तब मैं जाऊगा।'

'लेकिन फाटक नही खोलना चाहिये।'

'फाटक पर ताले पड़े हैं। मै मुहरी के रास्ते जाऊगा।'

'मुहरी। कौन सी मुहरी ?'

'वही जो खिडकी के बगल मे है ?

जब सब सो गये पीरअली ने बरहामुद्दीन को मौहरी दिखलाई और उसी में होकर बाहर चला गया।

आध मील चलने के उपरान्त वह अङ्गरेज़ी छावनी के पास पहुँचा। टोका गया। उसने-पूर्व निश्चित सकेत को कहा। सन्त्री ने आगे बढने दिया। कई अड्डो पर रोका जाने और अनुमति पाने पर पीरअली रोज़ और उसके मातहत दलनायको के सामने पहुँचा, दुभाषिये के द्वारा तुरन्त बातचीत हुई।

रोज़— किले में से जो गोलाबारी हुई,उसका प्रधान नायक कौन है?'

पीरअली—'गुलाम गोसखा और भाऊ बख्शी।'

रोज़ ने बागियों का रजिस्टर लौटवाया, पलटवाया। उसमें ये नाम न थे।

रोज़—'ये लोग कौन है?'

पीरअली—'रानी साहब के नौकर हैं।'

रोज—'ओर्छा फाटक और सैयर फाटक पर कौन हैं?'

पीरअली—'दीवान दूल्हाजू ओर्छा फाटक पर है और कुंवर खुदाबख्श सैयर फाटक पर।'

फिर रजिस्टर देखा गया। ये नाम भी न निकले।

रोज़—'कोई लालता ब्राह्मण है?'

पीरअली—'है, किले में है।'

रोज़ ने दात पीसे।

बोला, 'जनरल कौन है?'

पीरअली—'खुद रानी साहब। उनके नीचे दीवान जवाहरसिंह जागीरदार काम करते हैं।'

रोज़—'कुल कितने गोलन्दाज हैं?'

पीरअली—'बेहिसाब। सैंकडो। बहुत तो औरतें गोलन्दाज हैं।'

रोज़—'बाई जोव! स्टुअर्ट, यह झासी तो महज नरक (हैल) है। औरते गोलन्दाज! कल दूरबीन से अच्छी तरह देखूँगा।'

स्टुअर्ट—'बारूद बनाने का कोई कारखाना है या पहले से बनी रक्खी हैं?'

पीरअली—'पहले की बनी रखी है और बनाने का कारखाना भी है।'

रोज—'इट इज स्मोक लैस पाउडर स्टुअर्ट (धुआ न देने वाली बारूद है!) उत्तरी दरवाजे किसके सुपुर्द हैं?'

पीरअली—ठाकुरो, काछियो और कोरियो के हाथ में। दतिया-फाटक तेलियो के हाथ में है।'

रोज़—'दी होल पीपुल एगेन्स्ट अस (पूरी जनता हमारे खिलाफ है) अच्छा तुम किस जगह काम करते हो ?'

पीरअली—'सागर खिडकी पर।'

रोज़—'हमारे हवाले कर सकोगे !'

पीरअली—'खुशी से, मगर आपको फायदा कुछ न होगा। सागर खिडकी की ठीक पीठ पर खजाञ्ची की कोठी है। उस पर तोपखाना है। वह मेरे कावू का नही है। वहां पठान और ठाकुर हैं।'

रोज—'कोई औरतें हाथ में आ सकती है ?'

पीरअली—'तोबा, तोबा झासी की औरते पूरी शैतान हैं। एक नाचने गाने वाली मेरी जान पहिचान की है, मगर वह जासूसी मुहकमें की प्रधान है और अब तोप चलाती है !'

रोज़—'डैन्सिग गर्ल ए गनर ! (नाचने वाली गोलन्दाज़ !) व्हाट एल्स हैव आई टु हियर इन दिस डैम्ड् एकर्सैड प्लेस (इस सत्यानासी पलीत जगह में मुझको अब और क्या सुनना बाकी रह गया है ?)।

स्टुअर्ट—'मगर जासूसी मुहकमें का अफसर तो एक मोतीसाई सुना गया था ?'

पीरअली—'जी नही वह अफसर यही नाचने वाली है और उसका नाम मोतीवाई है।'

वे सब हँस पडे।

रोज़ ने कहा, 'वी हैव मैड फूल्स् आव अस ! (हम लोग वेवकूफ बन गये।) अच्छा, किसी एक फाटक वाले से हमको मिलादो। तुमको और उसको बहुत इनाम मिलेगा।'

पीरअली—'कोशिश करूंगा।'

रोज—तुम बतला सकते हो शहर और किले पर हमरी तोप का गोला कहा से अच्छा पड़ेगा ?'

पीरअली—'जार पहाडी पर से।'

रोज़—'ओ सिली! (मूर्ख) जार पहाडी से किले का बहुत कम नुकसान होगा।'

पीरअली—'जी नही। किले की पश्चमी दीवाल जो मटीली टौरया पर है बहुत कम ऊँची है। उसको दाहिनी बगल में शकरगढ किले का उत्तर पश्चिम हिस्सा है। इसी में पानी पीने का कुआ और रानी साहब के पूजन का मन्दिर है। तमाम औरते जो सिपाहगीरी का काम करती हैं, इसी जगह दुपहरी या शाम को जमा होती हैं। इस जगह के तोड़ने से किला हाथ में आ जावेगा और शहर की एक इमारत न बचेगी।'

रोज़—'और उत्तर की ओर से?'

पीरअली—'उनाव फाटक और भाडेरी फाटक की सीध में मटीले टेकडे हैं, जिनकी वजह से आपका तोपखाना कामयाब न हो सकेगा।

रोज—'अच्छा, तुम हमको दक्षिण तरफ का कोई फाटक वाल मिला दो।'

पीरअली—मैंने अर्ज की न—कोशिश करूंगा।'

रोज ने पीरअली को धन्यवाद देकर वापिस किया।

पीरअली जब सागर खिडकी पर वापिस आया, उसने बरहामुद्दीन को सावधान पाया।

पीरअली ने कहा,'खुदा खुदा करके लौट पाया हू। आज बहुत थोडा भेद मिल पाया है। कल मौका मिलते ही फिर जाऊँगा।'

बरहामुद्दीन ने पूछा, 'आज़ कुछ मालूम हो पाया या इतनी मिहनत सब बेकार गई?'

'बेकार तो नही गई,' पीरअली ने उत्तर दिया, 'यह मालूम कर लाया हूँ कि एक भी तोप या तोपखाना हिन्दुस्थानी सिपाही के हाथ में नही है। सब तोपे अङ्गरेजो ने अपने काबू मे रख छोडी हैं।'

'इतना तो मुझको भी मालूम है कि अङ्गरेजो ने हिन्दुस्थानियो का भरोसा करना बिलकुल छोड दिया है।'

'इस पर भी गोरो के साथ भोपाल, हैदराबाद और ओर्छा रियासत के दस्ते हैं और मदरास उत्तर की काली पल्टन भी।'

'ओर्छा रि ासत का दस्ता उत्तर की ओर अञ्जनी की टौरिया पर तैनात है।'

'तुमको कैसे मालूम ?'

'किले में चर्चा थी। रानी साहब के जासूसो ने खबर दी होगी।'

पीरअली ने सोचा, 'बरहामुद्दीन चतुर मालूम होता है; सावधान होकर काम करना चाहिये।'

[६९]

उसी रात रोज़ ने सतर्कता के साथ जार पहाडी पर तोपखानो के मोर्चे बाधे। सुबह होते ही तोपो के मुहरे ठीक किये, निशान साधे। तोपो पर पलीते पडे और शहर का विध्वन्स आरम्भ हो गया। लोग बेहिसाब मरने और घायल होने लगे। आगे, लगी बाजार बन्द रहे। साधारण जनता भूखो प्यासो मरने लगी। शहर में हाहाकार मच गया झासी की गलिया वीरान दिखने लगी। किले की पश्चिम दीवार में सूराख़ हो उठे।

शहर का हाल जानकर रानी दुखी हुई। तुरन्त सवार होकर किले से उतरी और बरसते हुये गोलो में होकर प्रत्येक मुहल्ले को उत्साह दान किया। आग बुझाने का बहुत अच्छा प्रबन्ध किया। अन्नक्षेत्र और सदार्वत कायम किये। तब किले को लौटी।

लौटते ही ग़ुलाम गौस के पास पहुँची। उसने भक्ति पूर्वक प्रणाम किया।

'खा साहब, आज पश्चिम की ओर कोई नया मोर्चा बना है। इसका निरोध होना ही चाहिये,' रानी ने कहा. 'चौथाई नगर बरबाद हो गया है। कल न जाने क्या गत होगी।'

'दक्षिणी मोर्चे का सरकार इन्तजाम करदें,' गौस ने निवेदन किया, मैं अङ्गरेजो के उस मोर्चे को देख लूँगा।'

रानी ने कहा में मोतीबाई को भेजती हू।'

गौस बोला, वह कमाल की गोलन्दाज है सरकार, मगर इस मोर्चे को न सँभाल पावेगी। अङ्गरेज लोग दक्षिण के सिवाय और किसी ओर से नही आ सकते।'

रानी ने पूछा, 'तुम्हारा ऐसा विचार क्यो है ?'

'हुजूर' गौस ने उत्तर दिया, इसी दिशा से किला अत्यन्त निकट पडता है।'

रानी ने कहा, 'बख्शिन को यहा भेज दू ?'

'भेज दीजिये सरकार,' गौस ने सहर्ष स्वीकार किया, 'वह बड़े खानदान की है।'

रानी की त्योरी बदली, परन्तु उन्होने तुरन्त नियन्त्रण किया। सोचा, 'आत्म त्याग में वह वेश्या-पुत्री किस खानदान वाले से कम है? हे भगवान्, त्याग में भी ऊँचनीच!' और चली गई।

बख्शिन ने दक्षिण बुर्ज की 'घनगरज' और उसकी 'छोटी वहिन' को सँभाला। वह गौस के बतलाये हुये क्रम पर काम करती रही।

गुलाम गौस तुरन्त पश्चिमी बुर्ज पर पहुँचा। यहा लालता काम कर रहा था। गौस ने बारीकी के साथ दूरबीन द्वारा निरीक्षण किया।

बोला, 'पण्डित जी अङ्गरेजो का मोर्चा पहिचाना?'

'वह देखो न काली टोरो के पीछे है।'

'नही पडित जी, काली टौरों के पीछे महज बारूद का धुआं किया जा रहा है जिसमे हम लोग धोखा खाते रहे। वे जो ताजा लाल मिट्टी के ढेर लगे हैं तोपे वहा हैं।'

लालता ने दूरबीन पकडी 'देखो' असहमत हुआ।

'खा साहब' लालता ने कहा, 'मिट्टी और बजरी के उन ढेरो में तोपें नही बिठलाई जा सकती।'

'माफ कीजियेगा पडित जी,' गौस बोला, तोपे खास मतलब से उन्ही ढेरो में बिठलाई गई हैं। जरा ठहरिये।'

गौस ने तोपो पर दूरबीने कसी। तोपो को इधर-उधर खिसका कर ठीक किया। निशान बाधे, बारूद और गोले भरे। इस कार्य में उसको अधिक समय नही लगा।

इसके बाद इधर गौस ने तोपो को पलीते दिये उधर वे मिट्टी के ढेर उघड गये मरे हुये तोपची नजर आये। उलटी हुई और टूटी तोपें। फिर बाढें की गई।

अङ्गरेजो के पश्चिमी मोर्चे का जवाव बिलकुल बन्द होगया। नगर में चैन हो गया। गौस ने जाकर रानी को प्रणाम किया। रानी सोने के

चूडे मँगवा कर गौस को अपने हाथ से पहिनाये । रानी हर्ष मे मग्न थी और गौस का खुरदरा चेहरा आसुओ से तर था । तीसरे पहर के उपरान्त कुमुक बदली । स्त्रियो ने तोपे हाथ में लीं और भीषण गोलाबारी शुरू कर दी ।

कामासिन टौरिया पर से रोज ने दूरवीन में से देखा । वगल में उसका फौजी डाक्टर लो था और पास ही मातहत जनरल स्टुअर्ट ।

रोज ने कहा,'ओह ! स्त्रिया तोप चला रही हैं ! स्त्रिया गोला-बारूद ढो रही हैं । कुछ खाना-पानी बाट रही हैं । टूटी हुई दीवारो और कँगूरो की मरम्मत में मदद दे रही हैं । इतनी तरतीब से, इतनी तेज़ी से हिन्दुस्थानियो को काम करते आज देखा ! अचरज होता है ।'

लो ने दूरबीन हाथ में ली । देखते ही बोला, 'जनरल, पेडो की छाया में कुछ स्त्री-पुरुष काम कर रहे हैं । हमारा एक गोला उनके बीज में पडा । धूल फिकी । फिर भी वे सब वही के वही !'

रोज ने और स्टुअर्ट ने भी निरीक्षण किया । स्टुअर्ट बोला, 'ये सब नेपोलियन हो गये क्या ?'

लो ने कहा, 'तब झासी हमारा बाटरलू होगा ।'

रोज ने मुस्कराकर झिडका, 'हिश, अभी बहुत घोर युद्ध करना पडेगा । यह रानी नेपोलियन नही, जौन आव आर्क सी जान पडती है ।'

स्टुअर्ट ने कहा, इसको जिन्दा पकड सके तो कमाल होगा ।'

उसी समय तार खटखटाया ।

मालूम हुआ कि पश्चिमी मोर्चा सबका सब तहस-नहस हो गया । स्टुअर्ट को पश्चिमी मोर्चे को फिर सँभालने की आज्ञा दी । वह चला गया । स्टुअर्ट के ब्रिगेड का अधिकाश दक्षिणी मोर्चे पर था । उसके दलनायक को रोज़ ने तार द्वारा आदेश दिया, 'वहुत जोर के साथ किले की दक्षिणी वुर्ज पर गोलाबारी करो । उस व्हिसलिंग् डिक को किसी तरह बन्द करो ।'

गौस के 'घनगरज़' तोपखाने के शोर और मृत्युवमन का नाम इन लोगो ने व्हिसलिंग् डिक—हल्ला करने वाला शैतान रक्खा था।

आज्ञा पाते ही दक्षिणी ब्रिगेड ने अत्यन्त तीव्रता के साथ काम शुरू किया। उनके तोपख़ाने लगातार भयकर आग और गोले उगलने लगे। बख्शिन जवाब पर जवाब दे रही थी बारूद और धुएँ से उसका सुन्दर चेहरा काला पड गया था। पसीने की रेखाओ से जितना चेहरा घुल गया था केवल उतना उसके स्वर्ण वर्ण को प्रकट कर रहा था। ब्रिगेड ने तोपो की रक्षा में किले की ओर दौड लगाई। घनगरज के तोपख़ाने ने उनका सहार कर दिया। बहुत अंग्रेजी फौज मारी गई। उसको लौटना पडा। परन्तु उनके तोपख़ाने ने एक काम कर लिया।

एक गोला बुर्ज के कगूरे को तोडकर बख्शिन के कन्धे पर लगा। कन्धा टूट गया, उड़ गया। वह अचेत होकर गिर पड़ी।

बख़्शी को पूर्वी बुर्ज पर समाचार मिला। निर्मम होकर बख़्शी ने उत्तर दिया, 'उससे बढकर झासी और झासी की रानी हैं। शाम को देखूगा। तब तक दाह मत करना।'

बख़्शी अपने काम पर जुट गया। एक बार आकाश की ओर उसने देखा। गीता के कृष्ण को याद किया और अपने को कठोर से कठोर सकट में डालता हुआ तोपो को दुगुनी तेजी के साथ चलाने लगा। रोज का पूर्वी मोर्चा बुझ गया।

परन्तु बख़्शी का पलीता सुलगता और आग देता रहा।

बख्शिन चली गई। रानी तुरन्त आईं। बख्शिन के रक्तमय शव को गोद में रख लिया। गला रुद्ध हो गया, एक शब्द भी मुह से नही निकल रहा था—और न आख से एक आंसू। तोपख़ाना बन्द हो गया था। अङ्गरेजो के गोले धडाधड़ बुर्जों और दीवारो से टकरा रहे थे और उनको ढा रहे थे। मुन्दर ने दूरबीन से अपनी बुर्ज पर से देखा। दौड़कर आई।

घबराकर बोली, 'बाईसाहब !'

रानी के मुँह से केवल एक शब्द निकला, 'गौस।'

मुन्दर समझ गई। दौडकर पश्चिमी बुर्ज से गुलाम गौस को बुला लाई।

गौस ने देखा झाँसी की रानी धूल मे बैठी बख्शिन के शव से लिपटी हुई हैं।

गैस ने कहा, यह क्या सरकार, अभी न जाने कितने सरदार कुरबान होगे ? हुजूर हम लोगो को समझाती हैं कि स्वराज्य की लडाई किसी के मरने–जीने पर निर्भर नही है। और फिर बख्शिनजू तो अमर हो गई। उठिये। देखिये उस जवामर्द बख्शी को। वह अपने ठिये पर अटल है। आप ऐसा मोह करेगी तो हम लोग गोरो से कितने दिन लड सकेगे ? आप यहा से हट जाय और दीवान खास में बैठकर हुकुम भेजती रहे। मैं इनको मजा चखाता हूँ।'

रानी बख्शिन के शव का आवश्यक प्रबन्ध करके दीवान खास में चली गई।

गैसखा ने 'बिसमिल्लाह' किया और घनगरज को सँभाला। तीन बाढो में ही अङ्गरेजी मोर्चे का तोपखाना, तोपची और तोपखाने पर काम करने वाले, सब स्वाहा हो गये।

गौस ने अपने साथियो से कहा, 'यह तो मेरे साथी सरदार को मारने का बदला हुआ, अब कुछ प्रसाद भी देता हूँ। देखो झोखनबाग के पूर्व में गुसाइयो के मन्दिरो की आड से ये लोग सैयर–फाटक पर गोलाबारी कर रहे हैं। बिचारा खुदाबख्श मन्दिरो के लिहाज के कारण जवाब नही दे पाता, परन्तु मन्दिरो के बीच में सन्ध है। उसी सन्ध में होकर अङ्गरेजी तोपखाना काम कर रहा है। वह सन्ध खुदाबख्श की सीध में नही है, पर घनगरज की सीध में हैं।'

साथी ने अनुरोध किया, 'मन्दिर पर गोला न पडे खासाहब। नही तो बड़ा अनर्थ हो जावेगा।'

'अगर मन्दिर की एक ईंट भी मेरे गोले से टूट जाय तो तलवार से मेरी गर्दन कलम कर देना।'

गौस ने घनगरज का मुहरा मोड़ा, परन्तु वहा से सीध नही बैठती थी और न निशाना जमता था। तोप को ज्यो का त्यो करके वह रघुनाथसिह वाली बुर्ज पर गया।

'दीवान साहब,' गैस ने विनय की, 'दो पल के लिये तोप मुझे बख्श दीजिये। सैयर–फाटक के सामने वाला अङ्गरेजी तोपखाना वन्द करना है।'

'तोप खुशी से लीजिये,' रघुनाथसिंह ने कहा, परन्तु अङ्गरेजी तोपखाने पीछे मिटेगे, मन्दिर पहले।'

गौस ने दृढतापूर्वक कहा, 'दूरबीन दीजिये, मुझको मन्दिरो की सन्ध से केवल अङ्गरेजी तोपखाना देखना है। मन्दिरो को मैं देखूंगा ही नही।'

रघुनाथसिंह को गुलाम गौस की गोलन्दाजी का भरोसा था दूरबीन और तोप उसके हवाले करदी।

गौस ने तोप के ठिये को संभाला, सुधारा और दूरबीन लगाकर निश्चिन्तता के साथ गोला छोडा। उसका जो कुछ फल हुआ उसे रघुनाथसिंह ने दूरबीन से देखा।

अङ्गरेज तोपची मारे गये। तोपे नष्ट हो गई और मन्दिर वच गये।

उसी समय गुलाम गौसखा को रानी ने अपनी तौल भर चादी का तोड़ा पुरस्कार में दिया। जब लालता ने सुना उसका जी गिर गया।

सन्ध्या समय वख्शिन के शव का दाह किया गया।

वख्शी हर्षोन्मत्त था, परन्तु उसकी आखो में पागलपन था।

कभी कभी वह असगत और अप्रसगिक वात कहता था। नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक.।' और कोई समझा हो या न समझा हो, परन्तु रानी इस महावाक्य को समझाती थी।

रात हुई। लड़ाई ने कुछ शाति पकड़ी। पीरअली के पास वरहामुद्दीन पहुच गया।

पीरअली ने तुरन्त कहा, 'देखो मेरे पता लगाने के कारण गोलन्दाजो को कितना लाभ हुआ।'

बरहामुद्दीन को शक हुआ। उसको दवाकर बोला, 'बेशक हुआ होगा, मगर किले में गोलन्दाजी नही कर रहा था, इसलिये कुछ कह नही सकता।'

पीरअली ने शेखी मारी, 'हमारी खिडकी के सामने अङ्गरेजो का कोई मोर्चा नहीं पडता नही तो दात खट्टे कर देता।'

बरहामुद्दीन ने खुशामद की, 'मीरसाहब कहिये दात और सिर तोड देते।'

पीरअली ने प्रसन्न होकर कहा, 'एक ही बात है।'

जब कुछ रात बीत गई पीरअली ने बरहामुद्दीन से धीरे से कहा, 'अब मै जासूसी पर जाता हूँ आप यहाँ होशियार रहना।'

बरहाम ने मंजूर किया।

पीरअली मुहरी के रास्ते से बाहर हो गया। और उसके पीछे पीछे चुपचाप बरहाम। आध मील चलने के बाद जब पहले छबीने के संत्री ने टोका तब पीरअली ने सकेत शब्द मैं उत्तर दिया। पीरअली आराम के साथ अङ्गरेज छावनी में दाखिल हो गया। बरहाम बहुत उदास धीरे २ सागर–खिडकी को लौट आया।

जब पीरअली लौटा बरहाम ने प्रश्न किया, 'आज की क्या खबर लाये मीरसाहब ?'

उसने उत्तर दिया, 'ज्यादा पता नही लगा। सिर्फ इतना मालूम कर सका कि कल शहर पर गोलाबारी पश्चिम की तरफ से होगी।'

'आज तो सरदार गुलाम गौस ने कमाल कर दिया। जिधर की तोप सँभाली उसी तरफ कहर बरसा दिया।'

'हमारी बारूद भी बहुत अच्छी है। घुआँ होता ही नही। अङ्गरेजो को पता नही लगता कि तोपखाने किधर लगे हुये हैं।'

'तो भी वे लोग हमारे गोलन्दाज पर गोलन्दाज मार रहे हैं। खैर है कि हमारे यहाँ तोपचियो की कमी नही है वरना झासी का घण्टे भर भी बचना मुश्किल था।'

'बारूद कहा बनाई जाती है खासाहब ?'

'महल के उत्तर में इमली के पेडो के नीचे। आपने क्या नही देखा ?'

'नही तो मै उस तरफ नही गया खासाहब।'

'एक बात मुझको भी बतलाइये मीर साहब। आप अङ्गरेजी छावनी में पहुच कैसे जाते हैं ?'

'कुछ न पूछो खासाहब, गड्ढो, खाइयो और झाड झङ्काड की आडे लेता हुआ जाता हूँ। जरा चूकूँ तो गोली सर पर पडे। बडी जोखिम का काम है। सीटी का एक बँधा हुआ इशारा करता हूं। मेरा रिश्तेदार आ जाता है और बाते बतला देता है। मै लौट आता हूँ। फिर वही मुहरी की मुसीबत। इतना बदबूदार कीचड है कि तोबा।'

बरहाम के पैरो में भी कीचड़ लगा हुआ था। पीरअली ने देख लिया।

उसने पूछा, 'खासाहब तुम्हारे पैरो मे कीचड कैसा ?'

उसने भोलेपन के साथ उत्तर दिया, 'मै भी मुहरी में होकर बाहर थोडी दूर चला गया था। देखता था कि कैसा रास्ता है। आपके जाने के बाद गया और तुरन्त लौट आया।'

पीरअली को सन्देह हो गया। उसने एक निश्चय किया। बरहाम का सन्देह जाग्रत हुआ। उसने भी एक सकल्प किया।

[७०]

सुन्दर को उस रात दूल्हाजू की कुमुक सौंपी गई। उसने दूल्हाजू से गोलन्दाजी सीखी थी, इसलिये वह उसका आदर करती थी। सन्ध्या के उपरान्त सुन्दर ओर्छा फाटक के ऊपर दूल्हाजू के पास पहुँच गई।

दूल्हाजू ने दिन में खूब तोप चलाई थी। वह प्रसन्न था और सुन्दर उस दिन के काम पर सन्तुष्ट थी, केवल बख्शिन के देहान्त पर कभी कभी मन कसक उठता था।

दूल्हाजू ने सुन्दर से कहा, 'आज तो बाई मैं बहुत थक गया हूँ। सारा शरीर दुख रहा है।'

'आप विश्राम करिये। मैं तो रात भर सावधान रहूँगी।'

'दिन भर फिर वही सब करना पडेगा।'

'मै दिन में भी आपकी जगह काम करती रहूगी।'

'और कल रात ?'

'रात को भी काम कर दूंगी। तब तक आप सुस्ता लेंगे। परसो दिन में आप तोपखाना सँभाल लेना। मैं सो लूंगी। रात का काम फिर पकड़ लूंगी।'

'सुन्दर तुम बहुत प्रबल हो।'

आपकी कृपा।'

'और अत्यन्त सुन्दर।'

'इसका उत्तर कुछ नही दे सकती। भगवान ने जैसा बनाया वैसी हूँ।'

'तुमको देखते ही, तुम्हारे दर्शन करते ही न जाने मेरा चित्त कैसा हो जाता है। तुम तो महल की रानी होने के योग्य हो।'

'रानी तो एक ही हैं—और एक ही हो सकती हैं।'

'सुन्दर मै तुमको अपने हृदय से लगाना चाहता हू। क्या कहती हो ?'

'यही कि आप बहुत नीच हैं।'

दूल्हाजू इस उत्तर की आशा नही कर रहा था। उसने अपनी ठेस को मुश्किल से सँभाला। उत्तेजित हुआ।

बोला, 'जानती हो मै ठाकुर हू ।'

सुन्दर ने दृढ सुहावने स्वर में कहा, 'जानते हो मैं कुणभी हूँ, जिस जाति की सहायता से छत्रपति ने एक छत्र राज्य स्थापित किया था ।'

दूल्हाजू यकायक हँस पड़ा ।

बोला, 'मै सुन्दर बाई तुमसे परम प्रसन्न हुआ । मैने तुम्हारी परीक्षा लेने के लिये ही यह सब कहा था ।'

सुन्दर ने स्थिरता के साथ कहा, 'हर्श है कि आपकी परीक्षा शीघ्र समाप्त हो गई ।'

दूल्हाजू की आख से लौ छूट पडी, परन्तु सुन्दर ने नही देखा ।

'तोपखाना सँभालो,' दूल्हाजू बोला, 'मैं सबेरे काम पर आ जाऊँगा ।' और अधिक वह कुछ न कह सका । चला गया ।

अब सुन्दर का क्षोभ जाग्रत हुआ । खीझ कर उसने अपने मन में कहा, 'दो जूते मुह पर न लगा पाये । बडा सरदार बना फिरता है । मेरे स्त्रीत्व को इतना दुर्बल समझा !'

सबेरा होते ही दूल्हाजू अपने ठिये पर आ गया । सुन्दर से कोई बात नही हुई उसने ऐंठ के मारे क्षमा प्रार्थना तक नही की । सुन्दर ने रात का सब हाल रानी को सुनाया ।

रानी ने सुन्दर को वर्जित किया, 'और किसी से कुछ मत कहना । गोलन्दाज बहुत मारे गये हैं । यदि मेरे पास काफी आदमी होते तो दूल्हाजू को अपने हाथ से कोडे लगाती और झासी बाहर कर देती, परन्तु इस समय ज़रा सह लेना चाहिये । तुझे अनुमति देती हू कि यदि वह फिर कोई बेहूदी बात कहे तो अकेले में जूते लगा देना । तू उसको कुश्ती मे पछाड़ सकती है ।'

सुन्दर को अच्छा लगा । चुप रही । रानी ने समझा कि इतने से सन्तुष्ट नही हुई । उन्होने दूल्हाजू को बुलाया और अकेले में काफी डाटा फटकारा ।

कहा, 'अबकी बार तुमको क्षमा किया। अपना काम करो। ऐसा ओछापन न करना।'

दूल्हाजू काम पर शीघ्र लौट गया।

उसने सोचा, 'एक ने नीच कहा, दूसरी ने ओछा। मेरे सच्चे प्रेम को किसी ने न पहिचाना। सुन्दर एक छोटी ज़ाति की स्त्री है। मैं उसको खुल्लम खुल्ला रख लेता। ठकुराइन बन जाती। लेकिन बडी पाजी औरत है और रानी औरतो की तरफदार। मैने कहा ही क्या था? विश्वास दिलाया कि उसकी परीक्षा कर रहा था, परन्तु रानी ने विश्वास नही किया। इस प्रकार का बर्ताव तो बडे बडे महाराज भी मेरे साथ नही कर सकते।'

दूल्हाजू उस बर्ताव को अपना अपमान समझता था। वह उस पहर अपना कर्तव्य, शिथिलता और अन्यमनस्कता के साथ करता रहा। कुशल यही थी कि पिछले दिन गुसाइयो के मन्दिरो के पास वाले तोपखाने के मिट जाने के कारण और रोज के पश्चिमी मोर्चे पर अधिक जोर देने के कारण, ओर्छा फाटक ने अधिक गोलाबारी का आवाहन नही किया।

दोपहर के बाद धूप कडी हो गई। लू भी चल उठी। दोनो ओर के तोपखाने और सिपाही अवकाश लेने लगे।

पीरअली दूल्हाजू के पास आया। रामरहीम होने के उपरान्त बात चीत होने लगी। पीरअली चाहता था कि कम से कम एक सरदार को अपने पक्ष में कर लू।

पीरअली—'दीवान साहब आपको तो बडा कडा परिश्रम करना पडता है आपकी वजह से मेरी खिडकी पर दुश्मन कोई दबाव ही नही डाल पाता।

दूल्हाजू—'परिश्रम तो, सचमुच, मीर साहब मुझको बहुत करना पडता है। मारे जाने पर मेरे परिश्रम का कोई मूल्य आका जायगा या नही इसमें सन्देह है।'

पीरअली—'रानी साहब तो इनाम खुले हाथ देती हैं। गुलाम गौस को सोने के कडे, अपनी तौल भर चादी का तोडा और कुंवर का खिताब बख्शा है।'

दूल्हाजू—होगा। रानी पठानो और परदेसियो की केवल हेकडी पर ही प्रसन्न हो जाती हैं। खजाना उनके हाथ में है चाहे जिसको लुटावे। मै कितनी बार ओर्छा फाटक के सामने से अङ्गरेजो को हटा चुका हूँ, कितनी बार मैने उनके तोपखाने नष्ट किये, परन्तु मुझको तो एक पैसा भी पुरस्कार में नही मिला। जी चाहता है कि यह लड़ाई समाप्त हो या अवसर मिले तो अपने घर चला जाऊँ।

पीरअली—'मैं ही, देखिये दीवान साहब, जासूसी मे कितनी जान खपा रहा हूँ। पता लगाने के लिये रात में इधर उधर अकेला भटकता हूँ। एक गोली, या तलवार का वार पड जाय कि बस खतम हू, मगर कोई पूछने वाला नही कि भैया तुम्हारा क्या हाल है। मेरे साथ एक गंमार पठान को और जोड दिया है। उसके मारे परेशान रहता हू।'

दूल्हाजू—'इधर मेरी भी यही परेशानी है। सुन्दर बाई मेरी नायबी में है। उसकी केवल परीक्षा लेने के लिये एक बात कही कि वह पाजी-पन पर आगई। मैंने डाटा। उसने रानी से मेरी शिकायत कर दी। रानी ने मुझसे ऐसी बाते की हैं आज, कि दिल टूट रहा।'

पीरअली ने प्रयत्न किया अपने को रानी का जासूस प्रकट करने का, दूल्हाजू ने प्रयास किया अपने को दुखाया सताया निर्दोष सिद्ध करने का, दोनो के मन परस्पर निकट आये, परन्तु एक दूसरे की बात को उनमें से किसी ने नही समझा।

दूल्हाजू ने कहा, 'मुझे दिखता है कि हम लोग अङ्गरेज़ो को हरा नही सकेंगे।'

पीरअली—'उन्होने दिल्ली और लखनऊ को सहज ही तोड लिया। कानपूर को भी पराजित कर लिया है। सच्ची बात तो दीवान साहब यह है कि झासी विचारी का कोई बिरता नही।'

दूल्हाजू —'जी चाहता है कि आज ही इस्तीफा देकर, तुम्हारी मुहरी से घर चला जाऊँ।'

पीरअली—'इस्तीफा देने की क्या जरूरत ? वैसे ही चले जाइये, परन्तु चारो तरफ तार लगे हुये है और सन्त्रियो के छबीने पडे हुये हैं। जिनमे होकर छिपकर निकलना कठिन है।'

दूल्हाजू—'आप मीर साहब, अङ्गरेजी छावनी में से खबर कैसे ला‍ते हैं ?'

पीरअली—'छावनी में मेरे कुछ रिश्तेदार भोपाली दस्ते में हैं। उनकी मदद से पहुँच जाता हूँ। और वहा का हाल ले आता हूँ—और—और दीवान साहब, मैं अङ्गरेजो के बडे जनरल रोज साहब के सामने भी हो आया हू।'

दूल्हाजू—'आप लडाई शुरू होने के पहले गये थे ?'

पीरअली—'नही कल रात को ही तो पहुँचा था।'

दूल्हाजू—'फिर बचे कैसे ?'

पीरअली—'सीधी सी बात। उनसे कह दिया कि मैं तो आपकी तरफ से जासूसी कर रहा हू।'

दूल्हाजू—'जनरल मान गया ?'

पीरअली—'क्यो न मानता ? दो एक बाते बतलादी, उसको भरोसा हो गया।

दूल्हाजू—'मैं भी जनरल के पास चलना चाहता हूँ।'

पीरअली—'यदि रानी साहब को खबर लग गई तो ?'

दूल्हाजू— तो जो हाल आपका होगा, वही मेरा भी।'

पीरअली—'मैं तो जासूस हू।'

दूल्हाजू—'मुझको भी उसी रग में रग लीजिये।'

पीरअली—'मगर जनरल के सामने आप अपने को जासूस नही कह सकेगे।'

दूल्हाजू---'तब क्या कहूँगा ? जाना तो उसके सामने अवश्य चाहता हूँ। शर्त यह है कि बचकर लौट आऊँ और यहा भी कोई गडबड न हो।'

पीरअली—'जनरल ने यदि आपसे किसी काम के करने के लिये कहा तो ?'

दूल्हाजू— हा करनी पडेगी।'

पीरअली---'तो पहले हमारा आपका ईमान हो जाय और कही भी किसी प्रकार भी बात न फूटने पावे।'

पीरअली ने दीन की और दूल्हाजू ने धर्म की पक्की सौगन्ध खाई।

पीरअली ने कहा, 'यदि अवसर मिला तो आज रात को, नही तो कल रात को चलेगे।'

दिन भर पश्चिमी और दक्षिणी मोर्चा पर घोर युद्ध होता रहा। उत्तर में, उनाव, भाडेरी और सूजेखा फाटको पर भी गोलाबारी हुई। इस दिशा मे ओर्छा की सेना रोज के दस्ते के साथ काम कर रही थी, परन्तु इस ओर झासी के सैनिक और गोलन्दाज़ ऐसी मुस्तैदी के साथ कर्तव्य पालन कर रहे थे कि रानी को इस दिशा से अङ्गरेज़ो का कोई भय ही न था। दतिया राज्य से अगरेज़ो की सहायता के लिये कोई दस्ता नही आया था। इस राज्य को चरखारी–पराजय का पता लग गया था। राजा विजय बहादुर का देहान्त हो चुका था। उत्तराधिकारी नाबालिग था। रोज़ के आक्रमण के पहले दतिया को रानी का भय था और अब तात्या टोपे का। इसलिये दतिया राज्य भय–ग्रस्त तटस्थता में था।

झाँसी का दतिया फाटक निर्भय था। किले की पश्चिमी बुर्ज का तोपखाना इसकी काफी रक्षा किये हुये था। यही हाल खडेराव फाटक का था। फिर भी इन फाटको के तोपची हाथ पर हाथ धरे न वैठे थे।

सध्या हो गई। परन्तु रात में गोलाबारी बन्द न हुई। रात में गोले सर्राती हुई छोटी छोटी लाल गेदो की तरह मालूम पडते थे। इस गोलाबारी से शहर का थोडा सा नुकसान हुआ, परन्तु किले का कुछ नही

बिगडा। उस रात पीरअली बाहर नही जा पाया। दूल्हाजू कम सोया। उसने पीरअली की बाट जोही।

दिन निकलने पर फिर जोर का युद्ध हुआ। अब तक गोरी पल्टनें आगे बढ बढकर मर रहीं थी। अब अधिकाश देशी पल्टने दिखलाई पडी। परन्तु तोपखाने सब अङ्गरेजो के हाथ में थे।

दोनो ओर के तोपची मर रहे थे और दूसरे तोपची उनकी जगह पर आ रहे थे। संध्या के समय किले के पश्चिमी मोर्चे का तोपखाना बन्द हो गया, कारण था दीवार का धुस्स हो जाना।

दीवार के टूट जाने से तोपखाना दिखलाई पडने लगा। मुश्किल से तोपो को आड़ में किया गया। पर पहाडी की ओर से एक दस्ता झपटा। खडेराव फाटक पर से सागरसिंह ने देख लिया। फाटक पर ताले पडे थे। वैसे भी फाटक खोलने की आज्ञा न थी। सागरसिंह ने तोप चलाई, परन्तु वह जल्दबाज़ था, इसलिये निशाना ठीक न बैठता था। खीज उठा। अपने साथियो से बोला, 'आज बुन्देलो की नाक कटती है और कुँवर सागरसिंह की मूँछ जाती है। जो मेरे साथ इन गोरो का सामना कर सके वह तुरन्त नीचे उतरे।'

एक ने कहा, 'रानी साहब की या दीवान जवाहरसिंह की आज्ञा ले लो।'

सागरसिंह ने उत्तर दिया, 'बावले हुये हो ? जब तक किसी की आज्ञा आवेगी तब तक ये लोग किले में घुस जायेगे। तब उस आ ा को क्या हम चाटेगे ?'

रस्से की सीढी लगाकर धडाधड सौ आदमी नीचे उतर गये। सबसे पहले सागरसिंह। ये लोग सपाटे से बगल वाली टौरिया की ओट में पहुच गये। जैसे ही अंग्रेजी दस्ता आया इन लोगो ने बन्दूको की बाढ छोडी। दस्ते ने भी बन्दूक दागी। सागरसिंह की टुकडी को कोई हानि नहीं हुई, परन्तु अङ्गरेजी दस्ता छिन्नभिन्न हो गया। इकट्ठा होने ही को था कि सागरसिंह अपने साथियो सहित तलवार लेकर पिल पड़ा। अङ्गरेजी

दस्ता सब नष्ट हो गया। कुँवर सागरसिंह भी खंडेराव फाटक के पास हीं मारा गया। उसके कुछ आदमी बच गये। भीतर वापिस आ गये।

इन आदमियो की वीरता ने उस दिन झांसी का किला बचा लिया।

रात हो गई। रानी को सागरसिंह के शौर्य का समाचार मिल गया। रानी की आखो के सामने बरुआसागर की घटना का पूरा चित्र खिच गया। रानी ने मन मे कहा, 'जिस देश में सागरसिंह सरीखे लोग जन्म लेते हैं वह स्वराज्य से बहुत दिनो वंचित नही रह सकता।'

रानी ने दीवार की मरम्मत अपने सामने करवाई। कारीगर कम्बल ओढ कर दीवारों की मरम्मत पर चिपट गये और रात भर में दीवार ज्यो का त्यो कर लिया।

सवेरे पश्चिमी अंग्रेजी मोर्चे ने दूरबीन से देखा—जैसे दीवार का कभी कुछ बिगडा ही न था !

उस दिन अत्यन्त भीषण युद्ध हुआ। दोनो ओर निरन्तर और तीव्र गोलाबारी हुई। इधर दीवारे टूट रही थी। उधर अंग्रेजो के मोर्चे नष्ट हो रहे थे। इधर तोपची पर तोपची मारे जा रहे थे, उधर तोपखानो पर तोपखाने बन्द हो रहे थे। तुरन्त दूसरी तोपो को सँभाल लेते थे। रानी की स्त्री सेना इस तरह काम कर रही थी जैसे देवी दुर्गा ने अनेक शरीर और अनेक रूप धारण कर लिये हो।

दीवार टूटी कि मरम्मत हुई। वह भी दिन दहाडे। मरम्मत करने का काम पुरुष कर रहे थे और पत्थर तथा चूना इत्यादि देने का काम स्त्रियां। गोले बरस रहे थे। ऐसे गोले जो फटकर अपने भीतर के कील काटे चारो ओर सनसना देते थे, परन्तु न तो झासी की हिम्मत टूट रही थी और न झांसी की रानी की। जैसे जैसे संकट बढता, तैसे तैसे इनका साहस बढता जाता !

यकायक गोला किले के भीतर वाले गणेश मन्दिर पर गिरा और वह ध्वस्त हो गया। केवल मूर्ति बची। दूसरा शंकर किले में गिरा। उस

समय आठ दस ब्राह्मण पानी भर रहे थे। उनमें से आधे मारे गये, बाकी भाग गये। ये गोले पश्चिमी मोर्चे से आये थे।

पानी की टूट पडी। ३, ४ घण्टे लोगो को प्यासा रहना पड़ा। किले का पश्चिमी मोर्चा सँभाला गया। अङ्गरेजी मोर्चे का मुँह बन्द हुआ। तब कुये से पानी आ पाया। फिर रात हुई और बहुत कुछ शान्ति दोनो पक्ष थकावट में चूर थे।

इस रात पीरअली और दूल्हाजू को अवसर मिला।

[७१]

बरहामुद्दीन सागर खिडकी की तोप पर पीरअली की जगह आ गया। पीरअली ने उससे कहा, 'आज बहुत से पते लगाने के लिये अङ्गरेज़ी छावनी में जाना है।'

'शौक से जाइये,' बरहाम बोला, 'अकेले ही जाइयेगा? बड़ा खतरनाक काम है।'

पीरअली ने उत्तर दिया, 'अकेला ही जाऊँगा। दो आदमी होने से खतरा बढ जायगा।'

पीरअली खिडकी पर से उतरा। थोडी देर ही ठहरा था कि दूल्हाजू आ गया। ओर्छा फाटक पर उसकी जगह सुन्दर आ गई थी।

दूल्हाजू को बरहामुद्दीन ने नही देख पाया।

पीरअली और दूल्हाजू मुहरी में धसे। धसते ही दूल्हाजू ने नाक दबाई। धीरे से कहा, 'मीरसाहब यह तो बहुत सकरी और गन्दी रास्ता है।'

पीरअली धीरे से बोला, 'दीवान साहब वहाँ पहुँचने का यही एकमात्र मार्ग है।'

उन दोनो के निकल जाने पर धीरे से बरहामुद्दीन मुहरी में उतरा और आड ओट लेते हुये, पहले सन्त्री के छब्रीने तक चला गया।

संत्री ने टोका। पीरअली ने बँधे हुये सकेत की भाषा में जवाब दिया। वे दोनो छावनी मे चले गये।

बरहामुद्दीन ने सोचा, 'पीरअली अवश्य कोई घातक षडयन्त्र रच रहा है। और वह झासी के लिये शुभ नही जान पड़ता। आज दूसरा आदमी इसके साथ कौन है?'

बरहामुद्दीन सावधानी के साथ लौट आया। हाथ पैर धोकर मुहरी की बगल में बैठ गया और पीरअली की बाट जोहने लगा।

दूल्हाजू के साथ पीरअली रोज के सामने पेश हुआ। स्टुअर्ट पास था। पूछताछ शुरू हुई।

रोज़—'तुम्हारे साथ दूसरा आदमी कौन है ?'

पीरअली—'दीवान दूल्हाजू ठाकुर साहब । ओर्छा-फाटक का तोपखाना इन्ही के हाथ में है ।'

रोज—'मैं खुश हुआ । यह किसी राजपरिवार का पुरुष है ?'

पीरअली—'जी हाँ ।'

रोज—'आप क्या काम करोगे दीवान साहब ?'

दूल्हाजू—'जो कहा जाय ।'

पीरअली—'यह सच्चे आदमी हैं । साहब । गङ्गाजली की सौगन्ध लेंगे ।

रोज समझ गया ।

दूल्हाजू के पसीना छूट गया । निकल भागने को जी चाहा, परन्तु वहा बाल बराबर भी सास न थी ।

रोज ने एक हिन्दू सिपाही से लोटा भरकर मँगवाया ।

रोज़ ने कहा आपको गङ्गा जी की सौगन्ध खानी पडेगी ।'

दूल्हाजू ने लोटा दोनो हाथो में ले लिया । आखे बन्द कर ली ।

रानी का कुपित चेहरा सामने फिर गया । उसने आखे खोल ली । रोज़ ने सोचा शपथ गम्भीरता पूर्वक ले रहा है ।

पीरअली ने अनुरोध किया, 'सौगन्ध ले लीजिये दीवान साहब ।'

दूल्हाजू ने शपथ ली, 'गङ्गाजी मुझको मारे, जो मैं बेईमानी करूँ ।'

रोज़—'बेईमानी किसके साथ ? शपथ लो कि कम्पनी सरकार के साथ, अग्रेजो के साथ बेइमानी नही करूँगा ।'

पीरअली—'ले लीजिये सौगन्ध दीवान साहब ।'

दूल्हाजू ने शपथ ली, 'कम्पनी सरकार के साथ, अग्रेजो के साथ बेईमानी नही करूँगा ।' और उसने लोटा नीचे रख दिया ।

रोज ने कहा, 'अभी नही । लोटा फिर हाथ में लीजिये और यह कहिये कि ओर्छा फाटक का तोपखाना या तो बेकार कर देंगे या तोपखाने से गोला नही छोड़ेगे और ओर्छा फाटक हमारे हवाले कर देंगे ।'

दूल्हाजू ने तदनुसार कसम खाई।

पीरअली ने विनय की, 'हुजूर को इनाम भी इसी समय बतला देना चाहिये।'

रोज ने तुरन्त बरदान दिया, 'दो गांव जागीर में दीवान साहब, हमेशा के लिये।'

दूल्हाजू ने क्षीण मुस्कराहट के साथ स्वीकार किया।

दूल्हाजू ने प्रश्न किया, 'कब ?'

रोज ने उत्तर दिया, 'जब हम झांसी पर अधिकार करके शान्ति स्थापित कर लेंगे।'

'यह नही पूछा,' दूल्हाजू ने कहा, 'वह काम कब करना होगा ?'

रोज और स्टुअर्ट ने सलाह की।

रोज बोला, 'जब हमारे मोर्चे के पीछे लाल झण्डा देखो। लेकिन जब तक लाल झण्डा न देखो तब तक गोले टेकड़ी के नीचे हिस्से में लगें, हमारे तोपखाने या दस्ते पर गोला न आवे और हमारे तोपखाने का गोला तुम्हारे ऊपर न गिरेगा। या तो दीवार की जड़ में पड़ेगा या तुम्हारे बगल में जो ऊँचाई पर बुर्ज है उसपर पडेगा। यदि तुमने हमारे साथ बेईमानी की तो सबसे पहले तुमको फाँसी दी जायगी।'

दूल्हाजू का चेहरा तमतमा गया।

'मैंने बहुत बड़ी कसम खाई है। इन मीरसाहब को मालूम है कि रानी साहब से मेरा दिल बिलकुल फिर गया है।'

पीरअली ने समर्थन किया।

इसके उपरान्त वे दोनो चले गये।

रोज ने स्टुअर्ट से कहा, 'राज-खानदान के लोगो को हाथ में रखना जरूरी हैं। डलहौजी ने इन लोगो को अपमानित करके हिन्दुस्थान को बिलकुल ही खो दिया होता।'

स्टुअर्ट—'लेकिन आगे चलकर इन लोगो को सिर पर भी नही बिठलाना है।'

रोज—'नही जी। वे सिर पर नही बैठना चाहते। वे तो अपनी मखमली गद्दियो पर बैठे रहना चाहते हैं। वही अडिग बने रहेगे।

पीरअली और दूल्हाजू मुहरी पर आ गये। दूल्हाजू ने फिर नाक दबाई।

पीरअली ने मुहरी के सिरे पर पहुच कर कहा, 'दीवान साहब, लाल झन्डे वाली बात याद रखना।'

दूल्हाजू धीरे से 'हू' करके ओर्छा फाटक की ओर चला गया। उसके चले जाने पर पीरअली ने दीवार से सटा हुआ किसी को देखा। काप गया।

बोला, 'कौन ?'

बरहाम ने आगे बढकर उत्तर दिया, 'मैं हूं मीरसाहब।'

हृदय की धडकन को दबाते हुये पीरअली ने कहा, 'म्यां खा साहब, यहाँ क्या कर रहे थे।

'मुहरी में छप छप की आवाज सुनकर शक हुआ, इसलिये यहा आ गया। आपके साथ दूसरा आदमी कौन था ?'

'होगा। आपको क्या मतलब ? पीरअली ने होश सँभालते हुये कहा, 'जासूसी मुकद्दमो की बातो में दखल नही देना चाहिये।'

बरहाम—'आप तो कहते थे कि अकेले ही जायँगे। दो आदमी होने से खतरा बढ जायगा।'

पीरअली—'आपको साथ ले जाता तो खतरा जरूर बढ जाता।'

बरहाम—'यह दीवान साहब कौन आदमी था ?'

पीरअली—'दीवान साहबो और खा साहबो की झाँसी में कोई कमी है ?'

बरहाम—'हा, मीरसाहब अलबत्ता बहुत थोडे हैं।'

पीरअली—'अपना काम देखिये। मैं तो जाकर सोता हूँ। इतना ख्याल रखिये कि किसी के राज़ में अपना पैर नही पटकना चाहिये।'

बरहाम—'मान लिया मीरसाहब, मान लिया। लेकिन इतना तो बतला दीजिये कि आज किस तरह पहुँचे और क्या क्या कर आये?'

पीरअली—'आप पीछे पीछे क्यो न चले आये?'

बरहाम—'गया था, लेकिन लाल झण्डे की बात समझ में नही आई।'

पीरअली सन्नाटे में आ गया, परन्तु उसको मनोनिग्रह का काफी अभ्यास था।

बोला, 'लाल झण्डे वाली बात रानी साहब को बतलाई जावेगी, आपको नही।'

बरहाम ने कहा,' रानी साहब से मै भी कुछ अर्ज करूँगा।

पीरअली अपने शयनागर में चला गया। उसको नीद नही आई। दो दिन पहले उसने एक निश्चय किया था। सबेरा होते ही वह रानी के पास पहुँचा।

पिछले रोज बहुत तोपची और सैनिक मारे गये थे। रानी ने रात में तोपचियो का प्रबन्ध कर लिया था। तडके के पूर्व ही वह नये सैनिको की भर्ती के उपायो में व्यस्त थी। जवाहरसिंह और रघुनाथसिंह भी उसी चिन्तन में वही थे।

पीरअली ने तुरन्त निवेदन किया, 'श्रीमन्त सरकार, आज पश्चिमी मोर्चे से बहुत जोर का हमला होगा। जब आपका ध्यान उस ओर फटक जायगा तब दक्षिणी मोर्चे से जो जीवनशाह की टौरिया के बगल में है, धावा बोला जायगा। रात की जासूसी का यही समाचार है।'

रानी ने उपेक्षा के साथ कहा, 'देखूँगी। प्रबन्ध हो गया है।'

वह किसी काम के लिये शहर में जाने को उद्यत थी।

पीरअली हाथ जोड कर बोला, 'श्रीमन्त सरकार उस बरहामुद्दीन को मेरे ठिये से हटा दिया जाय। वह मेरे काम में बहुत दखल देता है।

'देखूँगी,' रानी ने कहा, 'कुछ और कहना है?'

'हुजूर,' पीरअली ने जरा थर्राये हुये स्वर में कहा, 'एक लाल झंडे के बारे में निवेदन करना है।'

रानी—'लाल पीले झडे के विषय में जो कुछ कहना हो जल्दी कहो।'

पीरअली—'अङ्गरेज़ धोखा देने के लिये खूनी झडा किसी टेकडी पर उठाएगे और वहा से गोलाबारी भी धूमधाम के साथ करेगे, परन्तु हमला करेगे किसी दूसरी दिशा से।'

रानी—समझ लिया। कुछ और ?'

पीरअली—'बस हुजूर। केवल यह कि बरहामुद्दीन को मेरी बुर्ज पर से हटा दिया जाय।'

रानी अनसुनी कर के जवाहरसिंह के साथ शहर की ओर गई। पीरअली दूसरी ओर चला गया।

रानी को मार्ग में बरहामुद्दीन मिल गया। उसने रोक लिया।

अनुनय के साथ प्रार्थना की, 'पीरअली से होशियार हो जायँ सरकार। वह रात को अङ्गरेज़ी छावनी में जाते हैं।'

रानी रात की जागी थी। सैनिको का तुरन्त प्रबन्ध करना अत्यन्त आवश्यक था। मार्ग की टोकाटाकी सहन नही हो रही थी।

बोली, तुमको कैसे मालूम ?'

बरहामुद्दीन ने उत्तर दिया,

'मैं पीछे पीछे गया था। अङ्गरेज़ सन्त्री ने इनको टोका। इन्होने इशारे की बोली में जवाब दिया। सत्री ने तुरन्त छावनी में जाने दिया। यह पहले दिन की बात है सरकार। गई रात वे किसी एक दीवान साहब को साथ ले गये थे। मै फिर पीछे पीछे गया। सन्त्री ने उसी तरह चिल्ला कर टोका। इन्होने उसी तरह चिल्लाकर इशारे की बोली में जवाब दिया। दोनो को खट से छावनी में जाने की इजाजत मिल गई। ये लोग देर से लौटकर आये। जब दोनो अलग हुये पीरअली ने दूसरे से कहा, दीवान साहब लाल झडे वाली बात याद रखना। मैने इन दीवान साहब को नही पहचान पाया। हुजूर, इस कार्रवाई में दगा है। द्रोह है। खतरा है।'

घोड़ा आगे बढने के लिए लगाम चबा रहा था, पैर पटक रहा था।

रानी ने रुखाई के साथ कहा, 'तुम मूर्ख मालूम होते हो। अपना काम न करके दूसरो के पीछे पीछे घूमते हो। अपना ठिया देखो।'

रानी आगे बढ गईं। साथ में जवाहरसिंह। जवाहरसिंह ने विनय की, 'सरकार पठान मूर्ख नही है। पीरअली की जाच होनी चाहिये।'

रानी ने उत्तर दिया, 'सामने का काम पहले निपटालो और फिर जाच करो। पता लगाना यह कौन दीवान साहब हैं, जो पीरअली के साथ गया था।'

नये सैनिको का प्रबन्ध करके रानी किले को लौट आई।

जवाहरसिंह शहर के इन्तज़ाम में उलझ गया।

रानी ने ज़रा सा अवकाश मिलने पर मोतीबाई से बरहामुद्दीन वाली बात कही।

मोतीबाई बोली, 'पीरअली बेईमानी कर सकता है। साथ में दीवान दूल्हाजू गये होगे। आप उनसे रुष्ट हुई थी।'

रानी ने कहा, 'जब तक जाच नही हुई है इन दोनो पर नज़र रखनी चाहिये, परन्तु सहसा ऐसा कोई काम न करना जिसके लिये पीछे पछताना पडे। पीरअली ने पहले अच्छे कार्य किये हैं और दीवान दूल्हाजू ने ओर्छा फाटक की अच्छी सँभाल की है। इस समय हाथ में कोई बढिया गोलन्दाज दूल्हाजू की जगह भेजने के लिए नही है।'

'मेरे मन में आता है, मोतीबाई बोली, 'सुन्दर को दीवान साहब के साथ दिन के काम के लिये कर दीजिये। रात के काम के लिये किसी और को भेज दिया जायगा।'

रानी ने स्वीकार किया।

सुन्दर रात को जागी थी। सोने के लिये तैयार हुई थी कि उसको यह योजना बतलाई गई। सुन्दर की नीद भाग गई। वह नहा धोकर और थोड़ा सा खा पीकर ओर्छा फाटक पर पहुँच गई।

उस दिन भी घनघोर युद्ध हुआ। दोनो तरफ विकट नरसहार। केवल दो बाते विशेष हुईं, ओर्छा फाटक की वह तोप जो दूल्हाजू के हाथ

में थी अच्छी नही चली और एक गोला महल के सामने जहा बारूद बन रही थी गिरा, फटा और बारूद जल कर धडाके के साथ २५-३० स्त्री पुरुषो को अपने साथ हवा में उठा ले गई—उनके अङ्गो का भी पता न चला कि कहां गये।

बारूद में आग लग जाने के कारण किले में खलबली मच गई। भीषण नरसंहार तथा नगर के मकानो के भयानक विध्वन्स के कारण लोगो में निराशा फैलने लगी। किले की दीवारो में जगह जगह छेद हो गये थे। सन्ध्या के उपरान्त रानी शहर में गई। दीवारो का निरीक्षण किया। मरम्मत कराई। उस समय जब कि अन्य रातो की अपेक्षा इस रात अधिक गोलाबारी हो रही थी और, इतनी शीघ्रता के साथ मानो कोई कल काम कर रही हो; रात को देर में लौटी। सीधी महादेव के मन्दिर में गई। ध्यान के उपरान्त बारादरी मे थोड़ी देर के लिये जा लेटी। एक झपकी आई। उन्होने स्वप्न देखा:—

एक गौरवर्ण युवती, सुन्दर आकृति वाली। बडे बडे काले नेत्र लाल रग की साडी का अन्चल बाधे हुये। आभूषणो से लदी हुई। वह स्त्री किले की बुर्ज पर खडी हुई अङ्गरेजो के लाल लाल गोलो को अपने कोमल करो में झेल रही है। कह रही है—'लक्ष्मीबाई देख, इन गोलो को झेलते झेलते मेरे हाथ काले हो गये हैं। चिन्ता मत कर। स्वराज्य की देवी अमर है।' रानी की आख खुली। भयंकर गोलाबारी हो रही थी और होती रही। पर उन्हे न कोई चिन्ता न थकान। झटपट जीने से उतरी और स्वप्न का सवाद सेनापति और मुख्य मुख्य दलपतियो को सुनाया। सवेरा होते होते यह संवाद सर्वत्र किले और नगर में फैल गया। तमाम स्त्री पुरुषो की नसो मे बिजली सी कोध गई। डटकर युद्ध होने लगा। पहले दिन की अपेक्षा भी अधिक घोर। उस दिन पीरअली और बरहामुद्दीन वाले मामले की जाच-पडताल न हो सकी परन्तु सन्ध्या समय रानी को मालूम हो गया कि दूल्हाजू ने अनमने होकर काम किया।

[७२]

उस दिन तोपो पर रघुनाथसिंह और मुन्दर ने मिलकर काम किया बारूद और धुएँ ने दोनो के चेहरे और हाथ काले कर दिये। नित्य ही ऐसा हो जाता था। उस दिन कालोच कुछ और अधिक चढ गई थी। दोनो एक दूसरे को देख देख कर मुस्करा जाते थे।

दोपहर के समय रघुनाथसिह ने कहा, 'आज अभी तक खाना नही आया। मुन्दरबाई, आपको क्या भूख नही लगी है?'

'मैं लाती हू,' मुन्दर ने कहा।

'एक घडा जल भी,' रघुनाथसिंह ने प्रस्ताव किया, 'क्योकि यहा के घड़े का जल पीने लायक नही रहा।'

मुन्दर थकी हुई थी। हवा के झोको से उसके काले वाले की एक लट कालोच भरे चेहरे पर फहरा गई। थकावट और गहरी लक्षित हुई।

रघुनाथसिंह ने कहा, 'नही आप पानी मत लाना। किसी से लिवा लाना। कोई न मिले तो खाना खाकर मैं नीचे उतरकर पी आऊँगा, तबतक आप तोप सँभाले रहना। खा-पीकर आना। कोई जल्दी नही है।'

थकी हुई मुन्दर हँसी। जैसे अँधेरी रात में कोई तारा छिटक कर विलीन हो गया हो।

बोली, 'मैं क्या पानी का घडा न ला सकूँगी?'

रघुनाथसिंह—थक गई हैं आप?'

मुन्दर—'और आप?'

रघुनाथसिंह—'मै तो यही बैठा सुस्ता रहा हूं।'

मुन्दर—'यह मेरे प्रश्न का उत्तर है?'

रघुनाथसिंह—'अच्छा मैं नही थका हू मुन्दरबाई।'

मुन्दर—'तो मै भी दीवान साहब दो घडे उठा ला सकती हू।'

रघुनाथसिंह—'ऐसा मत करना।'

मुन्दर—'खाना क्या लाऊँ? लड्डू लाऊँ?'

रघुनाथसिंह को उस रात के लड्डुओ की याद आ गई।

बोला, 'मुन्दरबाई लड्डू खाऊँगा और उन्ही हाथो से ।

मुन्दर—'कालोच भरे हाथो से ?'

रघुनाथसिंह—'नही तो । गङ्गाजल से धुले हुये हाथो से । खा-पीकर आना ।'

मुन्दर—'नही । यही खाऊँगी । नही तो आपको देर हो जायगी ।

इतने में बुर्ज की मुडेर पर एक गोला आ टकराया ।

मुन्दर ने कहा, 'यदि यह गोला मुझे लग जाता तो मैं नही बचती । आप मेरेशव को जला देते न ?'

रघुनाथसिंह ज़रा तीव्र स्वर में बोला, 'और मुझको लग जाता तो आप मुझको दो लकडी दे देती या नही ?'

मुन्दर की आखो में आसू आ गये ।

कापते हुये गले से बोली, 'मैं पहले मरूँगी । आप आज गाठ बाध लीजिये । यदि फिर वह बात कही तो लड्डू-वड्डू कुछ नही खिलाऊँगी ।'

उन आसुओ के दर्पण में रघुनाथसिंह ने अपने प्राणोकी झाकी देखी ।

रघुनाथसिंह ने गद्गद् होकर कहा, 'मैं ऐसा कभी नही कहूंगा मुन्दरबाई, और न आप कभी ऐसा बोल मुँह से न निकालना ।'

मुन्दर आसू पोछ कर धीरे धीरे चली गई ।

रघुनाथसिंह को सारा वातावरण नवप्रस्फुटित कलियो से भरा दिखलाई पडा । तोप एक खिलवाड, बारूद और गोले प्यार के खिलौने जान पडे ।

उसने प्रण किया, 'मुन्दर अखड रूप से मेरे हृदय का सम्पूर्ण सम्मान प्राप्त करेगी—कभी समय आवेगा ।'

मुन्दर पानी का घडा और लड्डू, लेकर शीघ्र लौट आई ।

रघुनाथसिंह ने रोषपूर्ण स्वर में कहा, 'मै इस बुर्ज का प्रधान हूँ मुन्दरबाई । जानती हो ?'

मुन्दर कुछ आश्चर्य, कुछ कुतूहल और कुछ शरारत के साथ देखने लगी।

रघुनाथसिंह के स्वर का रोष तुरन्त अवरोध में परिणित हुआ। बोला, 'मैंने कहा था कि खा-पीकर आना। वैसे ही क्यो चली आई ? मेरी वात की अवज्ञा क्यो की ?'

मुन्दर ने मुस्काराकर कहा, मैंने भी तो जता दिया था कि यही आकर खाऊँगी।'

रघुनाथसिंह के थके हुये चेहरे पर मुस्काराहट दौड गई। बोला, 'याद आ गया तो अब हाथ मुँह धोकर खाओ।'

'पहले आप', मुन्दर ने अनुरोध किया।

रघुनाथसिंह ने हठ किया, 'पहले तुम।'

'तुम' शब्द ने मुन्दर को पुलकित कर दिया बोली, 'मेरे हाथ से खाना हो तो आप प्रारम्भ करो।'

'नही तो ?' रघुनाथसिंह ने प्रश्न किया।

'नही तो क्यो, लड्डू अपने हाथ से खाने पडेंगे।' मुन्दर ने उत्तर दिया।

रघुनाथसिंह ने स्वीकार कर लिया। हाथ मुँह धोया। मुन्दर ने एक ओर बैठकर लड्डू खिलाये।

रघुनाथसिंह ने प्रस्ताव किया, 'अब मै तुम को खिलाऊँगा।'

मुन्दर बहुत हँसी।

बोली, 'अरे वाह ऐसा कही होता है! मैं अकेले में बैठकर खाऊँगी।'

रघुनाथसिंह मान गया। उसने सब कुछ पा लिया।

उसको मृत्यु का कोई भय नही रहा।

और मुन्दर को ?

लक्ष्मीबाई की सहेली को मृत्यु का डर !

[७३]

तात्या टोपे चरखारी को जीतकर कालपी लौटा। उसकी सेना में ग्वालियर का वह यूथ भी था जिसने कानपूर में जनरल विढम को पराजित करने में हाथ बटाया था। सिपाही विजयोत्सव मना रहे थे और तात्या कालपी के विशाल शस्त्रागार का निरीक्षण कर रहा था। भांति भांति के गोले ढाले जा रहे थे। बन्दूकें बनाई और बाधी जा रही थी। दो हजार मन बारूद के होते हुये भी और बारूद तेजी के साथ तैयार की जा रही थी। अन्य प्रकार के शस्त्र और उनके अङ्गोपाङ्ग बनाये और खराद मशीनो पर संभाले जा रहे थे। बहुत सी मशीने नई विलायती थी।

उसी समय दो सवार पहरे वालो के पास उतरे। दोनो सुन्दर युवक जुल्फो पर साफा बाधे हुये।

पहरे वालो से कहा, 'सरदार साहब से इसी समय मिलना है। झासी की रानी साहब की चिट्ठी लाये हैं।'

उन लोगो ने झासी के युद्ध की गति के विषय में जिज्ञासा की। युवको ने सक्षेप में बतला दिया। शीघ्र ही दोनो तात्या के सामने पहुचा दिये गये।

तात्या ने अकेले में ले जाकर कहा, 'एक साहब को तो पहिचानता हूँ दूसरे साहब—?'

जूही ने उत्तर दिया, 'आप काशीबाई जी हैं।'

तात्या ने अभिवादन किया। दोनो से झासी के युद्ध का वृत्तान्त जितना उनके सामने हो चुका था और जो उन्होने मार्ग के बटोहियो से सुना था विस्तार पूर्वक सुना दिया। रानी की चिट्ठी भी पढी।

तात्या बोला, 'आज ही झाँसी की ओर कूच करता हू। सेना को चरखारी से लौट कर काफी विश्राम मिल चुका है। आप लोग हमारे साथ चलिये। अब अकेले लौटना ठीक नही है।'

काशीबाई ने कहा, 'फाटक वन्द हो चुके हैं। चारो ओर अंग्रेजो का कड़ा पहरा है।'

तात्या—'आप लोग हमारे साथ सुरक्षित रहेगे।'

काशीबाई—'हम लोग भी लडना जानते हैं।'

जूही—'जानती हैं।' और वह मुस्कराई।

तात्या ने हँसकर कहा, 'उसी भाषा में बोलिये। मैं सैनिको का भी सन्देह जाग्रत नही करना चाहता हू।'

तात्या ने उसी दिन कूच कर दिया। साथ में बीस सहस्त्र सेना। बाकी सेना और कालपी का प्रबन्ध रावसाहब के हाथ में छोड दिया।

तात्या को झासी तक पहुँचने में कुछ समय लगा। परन्तु उसके पहुँचने के पहले ही रोज को पता लग गया कि एक बडी सेना और भारी तोपें लिये हुये तात्या झासी की सहायता के लिये आ रहा है। रोज चिन्तित हुआ। उसने अपने यूथनायको और दलनायकोकी सम्मति से एक योजना बनाई। प्रत्येक मोर्चे के तोपखानो से एक एक तोप ली। केवल जरूरी सेना झासी के इर्द गिर्द छोडकर, बाकी के कई दस्ते बनाये। कुछ को झांसी कालपी का मार्ग रुद्ध करने के लिये झासी से सात मील दिगारा की दुतर्फा टौरियो पर भेज कर छिपा दिया। कुछ उत्तर की ओर दस मील पर गढमऊ की झील की पहाड़ियो पर। कुछ को कामासिन टौरिया और ओर्छा के मार्ग के अगल बगल जमा दिया।

तात्या ने अपनी सेना का [बडा भाग अपने पास बेतवा से झासी की ओर दो मील पर नदी के किनारे नोहट घाट और तिलैथा घाट के बीच में रक्खा और बडी बडी तोपें। बाकी सेना को तीन भागो में विभक्त करके गढमऊ की ओर दिगारा की टौरियो की बीच में होकर झासी की ओर भेजा। इन दस्तो के पास छोटी तोपे थी। साथ में काशी और जूही थी।

पहली एप्रेल का प्रातः काल हुआ। झासी पर बन्दूकचियो के हमले तो बिलकुल नही हुये, परन्तु गोलाबारी भयानक हुई। गोलो के ठीक निशाने नही पड रहे थे। साफ था कि अङ्गरेजी तोपखाने अपना बरकाव कर रहे हैं और झासी वालो को केवल व्यस्त रखना उनका उद्देश्य है। परन्तु जवाहरसिंह ने इसका यह अर्थ लगाया कि अग्रेजो के

निपुण तोपची मारे गये हैं और अब कच्चे आदमी काम कर रहे हैं।
रानी सहमत नही हुई ।

उन्होने कहा, 'अङ्गरेजो के सामने कोई नई दुविधा आ गई है। सेना और तोपखानो को बाट दिया गया है, और कोई बात नही।'

रानी ने बडी दूरबीन उठाई। झासी की ओर आने वाले तात्या के दस्तो को दूरी पर देखा। मुस्कराकर दूरबीन जवाहरसिंह के हाथ में दी। बोली, 'अब झासी का उद्धार निकट है।'

जवाहरसिंह दूरबीन से देखकर उछल पडा। झासी भर में समाचार फैल गया कि झासी की सहायता के लिये पेशवा की सेना आ गई।

झासी से दिन भर गोलाबारी बहुत हल्की रही।

लालता ने सम्मति दी, 'हमारे गोले कही पेशवा की सेना पर न पडे।'

और गोलन्दाजो का भी यही मत था। पूर्व और उत्तर के तोपखाने करीव करीब बन्द रहे। केवल पश्चिम और दक्षिण के तोपखाने कुछ काम करते रहे।

झासी की दिन भर की आशा सन्ध्या समय निराशा में परिवर्तित होने को थी।

टोरियो के बीचो बीच आते ही तात्या के दस्तो पर अङ्गरेजी तोपखानो ने गोले बरसाये। ठोस और पोले भी जो फटकर तात्या के घुड सवारो का सर्वनाश कर रहे थे। दस्ते तितर-बितर होने लगे। एक ओर काशीबाई पड गई, दूसरी ओर जूही को जाना पडा।

काशीबाई वाला बचा खुचा दस्ता अँग्रेज़ घुडसवारो के बीच में फँस गया। पहले पिस्तौलें चली, फिर तलवार खिची।

काशीबाई ने 'हर हर महादेव' कहा और पिल पडी। उसका स्वर कोयल का सा था। अँग्रेज़ घुडसवार समझ गये कि पुरुष वेश में स्त्री है।

उनको भ्रम हुआ।

एक बोला, 'रानी है।'

दूसरे ने कहा, 'झासी की रानी। उसको जिन्दा पकडो।'

परन्तु काशीबाई की तलवार ने यह मन्सूबा असम्भव कर दिया। ऐसी चलाई कि दो सवार तो अश्व समेत कट गये। कई घायल हो गये परन्तु एक सवार की तलवार से उसका घोडा मारा गया। काशीबाई पैदल लडी। उस स्थिति में भी उसने कई सवारो को घायल किया। अन्त मे—काशीबाई के सिर पर एक तलवार पडी। लोहे की टोपी के कारण सिर बच गया, परन्तु कन्धा कट गया। तो भी काशीबाई शिथिल नही हुई। फिर दूसरी तलवार। काशीबाई का अन्त हो गया—उस समय उसके मुँह से निकला—'हर हर महा......'

गोरे प्रसन्न थे। उठाकर रोज़ के पास ले गये।

'यह बहुत लडी हुजूर। औरत के शरीर में शैतान है।'

रोज़ ने काशी के शव को पहिचनवाया। पहिचानने वाले ने सिर हिलाकर आश्वासन दिया, 'यह रानी नही है। रानी की बहिन हो या सहेली हो या तात्या की कोई नातेदार।'

रोज़ ने काशी का शव सुरक्षित रक्खा, और तात्या की सेना की ओर ध्यान दिया। पेशवा के दस्तो के पैर उखड चुके थे। वे भागे। जूही भी भागकर तात्या के पास पहुची।

बोली, 'काशीबाई कही फँस गई है। मारी गई होगी।'

उसी समय रोज़ के गोले तात्या की बेतवा तटवर्ती सेना पर गिरे। तात्या ने जवाब दिया। परन्तु रोज़ के दूसरे अनेक दस्तो ने छोटी हलकी तोपो से उस पर कई पार्श्वों से आक्रमण किया तात्या को अपनी सेना बेतवा पार ले जानी पडी। रोज ने पीछा नही छोडा। तात्या की बडी बडी तोपे अपने बोझ के कारण बेतवा की रेत मे धस गईं। न खिच सकी। तात्या को छोडनी पडी। हार खाकर भागना पडा। रोज़ के दस्तो ने लगभग सोलह मील तक उसका पीछा किया। अङ्गरेजो के हाथ बहुत सामान और तोपखाने लगे। सन्ध्या तक मैदान साफ हो गया। तात्या के पन्द्रह सौ सैनिक मारे गये। वह मुश्किल से एरच घाट होकर कोच होता

हुआ, कई दिन बाद कालपी पहुँच पाया। जूही झाँसी नही लौट सकी। उसको तात्या की टूटी फूटी सेना के साथ कालपी जाना पड़ा।

दूरबीन की सहायता और तोपो की दूर से हट हटकर सुनाई पड़ने वाली आवाजो से झाँसी वालो को विश्वास हो गया कि तात्या की सेना हार गई। झाँसी में गहरी निराशा के काले बादल छा गये।

रोज की सेना के हर्ष का पार न रहा। एक दिन पहले रोज की सेना जब तब कर उठी थी। इस रात विजयश्री मुट्ठी के भीतर दिखलाई पड़ने लगी। थके मादे सिपाहियो को विश्राम दिया गया। सन्ध्या के समय काशीबाई का शव फिर पहिचनवाया गया। ओर्छे की सेना के कुछ लोग रानी को अच्छी तरह जानते थे। उन्होने आश्वासन दिया, 'यह रानी नही है।'

काशी का शव जला दिया गया।

रात में थोडी गोलाबारी जारी रही, परन्तु अधिक समय मोर्चो पर तोपो को यथावत जमाने मे गया।

जवाहरसिंह ने रानी को शहर की वार्ता सुनाई। रानी ने अपने सरदारो को इकट्ठा किया। उनसे मुस्करा कर कहा,

'पेशवा की सेना आज लौट गई, तो कल फिर वापस आ सकती है। तात्या असाधारण सेनापति है और पेशवा के अधिकार में असख्य सेना और तोपे हैं। आप लोगो को घबराना नही चाहिये। मान लो कि पेशवा की सेना न आती तो क्या हम लोग हथियार डालकर झाँसी के मुँह पर कालिख पोतते? अपने पुरखो का स्मरण करो। स्वराज्य की स्थापना में कितने खप गये! यह आवश्यक नही है कि स्वराज्य की स्थापना हम अपने जीवन-काल में ही देख लें। सीढी के डण्डे पर पैर रखते ही हम छत पर नही पहुच जाते। एक ही त्याग एक ही मरण, एक ही जन्म से स्वराज्य नही मिलता है। स्मरण रक्खो - हमको केवल कर्म करने का अधिकार है, फल पर नही। दृढ उद्देश्य और निरन्तर कर्म—हमारा केवल ध्येय यह है। जीवन कर्तव्यपालन का नाम है—कर्तव्यपालन

करते हुये मरना जीवन का ही दूसरा नाम है। जो लोग अङ्गरेजो से डरते हो, मौत से डरते हो वे हथियार रखकर आराम के साथ अपने घर चले जाये। जो लोग स्वराज्य के लिये प्राण विसर्जन करना चाहते हो, वे मेरे पास बने रहे।'

रानी फिर मुस्कराई। सब लोगो की ओर देखा। किसी ने 'हथियार रखकर आराम के साथ घर जाने' की बात नही कही। सबने लडमरने का रानी को आश्वासन दिया।

'श्रीमन्त सरकार आज रात से ही, अभी से, अपनी घनगरज का काम देखे।' गुलाम गौस ने कहा।

भाऊ बख्शी बोला, 'सरकार को सपने में जो देवी दिखलाई दी थी वही मेरी तोप पर काम करेगी। कडक बिजली ने कामासिन पहाडी तक को छार छार न कर दिया तो बात काहे की।'

'सरकार,' खुदाबख्श ने कहा, 'सैयर फाटक पर से अब जो कुछ होगा, उस पर आप को बहुत हर्ष होगा।'

मोतीबाई बोली, 'सरकार, मुझको और मेरी सङ्गिनो से अलग मोर्चे दिये जायें और फिर देखा जाय कि स्वराज्य की लडाई के लिये झांसी की स्त्रिया अकेले क्या क्या कर सकती हैं।'

बाहर से आये हुये पठानो के सरदार गुलमुहम्मद ने कहा, 'अलहमदुलिल्लाह, हुजूर अम न बहुत समझता है और न बहुत सुनता है। सिर्फ इतना अरज हे कि अम लोग झासी की मिट्टी में मिलेगा और बहिश्त लेगा। सोराज की आप जानो।'

रानी ने सरदारो को जी खोलकर पुरस्कार बाटे और उनके सिपाहियो के लिये भी इनाम दिये। मुख्य मुख्य लोगो को रणकंकण अपने हाथ से बाधे और पीठ पर हाथ फेरा। पुरस्कृत केवल तीन व्यक्ति नही हुये,—वे उस समय किले में थे भी नही,—दूल्हाजू, पीरअली और बरहामुद्दीन।

निराशा के वातावरण का कुहरा छट गया। उत्साह का तीव्ररवि चढ आया। रात भर बिकट, तीक्ष्ण, भीषण गोलबारी किले और बाहर

की बुर्जो पर से हुई। रोज़ की सेना ने बहुत हल्का जवाब दिया। सैनिक रक्षा के स्थानो में पडे पडे विश्राम करते रहे। यदि उस रात झासी की सेना फाटक खोलकर टूट पडती, तो रोज की सारी सेना नष्टभ्रष्ट हो जाती। झासी का गोलाबारी का शोरगुल अत्यन्त तीव्र हुआ, परन्तु उससे अङ्गरेजी सेना को सापेक्ष में हानि बहुत कम पहुची। रोज़ को आश्चर्य था—झासी में इतनी युद्ध सामग्री कहा से आ रही है!

रानी का वही क्रम जारी था—एक मोर्चे से दूसरे मोर्चे पर पहुचना, निरीक्षण करना और उत्साह प्रदान करना। एक स्थल पर जवाहरसिंह से भेट हो गई।

रानी ने पूछा,'उस मामले की जाच पडताल की ?'

जवाहरसिंह ने उत्तर दिया, 'जी हाँ सरकार पीरअली बुरी कसम खाता है। कहता है कि दीवान दूल्हाजू को रक्षा के लिए साथ ले गया था। रात में जो जासूसी उसने की उससे और कुछ पता तो नही लगा, क्योकि रोज़ ने अपनी योजना केवल अपने मातहत जनरलो को बतलाई थी, परन्तु यह अवश्य मालूम हो गया है कि अङ्गरेजो को अभी तक दो लाख रुपये की तो बारूद ही खर्च करनी पडी है। उनके पास बारूद की कमी हो गई है और गोले भी बहुत नही हैं। शायद कलकत्ते से कुमुक मंगवाई है।

रानी ने कहा,'मुझे भासता है अगरेज लोग कल विकट युद्ध करेगे। तात्या का जो सामान उन लोगो के हाथ पडा होगा उससे उनको बहुत सहायता मिलेगी। न जाने बिचारी काशी और जूही कहा होगी।'

जवाहरसिंह उत्तर ही क्या दे सकता था ?

रानी ने एक क्षण सोचकर कहा,'दीवान दूल्हाजू मिले ? उनसे पूंछा ?'

'नही मिले, जवाहरसिंह ने उत्तर दिया, कुमुक बदल गई है। सुन्दरबाई ओर्छा फाटक पर है। दीवान साहब कही चले गये हैं।'

'बरहामुद्दीन ?' रानी ने प्रश्न किया।

जवाहरसिंह ने जवाब दिया, सागर-खिडकी पर था। मैंने उसको सावधान रहने के लिये झिडक दिया है।'

इसी समय किले वाले महल पर जोर का धडाका हुआ। रानी किले की तरफ चली। जवाहरसिंह भी। रानी ने निवारण किया, 'आप शहर के मोर्चो को एक बार फिर देखकर थोडा विश्राम करलो। मै देखती हूँ यह क्या है।'

रानी ने किले में जाकर देखा। गोला महल पर पडा था। महल के दो खण्ड नष्ट हो गये। पानी भरने वाले ब्राह्मण और मन्दिरो के पुजारी महल के बीचोबीच नीचे वाले खण्ड में छिपे हुये थे। रानी ने उनको दिलासा दी। खुद महल के बाहर टहलने लगी। दो बज गये थे। गुलाम गौस पश्चिमी तोपखाने पर अन्य तोपचियो के साथ था—लालता मारा जा चुका था। दक्षिणी तोपखाने पर मोतीबाई, पूर्वीय पर भाऊ बख्शी और केन्द्रीय पर मुन्दर। इन लोगो को महल का हाल बतलाया। उन्होने निशाने साधे। अनुभव से दुश्मन के ठीक स्थलो की सही जानकारी हो गई थी। गोलाबारी से अङ्गरेजी तोपखाने बन्द हो गये। महल में छिपे हुये ब्राह्मण इत्यादि पसीने में तर बाहर निकल आये और सुखपूर्वक सो गये।

सवेरे एक चिट्ठी बरहामुद्दीन ने रानी के हाथ मे दी। वह उसका इस्तीफा था। उसमें लिखा था.—

'मेरा विश्वास नही किया गया। मुझको उल्टा डाटा-फटकारा गया। मेरा मन काम मे नही लगता। मैं नौकरी छोडता हूँ। हथियार पीरअली को दे दिये हैं। पीरअली और दूल्हाजू से होशियार रहियेगा।'

रानी को क्रोध आने को हुआ, परन्तु उन्होने सयम कर लिया।

बोली, 'ऐन समय पर तुम जैसे लोग ही काम छोड़ते हैं। जाओ हटो।' और चिट्ठी उन्होने अपने अङ्गरखे की जेब मे रख ली।

[७४]

दूसरे दिन जैसा युद्ध हुआ उससे रोज की सेना के छक्के छूट गये। बहुत उपाय करने पर भी रोज़ उस दिन एक अगुल बराबर भी सफलता प्राप्त न कर सका। नित्य की वही कहानी—दीवारो में छेद हुये, बुर्जो की मुडेरे जगह-जगह पर टूटी, शहर में मकान ध्वस्त हुये, आगें लगी, कुछ लोग मरे, दीवारो और बुर्जो की मरम्मत तुरन्त कर ली गई, आगे बुझा ली गई, लोगो के मरने से जीवितो में और अधिक हिंसा जागी और दृढता वढी। रात को भी वही क्रम। युद्ध की भयकरता ने स्थिरता पकड ली। वह झासी वालो के जीवन में एक नित्य की बात हो गई।

रानी ओर्छा फाटक पर पहुँची। दूल्हाजू अभी ठिये से हटा न था। सुन्दर भी मौजूद थी।

रानी ने यकायक पूछा, 'दूल्हाजू, तुम पीरअली के साथ अग्रेज छावनी में कभी गये ?'

'अग्रेज छावनी में मैं...मैं,' रुधे गले से दूल्हाजू ने जवाब दिया, 'मै सरकार कब ?'

रानी—'कभी सही। गये या नही ?'

दूल्हाजू—'मै ! मैं . तो, कभी...कहा . गया !'

रानी—'नहीं गये ?'

दूल्हाजू—'नही सरकार।'

रानी—'पीरअली कहता है कि तुम उसके साथ गये थे।'

दूल्हाजू—'वह झूठ बोलता है, सरकार।'

रानी—'सम्भव है। और यह लाल झण्डा क्या है ?'

दूल्हाजू—'लाल झण्डा ! लाल कैसा ? झण्डा क्या सरकार ?'

रानी—'घबराओ मत, मै लाल झण्डे की सब बात जानती हूँ।'

दूल्हाजू—'मै थक गया हूँ सरकार। दिमाग काम नही कर रहा है। कुछ समझ में नही आ रहा है। लाल झण्डा ! पीरअली वडा वेईमान और झूठा है।'

सुन्दर—'आज इनसे तोप ठीक नही चली।'

'ये मुझ से व्यर्थ रुष्ट हैं। इनको बराबर प्रसन्न रखने का प्रयत्न करता हू।'

रानी—'कोई बात नही। कल ठीक ठीक काम करना। सुन्दर साथ है। वह सहायता करेगी।'

रानी को बरहामुद्दीन याद आ गया। वह और अधिक इस्तीफे नही चाहती थी।

सुन्दर बोली, 'इनको किले में रख लीजिए। मैं आज रात और कल दिन भर तोपखाना सभाले रहूँगी।'

रानी ने कहा, 'आज रात आराम के साथ काम कर लो, कल दिन में अवकाश नही मिलेगा। कल रात इस मोर्चे का ऐसा प्रबन्ध करूँगी जिसमें तुम दोनो को काफी विश्राम मिल जाय।'

रानी सागर खिडकी पर पहुची। उस समय पीरअली कार्यभार अपने स्थानापन्न को सोप रहा था।

उनको देखते ही हडबडा गया।

रानी ने कहा, 'दूल्हाजू कहते हैं कि कल तुम्हारे साथ कभी बाहर नही गये। तुमने दीवान जवाहरसिंह से कहा कि तुम्हारे साथ गये थे?'

पीरअली ने हिम्मत बांधी। बोला,

वे मेरे साथ जरूर गये सरकार। डर के मारे उन्होने सच्ची बात नही कही। व्यर्थ भूठ बोले। मैं उनके मु ह पर कह सकता हूँ। दिशा मैदान के बाद हाज़िर हो जाऊंगा।'

रानी ने कहा, कोई जल्दी नही थोडी देर में किले पर आओ।'

'बहुत अच्छा हुजूर,' पीरअली ने मुक्ति की सास लेकर कहा।

रानी पूर्व और उत्तरी फाटको पर होती हुई उन्नाव फाटक पर आई। यहा पूरन कोरी अन्य कोरियो के साथ तोप पर था। कोरियो को शाबाशी दी।

पूरन से पूछा, 'झलकारी कहा है? अच्छी तरह तो है?'

'सरकार,' पूरन ने कहा, 'घरै है। अबई बुलाउत, दिन भर इतै काम करत रई, अबई थोडी देर भई जब गई।'

'नही बुलाओ मत।' रानी बोली, 'वैसे ही पूछा।'

वे आगे बढ गईं।

सब फाटको से घूमती हुई हलवाई पुरे में आई। बाजार का चौधरी मिला। लखपतियो में से था। यह सवेरे इतने पानी से हाथ-मुंह धोया करता था कि पानी सौ सवासौ गज तक बह जाता था।

रानी ने मुस्करा कर कहा, अब भी उतने ही पानी से हाथ धोते हो?'

'सरकार,' चौधरी ने उत्तर दिया, 'आज कल सब ब्योपार बन्द है।' मुंह हाथ धोते धोते इतने ब्योपारियो से बात करनी पडती थी कि पानी बहाने का ध्यान ही न रहता था।'

रानी ने कहा, 'अब ब्योपार के साथ पानी बहाना भी बन्द है।'

उस महा कठिन परिस्थिति में भी रानी की इस बात पर बाजार वाले हँसे, हँसते रहे और विपत्ति में धैर्य और साहस पाते रहे।

जो मिला, उससे कोई न कोई मीठी बात कह कर, ढाढस बँधाती हुई रानी किले पर लौट आईं। गोलाबारी का वही क्रम जारी था।

रात समाप्त हुई।

रानी ने सवेरा होते ही सिपाहियो और उनके सरदारो में समाचार भेजा — आज मैं स्वयं अपने लोगो के लिए कलेवा तैयार करूंगी। खूब खाओ और डट कर लडो।'

सुनते ही थके मादे और मृत सिपाहियो तक की छातिया फूल उठी।

ब्राह्मणो ने आटा राधा। रानी ने उसमें हाथ लगाया। ब्राह्मणो ने ही पूडिया सेकी। रानी ने उसमें भी सहयोग दिया। किले के भीतर वाले सरदारो को उन्होने अपने हाथ से उनके ठियो पर जा जाकर कलेवा वितरित किया।

हर्ष और अभिमान के मारे वे सब के सब उन्मत्त हो गये। रानी की छुई हुई पूडी तक के एक एक टुकडे को पगडी के, अगरखे के छोर में कस के बाध लिया। और कसकर बाधे—प्राणो की गाठ में प्रण।

रानी को पीरअली का स्मरण आया—भूलती तो वे कभी कुछ थी ही नही। बुलवाया। मालूम हुआ कि दिशा मैदान के लिए जाने के बाद फिर नही दिखलाई पडा; यह भी पता लगा कि दिशा निस्तार के लिये मुहरी के रास्ते से गया था।

रानी एक क्षण के लिये असमजस में पडी।

उनको विश्वास हो गया कि पीरअली, झूठ बोलता है, और कदाचित् दूल्हाजू सच, परन्तु बरहामुद्दीन ने लिखकर दिया था—पीरअली और दूल्हाजू से होशियार रहियेगा। किसी निश्चय पर पहुँच चुकी थी कि चारो दिशाओ से अंग्रेजो ने गोलाबारी शुरू कर दी।

[७५]

रानी ने झटपट दलपतियो और गोलन्दाजो को यथोचित आज्ञाये दी ।

अङ्गरेजो का निश्चय जान पडता था कि कही से भी परकोटे की दीवार को फोडे और झासी में घुस पडे और झासी वालो का निश्चय था कि जब तक शरीर में रक्त है तब तक दुश्मन का पैर झासी के भीतर न पडने देगे ।

झासी की गोलाबारी से आकाश में चलते हुये गोलो की आग की चादर तन गई । इस चादर मे से अँग्रेज़ी सेना के सिर पर फटे हूये गोलो से गोलिया, कीले-किर्चें बरसती थी । भूनकर खाक कर डालने वाली हवाइया विस्फोट कर रही थी । दक्षिणी मोर्चे पर, जीवनशाह की टौरिया से लेकर ओर्छा फाटक के सामने वाली टेक* तक अँग्रेज़ी तोपखाने अत्यन्त वेग के साथ जवाब दे रहे थे ।

अपने तोपखानो की रक्षा में अँग्रेज बन्दूकची जीवनशाह की टौरिया से ओर्छा फाटक की टेकडी के बीच में सतरे बाधकर ओर्छा फाटक और सैयर फाटक की ओर बढे । परकोटे की बुर्जों और कोट की दीवार के छेदो में से बन्दूको और हलकी तोपो ने यमराज के शापो को उगला । अँग्रेजी पल्टन बिछने लगी । पैर उखडे । पीछे भागने को हुई परन्तु उस क्रिया में भी उद्धार न पाकर मार्ग के पत्थरो की ओट मे छिप गई । लेकिन एक दस्ता ओर्छा फाटक की ओर बढ आया । अँग्रेजी तोपखाने ने भीषणतर गोलाबारी आरम्भ की । सैयर फाटक की ओर भी एक दस्ता बढा ।

रानी और मोतीबाई ने दूरबीन से देखा । ओर्छा फाटक के सामने वाली टेक के पीछे लाल झण्डा उठा । ओर्छा फाटक पर का तोपखाना कुछ धीमा पडा ।

'सरकार,' मोतीबाई ने अनुनय किया, 'मुझको उस ओर जाने दीजिये । सुन्दर अकेली है । दूल्हाजू के हाथ पाव ढीले हो गये हैं ।'

---

*अब इस पर मैकडानैल हाई स्कूल और बोर्डिंगहाउस बन गये हैं ।

'जाओ मोती। हीरा बनकर लौटना' रानी ने कहा।

मोतीबाई चली नई। खुदाबख्श सैयर फाटक पर था। उसने मोतीबाई को आगे नही बढने दिया।

बोला, 'ओर्छा फाटक पर मत जाओ। यही मेरे साथ रहो आज मैं अपने देश, अपनी रानी का नमक अदा करूंगा। मरूंगा। मेरी लाश को ठिकाने लगा देना।'

मोतीबाई का चेहरा कुम्हलाया हुआ था, परन्तु उसके सौन्दर्य की किरणे छुटकी पड़ रही थी। आखो में आसू आ गये।

तोप पर पलीता डालते डालते खुदाबख्श ने चिल्लाकर कहा, 'यह वक्त आसुओ का है?'

मोतीबाई ने बारूद की कालोच वाले हाथो से आसू मसल डाले। बोली, 'नही। अब आसू नहीं आवेंगे।'

खुदाबख्श ने उमग के साथ कहा, 'आज मै आपका, हमेशा के लिये, कैदी हो गया।'

मोतीबाई आख मिलाकर बोली, 'और हमेशा के लिये मैं आपकी।'

खुदाबख्श ने देखा कि रास्ते पर गोरे फाटक की ओर बढे चले आ रहे हैं। तोपो और बन्दूको की बाढ हुई।

खुदाबख्श ने मोतीबाई को आदेश दिया, 'दाहिने हाथ की पूरी सतर तक बन्दूके, पत्थर, कटे हुये पेडो के लक्कड इन लोगो के सिर पर पटकवाओ। दौडो। अँग्रेज वहा से सीढी लगाकर चढने का उपाय कर रहे हैं।'

मोतीबाई दौडी। सीढी लगाने का उपाय करने वाले सब के सब मारे गये—उनके ऊपर गोलियां, पत्थरो के बडे बडे ढोके और कटे हुये पेडो के लक्कड जो वहां पहले से जमा थे बरसाये गये। शहर और किले से ढोल, ताशे और तुरही का कान फोडने वाला नाद हुआ। अग्रेजो ने अपनी पैदल पल्टन को वापिस बुलाने का बिगुल बजाया। पल्टन गिरते-मरते लौट पडी।

रोज़ जीवनशाह की टौरिया के पीछे घोडे पर था और उसके मातहत अफसर बगल में।

रोज़ ने कहा, 'नाऊ आर नैव्हर (या तो अभी या कभी नही)।' तार से यह आदेश ओर्छा फाटक टेक और जार पहाड़ी के तोपखानो को दिया गया। ओर्छा फाटक टेक ने इसका जो अर्थ लगाया वह लाल झडे को और ऊँचा करना था।

इधर रोज़ के चार अफसर—चारो लैफ्टिनेट—यौवन प्रमत्त—टेकडियो, पत्थरो और अपनी तोपो की बाढो की आडे लेते हुए सैयरफाटक की दाहिनी बगल की टेक की दीवार के नीचे पहुँच गये। उस जगह दीवार थोडी देर पहले ही आधी धुस्स हो गई थी। साथ ही उस जगह वाले झासी के सैनिक मारे गये थे। इन अफसरो में से दो ने अपनी देह की सीडी बनाई। उन पर से बाकी दोनो चढ गये। इन दोनो ने अपनी सेना के एक दस्ते को सकेत किया। दस्ता आगे बढा। इतने में तलवार लिए मोतीबाई टूट पडी। लैफ्टिनेट ने पिस्तौल चलाई। खाली गई। मोतीबाई ने एक वार मे ही उसको खतम कर दिया। दूसरे लैफ्टिनेट ने तलवार के हाथ किये, परन्तु मोनीबाई ने उसको भी समाप्त किया। नीचे वाले दोनों अफसर. एक पत्थर की आड में छिप गये। इतने में झासी के दूसरे सिपाही वहा आ गये। खुदाबख्श के तोपखाने ने आगे बढते हुये दस्ते को नष्ट कर दिया और मोतीबाई के निकट वाले सिपाहियो ने उन दोनो लैफ्टिनेट को बन्दूक से समाप्त कर दिया। यह अग्रेज़ी सेना की दूसरी हार हुई।

उत्तरी फाटको पर भी जोर का हमला था, परन्तु ठाकुरो, काछियो, कोरियो और तेलियो की चतुरता तथा बहादुरी के कारण वहा अग्रेज़ कुछ नही कर पा रहे थे।

इधर दक्षिणी मोर्चो पर अग्रेजो ने तीसरा आक्रमण शुरू किया।

रानी ने किले पर से देखा कि ओर्छा फाटक का तोपखाना बहुत मन्द गति से काम कर रहा है। उन्होंने रामचन्द्र देशमुख को तुरन्त भेजा, परन्तु देशमख को वहा तक पहुँचने के लिये समय चाहिये था।

मोतीबाई खुदाबख्श के पास पहुँच गई। ओर्छा फाटक की टेक के पीछे लाल झण्डा और ऊँचा हुआ। खूब हिला फिर छिप गया। दूल्हाजू ने केवल बारूद भर भरकर तोप चलाई—उसमें से गोले निकलते ही कैसे ?

सुन्दर उससे पश्चिम की ओर जरा हट कर ऊँची बुर्ज पर से तोप चला रही थी। उसके साथी गोलन्दाज मारे जा चुके थे। केवल उसकी तोप कुछ काम कर रही थी। उसने दूल्हाजू का व्यापार देख लिया।

सामने की टेक के पीछे से गोरी पल्टनें टिड्डी दल की तरह उबर पडी और 'हुर्रा' घोष करती हुई भरोसे के साथ ओर्छा फाटक पर दौडी। दूल्हाजू लोहे का एक छड हाथ में लेकर बुर्ज से नीचे तुरन्त उतरा। सुन्दर को समझने में एक क्षण की भी देर नही लगी। उसने भी तोप छोड दी। केवल तलवार उसके पास थी। तलवार खींच कर अपनी बुर्ज से नीचे उतरी। वहा से ओर्छा फाटक जरा दूर पडता था।

सुन्दर के नीचे उतर पाने के पहले ही दूल्हाजू फाटक के पास पहुच चुका था। फाटक पर मोटी साकलो और कुन्दो में मोटी झर वाले ताले पडे हुये थे। कुन्जियाँ किले मे थी, परन्तु दूल्हाजू के हाथ में लोहे की मोटी छडी तो थी। उसने जरा भी विलम्व नही किया।

उछल कर ताले में छड डाली। तडाक से ताला टूट गया। दूसरे और तीसरे में डाली। सब टूट गये। दो साकलो को भी तोड दिया और तीसरी साकल खोल दी। फाटक केवल भिडे रह गये। दूल्हाजू फाटकों को खोल नही पाया था कि नङ्गी तलवार लिये सुन्दर आ पहुँची।

'देशद्रोही, नरक के कीडे,' सुन्दर ने कडककर कहा, तू अंग्रेजो मे कुछ नही पावेगा।' सुन्दर दूल्हाजू पर पिल पडी।

उसकी तलवार का वार दूल्हाजू ने लोहे की छड पर झेला । तलवार झन्ना कर बीच से टूट गई । तलवार का जो टुकड़ा सुन्दर की मुट्ठी में बचा था उसी को तानकर सुन्दर दूल्हाजू पर उछली । दूल्हाजू ने छड का सीधा हूला दिया । वह ठप से बाये वक्ष पर लगा । साथ ही बाहर तुमुल 'हुर्रा' घोष हुआ ।

चोट की परवाह न करके सुन्दर ने फिर बार किया । दूल्हाजू पीछे हटा । परन्तु उसने सुन्दर के पेट पर छड अडा दी । उधर गोरो ने धक्के से फाटक खोल लिया । सुन्दर के मुँह मे 'हर हर महादेव' निकला था कि एक गोरे की गोली ने सौन्दर्यमयी सुन्दर को अमर कर दिया । गोली उसके सिर पर पडी थी ।

दूल्हाजू ने छड पृथिवी पर टेक दी । दूल्हाजू पर भी गोरो की बन्दूकें सीधी हुई परन्तु उनके अफसर ब्रिगेडियर ने तुरन्त निवारण किया, 'आवर मैन' (अपना आदमी है) ।

गोरो ने बन्दूकें नीची करली । टिड्डी दल की तरह भीतर घुस पडे ।

अफसर ने कहा, 'यह रानी है ?'

दूल्हाजू ने उत्तर दिया, 'नही साहब महज नौकरानी ।'

अफसर ने अपने साथियो से कहा, 'बट ए सोल्जर शी विल हैव ए सोल्जर्स आनर ।' (लेकिन सिपाही है । सिपाही की इज्जत उसको मिलेगी) ।

स्वर्गवासिनी सुन्दर की दृढ मुट्ठी अभी ढीली नही हुई थी । तलवार का छोटा-सा टुकडा अब भी उसकी मुट्ठी में था । दो गोरे उसके शरीर को बाहर ले गये और पत्थरो से दाब दिया । जहा उनके और नत्थेखा के भी अनेक सिपाही दबे हुये थे । उसके उपरान्त वे लोग सब दिशाओ में, शहर में घुमने लगे ।

टेक के पीछे से रोज़ के पास तार द्वारा नगर विजय का सवाद पहुँचा ।

रोज ने अफसरो से कहा, 'उस आदमी को जागीर में गाव पक्के हुये।' दूल्हाजू के उस कृत्य का समाचार बहुत शीघ्र चारो ओर फैल गया।

फिर रोज ने तुरन्त आदेश दिया कि सैयर फाटक को तोड़ो शहर में बढो और सब बागियो का नाश करो।

खुदाबख्श के फाटक पर कहर पर कहर बरसने लगे। इसी समय रामचन्द्र देशमुख घोड़े पर आया। उसी समय एक गोली खुदाबख्श को लगी। सैयर फाटक का तोपखाना बन्द हुआ। एक अङ्गरेज दीवार पर चढा। मोतीबाई ने तलवार से उसका सिर कलम कर दिया और खुदाबख्श की लाश को टाग कर नीचे उतर आई। रामचन्द्र ने मोतीबाई को अपने पीछे घोडे पर बिठलाया और लाश को सामने लाद कर किले पर चढ आया। उसके किले में आते ही किले का फाटक बन्द कर लिया गया। लाश को महल के पास रख कर ढक दिया गया। मोतीबाई की आख से आँसू नही निकला।

रानी आ गई।

'मोतीबाई,' रानी ने कहा, 'तुम लोगो का अक्षय कर्म मैने अपनी आखो देखा है।'

स कार मोतीबाई ने भर्राये हुये स्वर में कहा, 'काम देखिये। अपने पास किला अब भी है और आप हैं। मैं इनका प्रबन्ध करती हूँ।'

'महल के बिलकुल निकट ही,' रानी कण्ठ को संयत कर के बोली, 'कुवर साहब को दफनाया जावे।'

देशमुख ने पूछा, 'सुन्दर?'

'ओर्छा फाटक पर मारी गई,' मोतीबाई ने उत्तर दिया, 'दूल्हाजू ने देश द्रोह करके फाटक खोल दिया।'

रानी ने ओठ सटाये।

धीरे से बोली, 'जीवन में यही बडा भारी धोखा खाया।'

फिर उन्होने ज़रा जोर से कहा, 'बरहामुद्दीन ने ठीक कहा था उसके साथ अन्याय हुआ। कहा है, कुछ जानते हो देशमुख?'

'नही सरकार,' देशमुख ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

रानी ने अंगरखे की जेब में हाथ डाला।

बरहामुद्दीन का इस्तीफा जेब में था। उसको उन्होने वही पडा रहने दिया।

मोतीबाई ने महल के पास ही कबर के लिये मिट्टी खुदवानी आरम्भ करदी और बहुत शीघ्र एक बडा गड्ढा खुदवा लिया।

रानी दूरबीन लेकर ऊपर के बुर्ज पर चढ गई।

रोज़ नगर की बुर्ज पर बुर्ज अपने अधिकार में करता चला जा रहा था। गोरे शहर भर में फैलते चले जा रहे थे। झासी की सेना मरती-कटती जा रही थी। आगें लगाई जा रही थी। झासी मे हाहाकार हो रहा था और उसके साथ तुमुल 'हुर्रा' घोष। रानी ने देखा कि शहर वाले महल' नाटकशाला और महल के सामने वाले विशाल पुस्तकालय को, गोरे घेरने का प्रयास कर रहे हैं और इन स्थानो के भीतर बन्द झाँसी के सैनिक लड रहे हैं। तब वे बुर्ज से नीचे उतर आई।

एक पेड के नीचे पत्थर पर बैठकर सोचने लगी, 'झाँसी का सर्वनाश होने को है। स्वराज्य की स्थापना अभी दूर है। परन्तु कर्म करने मात्र का अधिकार है, फल से हमको क्या ?'

उठ खडी हुई।

जवाहरसिंह, रघुनाथसिंह, गुलामगौस, भाऊ बख्शी, गुलमुहम्मद; भोपटकर इत्यादि सरदारो को बुलवाया। उन लोगो को अपना निश्चय सुनाया —

'बाहर निकल कर लडो, गोरो को शहर से निकालो और झासी की रक्षा करो।'

सलाह सम्मति का न तो समय था और न मौका।

गुलमुहम्मद ने कहा, 'हुजूर को शुक्रिया। फौरन चले। गोरो को शहर से निकालें।'

रानी ने आदेश दिया, 'गोलन्दाज़ अपने अपने ठियो पर काम करते रहें।'

भाऊ बख्शी ने आगे बढकर रानी के पैर पकड लिये।

प्रार्थना की, 'सरकार मुझको बाहर साथ जाने की आज्ञा दी जाय। मेरी तोप पर किसी और को कर दिया जाय।'

'अच्छा, गोलन्दाज़ो में से केवल तुम', रानी ने कहा, 'जल्दी करो। विलम्ब का काम नही है।'

बख्शी साथ हो गया।

भोपटकर की इच्छा न थी कि रानी बाहर जाकर लड़े, परन्तु वह स्तब्ध रह गया। रानी फुर्ती के साथ तैयार होकर किले के बाहर हो गईं। साथ में पठान, बुन्देलखण्डी इत्यादि पन्द्रह सौ सैनिक। पीछे भोपटकर भी गया। दक्षिण की ओर से आ आकर गोरे महल के पश्चिम की ओर बढ रहे थे।

रानी झझावात की तरह पहले दक्षिण की ओर झपटी, जहा से अंग्रेजी सेना घुसी चली आ रही थी। रानी का छापा इतना प्रचण्ड था कि अग्रेजी सेना भागी। पूर्व की ओर के मकानो की आड से बन्दूके चलाने लगी। तलवारो की मार के सामने वह बिलकुल न ठहर सकी।

रानी ने चिल्लाकर कहा, 'आज प्रमाणित कर दो कि हिन्दुस्थानी सिपाही की तलवार के सामने संसार का कोई योद्धा नही टिक सकता।'

उनके दस्ते ने ऐसी तलवार चलाई कि गोरी पल्टन बिखर कर हट गई, परन्तु मकानो की आड से गोलिया चलाने लगी। पाच सौ पठान दक्षिण और पूर्व दिशाओ में फैलकर फिर भी गोरो को पीछे हटाते रहे— और मरते रहे। रानी के महल और हाथीखाने के आसपास* टकसाल तक गोरी सेना फैली हुई थी और उसके लिये मकानो की आड थी। उसका जवाब देने के लिये रानी की सेना भी उसी प्रकार और उसी दिशा में फैली। गोरी सेना के कुछ सिपाही दबाव पड़ने के कारण

---

*अब यहां सदर अस्पताल है। अस्पताल के उत्तर में टकसाल मुहल्ला।

पश्चिम दिशा की ओर खण्डेराव फाटक की ओर बढे। वहा उनको अटकना पडा।

रानी उसी ओर बढ रही थी कि उन्होंने देखा एक सिपाही किसी मकान में से निकल पडा और अकेले उन कई गोरो से भिड़ गया। उसने ऐसी तलवार चलाई कि कई गोरे हताहत हुये। कुछ और गोरे आ गये। वह सिपाही घिर गया। तो भी वह अकेला उनको पछेलता गया। रानी ने अपने घोडे को तेज किया। पीछे पीछे उनके सिपाही दौडे। रानी के पहुचते पहुँचते वह सिपाही और गोरे पचकुइयो से नीचे की तरफ पहुच गये। उस अकेले सिपाही ने फिर कई गोरो को तलवार के घाट उतारा, परन्तु यकायक उस पर कई वार पडे और वह गिर गया। इतने में रानी सैनिको सहित आ पहुँची। गोरे भाग गये।

रानी ने पास जाकर देखा—बरहामुद्दीन था। उसके मरने में कुछ क्षण बाकी थे। बेचैन था। रानी घोडे पर से उतरी। बरहाम के सिर पर हाथ फेरा। बहराम ने पहिचान लिया। उसने आखे फाडी। पूरा बल लगाया। लेकिन कठिनाई से बोल पाया, 'हुजूर, माफी।'

मुश्किल से रानी के मुह से निकला, 'तुम सच्चे सिपाही हो। माफ किया।'

फिर जोर लगाकर बरहाम ने कहा, 'सरकार, जान नही निकलती। मेरी चि ट्...ठी।'

रानी ने जेब से उसके इस्तीफे का कागज निकाला। 'यह लो', रानी बोली।

'नही, स र ' का...र', बडी मुश्किल से बरहाम ने कहा, 'फाड ' डा' लि ये तब'' जान नि ' क'' ले गी।'

रानी ने तुरन्त चिट्ठी की चिन्दी चिन्दी कर डाली।

बरहामुद्दीन के मुखमण्डल पर उस घोर पीडा मे आनन्द की छाप लग गई। उसके अन्तिम शब्द थे 'ज ''ल ' वा...अल्ला...ह...'

भाऊ ने आकाश की ओर दृष्टि करके कहा,

'आहा कैसा मीठा मरण है यह ! भगवन् मेरी भी ऐसी ही सद्गति हो।'

बरहामुद्दीन का प्राणान्त हो गया।

रानी ने हुकुम दिया। इसी स्थान पर इसकी कबर बनाई जाय।*

पास के रहने वालों को कबर का प्रबन्ध देकर रानी और उनके सैनिक गोरो पर झपटे। वे भागे। अब पश्चिम से पूर्व होती हुई दक्षिण तक रानी के सैनिको की एक पात सी बन गई। पीठ पर किला था।

यकायक वृद्ध नाना भोपटकर रानी के सामने आ गया।

बोला, 'पहले इस बूढे ब्राह्मण का वध करिये तब आप गोली खाइये।'

रानी—'नाना साहब, यह क्या ?'

नाना—'आप देखती नही हैं, गोरे मकानो की आड से गोली चला रहे हैं और आपके सैनिक हताहत हो रहे है। आप पर एक गोली पडी कि समग्र झासी रसातल को गई। अभी अपने हाथ मे किला है। लडाई जारी रखी जा सकती है। लौटिये या मेरा वध करिये।'

रानी की समझ में आ गया।

गुलमुहम्द पास आ गया था। उसने भी कहा, 'सरकार, बुड्ढा ठीक बोलता हे। अन्दर चले।'

उत्तरी फाटक से रानी किले मे भाऊ और नाना भोपटकर के साथ चली गई' गुलमुहम्मद के साथ तीन सौ पठान ही भीतर जा सके। बाकी सब बाहर लडाई में मारे गये। बुन्देलखण्डी सैनिक लगभग सब कट मरे। किले के फाटक बन्द कर लिये गये।

---

* बरहामुद्दीन की कबर उसी जगह बा० जासोनाथ चौधरी के बाग में, और कबरो के पास है।

[७६]

गोरो ने शहर के सब फाटको पर अपना प्रबन्ध कर लिया, उनको अपने उन निश्शस्त्र पुरुषो, स्त्रियो और बच्चो के खून का बदला लेना था, जिनको बख्शिशअली इत्यादि बहुत थोडे से हिन्दुस्थानियो ने मारा था। पाच वर्ष की आयु से अस्सी वर्ष तक के जितने पुरुष मिले उनका कतल शुरू कर दिया। हलवाई पुरा में आग लगादी। कुछ स्त्रिया अपने सतीत्व के नष्ट होने के भय से कुओ में गिरकर मर गई। रोज का आदेश था कि स्त्रियो को न मारा जाय, उनको जान बूझ कर गोरो ने नही मारा। लेकिन अपने पति की रक्षा के लिये जो स्त्रिया उनकी आड बनने के लिये आ गई वे गोलियो से मरी। झाँसी के कवि और गायक भी लडे थे, वे मारे गये या घायल हुये। गवैयो मे केवल मुगलखा बचा और नर्तकियो मे दुर्गा और एक और।

गोरो ने घर घर में घुसना और सोना चादी इत्यादि सामान लूटना शुरू किया।

शहर वाले राज महल के चारो ओर अङ्गरेजी सेना का सबसे अधिक उपद्रव हुआ। नाटकशाला के सामने दक्षिण की ओर रानी का अस्तबल था। उस अस्तबल को रानी के बुन्देलखण्डी सिपाहियो ने किले की लढाई में परिवर्तित कर दिया। थे लगभग कुल पचास ही। परन्तु जब तक एक भी जिन्दा रहा अङ्गरेजो ने अस्तबल पर कब्जा नही कर पाया। एक एक दीवार, एक एक कोठरी, एक एक ईट पर कब्जा करने में अङ्गरेजो को न जाने कितने सिपाही बलिदान करने पडे।

इसके बाद महल की एक एक इञ्च भूमि के लिये युद्ध हुआ। जब महल के सब सिपाही खतम हो गये उस पर भी कब्जा हो गया। सब सामान लूटा। एक बक्स में से यूनियन जैक झण्डा मिला, जिसे लार्ड विलियम बेंटिक ने रामचन्द्रराव को दिया था महल के सिरे पर वह झडा लगा दिया गया। महल के केवल उस भाग को छोडकर, जिस पर यूनियन जैक फहरा रहा था, बाकी महल में आग लगादी गई। नाटक-

शाला भी न बची। सुन्दर पर्दे, जिनकी सहायता से शकुन्तला, रत्नावली और हरिश्चन्द्र नाटक खेले जाते थे, खाक कर दिये गये।

और इसके बाद जो कुछ हुआ उससे उन बर्बरो की पाशविकता इतिहास में अमिट अक्षरो में लिख ली गई—महल के सामने वाले विशाल पुस्तकालय मे आग लगा दी गई! थोडी ही देर में कलाओ का वह भडार अग्नि की गगनभेदी लौ फेकने लगा। कभी रोम, सिकन्दरिया और राज-गृह में भी ऐसा हुआ था, परन्तु वह बर्बर युग था! और यह विज्ञान का सभ्य युग!!

रानी ने किले पर से देखा। उनके हाथ मे दूरबीन न होती तो भी दिखलाई पड सकता था। पर दूरबीन ने सब कुछ स्पष्ट दृष्टिगोचर करा दिया।

अस्तबल मिटा—फिर बन सकता था। राजमहल जला—उसके बनाने वाले फिर उत्पन्न हो जायंगे। लेकिन पुस्तकालय? वेद, शास्त्र, पुराण, काव्य, इतिहास इत्यादि सस्कृति के और अरबी-फारसी के अनेक हस्तलिखित ग्रन्थ जिनकी प्रतिलिपि करने के लिये दूर दूर के विद्याव्यसनी आते थे, फिर कौन पैदा करेगा? रानी का माथा घूमने लगा। जिसको किसी कष्ट किसी समस्या, किसी विपत्ति ने कभी नही हिला पाया था, वह जलते हुये पुस्तकालय को देखकर मूर्च्छित होने को हुई। मुन्दर साथ थी। उसने सभाल लिया। रानी ने प्रबल प्रयत्न करके मूर्छा को दूर किया। पानी मँगवाया, पिया। इतने में हलवाईपुरा और कोरियो के मुहल्ला की आगो की लपटे दिखलाई दी। क्रन्दन, पुकार और चीत्कार की समग्र ध्वनिया यकायक सुनाई पडी। जन-वध, कतले-आम, लोक-सहार का प्रत्यक्ष प्रमाण। रानी का हृदय धसने लगा।

'मुन्दर, मुन्दर, मेरी प्यारी झासी की यह कुगति, यह दुर्गति! और मेरे जीतेजी! मेरी आखो के सामने!' रानी ने भरे गले से कहा। गला फटसा गया। मुन्दर उनको खीचकर नीचे ले आई।

महल की चौखट पर बैठ कर वह रोईं। लक्ष्मीबाई रोईं! वह जिसकी आखो ने आसुओ से कभी परिचय भी न किया था! वह जिसका वक्षस्थल वज्र का और हाथ फौलाद के थे! वह जिसके कोश में निराशा का शब्द न था! वह जो भारतीय नारीत्व का गौरव और शान थी! मानो उस दिन हिन्दुओ की दुर्गा रोई।

मुश्किल से आसुओ की अविरल धारा टूटी थी कि रामचन्द्र देशमुख ने कर्तव्य वश समाचार दिया, 'सरकार, कुवर गुलाम गौसखां दुश्मन की गोली से मारे गये।'

रानी सिहनी की तरह उछल कर खडी हो गईं। अङ्गरखे के छोर से आँसू पोछ डाले। गला साफ किया।

आज्ञा दी, 'भाऊ को उनकी जगह भेजो और लाश को महल के पास।'

आज्ञा पालन के लिये देशमुख चला गया। रानी मुन्दर को साथ लेकर दक्षिणी बुर्ज के नीचे, जहा खुदाबख्श के शव के लिये कबर तैयार हो चुकी थी, आईं। मोतीबाई वहा थी।

पश्चिमी बुर्ज से भाऊ बख्शी अङ्गरेज़ी शिविर पर धडाधड़ गोलाबारी कर रहा था। केन्द्रीय बुर्ज से रघुनाथसिह। दक्षिणी बुर्ज शान्त थी।

'मोतीबाई', रानी ने कहा, 'मैं दफनाने का प्रबन्ध करती हू, तुम तब तक इस बुर्ज के तोपखाने को जगादो।'

खुदाबख्श के शव के मोह मे मोतीबाई जरा ठमठमाई।

रानी बोली, 'अभी विलम्ब है। कुंवर गुलाम गौसखा का भी शव यही आ रहा है।'

विस्फारित लोचन मोतीबाई ने विस्मय के साथ कहा, 'क्या उस्ताद मारे गये?',

'हा मोती,' रानी ने उत्तर दिया। मोतीबाई तोप पर चली गई। पहली बाढ दागी थी कि उस पर नज़दीक से गोलियो की बौछार हुई। अँग्रेज किले के सदर फाटक के पास आ गये थे और उनको पास से

निशाना लेने का सुअवसर था। बुर्जो की मुड़ेरे उस दिन के युद्ध में टूट गई थी और उनकी मरम्मत न हो पाई थी। अन्य गोलियां तो मोतीबाई के आस पास से निकल गईं, परन्तु एक ने कन्धा नीचे से फोड़ दिया। हृदय उसका बच गया, मृत्यु अवश्यम्भावी थी।

उधर से गुलामगौस की लाश आई। इधर से एक सैनिक मोतीबाई को उठा लाया। उसको पानी पिलाया गया। रुधिर बहुतायत से जारी था, परन्तु वह अचेत न थी।

मुन्दर ने रानी से दक्षिणी बुर्ज के तोपखाने को सँभालने की अनुमति चाही।

रानी ने दृढतापूर्वक इनकार किया, 'नही। यही ठहर। तुझको अब सहज ही नही खोऊँगी।'

मोतीबाई का सिर रानी ने अपनी गोद में रख लिया।

मोतीबाई की आखो में आसू भर आये। बोली, 'इस गोदी में सिर रक्खे हुये मरना किसी और के भाग्य में नही बाईसाहब।'

रानी ने सिर पर हाथ फेरते हुये कहा, 'मेरी मोती तू आज हीरा हुई।'

'सरकार,' मोतीबाई ने व्याकुल स्वर में कहा, 'मैं कुछ भी हूँ परन्तु शुद्ध हूं।'

'नही तू शुद्ध ही नही,' रानी बोली, 'तू पवित्र है। देख, हीरा एक दिन सबको मरना है, परन्तु सत्कार्य में प्राण देना, भगवान का ध्यान करते करते मरना, यह जन्म भर की अच्छी कमाई से ही प्राप्त होता है।'

मोतीबाई ने आख मीची। उसका चेहरा पीला पड गया।

रानी ने कहा, 'आत्मा अमर है। शरीर का चाहे जो कुछ हो, वही एक प्रकाश शेष रहता है।'

मोतीबाई अचेत हो गई।

रानी ने दो कब्रे और तैयार करने के लिये आज्ञा दी। कबरें तुरन्त तैयार हो गईं।

रानी की गोद मोतीबाई के खून से तर हो गई। मोतीबाई का पीला मुर्झाया चेहरा एकदम प्रदीप्त हुआ। आखे अधमुदी हुई। होठ फडके उसके मुँह से निकला—'रानी...उजाला... ला...' और वह मुर्झाया हुआ फूल अनन्त विकास पाकर बिखर गया।

मुन्दर ने कहा, 'सरकार, इनको और कुवर खुदाबक्श को एक ही कबर में रक्खा जावे।'

रानी बोली, 'ऐसा नही होता और फिर यह कुमारी थी।'

तीनो को अलग अलग कबरो मे, परन्तु पास पास दफना दिया गया। अन्त्येष्टि क्रिया गुलमुहम्मद ने की। रघुनाथसिह ने उन तीनो वीरो को तोप की सलामी दी।

सन्ध्या होने को आ रही थी। इसलिये जल्दी जल्दी में चबूतरा इन तीनो का पक्का और एक ही बाध दिया गया। चबूतरे के ऊपर निशान इन तीनो के अलग अलग बना दिये गये।*

इसके उपरान्त रानी ने नहाया-धोया। कपडे बदले, वेश वही पुरुष सैनिक का।

महल के नीचे खण्ड में मुख्य मुख्य लोगो को इकट्ठा किया।

बोली, 'आज तक आप लोगो ने अप्रतिम वीरता से झासी की रक्षा की। प्राणो की होड लगादी। परन्तु अब चिन्ह अच्छे नही देख पडते हैं। हमारे लगभग सभी सूरमा और दलपति और गोलन्दाज काम आ गये। दीवारो और फाटको के रक्षक वीर मारे गये। किले की चार सहस्त्र सेना में से उतने सौ भी नही बचे हैं। अङ्गरेजो ने किला घेर लिया है। वे एकाध दिन में ही भीतर आ जावेगे। आप लोगो में से जो लडते लडते बचेगे उनको कैद और फासी होगी। मै पकडी तो नही जा सकती परन्तु

---

*यह चबूतरा महल के दक्षिणी कोने पर अब भी स्थित है। उसकी जियारत होती है और चादरे चढती हैं—लेकिन साल भर में केवल शिवरात्रि के दिन जब किले का यह भाग हिन्दुस्थानियो को सुलभ हो जाता है।

मेरे शव को फिरङ्गी स्पर्श करेंगे। इतने से ही मेरे पुरखो का, मेरे विख्यात ससुर का अपमान हो जायगा। अब शिवराम भाऊ की वहू के लिये केवल एक साधन शेष है । बारूद की कोठी में सैकड़ो मन बारूद है। मैं वहा जाती हूँ और पिस्तौल के धड़ाके के साथ अपने पुरखो में मिल जाती हूँ। किले से बाहर जाने के लिये कई गुप्त मार्ग हैं। आप लोग उनसे निकल जाये। अभी सन्ध्या होने में कुछ देर है। रात का काफी अन्धेरा आप लोगो को मिल जायगा।'

भाऊ बख्शी थर्राते हुये कण्ठ से बोला, 'मैं भी उसी बारूद के साथ, सरकार की सेवा के लिये यात्रा करूंगा।'

नाना भोपटकर ने तुरन्त कहा, 'आप आत्मघात करने जा रही हैं। यही न ? कृष्ण का पूरा गीता जिसको कण्ठाग्र याद है और जो गीता के अठारहवे अध्याय को अपने जीवन में वर्तती चली आई हैं, और जो प्रत्येक परिस्थिति में स्वराज्य की स्थापना के यज्ञ की वेदी पर संकल्प कर चुकी हैं, वह आत्मघात करेगी ! अङ्गरेज़ो से हमारे पुस्तकालय को भस्म करके जो आघात हमारे कृष्ण को नही पहुँचा पाया है वह आपका आत्मघात पहुचावेगा। करिये कृष्ण का, गीता का अपमान। आप रानी है। आपकी आज्ञा का पालन तो सबको करना ही है। परन्तु आपके उपरान्त देश की जनता आपके लिये क्या कहेगी—जिसकी रक्षा के लिये आपने बीड़ा उठाया था ?

रानी ने सिर नीचा कर लिया।

वृद्ध भोपटकर कहता गया, 'आप राजमाता हैं। आपके नन्हासा दामोदरराव पुत्र है। वह आपके पुरखो का प्रतीक, झाँसी की आशा है। कालपी में अभी पेशवा की सेना मौजूद है। दिल्ली, लखनऊ, कानपूर इत्यादि के पतन हो जाने पर भी जनता का पतन नही हुआ है। विन्ध्यखण्ड, महाराष्ट्र और अवध अक्षय हैं। किले के भीतर वाले और किले से बाहर दूर दूर वाले पठान देश के लिये कट मरने को कटिबद्ध हैं।

आप किले के बाहर होइये अंग्रेजो की सेना को चीरते हुये निकल जाइये और कालपी पहुँच कर पुनश्च हरिओ३म् कीजिये।'

रानी सोचने लगी। भोपटकर ने मुन्दर को दामोदरराव के लिवा लाने के लिये इशारा किया। वह उसके लेने के लिये चली गई।

रानी की आखो के सामने एक दृश्य घूम गया'——

'कुरुक्षेत्र का मैदान है। कौरव पाण्डवो की सेनाये एक दूसरे के सामने डटी हुई हैं। अर्जुन ने कृष्ण से कहा, भगवन् मेरा साहस डिग गया है। मेरा सामर्थ्य हिल गया है। मै असमर्थ हूँ लडना नही चाहता। भगवान कृष्ण ने उद्बोधन किया। अर्जुन ने फिर गाण्डीव धनुष हाथ में ले लिया।'

आखो के भीतर ही रानी को एक चमत्कार की अभिव्यक्ति हुई।

इतने में दामोदरराव वहा आ गया। दौड़कर रानी की गोद में बैठ गया।

गुलमुहम्मद ने कहा, 'सरकार अमारा सारा कौम मुलक वास्ते कट मरेगा।'

रानी उठी। उन्होने नाना भोपटकर के पैर छुये। कहा, 'एक दिन मैंने आपकी राजनीति पर आक्षेप किया था। मुझको क्षमा करना नाना साहब।' फिर एक क्षण बाद बोली, 'भाइयो, मेरी इस क्षणिक दुर्बलता को भूल जाना। मैं लडूगी। आज सबके सामने प्रण करती हू कि यदि समस्त अग्रेजो का मुझको अकेले सामना करना पडे, तो करूगी।'

उस अत्यन्त हीन परिस्थिति मे भी किले के भीतर वाले नर–नारियो के उमङ्ग का उजाला भर गया।

रानी ने कहा, 'थोडा सा खा–पी लो। जो लोग शस्त्र ग्रहण नही कर सकते वे गुप्त मार्ग से निकल जाये शेष मेरे साथ उत्तरी द्वार से भाडेरी फाटक होते हुए कालपी की ओर चले। भाड़ेरी फाटक का प्रबन्ध कौन करेगा?'

भाऊ वख्शी ने ज़िम्मा लिया। उसका मकान कोरियो के मुहल्ले के निकट था। और वह उन लोगो को अच्छी तरह जानता था। * वख्शी गुप्त मार्ग से किले के वाहर चला गया। रानी ने अपने पुराने सेवक सेविकाओ को पुरस्कार देकर बिदा किया। वे पैर छू छूकर, रो रोकर वहा से चले गये। नाना भोपटकर भी चला गया।

जवाहरसिंह को रानी ने आज्ञा दी, 'आप अपने इलाके में जाकर सैन्य संग्रह करिये और कालपी आ जाइये।'

जवाहरसिंह ने प्रार्थना की, 'मै आपको सुरक्षित स्थान में पहुँचाकर लौटूंगा अन्यथा नही। केवल इस आज्ञा का जीवन में उल्लङ्घन किया है। इस अपराध के लिये क्षमा चाहता हूं।'

रानी ने स्वीकार किया।

थोडे समय उपरान्त रानी और मुन्दर महादेव के मन्दिर में गईं। वन्दना की। ध्यान किया।

समाप्ति पर रानी ने मुन्दर से कहा, वह पलाश अव भी फूल रहा है। सिन्दूरोत्सव के दिन की मालाये अव भी उससे लिपटी होगी।'

मुन्दर वोली, 'एक बार उसको भेट लीजिये वाईसाहव।'

'अवश्य,' रानी ने कहा, 'वह हर साल फूलेगा और झासी हरसाल सिन्दूरोत्सव मनायेगी। झासी का सिन्दूर अमर हो।'

उन दोनो ने उस पलाश से भेंट की।

मुन्दर वोली, 'फूल की मालायें सूख गई हैं।'

रानी ने कहा, 'उनकी आत्मा तो हरी-भरी है। ये उनके चढाये फूल हैं जो इस युद्ध में वलिदान हो गईं हैं।'

इसके वाद वे दोनो महल पर आ गई।

---

* वख्शी की हवेली के नाम से वह मकान अव भी प्रसिद्ध है। श्री सेठ जिनदास कोचर के अधिकार में है। एमेरिकन मिशन की कुछ स्त्रिया उसमें किराये से रहती थी।

मोरोपन्त ताम्बे ने बहुत सा द्रव्य और जवाहर इकट्ठे किये। किले के उत्तरी भाग में नीचे की ओर द्वार की बगल में एक हवेली, हाथीखाना और घुडसार थी। लडाई के दिनो में जवाहरसिंह और रघुनाथसिंह इसी हवेली में रहते थे। मोरोपन्त ने एक हाथी पर जवाहर और अशर्फियां लादी। और लोगो ने कमर में अशर्फिया बाधी। रानी और मुन्दर पुरुष वेश में घोडो पर सवार हुईं।

उस समय रात बहुत नही गई थी। पूर्व दिशा में बडा तारा ऊपर चढ आया था। घना अँधेरा केवल शहर की आगो से फट फट जा रहा था। अँधेरे के ऊपर बडे छोटे तारे दम दमा रहे थे। नीचे शहर के अँधेरे पर उन आगो के बडे बडे लाल-पीले छपके से पड पड जाते थे।

रानी ने एक चादर से दामोदरराव को पीठ पर कसा और अपने तेजस्वी सफेद घोडे को किले के उत्तरी भाग से निकालकर आगे किया। पीछे पीछे पठान, मुन्दर, जवाहरसिंह, रघुनाथसिंह इत्यादि। द्वार से निकलते ही उन्होने किले को नमस्कार किया, झासी को नमस्कार किया। कण्ठ में कुछ अवरोधसा अवगत किया। इस भय से कि कही आख में आसू न आ जाय उन्होने उत्तर दिशा की ओर मुह मोडा और किले के उतार के नीचे आ गईं। किला बिलकुल सूना छोडा।

मोरोपन्त का हाथी बीच में था। सवार अधिक न थे। उनकी रक्षा के हेतु बाकी सैनिक पैदल थे। नङ्गी तलवारे लिये हुये।

यह टोली टकसाल के पश्चिम वाले मार्ग से भाडेरी फाटक की ओर अग्रसर हुई। जैसे ही कोतवाली की बराबरी पर आई अङ्गरेजी सेना से भिडा भिडी हो गई। रानी 'हर हर महादेव' उच्चार करती हुई उनको चीरती फाडती मुन्दर सहित निकल गईं। पठान शत्रुओ से बेतरह लडे। बहुत से मारे गये बाकी आगे बढे।

जगह जगह—जलते हुये मकानो से उजाला हो रहा था। रानी और अनेक सङ्गी द्रुत गति से भाडेरी फाटक के निकट पहुच गये। वहाँ बख्शी कोरियो को लिये हुये अङ्गरेजी फौज की एक टुकडी को तलवार के युद्ध

में उलझाये हुये था। इधर से रानी की टुकडी पहुंची। जलते हुये मकानों के प्रकाश में थोड़ी देर के लिये विकट युद्ध हुआ। बख्शी ने फाटक खोल दिया और फिर अपने कोरी सैनिको को लेकर अङ्गरेज टुकड़ी पर टूट पडा। जान पड़ता था कि उसको जीवन का मोह नही। वैसे ही निर्मोही पठान थे। बख्शी फाटक के बगल में मारा गया। उसने मरने के पहले रानी को देख लिया था। मरने के पहले उसने 'हर हर महादेव' और 'झासी की रानी की जय' का घोप किया था। उसके शरीर पात को रानी ने देखा, परन्तु इतना समय भी न था कि मुह से 'धन्य' भी कह पाती।

थोडे से लोगो के साथ रानी बाहर हो गईं। मरने से बचे हुये अङ्गरेज़ सैनिक भाग गये। कोरियो ने भाडेरी फाटक फिर बन्द कर लिया* और भाऊ बख्शी को एक जलते हुये मकान के अँगारो में डालकर उसकी अन्त्येष्टि कर दी।

रानी और उनके साथियो को कोट के बाहर की भूमि का राई रत्ती पता था। अन्धेरे में वह सहज ही बढती चली गईं। बातचीत बिलकुल धीरे धीरे होती थी। अञ्जनी की टौरिया के पास ओर्छे की सेना का पहरा था और एक अँग्रेज़ी छावनी का। यहाँ रोक टोक हुई। लड़ाई भी। यहां से रानी के साथ केवल दस बारह सवार रह गये और मुन्दर।

आगे निर्गम मार्ग। अगाध अँधेरा। झींगुर झङ्कार रहे थे। उनके ऊपर घोडो की टापो की आवाज़ हो रही थी। सब ओर सन्नाटा छाया हुआ था। पीछे झांसी में आगें जल रही थी और आवाजें आ रही थी। आगे अन्धकार मे जगल और गडमऊ का पहाड लिपटे हुये, दबे हुये से दिखलाई पड़ रहे थे। चिडिया पेडो पर से भड-भडाकर उडती और घोड़ो को चौंका देती। घोड़े जल्दी चलाये जाने के कारण ठोकर ले ले पड़ते थे। आगे का मार्ग अन्धकार पूर्ण और भविष्य तिमिराच्छन्न। ज्यो त्यो

---

*यह फाटक ७५ वर्ष तक ज्यो का त्यो बन्द रहा। १९३३ के जाड़ो में खोला गया।

रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेजी सेना में से मार्ग बनाकर जवाहरसिंह, गुलमुहम्मद आदि चुने हुये सरदारों के साथ झांसी छोड़ रही है।

करके आरी नामक ग्राम के पास से यह टोली आगे गई। पहूज नदी मिली। लोगो ने चुल्लुओ से पानी पिया और फिर आगे बढे। कभी धीमी गति से कभी तेजी के साथ। जब दस बारह मील निकल आये तब ये लोग कुछ क्षण के लिये ठहरे।

रानी ने जवाहरसिंह और रघुनाथसिंह से कहा, 'अब आप लोग लौट जाओ और सेना एकत्र करके मुझे कालपी में आकर मिलो।'

रघुनाथसिंह ने तुरन्त कहा, 'यह कार्य दीवान जवाहरसिंह अच्छा कर सकते है। मैं तो साथ चलूँगा।'

रानी मान गई। जवाहरसिंह ने उनके पैर छुये और कटीली की ओर चला गया।

रानी की टोली आगे वढी। इसमें गुलमुहम्मद और उसके कुछ पठान भी थे।

जनरल रोज को रानी के निकल जाने का पता बहुत शीघ्र लग गया। उसने तुरन्त लैफ्टिनेण्ट बोकर नामक अफसर को कुछ गोरो और निज़ाम हैदराबाद के एक दस्ते के स थ रानी का पीछा करने के लिये भेजा।

मोरोपन्त भाडेरी फाटक से निकल कर अन्जनी की टौरिया तक आया, परन्तु जैसे ही यहाँ लडाई छिडी, उसने समझ लिया कि हाथी महान सकट का कारण होगा। उसने दतिया की दिशा मे हाथी को मोड दिया और जितनी तेजी सम्भव थी उतनी तेजी के साथ भागा। कुछ अंग्रेज सवारो ने पीछा किया। उसकी जाँघ मे किसी घुडसवार की तलवार का घाव भी लगा, परन्तु वह निकल गया और सवेरे दतिया पहुँच गया। एक तबोली के यहा ठहरा। परन्तु छिपाये छिप नही सकता था। राज्याधिकारियो को मालूम हो गया। राज्य ने हीरे जवाहर सब जब्त कर लिये और मोरोपन्त को पकड़ कर तुरन्त झासी भेज दिया।

रोज़ ने दिन के दो वजे जलते हुये महल और भस्मीभूत पुस्तकालय के बीचो बीच मोरोपन्त को फाँसी दे दी!

[७७]

जैसे ही झलकारी को मालूम हुआ कि रानी भांडेरी फाटक से वाहर निकल गयी, उसने चैन की साँस ली। घर के एक कोने में थोडी देर पडी रही। पूरन बाहर से आया।

वोला, 'अव इतै से भगने पर है।'

झलकारी—'तुम चले जाओ। मै घरे हो। गोरा लुगाइयन से नई वोल है।'

पूरन—'मै कहत इतै से चल। जिद्द जिन कर। तै मारी जैय और मैं मारो जैओ।'

झलकारी—'देखो मोसे हठ न करो। कऊँ जा दुको। मैं घर न छोड हो, न छोड हो, वालाजी की सौगन्ध।'

पूरन उसके हठीले स्वभाव को जानता था। वह एक लोटा पानी लेकर एक खण्डहल मे जा छिपा।

थोडी देर में झलकारी को अपने दरवाजे के सामने घोडे की टाप का शब्द सुनाइ पड़ा। झाँक कर देखा। बिना सवार का वढिया घोडा जीन लगाम समेत। जीन से जान पडता था कि झाँसी की सेना का है। झलकारी समझ गई कि सवार मारा गया और घोडा भाग खडा वुआ है।

झलकारी ने किवाड खोले। घोडे को पकडा। और घर के पास वाले पेड से वाँध दिया। फिर भीतर चली गयी।

उसने एक योजना सोची और उसको कार्यान्वित करने का निश्चय किया। जव उसने निश्चय किया तव वह सीधी तनकर खडी हो गयी थी।

झलकारी ने अपना शृङ्गार किया। वढिया से वढिया कपडे पहिने ठीक उसी तरह जैसे लक्ष्मीवाई करती थी। गले के लिये हार न था, परन्तु काँच के गुरियो का कण्ठा था। उसको गले मे डाल लिया। प्रात काल की प्रतीक्षा करने लगी।

प्रात:काल के पहिले ही हाथ मुँह धोकर तैयार हो गई।

पौ फटते ही घोड़े पर बैठी और ऐंठ के साथ अङ्गरेजी छावनी की ओर चल दी। साथ में कोई हथियार न लिया। चोली में केवल एक छुरी रख ली।

थोड़ी ही दूर पर गोरों का पहरा मिला। टोकी गई।

झलकारी को अपने भीतर भाषा और शब्दों की कमी पहले पहल जान पड़ी। परन्तु वह जानती थी कि गोरों के साथ चाहे जैसा भी बोलने में कोई हानि न होगी।

झलकारी ने टोकने के उत्तर में कहा, 'हम तुम्हारे जडैल के पास जाउता हैं।'

यदि कोई हिन्दुस्थानी इस भाषा को सुनता तो उसको हंसी बिना आये न रहती।

एक गोरा हिन्दी के कुछ शब्द जानता था। बोला, 'कौन ?'

'रानी—झाँसी की रानी, लक्ष्मीबाई,' झलकारी ने बड़ी हेकड़ी के साथ जवाब दिया।

गोरों ने उसको घेर लिया।

उन लोगों ने आपस में तुरन्त सलाह की।

'जनरल रोज़ के पास अविलम्ब ले चलना चाहिये।'

उसको घेरकर गोरे अपनी छावनी की ओर बढ़े।

शहर भर के गोरों में हल्ला फैल गया कि झाँसी की रानी पकड़ ली गई। गोरे सिपाही खुशी में पागल हो गये। उनसे बढ़कर पागल झलकारी थी।

उसको विश्वास था कि मेरी जाँच-पड़ताल और हत्या में जब तक अङ्गरेज उलझेंगे तब तक रानी को इतना समय मिल जावेगा कि काफी दूर निकल जावेगी और बच जावेगी।

झलकारी रोज़ के सामने पहुचाई गई। वह घोडे से नही उतरी। रानियो की सी शान, वैसा ही अभिमान, वही हेकड़ी। रोज़ भी कुछ देर के लिये धोखे में आ गया।

शकल सूरत वैसी ही सुन्दर। केवल रङ्ग वह नही था।

रोज़ ने स्टुअर्ट से कहा, 'हाउ हैन्डसम, दो डार्क एण्ड टैरिबिल, (कितनी सुन्दर है, यद्यपि श्यामल और भयानक)

स्टुअर्ट बोला, 'लैफ्टिनेंट बोकर को सदल व्यर्थ ही भेजा।'

परन्तु छावनी में रात्र दूल्हाजू था। वह खबर पाकर तुरन्त एक आड में आया। उसने बारीकी के साथ देखा।

रोज़ के पास आकर दूल्हाजू बोला, 'यह रानी नही है जनरल साहब। झलकारी कोरिन है। रानी इस प्रकार सामने नही आ सकती।'

झलकारी ने दूल्हाजू को पहिचान लिया। उसको क्रोध आ गया और वह अपना अभिनय नितान्त भूल गई।

क्रुद्ध स्वर में बोली, 'अरे पापी, ठाकुर होकै तैंने जो का करो।'

दूल्हाजू जिमीन में गड सा गया।

रोज को झलकारी की वास्तविकता समझाई गई।

रोज के मुँह से निकला, 'यह औरत पागल हो गई है।'

रोज़ ने झलकारी को घोडे पर से उतरवाया।

रोज़—'तुम रानी नही हो। झलकारी कोरिन हो। तुमको गोली मारी जायगी।'

झलकारी ने निर्भय होकर कहा, 'मार दै, मैं का मरबे खो डरात हो? जैसें इत्ते सिपाही मरे तैंसें एक मैं सई।'

रोज ने झलकारी के पागलपने का कारण तलाश किया।

मालूम होने पर दङ्ग रह गया।

स्टुअर्ट बोला, 'शी इज़ मैड (वह पागल है)।'

रोज़ ने सिर हिलाकर कहा, 'नो स्टुअर्ट। इफ वन परसेंट श्राव इण्डियन वीमन बिकम सो मैड एज़ दिस गर्ल इज़ वी विल हैव टु लीव श्राल दैट वी हैव इन दिस कट्री। (न स्टुअर्ट, यदि भारतीय स्त्रियो में एक प्रतिशत भी ऐसी पागल हो जाये जैसी यह स्त्री है तो हमको हिन्दुस्थान में अपना सब कुछ छोडकर चला जाना पडेगा।')

स्टुअर्ट की समझ में आया।

रोज ने समझाया, 'यह स्त्री हम लोगो को अपने धोखे में उलझाकर रानी के भाग निकलने का समय पाने के लिये यह प्रपञ्च रचकर आई है, परन्तु बोकर पीछे पीछे गया है। आशा है कि वह इस धोखे से बच गया होगा।'

जनरल रोज़ ने झलकारी को तग नही किया। केवल कैद में डाल दिया और एक सप्ताह उपरान्त छोड दिया।

[७८]

सवेरा होते होते रानी भाडेर के नीचे बहने वाली पहूज नदी के किनारे पहुँच गई। तुरन्त नहाया धोया, दामोदरराव को कलेवा करवाया। उनके साथियो ने भी थोडा-सा जलपान किया। रानी के केवल कुछ अञ्जली पानी पिया। झासी की दुर्दशा और अपने स्नेहपात्रो के मारे जाने के कारण, उनका कलेजा इतना भरा हुआ था कि कलेवा के नाम से उनको अरुचि हुई।

अन्तिम अञ्जली का पानी मुह में डाला था कि झासी की ओर से घूल उडती हुई दिखाई पडी। रानी ने समझ लिया कि पीछा करने वाले लोग आ रहे हैं।

गुलमुहम्मद ने दूरबीन से देखा। बोला, 'ये अङ्गरेज़ लोग अमारा इधर बी पिच्छा करता है। हुजूर आगे वढें। अम लोग देखता है।'

'नही,' रानी ने कहा, और झटपट दामोदरराव को पीठ पर कसा, घोडे पर सवार होकर बोली।

'इस तरह हम लोग बीन बीनकर मारे जायेगे। यहा आसपास छोटी छोटी टोरिया हैं। इनके पीछे खड़े हो। जैसे ही वैरी का दस्ता निकट आवे पिस्तौलें दागो। दस्ता बन्दूक या पिस्तौल से जवाब देगा, जवाब चुकने पर तुरन्त तलवार से आक्रमण करो।'

गुलमुहम्मद ने समझ लिया—थोड़े से आदमियो को लेकर रानी कितने बडे दस्ते का मुक़ाबला कर सकती हैं!

रानी की टोली ने उसी आदेश के अनुसार काम किया।

लैफ्टिनेट बोकर का दस्ता घुडसवारो का था। ठोस पात में वे लोग घोड़े दौडाते हुये चले आ रहे थे। जैसे ही पिस्तौल की मार में आये रानी की टोली ने आड से पिस्तौलो की वाढ दागी। वाढ का भयंकर प्रभाव हुआ। बोकर के दल के पास पिस्तौलें और बन्दूकें भी थी, परन्तु बन्दूकें आवरो में पडी हुई थी। उन्होने घबराकर पिस्तौलें खाली कर दी। रानी ने तुरन्त तलवार से हमला किया। अँग्रेज दस्ते के दो दो तीन तीन

सवार रानी के साथियो के पल्ले पडे। एक सवार को तो रानी ने कमाल की सवारी करके घोडे समेत चीर दिया। बोकर रानी के ऊपर घोडे को जोर की एड लगाकर लपका। रानी ने विलक्षण चतुरता के साथ अपने घोडे को पीछे हटाकर बोकर के सपाटे को व्यर्थ कर दिया। फिर वह उस पर झपटी और तलवार का वार किया।

बोकर घायल होकर गिरा। शेष दस्ता अपने प्राण लेकर भागा। रानी पर भागते हुये सवारो में से एक ने गोली चलाई। रानी बच गयी, गोली घोडे का पिछला हिस्सा छीलती हुई चली गई।

रानी की गाठ में अब केवल मुन्दर, गुलमुहम्मद, देशमुख और रघुनाथसिंह बचे—बाकी सब मारे गये। परन्तु इन बहादुरो ने बोकर के दस्ते को कुंठित कर दिया, लौटा दिया। बोकर को उसके सगी झासी उठा ले गये। उसके लौटने पर रोज को झलकारी के कृत्य का पूरा मर्म और अच्छी तरह समझ में आ गया।

रानी पहूज पार करके कालपी की ओर तेजी के साथ चल पडी।

मार्ग में उनका प्यारा घोडा यकायक रुका। उसके घाव से बहुत खून निकल चुका था, और उसको दिल तोड परिश्रम करना पडा था। मर गया। एक गाव वाले ने उनको अपना अच्छा घोडा दे दिया। रानी केवल पानी पीती हुई आधीरात के लगभग कालपी पहुँची। एक सौ दो मील का मार्ग तय करके! दिन भर कुछ भी न खाकर उस तेज धूप में इस पर भी पहुँचते ही उन्होने काशीबाई और जूही के सम्बन्ध में तात्या से प्रश्न किया।

तात्या ने उत्तर दिया, 'काशीबाई झासी के सग्राम में मारी गई। जूही बच गई। इस समय वह शिविर में रावसाहब के रनवास के साथ है। आज्ञा हो तो बुलवाऊ ?'

'नहीं' रानी ने निषेध किया, 'कल सध्या समय मिलूंगी।'

इसके उपरान्त तात्या ने सविस्तार अपनी झासी वाली लडाई का वृत्तान्त थोडे ही समय में सुना दिया। उन्होने धैर्य के साथ सुना।

फिर उन्होने स्नान किया। कपडे बदले और केवल शर्बत पीकर सो गयी।

इधर उस दिन झासी में जो कुछ हुआ वह एक अत्यन्त वीभत्स काड है। इङ्गलेड के माथे का अमिट कलक। झासी उसको कभी न भूली।

किले पर अधिकार करने के बाद असख्य मकान जलाये गये। बालक, युवा, वृद्ध गोलियो से उडाये गये। बेहद लूटमार की गई। लाशो के ढेर लग गये। गाये और बछडे अनाथ होकर भटकने और जलने लगे। सात दिन तक लाशे सडती रही। लगभग तीन सहस्र निरपराध व्यक्तियो का वध किया गया।

महालक्ष्मी का मन्दिर लूटा गया।

अग्रेजी सेना के नायको और ऊँचे अफसरो तक ने एक अत्यन्त बर्बर कृत्य में भाग लिया। शेक्सपियर, मिल्टन, स्कॉट और बर्क के देश के शिक्षित तथा विज्ञान विदग्ध अफसरो ने, मन्दिरो की मूर्तिया, सिंहासनो पर से उठाई, झोली मे रक्खी और अपने शराबखानो को सजाने के लिये सदा के लिये ले गये और इस कुकृत्य को अग्रेज़ इतिहास लेखक ने इस प्रकार प्रकट किया, 'मूर्तियो का चुराना 'लूट' नही थी, यह तो कुतूहल जनित जिज्ञासा की पूर्ति मात्र थी ?'

मुरलीमनोहर के मन्दिर की मूर्ति बचा दी तो बुड्ढे पुजारी को मन्दिर के भीतर ही मार डाला। उसके जवान लड़के को पकड़कर मन्दिर के बाहर लाये। एक गोली चली। फिर उसकी बुड्ढी मा को कभी पता नही चला कि लडका कहा गया।*

पहले दिन अँग्रेजो ने लूटमार की। दूसरे दिन मद्रासी दस्ते को अवसर दिया गया। तीसरे दिन निज़ाम हैदराबाद की पल्टन की बारी आई। अनाज, बर्तन, कपडे तक न छोडे गये।

---

* वृद्ध पुजारी का नाम रामचन्द्र गोलवलकर और लडके का नाम कृष्णराव था।

केवल एक स्थान वध से बचा। वह था बिहारीलाल जी का मन्दिर। कदाचित इस कारण कि वह एक कोने में था और उस पर कोई शिखर न था।

आरम्भ के कतल के बाद कुछ लोग माधवराव भिडे के बाग में आ छिपे। एक अंग्रेज अफसर के हृदय के किसी कोने मे कुछ मानवता बाकी थी। उसने इन लोगो का वध नही होने दिया। इस बाग की चौडी दीवारे पोली थी। पूना के पास का एक शास्त्री उन दिनो अपने दुर्भाग्य से झांसी में आ फँसा था। वह दीवार की एक खोल मे रात भर ठुसा रहा। पीठ से पीठ सटा कर वही एक स्त्री भी प्राणो की खैर मनाती रही। समय पाकर शास्त्री किसी प्रकार अपने निवास स्थान पर पहुचा। तमाखू खाने की आदत थी, पर लुटेरे घर में से उसे भी गत दिवस की लूट में उठा ले गये थे। उसी समय कुछ मदरासी दस्ते वाले फिर घुस आये। उन्होने बचे खुचे बर्तन भी खसोटे। शास्त्री ने भी अपनी एक ज़रूरत पूरी की।

लुटेरो से कहा, 'थोडी खाने की तमाखू हो तो दिये जाओ।'

बर्तनो के बदले में थोडी सी तमाखू मिल गई! विदेशी होते तो शायद खाने को संगीन मिलती।

रोज का एक दस्ता घूमता भटकता, टक्करें लेता देता मऊरानीपुर होकर निकला। झाँसी के पतन का समाचार पाने पर भी काशीनाथ भैया और आनन्दराय इस दस्ते से भिड गये।

मऊ की गढी छोटी सी थी। तोपे गाँठ में न थी। इसलिये ये लोग अपना छोटा सा बन्दूकची दल लेकर मऊ के बाहर की टौरिया की आड में पहुचे और मुकाबिला किया। खूब डटकर लडे और सब मारे गये। आनन्दराय का लडका भी साथ था। मरने के पहले आनन्दराय ने लडके से कहा,

'यदि कभी रानी साहब के दर्शन हो, तो कहना कि मऊ झाँसी से पीछे नहीं रही।'

लड़का कुछ महीने बाद गिरफ्तार हो गया। परन्तु उन्ही दिनो विक्टोरिया की क्षमा घोषणा हुई और वह फाँसी से बच गया। इस प्रकार की घटनाये झासी जिले के उन सब गावो में हुई जहाँ एक छोटी मोटी भी गढी थी, और जनता को हथियार पकड़ने की सांस मिली थी।

आठवे दिन झाँसी में रोज़ का एलान हुआ, 'खलक खुदा का, मुल्क बादशाह का, अमल कम्पनी सरकार का।'

परन्तु इन सात दिनो हवा में जो स्तब्ध घोषणा घूमी थी यह थी, 'खलक शैतान का, मुल्क शैतान का, अमल शैतान का।'

रोज को झाँसी ज़िले में 'कम्पनी सरकार का अमल' कायम करने में करीब एक महीना लग गया।

[७९]

कालपी खासा नगर था। यमुना नदी के किनारे। एक ओर मजबूत किला। तीन ओर परकोटा, और चौथी ओर यमुना नदी। किले के पश्चिम की तरफ एक मैदान, उसके बाद नगर। नगर से कुछ दूर चौरासी गुम्बज का क्षेत्र। छत्रसाल के पीछे कालपी का भूखड गोविन्दपन्त के अधिकार में आया। सन् १८०६ की सन्धि के द्वारा अग्रेजो ने गोविन्दपन्त के वंशजो से कालपी को पाया। सन् १८२५ में इसी वश के एक नाना पंडित ने कालपी को फिर अपने हाथ में कर लिया, परन्तु झाँसी के राजा रामचन्द्रराव की सहायता से अग्रेजो ने कालपी को वापिस ले लिया। सन् १८५७ के विप्लव में कालपी की छावनी ने कानपूर से आये हुये विप्लकारियो का साथ दिया। थोडे समय उपरान्त रावसाहब अपनी सेना यहा लेकर आगया और कालपी-नगर विल्पकारियो का एक प्रधान अड्डा बन गया।

जब रानी कालपी पहुँची रावसाहब-नाना का भाई-और तात्या वही थे।

दूसरे दिन रानी की इन लोगो से भेट हुई रानी का इन लोगो ने जी खोलकर आदर सत्कार किया।

परन्तु रानी आदर की भूखी न थी। वे काम चाहती थी। लेकिन वह कालपी में अस्तव्यस्त था। तात्या सरीखे उत्कृष्ट सेनापति के होते हुये भी सेना का प्रवन्ध अव्यवस्थित था। कारण तात्या का एक स्वभावगत दोष था--वह था रावसाहव को अपने तनमन का सम्पूर्ण स्वामी मानना और अपने सैनिको के व्यसनो को क्षमा करते रहना। रावसाहव का और सैनिको का, वह अत्यन्त स्नेहभाजन था, परन्तु इससे सेना की अनुशासकहीनता की पूर्ति नही हो सकती थी।

रानी की सूक्ष्म दृष्टि ने इस बात को शीघ्र देख लिया।

विश्राम करने के बाद सन्ध्या समय रानी उन लोगो से मिली।

रानी ने सेना के अनुशासन, क़वायद–परेड और युद्ध सामग्री इत्यादि प्रसङ्गो पर प्रश्न किये। सिवाय युद्ध सामग्री के और सब प्रसङ्गो पर उनको असन्तोषजनक उत्तर मिले।

रानी ने अन्त में कहा, 'बहुत कसर है, रावसाहब।'

राव जल्दी से बोला, 'सब ठीक हो जायगा बाईसाहब, शीघ्र सब ठीक हो जायगा। इन्ही सिपाहियो और इसी तात्या ने तीन वडे बडे जनरलो को हराया और बहुतसों को छकाया।'

'चौथा भी हराया जा सकता था' रानी ने कहा, 'परन्तु हमारी ओर से एक अनिवार्य गलती हुई।'

तात्या उनके मुँह की ओर देखने लगा।

रानी बोली, 'उस दिन मेरे गोलन्दाजो ने भरपूर गोलाबारी न करने की सम्मति दी और मैने मान ली। एक भय था भी—कही हमारे किले की गोलाबारी से आपकी सेना नष्ट न हो जाय। फिर भी चूक हुई। यह मानना पडेगा।'

तात्या ने कहा, 'उस दिन आपकी सेना को कोट के बाहर निकलकर अङ्गरेजी सेना पर छापा मारना था।'

'टौरियो की ओट पड़ जाने से कालपी की सेना अदृश्य हो गई,' रानी बोली, 'मालूम नही पड़ता था कि किस ओर से प्रकट होगी। फिर सन्ध्या हो गई और प्रतीत हो गया कि कालपी की सेना लौट गई, और झाँसी अकेली रह गई।'

रावसाहब ने कहा, 'अब सब ठीक हो जायगा बाईसाहब। आप कुछ चिन्ता न करे। नाना साहब लखनऊ की ओर प्रयत्नशील हैं। बानपूर और शाहगढ के राजा तथा बादा के नवाब ससैन्य शीघ्र कालपी आ रहे हैं। हम लोग यहा योजना तैयार कर के, फिर कानपूर और झासी को हस्तगत करेगे।'

सन्ध्या समय रानी को जूही मिली। वह फूट-फूटकर रोई। रानी ने शान्त किया। समझाया।

'जूही, तपस्या में क्षय पहले है और अक्षय पीछे। यह युद्ध स्वराज्य की अन्तिम साधना नही है और न हम लोग उसके अन्तिम साधक।'

फिर रानी ने अपने स्त्री-पुरुष वीरो के बलिदानो की कथा सुनाई।

जूही ने कहा, 'मोतीबाई के साथ मैं भी घायल होती तो इसी गोद में प्राण जाते।

'सहज ही प्राण त्याग मत न करो जूही, 'रानी बोली, 'अभी बहुत काम करने को पडा है।'

दूसरे ही दिन पेशवा की सेना को व्यवस्थित करने की योजनाये बनानी प्रारम्भ करदी, कुछ कार्यान्वित हुई। अनेक पेशवा की ढील-ढाल में यो ही पडी रही।

कालपी की सेना का शिथिल सङ्गठन देखकर रानी का जी दुख दुख जाता था।

[८०]

अप्रैल के तीसरे सप्ताह मे बानपूर, शाहगढ और बादा की सेनाये कालपी मे आगई । झासी का कडा प्रबन्ध करके रोज़ ने अप्रैल की पच्चीस तारीख को कालपी पर चढाई की आज्ञा दी । इसी समय उसको खबर मिली कि रानी कोच होती हुई झासी पर फिर आने वाली हैं। रोज़ का एक दस्ता पूँछ पहाडगाव पर पहुचा । विद्रोहियो से कड़ी मुठभेड़ हुई । अग्रेजी दस्ता सफल हुआ । फिर एक युद्ध सैदनगर कोटरा पर हुआ । अग्रेजी दस्ता हारा ।

कोच पर अधिकार करने के लिये रोज़ ने लुहारी के किले को लेने का पहले प्रयत्न किया । कोच में पेशवा की काफी सेना इकट्ठी हो गई । बानपूर और शाहगढ के राजा तथा बादा के नवाब भी यही आगये । पुनः बीस सहस्त्र सैनिक इकट्ठे हो गये । रानी और तात्या सरीखे सेनापति । किस बात की कमी थी ? जिस बात की कमी थी उसको रानी जानती थी । इस सेना में बहुत से लुटेरे और बदमाश भी इकट्ठे हो गये थे । उनको स्वराज्य या युद्ध में उतनी रुचि न थी जितनी विजय या पराजय के उपरान्त लूट खसोट करने में थी, वे इतने पतित थे कि मौका मिलने पर अपनी ही छावनी को लूट सकते थे । इस सेना में बहुत से तो कवायद परेड ही नही जानते थे और अनुशासन का नाम न सुना था । वे केवल अपने सरदारो का, या जिन्होने उनको भर्ती किया था उनका, आदेश मानने को तैयार थे । सो भी उतना, जितना उनके मन के अनुकूल होता । रानी का बस चलता तो वे कम से कम आधी सख्या को अपने अपने घर लौटा देती ।

केवल कल्पना में इस सेना का प्रधान संचालक रावसाहब था । वास्तव में अपनी अपनी ढपली अपना अपना राग था । पूर्ण सत्ता एक व्यक्ति के हाथ मे न थी । और युद्ध को सफलता-पूर्वक लडने के लिये, सैन्य सचालन एकाधिपत्य चाहता है, वह इस सेना में न था ।

उधर रोज लहारी के किले को, कोच का पहला मोर्चा समझ कर ले लेने के प्रयत्न में था, इधर कोच में रात को रावसाहब, बानपुर और शाहगढ के राजा तथा बाँदा के नवाब की इच्छा नाच देखने को हुई। इन लोगो ने सुना था कि झासी की जूही, जो उस समय कोच में रानी के शिविर में थी, बहुत अच्छा नाचती है। इसलिये भग पीने के उपरान्त उसके बुलाने का हठ किया गया।

रावसाहब को सरूर आ चुका था, परन्तु जबान ढीली नही हुई थी। तात्या को बुलाया। वह भङ्ग नही पिये था। न पीता था।

रावसाहब ने कहा, 'आज दिन में बहुत गरमी रही। अब ठण्डक है। सब लोग मजे में हैं। युद्ध पर युद्ध होते रहते हैं। बीच बीच में कुछ आनन्द भी चाहिये।'

तात्या ने खीज को दबा कर निवेदन किया, 'आज्ञा हो।'

'अरे यार मेरे, बादा,के नवाब ने कहा, 'और आज्ञा होगी ही क्या ? किसी को नाचने गाने के लिये बुला लाओ।'

बानपुर का राजा बोला, 'सरदार साहब, माफ करना आप शंकर की बूटी का सेवन नही करते, इसलिये इस मजे को नही जानते, परन्तु हम लोगो के मन तो बढावे पर, इन्ही कमानो पर आते हैं।'

शाहगढ का राजा जरा और अग्रसर हुआ, 'भाई टोपे साहब, वह जो झाँसी का तुहफा छावनी में है, उसका नृत्यगान कब देखने को मिलेगा ?'

तात्या सन्नाटे में आ गया।

रावसाहब ने कहा, 'उसका नाम जूही है। बडा सुन्दर नाम है। सिपाहीगरी भी करती है और नृत्यगान भी। झाँसी की नाटकशाला में बढिया अभिनय करती थी। बेढब हाव भाव। जब से यहा आई, उदास बनी रही। मातमसा मानती रही। अब उसकी स्वामिनी आ गई, हैं प्रसन्न है। नाचने गाने को नाही करने का कोई कारण नही। रात भी

बहुत नही गई है। घण्टे आध घण्टे के लिये यह दरबार रसीला रंगीला हो जाय। बुला लाओ।'

तात्या ने माथे का पसीना पोछा।

बोला, 'जो आज्ञा, परन्तु रानी साहब—'

नवाब -- 'म्याँ किन्तु परन्तु क्या ?'

रावसाहब—'रानी साहब पूजा मे होगी। बुला भी लाओ।'

तात्या गया। उस मडली का सरूर और बढा।

तात्या ने जूही को एकान्त में बुलाया।

जूही बहुत प्रसन्न थी।

जूही—'सरदार साहब, आपने क्यो कष्ट किया ?'

तात्या—'एक बात कहने आया हू।'

जूही—'मै उस बात को सुनने के लिये बरसो से तरस रही हूँ।'

तात्या—'एक प्रार्थना करने के लिये आया हूँ।'

जूही—'मेरे सरदार मुझमे प्रार्थना करे! जिस एक शब्द के सुनने के लिये बरसो तपस्या की, अपने तन और मन की रक्षा की, उस एक शब्द के सुनने के लिये, आपकी जूही के भाग्य का आज उदय हुआ, परन्तु—'

तात्या—'परन्तु क्या जूही ?'

जूही—'परन्तु सरदार साहब, मेरी रानी का स्वराज्य सग्राम पहले सफल हो और मै आपकी जन्म सगिनी बनकर रहूँ। बहुत दिनो से इस बात को कहने के लिये संकल्प पर सकल्प किये, परन्तु आज लाज सकोच त्याग कर कह पा रही हूँ। आपने अवसर देने की कृपा की।'

पेशवा के प्रधान सेनापति का सिर नीचा पड़ गया। कुछ क्षण में हिम्मत बाँध कर बोला, मेरी प्रार्थना यह है। मेरी प्रार्थना—'

जूही ने टोककर कहा, 'आपके मुँह से प्रार्थना का शब्द नही सुहाता। आज्ञा हो, आपकी जूही का सिर चरणो में पहुँचेगा, परन्तु जिस शर्त का निवेदन कर चुकी हू, वह अटल है।'

तात्या का दिल धडका। उसने धडकन दबाई। मुट्ठी बाधी और हिम्मत को कडा किया।

तात्या—'अभी तो केवल यह प्रार्थना है कि आप रावसाहब के शिविर में चलें, वहा बादा के नवाब साहब, मदनपूर और बानपूर के राजा साहब बैठे हुये हैं। आपके नृत्यगान का रसास्वादन करना चाहते हैं।'

जूही—'ओह, यह बात! यह प्रार्थना! सरदार साहब, मैं आपको मन ही मन अपना हृदय भेट कर चुकी हूँ, परन्तु आपको इतना स्मरण रहे कि मैं झासी की रानी की सिपाही हूँ और किसी राजा या नवाब से अपने को कम नही समझती। ये लोग समझते होगे कि मै वेश्या पुत्री हू। परन्तु वेश्या नही हू, और न नाचने गाने का पेशा करती हू। मेरा प्रस्ताव उस मण्डली में किसने किया, सरदार साहब? और आपके मुँह से यह प्रस्ताव निकला कैसे?'

तात्या—'मैने नही किया जूही। आप मेरा विश्वास करो। मै राव-साहब की आज्ञा को देवता की आज्ञा के समान समझता हू। उन्ही के कहने से आपके पास आने का साहस किया।'

जूही—'आप आप कहकर मेरा अपमान मत कीजिये। मै आपके लिये तुम हूँ। उन लोगो से कह दीजिये कि मैं उनके लिये उस रानी की कर्नल हूँ, जो जनरल रोज़ के परदादो को क़ब्र में हिला डालने की हिम्मत और तरकीब रखती है।'

तात्या चला गया। जब तक वह पेशवा के सामने पहुचा तब तक भङ्ग ने अपना गहरा रङ्ग चढा दिया था। वे लोग अपनी धुन को इस बीच में भूल गये थे और किसी दूसरी धुन को पकड लिया था। इसलिये तात्या को बात बनाने की ज़रूरत नही पडी।

जूही रानी के शिविर में लौट आई। रानी गीता के परायण से उसी समय फारिग हुई थी।

रानी ने साधारण प्रश्न किया, 'कहा हो आई जूही?'

जूही ने भर्राये हुये स्वर में उसास लेकर उत्तर दिया, 'सरदार साहब आये थे।'

रानी—'कौन सरदार साहब? यहा तो मुझको सब सरदार ही दिखते हैं। ससार की किसी भी मेना की ऐसी अस्त-व्यस्त स्थिति न होगी जो मुझको इस सेना की दिखलाई पड रही है।' कोई भी एक ऐसा नही जिसकी सब कोई माने।'

जूही—'सरदार तात्या साहब आये थे।'

रानी—'क्या कहते थे?'

जूही—'कहते थे कि श्रीमन्त रावसाहब पेशवा नृत्यगान के लिये बुला रहे हैं। महफिल बादा, बानपूर और शाहगढ के रईसो की है।'

रानी—'हाँ! यह मौज! तूने क्या उत्तर दिया?'

जूही—'मैंने कह दिया सरदार कि मै रानी साहब की कर्नल हूँ, नाचने गाने वाली नही।'

रानी—'जूही तूने अपने योग्य ही उत्तर दिया। दो एक दिन में ही कोच में लडाई होने वाली है। और इन लोगों का यह हाल है! जी चाहता है कि इसी समय इनको कुछ खरी खोटी सुनाऊँ, परन्तु अवसर उपयुक्त नही है। किसी समय कहना अवश्य पडेगा। और कुछ...दण्ड...'

[८१]

दूसरे दिन समाचार मिला कि लुहारी के किले का पतन हो गया और रोज़ कोच के ग्रसने के लिये आ रहा है।

पेशवा इत्यादि की सेना को अपने अग्रभाग का सुदृढ और सुसगठित प्रबन्ध करके लडने का अभ्यास सा पड गया था। रोज जानता था कि इनकी सेना का पृष्ट भाग उतना व्यवस्थित नही रहता। इसलिये उसने विरोधी सेना पर आक्रमण करने के लिये अपनी सेना के तीन भाग किये। दो को कोच की सेना के पीछे दाये वायें भेज दिया और एक को सामने ले चला।

पेशवा की सेना को उसके केवल सामने वाले दस्ते का पता लगा और उसी से तात्या को भिडा दिया। लक्ष्मीबाई को पीछे की ओर रक्खा। दोनो ओर से विकट युद्ध हुआ।

वँधे इशारे पर रोज़ के पीछे वाले दस्तो ने धावा किया और उनकी तोपो के प्रहार से कोच की सेना वुरी मार खाकर भागी। तात्या और लक्ष्मीवाई ने अपने कौशल से उसको रोज़ के व्यूह से बचा निकाला। रोज ने कोच को ले लिया। आठ तोपें हाथ आई और वहुत सी युद्ध सामग्री। रोज को वहुत आश्चर्य इस वात पर था कि सवके सव सरदार और वाकी सेना तथा सामान किस हिकमत से और कौन निकाल ले गया। उसका सन्देह वार वार झाँसी की रानी और तात्या टोपे पर जाता था।

तात्या कोच से निकल कर कालपी नही गया। वह अपने पिता के पास चला आया। उसने उस समय, पेशवा की भी कदाचित् केवल उस समय, अनसुनी करदी।

पेशवा ने अपनी सेना के साथ कालपी में आकर दम लिया। शायद उस रात भङ्ग नही छनी। दूसरे दिन पेशवा ने आगे की योजना वनाने के लिये सरदारो का दरवार किया। रानी भी दरवार में थी।

रावसाहब ने कोच की हार का किसी पर भी दोषारोपण नही किया और बचकर निकल आने के चातुर्य पर प्रशंसा बरसाई। इसके उपरान्त आगे की योजना की बात छिडी।

रानी अपने आसन से उठी। कमर से तलवार निकाल कर पेशवा के सामने मूठ की ओर से रखदी और आसन पर बैठ कर बोली, 'आप के पूर्वजो ने यह तलवार हम लोगो को दी थी। भगवान की दया से मेरे पूर्वजो ने और मैंने भी इसका उचित उपयोग किया। परन्तु अब आप की कृपा से यह तलवार वञ्चित हो गई है इसलिये इसे वापिस लीजिये।'

दरबार में उपस्थित सब सरदार स्तम्भित रह गये।

रावसाहब ने कहा, 'आपके पुरखो ने और आपने स्वराज्य की स्थापना के लिये जो कुछ किया है वह चिरस्मरणीय है। आपने झाँसी में अङ्गरेजो का जैसा करारा मुकाबला किया वह अवर्णनीय है। कोच से हमारी सेना और युद्ध सामग्री को बचाकर ले आने मे आपका बहुत बडा हिस्सा है। आप सरीखा निपुण सेनापति शायद ही कोई हो। आप जो योजना बतलावे हम लोग शिरोधार्य करेगे। आप इन सब रणशूर रईसो को अपना सहयोग देने की कृपा कीजिये और अपने स्वराज्य के प्रण का स्मरण करिये।'

रानी बोली, 'कोच की लडाई में आपका प्रबन्ध बहुत रद्दी था। सेना में कोई व्यवस्था नही है। अङ्गरेजी सेना अपनी अच्छी व्यवस्था के कारण ही विजय प्राप्त करती है। हमारे सैनिक शूरवीरी और पराक्रम में अङ्गरेजो से बडे चढे हैं, परन्तु व्यवस्था और दूरदर्शी योजना की कमी के कारण उनका शौर्य विफल हो जाता है। झासी की सहायता के लिये आपकी इतनी बड़ी सेना आई, परन्तु अव्यवस्था के कारण हार खाकर लौट गई। जब तक आप अपनी सेना का अच्छा प्रबन्ध नही करेंगे और संयम से काम न लेंगे, युद्ध में यश प्राप्त न होगा। अव्यवस्था का कारण है एक व्यक्ति को मुख्याधिकारी न मानना और अपनी अपनी मनचाही योजना को काम में लाना तथा समय को व्यर्थ बातो में नष्ट करना।'

रावसाहब तलवार को लेकर उठा। रानी के सामने विनम्र भाव से खड़ा हुआ।

'आप कृपापूर्वक तलवार ग्रहण करें,' रावसाहब ने कहा, 'आपकी सम्मति बिलकुल उचित है और मानी जायगी।'

रानी ने तलवार ले ली और म्यान में डाल ली।

उपस्थित सरदारों ने रावसाहब को प्रधान सेनापति नियुक्त किया। उसने स्वीकृत कर लिया। सरदारों ने रानी को प्रधान सेनापति न बनाकर इतिहास में अपनी पराजय पेशगी लिख दी। परन्तु योजना बनाने के लिये रानी से अनुरोध किया। रानी ने योजना बतलाई। उसके अनुसार मोर्चे बनाये गये। तोपें रक्खी गईं। गोलन्दाज़ नियुक्त और सरदार विभक्त किये गये। रानी को लालकुर्ती वाले ढाई सौ सवार दिये गये और वाम पार्श्व की रक्षा का भार।

[८२]

रानी ने निर्देशन किया था : 'जो सरदार जिस मोर्चे को बांधे हो वही डटकर लडे, किसी प्रलोभन या उत्तेजन में आकर ,अपने स्थान को छोड़कर अङ्गरेजी सेना के ऊपर न झपटे। जब रिसाले या पैदल पल्टन को आदेश हो तभी वह बतलाई हुई दिशा में हमला करे।'

रावसाहब ने समर्थन करते हुये कहा था, 'ऐसा ही होगा; ऐसा ही हो। सब लोग गाठ बाध लेना।'

रावसाहब सहज सन्तोषी और परम महत्वाकांक्षी था। यदि नाना साहब लखनऊ के जय–पराजय के क्रमावर्त में न फँसा होता और कालपी में होता तो वह, लक्ष्मीबाई और तात्या, रोज़ सरीखे अत्यन्त योग्य और रणकुशल सेनापति के लिये भी काफी से अधिक प्रबल बैठते। परन्तु रावसाहब की लोकप्रियता, उसकी उदारता, शिथिलता और सहजवर्ती स्वभाव के कारण थी, न कि योग्यता के कारण। वह प्रधान सेनापति की आज्ञाओ का विधिवत पालन करा ही नही सकता था। इस कार्य के लिये तो रानी का सा तेजस्वी और तपस्वी व्यक्तित्व ही ठीक बैठ सकता था।

रोज़ को इस मोर्चाबन्दी का पता आसानी से लग गया। उसने अवगत कर लिया कि जहा मोर्चादारो से उनका ठिया छुटवाया कि गडबड़ फैल जायगी।

कोच की मार और रानी की भर्त्सना के कारण पेशवाई सेना अंग्रेज़ो को मार मिटाने के लिये दास पीस रही थी, अपनी वासना को सहायता पहुँचाने के लिये सेना ने भग भी खूब पी। रानी का निषेध न चला।

रोज का एक छोटा सा दस्ता हल्का तोपखाना लिये आगे आया। कालपी की सेना ने समझा कि रोज़ की सम्पूर्ण सेना आ गई। ठिया छोड़ छोड़कर उस पर दौड पडे। गोलाबारी हुई। असमय मार काट शुरू हो गई। रानी ने मना करवाया, परन्तु राव नियन्त्रण न कर सका। रोज़ ने मौका ताककर इर्द गिर्द वाले अपने दस्तो द्वारा गोलाबारी शुरू कर दी और कालपी की सेना का ठिये छोड़ देने के कारण अविलम्ब सार्वनाश

होने लगा रईस सेनापतियो ने भागने का विचार किया। रानी ने डाटना-फटकारना व्यर्थ समझकर उनको धैर्य धराया, कहा, 'अब जहा हो वही बने रहो, भगदड मत मचाओ मै इनके तोपखानो को बन्द करती हू। जिस समय तोपखाने बन्द हो जाये, दो पार्श्वों से घुडसवार और बीच में पैदल बन्दूकची भेजना।'

रानी को केवल ढाईसौ सवार दिये गये थे। ये सवार अपने नेता को पहिचान गये थे और उन लोगो की उनके प्रति अपार भक्ति थी। रानी ने इन लोगो के पाच भाग किये और एक एक को देशमुख, गुलमुहम्मद, रघुनाथसिंह, जूही और अपने अधीन रक्खा। मुन्दर उनके साथ उनकी नायबी में रही। रानी ने यमुना के एक टीले की ओट से दूरबीन लगाकर रण क्षेत्र का निरीक्षण, कुछ क्षण किया। वे रोज के कमजोर बाजू को ताड गई।

रानी ने अपने पाचो दस्तो को रोज के दाहिनी पार्श्व की ओर कुछ दूर जाकर घुमाया, और फिर टूट पडी। जैसे चिडियो के ऊपर बाज ? यह आक्रमण अग्रेजो को तूफान की तरह लगा और वे एक दम पीछे हटे। अग्रेज अफसर और सिपाही कट कट कर गिरने लगे। रानी ने ऐसे शौर्य, ऐसे विवेक और ऐसे कौशल के साथ युद्ध किया कि अग्रेजो का तोपखाना थोडी देर के लिये बिलकुल बन्द हो गया। गोलन्दाज उस तूफानी हमले से स्तब्ध रह गये। रानी तोप के मुहानो पर बीस फीट के फासले तक मारती काटती पहुच गयी !! अब काल्पी की सेना आगे बढी। परन्तु सैनिक इतनी भग पिये हुये थे कि आज्ञाओ का ठीक ठीक पालन ही नही कर सकते थे। केवल रानी का एक अद्भुत पराक्रम इन सैनिको के नशे को और उनके सरदारो की मूर्खता को ढक रहा था— रानी ने अपने घोडे की लगाम मुह में दाबी और दोनो हाथो से तलवारो के वज्रपात करने लगी। पेशवा—सेना बहादुरी के साथ लडने लगी। जो अग्रेज गोलन्दाज रानी और उनके दस्तो द्वारा काटने से बचे, वे मैदान छोड़कर भागे। ब्रिगेडियर स्टुअर्ट ने देखा कि बाजी खिसकी।

तुरन्त वह हलके तोपखाने लिये पीछे से आगे आया। गोलाबारी की भागते हुये गोलन्दाजो को उत्साहित किया। रोज एक जगह ऊँट-तोपखाना लिये डटा था।

अपनी सेना की भगदढ का समाचार पाते ही वह इस तोपखाने को लेकर दौडा आया और छोटे गोलो की बौछार पर बौछार की। कालपी की सेना तितर–बितर होने लगी अपने दस्तो को लेकर रानी ने रोज के निरोध का प्रयत्न किया, परन्तु भगेड़ी सिपाहियो को भंग ने भागने की सुझाई। उनके पैर उखड़ गये। विवश होकर, रानी को अपने दस्ते रणभूमि से हटाने पडे। अपेक्षाकृत उनके सैनिक कम हताहत हुये। जो बचे उनको लेकर रानी पेशवा की छावनी में लौट आईं।

दो दिन और मारकाट हुई, परन्तु उसको लड़ाई नही कह सकते। पेशवा की सेना के काफी सिपाही अन्तिम विजय से निराश होकर अपने अपने गाँवो को भाग गये।

दो दिन पेशवा ने लष्टम–पष्टम गोलाबारी अंग्रेजो से बदली। इस सेना में अधिकतर लुटेरे और बदमाश रह गये थे। जैसे ही उन्होने देखा कि पेशवा हारे, कालपी की लूट शुरू कर दी और शकर की दूकानो की पहले घात लगाई।

पेशवा ने कालपी छोडी। थोडी सी सेना उनके साथ लग गई। रानी अपने पाँच दलपतियो तथा अपनी बची बचाई छोटी लालकुर्ती लेना सहित निकल गईं। यह हारा थका दल गोपालपुर में, जो ग्वालियर के नैऋत्य में ४६ मील की दूरी पर था, जा टिका। कोच की पराजय के उपरान्त तात्या अपने पिता के पास जालौन चला आया था। कालपी के पराभव का वृत्तान्त सुनकर उसको ग्लानि हुई और वह पेशवा के पास गोपालपुरा पहुँच गया। बादा का नवाब भी इधर–उधर भटकता हुआ गोपालपुरा आ गया। राजा मर्दनसिह और राजा बखतवली इसके उपरान्त लड़ाई के नक्शे में फिर नही आते। कुछ समय बाद राजा

वखतवली को अङ्गरेजों ने कैद करके लाहौर भेज दिया। मर्दनसिंह भी कैद हो गया।

रोज़ को कालपी में पेशवा की बहुत बहुमूल्य युद्ध सामग्री मिली। पन्द्रह तोपें, सातसौ मन बारूद, असंख्य बन्दूक और तलवारें और नये तर्ज़ के हथियार ढालने–बनाने की विलायती मशीनें हाथ लगीं। रोज़ को यह विजय चौबीस मई के दिन मिली। यही दिवस विक्टोरिया के जन्म का था। इसलिये अङ्गरेज़ों ने धूमधाम के साथ कालपी पर अपना झण्डा चढ़ाया और कतल तथा लूट से पाई हुई शकर के प्रसाद से जशन मनाये। और तीन दिन कालपी को मुस्तैदी के साथ लूटा।

जनरल रोज़ ने नर्मदा के उत्तर भाग को कालपी तक अपने अधीन कर लिया। नर्मदा के उत्तरपूर्वीय भाग को दबाता हुआ करवी, महोबा, बादा इत्यादि को लूटता-कुचलता विटलाक रोज से कालपी में आ मिला। राजपूताने की ओर से कर्नल स्मिथ अपनी सेना लिये हुये आगरा, ग्वालियर की दिशा में आ रहा था। 'बलवाइयों' के पकड़े जाने के लिये गांव गांव में इनामी इश्तहार बांटे जा रहे थे।

रावसाहब के पास रईस और सरदार काफी थे, परन्तु सेना बहुत कम थी। तोपें नहीं थीं, सामान नहीं बचा था। और व्यवस्था तो कभी भी न थी।

दिन भर लू चली। रात को भी काफी गरम हवा चल रही थी तारे धूल की पतली चादर से ढके हुये थे। गोपालपुरा के एक बगीचे में रावसाहब, तात्या, बांदा के नवाब इत्यादि आगे की योजना के आकार-प्रकार बना–बिगाड़ रहे थे। रात अन्धेरी थी। पास में कोई उजाला न था। इसलिये किसके चेहरे पर क्या गुज़र रही थी, कोई नहीं देख सकता था।

रानी लक्ष्मीबाई अपने शिविर में थी। उस दरबार में न थी।

रावसाहब ने कहा, 'किसी प्रकार नागपूर की ओर पहुंच पावें तो शीघ्र सैन्य संग्रह हो। इन्दौर की छावनी से भी सहायता मिले।'

बांदा के नवाब ने अपनी घबराहट प्रकट की, 'हैदराबाद के निज़ाम के मारे नागपूर के पड़ौस में ठहर पाना दूभर हो जायगा।'

तात्या बोला, 'निज़ाम का कोई भय नही। वहा की जनता तुरन्त हमारा साथ देगी।'

रावसाहब—'वहा से महाराष्ट्र सरक जाने मे बड़ा सुभीता रहेगा। पहाडियां, किले, घाटियाँ और नदिया बारगी और भूबँधी-दोनो प्रकार की लड़ाइयो के लिये बहुत उपयोगी है।'

नवाब—'परन्तु वहा तक पहुचेगे कैसे ?'

तात्या—'पहुँचाने का जिम्मा मै लेता हू।'

नवाब—'जासूसो से जो खबरे मिली हैं, उनसे हर हालत मे इस नतीजे पर पहुँचने के लिये विवश हूँ कि हम लोग पिजडे में फँस गये हैं।'

रावसाहब—'अवध की तरफ चलना ज्यादा अच्छा होगा। अवध पास है। मार्ग सीधा है। वहा की जनता अदम्य है। लखनऊ का पतन हो गया तो क्या हुआ। नाना साहब अभी वहा हैं। बेगम साहब भी हैं।

तात्या—'अवध में हम लोग बहुत काम कर सकते है। एक बाधा अवश्य है।'

रावसाहब—'वह क्या ?'

तात्या—'उस प्रदेश में किले बहुत कम हैं।'

नवाब—'एक बडी बाधा और है। अङ्गरेज़ो की बेशुमार पल्टने अवध मे फैल गई हैं, और ज्यादा कलकत्ते से आ रही हैं।'

एक सरदार—'मेरी समझ में तो यह आता है कि छोटी छोटी टुकडियो में बट कर, इधर उधर फैल जाओ और अङ्गरेजी इलाके की लूटमार शुरू करदो।'

दूसरा सरदार—'और नये नये लोगो को इन टुकड़ियो में भर्ती करते जाओ। एक दिन काफी बडी सेना बिना परेशानी के अपने पास हो जावेगी तब हम लोग अङ्गरेज़ो को चित कर देगे।'

तात्या—'इसमें कितने दिन लगेगे ?'

रावसाहब—'समय की चिन्ता क्या है ? अँग्रेजी सेना में फिर कोई बलवा होगा। तोपें हाथ आ जायेगी और काम बन जायगा।'

नवाब—'लेकिन तोपे अब हिन्दुस्थानी फौज के हाथ में कभी नही आवेगी। तोपख़ानो को अँग्रेज़ अपने हाथ में रखने लगे हैं।'

एक सरदार—'परन्तु जनता के पास तो हथियार हैं।'

नवाब—'जब तक आप फौज इकट्ठी करेंगे तब तक अँग्रेज़ लोग सारी जनता के हथियार अपने मालखाने में रखवा लेंगे।'

रावसाहब—'कही कालपी फिर वापिस मिल जाय तो सब दिक्कतें दूर हो जायें।'

नवाब—'हम तो चाहते हैं कि दिल्ली और लखनऊ भी हाथ में आ जायें, मगर चाहने से होता क्या है ?'

सरदार—'मेरा कहना मानिये। टुकडियो में बटकर लूटमार शुरू कर दीजिये।'

तात्या—'जनता साथ न देगी।'

रावसाहब—'तुम अवध के लडाको को भर्ती करके यहा ले आओ।'

तात्या—'जो आज्ञा।'

नवाब—'लेकिन इसमें तो वक्त लगेगा, और, तब तक हम आप क्या करेंगे ?'

रावसाहब—'तो फिर राजा बखतबली और राजा मर्दनसिंह को बुन्देलखण्डी सेना सहित फिर बुलवाओ।'

नवाब—'उनको हमारा साथ देना होता तो गोपालपुरा में आज कभी के आ जाते।'

रावसाहब—'तब फिर क्या किया जाय ?'

सरदार—'राजपूताने की तरफ चलिये। वहा की छावनियो ने अभी तक कुछ नहीं किया है।'

तात्या—'वहा की छावनिया बहुत करके अपना साथ देगी।'

रावसाहब—'मेरा मन दक्षिण भारत के लिये बहुत बोलता है।'

नवाब—'परन्तु वहां तक पहुँचे कैसे ?'

तात्या—'मैं पहले ही निवेदन कर चुका हूँ कि पहुंचा मैं दूँगा।'

नवाब—'मैं भी ज़रा पहले अर्ज कर चुका हूँ कि झांसी, सागर, सीहोर वगैरह मे बहुत सी अंग्रेजी फौज है और हम यहाँ पिंजड़े मे फँस गये हैं।'

सरदार—'तब फिर अंग्रेजो के हाथ अपने को सौप दिया जाय ?'

नवाब—'वह तो मैंने हरगिज नही कहा।'

रावसाहब—'तब फिर किसी अंग्रेज़ी छावनी पर एकदम टूट पडें और उसको चीरते हुये आगे बढकर भाग्य की परीक्षा करे।

नवाब—'परन्तु बिना बडी तोपो की मदद के छावनी के ऊपर हमला करना मौत के मुँह में जाना है।'

रावसाहब—'यदि तात्या महाराष्ट्र में जाकर जनता को जाग्रत करदे तो अंग्रेज़ वहा उलझ जायँगे और तब हम सरपट महाराष्ट्र में पहुँच सकते हैं।'

नवाब—'लेकिन फिर वही सवाल उठता है कि तब तक हम लोग यहा क्या करे ?'

तात्या—'रानी साहब की राय ली जाय।'

रावसाहब—'मैं रानी साहब की राय की बहुत कदर करता हू। वे बहुत अच्छी सैनिक हैं और लडाई के मैदान में विजय भी प्राप्त करा सकती हैं, परन्तु स्त्री हैं और जितना ससार हम लोगो ने नापा है उतना उन्होने नही।'

नवाब—'इस पर भी उन्होने दस महीने खूबी के साथ झासी का राज्य किया। ऐसा कि प्रजा उन पर कुरबान हो गई।'

रावसाहब—'यह सब ठीक है, बिलकुल ठीक है। सलाह लेने में कोई हर्ज़ नही। मानना न मानना अपने हाथ में है।'

तात्या—'उनको सवेरे लिवा लाऊँ ?'

सरदार—'सवेरे ज़रा बाद। सवेरा होने में बहुत देर भी नही है। वे अपने भजन-पूजन से निवृत्त हो जायेंगी, तब तक अपुन लोग ज़रा नशा-पत्ता करेगे। कई दिन से नही छनी है। कही से कोई अच्छी सलाह न मिली तो विजया भवानी सिर पर चढकर सब कुछ बोल-बता देगी।'

रायसाहब—'बडा अच्छा है। अभी अग्रेज़ हम लोगो से काफी दूर हैं। हवा पर बैठकर तो आये नही जाते। परतु भाई गहरी न छने। नही तो रानीसाहब कुछ ज्यादा डाट-फटकार करेगी।'

इस तरह रात भर यह विवाद जारी रहा, परन्तु ये लोग किसी भी निश्चय पर न पहुँच सके।

प्रत काल के उपरान्त तात्या रानी को लिवा लाया। तात्या ने उनको रात के अविवेशन का सक्षेप में वृतान्त सुना दिया था।

लोग भग पीकर निवृत हो गये थे, हुक्के गुडगुडा रहे थे कि वे आ गई। लोग उनका अदब करते थे, इसलिये हुक्के हटा दिये गये।

पेशवाई सेना की आधोगति का उनको पता था। तो भी उन्होंने अपने क्षोभ को दबाकर परिस्थिति को भली भाति समझने के लिये प्रश्न किये जो उत्तर मिले उनका निचोड वही था जो रात की बैठक में बादा के नवाब ने बतलाया था—'हम लोग पिंजडे मे फंस गये हैं।'

रानी ने कहा, 'अब तक हम लोग जहा जहा अग्रजो से जम कर लड पाये, वहा वहा किलो का आश्रय लेकर। फिर किसी मजबूत किले को हाथ में करना चाहिये। तोपे सहज ही ढल जायगी। काम चालू हो जायगा।'

रावसाहब—'परन्तु झाँसी और कालपी के किले तो फिर नही मिल सकते-कम से कम अभी हाल हाथ नही आसकते।'

रानी—'इनको कुछ दिनो विचार से अलग रखिये।

तात्या—नरवर का किला बहुत अच्छा है। निकट सिन्ध नदी है। आसपास पहाड जगल है।

नवाब—'करेरा का भी किला अच्छा है।'

रानी—'न।'

रावसाहब—'तब फिर कौनसा किला?'

रानी—'ग्वालियर का। वही यहा से अत्यन्त निकट है।'

रावसाहब—'ग्वालियर का किला!'

नवाब—'ग्वालियर का!'

रानी—'हां ग्वालियर का। ग्वालियर की वस्तुस्थिति का पुनः अनुसन्धान करके तुरन्त ग्वालियर पर आक्रमण कर देना चाहिये। राजा और वहां के दो तीन सरदार अंग्रेज़ कम्पनी के पक्षपाती हैं। परन्तु सेना और जनता नही है। सेना यदि हमारा पक्ष प्रबलता के साथ न भी पकड़ेगी तो ढुलमुल अवश्य रहेगी। ग्वालियर में बनी बनाई सजी सजाई, बढिया तोपें, गोले, गोली, सैकड़ो मन बारूद और अन्य प्रकार की युद्ध सामग्री तथा अटूट कोष है।'

नवाब—'लेकिन...'

रावसाहब—'हां, परन्तु...'

रानी—'किन्तु, परन्तु, कुछ नही। बिना किले के कोई भी प्रयास आत्मवध के समान होगा, और सिवाय ग्वालियर के किले के हमारे लिये सब किले इस समय स्वप्न हैं।'

रावसाहब—'बात तो ठीक कह रही है बाईसाहब, आप भी सोचिये नावब साहब। क्यो तात्या?'

नवाब—मै रानी साहब की राय को मानने के लिये तैयार हूं। लेकिन ग्वालियर की सेना या कुछ सरदारो को, चढाई के पहले मिला लेना चाहिये।'

तात्या—'वहां का हाल मुझको मालूम है। माहुरकर, बलवन्तराव और दिनकरराव दीवान के सिवाय और सब सरदार स्वराज्य-स्थापना के पक्ष में हैं। सेना का काफी अंश हमारा साथ देगा।'

रानी—'एक बार फिर जाओ। शीघ्र जाओ और पूरा पता लगा कर शीघ्र आओ।'

रावसाहब—'शीघ्रता के लिये तो तात्या शेरो का शेर है।'

आज्ञा पाकर तात्या तुरन्त ग्वालियर की ओर रवाना हुआ।

[८३]

सन्ध्या होते ही रानी थोड़ी देर के लिये ध्यान मग्न हुई। ध्यान के उपरान्त वे शिविर के बाहर निकली थी कि रामचन्द्र, देशमुख, रघुनाथसिंह और गुलमुहम्मद आ गये।

रानी के पास उस समय लालकुर्ती वाले केवल दो सौ सवार रह गये थे। हिन्दू और मुसलमान। इस रिसाले के प्रधान सेनाध्यक्ष रानी थी और उनके अधीन यूथपति ये तीन पुरुष और वे दो स्त्रिया—जिनमें मुन्दर तो रानी के साथ छाया की तरह रहती थी। यह छोटी सी सेना उनकी परम भक्त थी और सयम निष्ठ।

रघुनाथसिह ने कहा, 'सरकार दीवान जवाहरसिह अपने इलाके के बाहर नही निकल पा रहे हैं। उन्होने कुछ सेना इकट्ठी की थी। कम्पनी के दस्ते उनको पछिया रहे हैं। वे अब इस ओर शायद ही आ सके।'

गुलमुहम्मद बोला, 'सरकार अम अपने मुलक पहुँच पाये तो इतना पठान लाये कि दुश्मनो को कच्चा चबा जाये।'

देशमुख ने कहा, 'सिपाही आगे के हुकुम की प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

रानी बोली, 'प्रधान सेनापति रावसाहब पेशवा हैं। मै इस समय कुछ नही बतला सकती। परन्तु शीघ्र कुछ होगा, यह कह सकती हूँ।'

देशमुख—'अपना रिसाला लडने के लिये उकता रहा है।'

रानी—'यह सैनिक का एक दोष है, गुरण नही। उकताना नही चाहिये। उनको समय पर भोजन, आराम, वेतन मिलता जा रहा है?'

उन तीनो ने हा में उत्तर दिया।

रानी ने कहा, 'किसी समय भी, तनिक सी भी कमी जान पड़े, मुझसे तुरन्त कहना। मेरे पास अभी बहुत से हीरे जवाहर हैं। तुम लोगो को और तुम्हारे रिसाले को किसी प्रकार का कष्ट न हो, मैं यही चाहती हूँ।'

'कभी नही हो सकता,' कह कर वे लोग चले गये। भोजन करने के उपरान्त रानी ने शयन किया। मुन्दर पैर दबाने लगी।

रानी ने पैर खीचकर कहा, 'तेरी यह आदत न जानें क्यो नही जाती। मेरा शरीर नही दूख रहा है। उस दिन नही दूखा जब झाँसी से कालपी आई थी। आज तो कोई परिश्रम ही नही किया है।'

'हाँ, नही जाती', मुन्दर ने हठपूर्वक और इठला कर कहा, 'चाहे जैसी पीडा सिर पर आ जाय आप कभी कहती थोडे ही हैं।'

मुन्दर पैर दावने लगी।

'तो तू क्या जन्म भर मेरे पैर दाबा करेगी ?'

'जी हाँ, जन्म भर।'

'रिशाले की कर्नल होकर।'

'जी हाँ, जब एक दिन जनरल हो जाऊँगी, तब भी इन पैरो का दावना नही छोड़ूँगी।'

'पैरो के दबाने वाले जनरल का नाम सुनकर लोग क्या कहेगे ?'

'जिन लोगो को यह न मालूम होगा कि इन चरणो की धूल में जनरल बनाने का गुण है वे भले ही कुछ कहे !'

'कदाचित् ऐसा हो, परन्तु मेरी वाणी में यह गुण नही है। इन लोगो को सम्मति देती हूँ। हाँ—हाँ कर देते हैं, परन्तु करते मनमानी हैं। कालपी का युद्ध क्या हारने योग्य था ?'

'इनमें कोई रण-पण्डित है ही नही।'

'एक है—तात्या टोपे, परन्तु उसकी चलती नही और वह आवश्यकता से अधिक आज्ञानुवर्ती है। प्रतिवाद करना जानता ही नही।'

'वे कालपी के युद्ध में नही थे। घर चले गये थे।'

'उस समय उसको क्षोभ हो गया था। कारण को उघारना व्यर्थ है ! तू जानती है, यदि इन असख्य सेनापतियो में गाँठ की कोई बुद्धि होती तो इनके व्यसन न खटकते, परन्तु व्यसनी हैं और मूर्ख हैं।'

'यही बात जूही कहती है। अपने अन्य सरदार भी कहते हैं।'

'गुलमुहम्मद बात करने में जैसा लट्ठ जान पड़ता है वैसा वास्तव में नहीं है। वह चतुर और वीर दल नायक है। वैसे ही देशमुख और रघुनाथसिंह हैं।'

'हाँ सरकार।'

'एक बात बतला मुन्दर।'

'आज्ञा सरकार।'

'तू संसार में सबसे अधिक किसको चाहती है। सच सच कहना।'

'सच कहती हूँ। भगवान जानते हैं—मैं आपको सबसे अधिक चाहती हूँ।'

'मेरे उपरान्त किसको ?'

मुन्दर ने उनके पैर पकड़ लिये। सिर नीचा कर लिया।

'और कौन है सरकार ?'

'नाम बतलाऊँ ?'

'नहीं।'

'मुन्दर, तू विवाह करना।'

'जब सरकार स्वराज्य स्थापित कर चुकेगी तब।'

'स्वराज्य तो देर सवेर स्थापित होगा ही। तू विवाह के लिये क्यो रुके ?'

'वह जीवन का मुख्य कार्य नही है।'

'यह तेरी इच्छा पर निर्भर है, परन्तु मेरी अनुमति है।

'असम्भव सरकार। मेरा प्रण है।'

'जूही ने भी प्रण किया है। उस पर मुझको दया आती है।'

'उसने मरणपर्यन्त कौमार्य व्रत का प्रण किया है।'

'असम्भव नही है।'

'मैं सरकार से एक बात पूछना चाहती हू।'

'पूछ।'

'जितनी निर्भय आप हैं, क्या कोई और भी हो सकता है ?'

'अवश्य । कुछ कठिन नही ।'

'सो कैसे ?'

'सहज ही । काफी शारीरिक श्रम कर, सहज ही ध्यान और विश्वास से सहज हो जायगा ।

मुन्दर गद्गद् हो गई । कुछ क्षण चुप रहने के बाद यकायक बोली,

'बाई साहब, मै आपके समक्ष मर जाऊँ, तो मुझे बडा सुख होगा । मोतीबाई की सी मृत्यु की आराधना करती हू ।'

'जो बात मैने बतलाई वह इससे कही बढकर है ।'

[८४]

सन् १८४४ मे अंग्रेजो ने सिन्धिया की सेना को, जो होलकर सिन्धिया के परस्पर युद्धो के कारण पहले ही क्षीण हो चुकी थी, पराजित किया था। तब से ग्वालियर को केवल दस सहस्र सिपाही रखने का अधिकार रह गया था और तब से लगातार अग्रेज रेजीडेंट ग्वालियर का शासन सूत्र अपने हाथ में रक्खे रहा था। सन् १८५३ में जयाजीराव को शासनाधिकार मिल गये, परन्तु सूत्र रेजीडेट के ही हाथ में रहा। बची खुची सलाह सम्मति के लिये आगरा में लैफ्टिनेट गवर्नर था ही।

ग्वालियर में सिन्धिया की दस सहस्र सेना के अतिरिक्त, पोषिक एक अग्रेजी सेना भी थी। इस पोष्य (सबसीडियरी) सेना ने भी सन् ५७ के विद्रोह में भाग लिया। तात्या यहा आया–जाया करता ही था। यह सेना तात्या के साथ कानपूर पहुच गई, परन्तु इस सेना ने जयाजीराव और दीवान दिनकराव के कौशल के कारण ग्वालियर स्थित अग्रेजो का कुछ भी नही बिगाड पाया और वे सुरक्षित आगरा पहुँचा दिये गये, जयाजीराव ने किसी प्रकार अपनी सेना को शान्त रक्खा। यदि ग्वालियर राज्य अग्रेजो के विरुद्ध हो जाता, तो निजाम और सिक्ख राजाओ के कम्पनी–भक्त रहते हुये भी, अग्रेजी राज्य हिन्दुस्थान में किसी प्रकार भी नही टिक सकता था। ग्वालियर कोई बड़ा प्रबल राज्य नही था, परन्तु ग्वालियर के विरुद्ध होते ही, अग्रेजी राज्य के खिलाफ स्वराज्य का सक्रामक गुण इतनी प्रचडता और वेग के साथ आसपास के राज्यो, विन्ध्य खण्ड और दक्षिण भारत में फैलता कि अग्रेजी राज्य उससे बच ही नही सकता था।

जब तात्या ग्वालियर पहुँचा तब उसने वहा की सेना के एक बडे अङ्ग और अधिकतर सरदारो को रानी तथा पेशवा के बहुत कुछ अनुकूल पाया। सिन्धिया सरकार को पेशवाई सेना के गोपालपूर में आ जमने की सूचना मिल गई थी। गवर्नर जनरल को तुरन्त समाचार दिया गया और अपनी दृढ तथा प्रबल राजभक्ति का पक्का आश्वासन।

गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग ने इगलैड को तार दिया, 'यदि सिन्धिया वलवाइयो में शामिल हो जाय तो मुझको कल ही बँधना बोरिया बाधकर यहा से चल देना पडेगा।'*

तात्या ने रावसाहब इत्यादि को ग्वालियर का हाल दूसरे दिन लौटकर सुनाया। रानी ने तुरन्त आक्रमण कर देने की सलाह दी।

रावसाहब ने सिन्धिया सरकार को एक पत्र लिखा जिसका तात्पर्य यह था कि हम दक्षिण की ओर स्वराज्य-स्थापना के प्रयत्न में जा रहे हैं। आप हमारे पुराने नाते का स्मारण करिये और हमें सहायता दीजिये।

दिनकरराव् ने जो उत्तर दिया, वह गोल मटोल था। न उसमें हामी थी और न इनकार। दिनकरराव ने रेज़ीडेट को सूचना भेज दी।

पेशवा की सेना कालपी के युद्ध के चार दिन बाद ग्वालियर राज्य में धस गई। सिन्धिया सरकार का एक अफसर चारसौ पैदल और डेढसौ घुड सवार लेकर रोकने के लिये पहुँच गया। वह ज़रा सी डाट फटकार में ही पीछे हट आया। दो दिन बाद रावसाहब की सेना ग्वालियर से नौ मील की दूरी पर एक गाव के पास ठहर गई। रावसाहब ने सिन्धिया को एक पत्र फिर सहायता के लिए लिखा। इस पर ग्वालियर की राजसभा में विवाद हुआ। राजा का इरादा था 'वलवाइयो' पर तुरन्त हल्ला बोल देने का। दीवान की नीति थी ह्यूरोज के आने तक 'वलवाइयो' को किसी बहाने अटकाये रहना। और अपनी सेना को किसी प्रकार कावू में रखना। राजा ने नही माना और पहली जून को मुरार के पूर्व बहादुरपुर गाव के निकट पेशवा का मुकाबला करने के लिये छ हज़ार पैंदल, बारह सौ भडकीले सवार और आठ आधुनिक वडी तोपें लेकर मोर्चा जा पकडा। प्रात'काल होते ही सिन्धिया ने पेशवा की ओर गोले फेकने शुरू कर दिये। जब तक सिर पर गोले नही पडे, रावसाहव और तात्या ने भी समझा कि ग्वालियर की तोपे पेशवा को

---

*'If the Scindhia joins the mutiny I shall have to pack off-morrow'

अगवानी के लिये सलामी दाग रही है ! उस क्षण पेशवा की सेना में लडाई की कोई तैयारी न थी । रानी की आज्ञा पर रघुनार्थसिह ने तुरन्त तैयार हो जाने का बिगुल भी बजाया, परन्तु उस नक्कारखाने में इस तूती की आवाज को कौन सुनता था ? जब सिन्धिया के गोलन्दाज़ो ने पेशवा की छावनी पर ताक ताक कर गोलाबारी की, तब भगदड मच गई ।

परन्तु रानी, उसके दलपति और सवार पहले से कमर कसे तैयार थे । तात्या टोपे को छावनी का बरकाव करने के लिये कहकर रानी लक्ष्मीबाई सिन्धिया सरकार की सेना पर केवल दो सौ सवार लेकर टूट पडी । कुछ गोलन्दाज़ मारे गये, कुछ तोपें छोडकर भागे । तात्या ने तुरन्त अपनी छावनी के दो भाग करके उसको गतिवान किया और उसे एक ओर हटा ले गया—वह इस विद्या में अत्यन्त निपुण था । लक्ष्मीबाई के पराक्रम को, और तात्या की दोनो टुकडियो को दूसरी दिशा से आता हुआ देखकर, सिन्धिया के वे छ हज़ार पैंदल मैदान खाली कर गये, परन्तु बारह सौ भडकीले सवारो का सपाटा पडा । थोडी देर तक तलवार चली और खूब चली, परन्तु वे रानी के सवारो की टक्कर को न झेल सके; कटने और भागने लगे । जयाजीराव को तुरन्त मैदान छोड़कर भागना पडा । पहले राजमहल का रास्ता पकडा, फिर वह और दिनकरराव, दो एक विश्वसनीय सरदारो को लेकर धौलपूर होते हुये आगरा पहुचे । वहा किले में उन लोगो को शरण मिली ।

[८५]

राजा के आगरा चले जाने पर रानियां नरवर के किले में चली गई। पेशवाई सेना ने हर्ष और गर्व के साथ नगर में प्रवेश किया। ग्वालियर की बिखरी हुई फौज एकत्र हो गई, उसने पेशवा को तोपो की सलामी दी और उसकी अधीनता में आगई। पेशवा बडे ठाट के साथ माङ्गलिक वाद्य बजवाता हुआ, सिंधिया के राजमहल में पहुचा और वही डेरा डाला। रानी लक्ष्मीबाई ने अपना शिविर नौलखा बाग मे रक्खा। पेशवा के साथी सरदार शहर के भिन्न भिन्न महलो में जा उतरे। तात्या के दस्ते के लिये किले वालो ने फाटक खोल दिये। बहुत सी सामग्री हाथ आगई। किले पर पेशवा का झण्डा फहराने लगा। सिन्धिया का खजाना कब्जे में आ गया। अब पेशवा के बराबर था ही कौन?

पेशवाई सेना के कम्पनी-विद्रोही भाग ने रेजीडेन्सी मे आग लगाई और उसका माल-असबाब लूट लिया। दीवान दिनकरराव सरदार बलवन्तराव और सरदार माहुरकर की हवेलियो को भी, जो अङ्गरेजो के पक्षपाती थे, खाक कर दिया। एक बार मन का बन्धेज उठा कि फिर उसमें सीमाओ की पहिचान न रही—शहर का लूटना भी आरम्भ कर दिया। परन्तु पेशवा को ठीक समय पर मालूम हो गया। उसने तात्या को भेजकर यह लूटमार बन्द करवा दी।

ग्वालियर के दरबारी पेशवा के अनुकूल थे और जनता का मन उसके साथ था। विजय के हर्ष और गर्व ने उसकी छाती और दिमाग को फुला दिया था, इसलिये कायदे के साथ सिंहासनारूढ होने का निश्चय किया। ज्योतिषियो ने मुहूर्त शोध दिया। पेशवा की स्वराज्य-कामना अपने निज के उत्थान के रूप में पलट गई।

तीसरी जून को फूलबाग में एक विशाल दरबार किया गया।

पेशवा ने राजसी कपडे पहिने। कानो में मोतियो के चौकडे, गले में मोती-जवाहरो के कठे। शान के साथ चोबदारो के प्रणाम लेता हुआ,

मङ्गलध्वनि के साथ सिंहासनारूढ हो गया। सरदारो ने ताज़ीम दी। पेशवा ने उनका अभिनन्दन किया और खिलते बख्शी। अष्टप्रधान और एक प्रधान मन्त्री मुकर्रर किये। तात्या टोपे को प्रधान सेनापति। अपने फौजियो को बीस लाख रुपया इनाम बाटा। असख्य ब्राह्मणो के भोजन का प्रबन्ध करवाया सहस्त्रो व्यक्तियो को तो रसोई बनाने के लिये ही नियुक्त करना पडा। भङ्ग-बूटी और शकर बादाम की पूरी योजना कार्यान्वित हुई।

आनन्द के इस तूफान में यदि कोई नही पडा तो लक्ष्मीबाई और उनके पाच नायक——उनकी लालकुर्ती सेना अवश्य इनाम की भागी बनी।

ग्वालियर का गायन-वादन शताब्दियो से प्रसिद्ध रहा है। इसलिये उसका अखण्ड उपयोग किया जाने लगा। नृत्य और गायन से दिन और रात ओतप्रोत हो गये। ग्वालियर की ऐसी कोई भी नर्तकी और गायिका न थी जिसको अपने कलाकौशल के दिखलाने का काफी अवसर और समय न मिला हो। कवि सम्मेलन और मुशायरे भी हुये जिनमें कवि-कल्पना ने शब्दो के पुल बाध बाधकर, जिमीन आसमान एक कर दिये। कोई पेशवा की तुलना रामचन्द्र जी के साथ कर रहा था और कोई इन्द्र के साथ। दूसरी ओर भाडो की नकले जारी थी, जिनसे परिहास और अट्टहास के फव्वारे छूट रहे थे।

रानी किसी उत्सव मे शामिल नही होती थी। इस वैराग्य वृत्ति के कारण उनको उत्सवो में बुलाया ही नही जाता था।

तात्या के मन के कोने में से एक दबी हुई वासना उभड पडी और वह भी अपने स्वामी पेशवा के साथ नृत्य-गान के रस में डूब गया।

नृत्य-गान के एक बडे उत्सव में रानी के सरदारो को हठपूर्वक बुलाया गया। रानी ने अनुमति दे दी। मुन्दर नही गई। बाकी गये।

उत्सव में ग्वालियर की चुनी हुई प्रसिद्ध नर्तकियां और गायिकाये बुलाई गईं। गायन के साथ साथ नृत्य भी हुआ।

पेशवा ने आज्ञा दी, 'गायन और नृत्य के साथ पूरा हाव-भाव तो दिखलाओ।'

उन्होने ब्योरे के साथ विविध प्रकार का हावभाव प्रदर्शन आरम्भ किया।

जूही मन लगा कर देख रही थी। गायन के तोडो को वह सूक्ष्मता के साथ जाच रही थी। ताल की परनो के साथ उसके पैर की उङ्गलिया घूम जाती थी और सम पर सिर हिल जाता था। एक जगह नर्तकी पखावजी के विलक्षण कौशल के कारण क्षण के एक अश के पहले ही सम पर घु घरू ठुमका गई। जूही ने त्योरी बदल कर मुह बिचकाया। तात्या ध्यान के साथ नर्तकी के सुन्दर रूप, कलापूर्ण नृत्य, मनमोही हावभाव प्रदर्शन पर आख गडाये था। जूही ने तात्या के इस ध्यान को परखा। एक बडी ग्लानि उसके मन मे उठी।

देशमुख, रघुनाथसिह और गुलमुहम्मद पास पास बैठे।

गुलमुहम्मद ने धीरे से कहा, 'बाई यह सब बडा अजीब है। अमारे यहाँ तो ऐसा कोई गई नाचता।'

देशमुख—'ग्वालियर इन बातो के लिये मशहूर है।'

गुलमुहम्मद – 'लेकिन अगर अङ्गरेज़ इस वक्त आ जाय तो।'

देशमुख—'तो सबको भागना पडेगा।'

रघुनाथसिह—'और बचेगा कोई नही।'

गुलमुहम्मद—'बहुत देख लिया। अमारा तो पेट भर गया। अमारा रानी सो गया होगा। छावनी अकेला है। चलबी बाई।'

जूही ने सुन लिया। चलने के प्रस्ताव का समर्थन किया।

पेशवा से माफी मागी। इजाज़त ली। तात्या ने जूही की ओर देखा। उसने एक करारी त्योरी ली और अभिमान के साथ सिर फेर लिया। ये सब वहा से अपनी छावनी चले आये।

थोडे क्षण के लिये उत्सव बन्द हो गया। बीच के इस विक्षेप के कारण रसियो को बहुत बुरा लगा।

किसी ने पूछा, 'ये लालकुर्ती वाले कौन थे ?'

पेशवा ने धीरे से कहा, 'कुछ बात नही। अपने ही लोग हैं। बुन्देलखण्ड के केन्द्र झासी के हैं। जरा गँवार हैं।'

तात्या को रानी की याद आ गई और वह काप गया, परन्तु उसने कहा कुछ नही---कह भी क्या सकता था ? उत्सव रात भर होता रहा। सवेरे खूब भंग छनी। डटकर लड्डुओ का और श्रीखड का भोजन हुआ और फिर दिन भर सोना और रात को नाचरग। जब जरा फुरसत मिली तो पूछताछ हो गई कि ब्राह्मण भोजन यथाविधि चल रहा है और सेना भी खूब आनन्द मना रही है या नही।

बस यही अबाध क्रम।

लड्डू और श्रीखड खाते खाते बहुत ब्राह्मण बीमार पड गये। उनमें से एक नारायण शास्त्री था।

छोटी ने उसकी इतनी सेवा सुश्रूपा की कि वह शीघ्र अच्छा हो गया।

गाठ में थोड़ासा पैसा कर लेने की इच्छा से छोटी ने भी पेशवा के दरबार मे नृत्य करने का निश्चय किया।

नारायण ने मना किया, 'मैं अच्छी तरह चलने फिरने योग्य होते ही बहुत धन कमा लूँगा। तुम इन सरदारो के उत्सव में नाचने मत जाओ। ये लोग बडे कुरुचिपूर्ण हैं।'

छोटी ने प्रश्न किया, 'मुझ पर आपको क्या भरोसा नही है ?'

नारायण—'भरोसा तो पूरा है छोटी, परन्तु यह काम जघन्य है।'

छोटी—'जब पल्टनो में नाचती गाती थी, तब वह काम श्रेष्ठ था !'

नारायण—'उसका मतलब ऊँचा था।'

छोटी—'पास मे रुपया पैसा कुछ नही था। आप चलने फिरने लायक कुछ देर में हो पावेंगे। मै आज के ही नाच में काफी पैसा ले आऊँगी। मन ऊँचा बना रहे तो कोई काम नीचा नही।'

शास्त्री को छोटी का हठ निभाना पडा। छोटी सुन्दर वेश में पेशवा के उत्सव में पहुच गई और उसका नाच गाना हुआ।

गाना उसका बहुत साधारण श्रेणी का था। उसकी विशेषता केवल उसका सुरीला और मधुर कण्ठ थी। नृत्य भी उसका एक बधे हुये प्रकार का था। लय जरूर बहुत द्रुत थी। सुन्दर थी, इसलिये उसको टोका नही गया।

उसके सीधे साधे गाने और नाचने पर रावसाहब मुग्ध हो गया। अच्छा पुरस्कार दिया। बोला, 'तुम क्या यही की रहने वाली हो? तुम्हारा नृत्य शास्त्रीय ढङ्ग का न होने पर भी निराला है। तुम बराबर नाचने आया करो।'

छोटी ने उत्तर दिया, 'सरकार मै झाँसी की रहने वाली हू। लश्कर में कुछ समय से हूँ।'

तात्या छोटी को बडी देर से देख रहा था। पहिचानने की चेष्टा कर रहा था। अब उसको भ्रम न रहा।

तात्या ने रावसाहब से कहा, 'यह जाति की मेहतरानी है श्रीमन्त।'

पेशवा—'मेहतरानी!'

तात्या—'सरकार।'

पेशवा—'तो भी क्या हुआ? उसके पास विद्या है। नाचती क्या है, जादू डालती है।'

तात्या—'यह नारायण शास्त्री के साथ झाँसी से भागी थी।'

पेशवा—'नारायण शास्त्री के साथ! ब्राह्मण को पतित करके!!'

रावसाहब का कला-प्रेम समाप्त हो गया। क्रुद्ध स्वर में बोला, 'तूने यहाँ आने की कैसे हिम्मत की?'

छोटी—'जैसे पल्टनो में जाने की, देश का कार्य करने की करती थी।'

पेशवा ने तात्या की ओर देखा।

तात्या ने कहा, 'पल्टनो में जागृति फैलाने का काम तो इसने ग्वालियर में बहुत किया है।'

पेशवा—'तो क्या हुआ? अब जो कुछ कर रही है और जो कुछ इसने झाँसी में किया, वह दण्डनीय है।

छोटी ने अदम्य भाव से कहा, 'मुझको दण्ड और इनाम जो कुछ मिलना था, पा चुकी।'

पेशवा—'तू ग्वालियर में नही रह सकती। यहाँ मेरा राज्य है। तुरन्त खाली कर।'

छोटी—'कहा जाऊँ ?'

पेशवा—'चाहे जहा। अङ्गरेजो के राज्य में।'

छोटी—'जाती हूँ। परन्तु अङ्गरेजो के राज्य मे नही जाऊँगी, क्योंकि वे लोग हमको क्षमा नही करेगे।'

छोटी चली आई। नारायण को पुरस्कार के रुपये दिये और सब हाल सुनाया।

पहले तो उसको बहुत क्षोभ आया। बोला, 'इन अपवित्र रुपयो को नही लूँगा। चलो छोटी, ऐसी जगह चले जहा पेशवा का अत्याचार पीछा न कर सके।'

छोटी ने कहा, 'रुपये अपवित्र नही हैं। पसीना बहाकर लाई हू। पेशवा का राज्य सारे संसार मे नही है।'

नारायण—'परन्तु जातपात का राज्य तो है।'

छोटी—'आप कहा करते हैं कि वैष्णव हो जाने पर जातपात का भूत भाग जाता है।'

नारायण—'मै गलत नही कहता हूँ। चलो। यही वेश हमारी रक्षा करेगा।'

वे दोनो चले गये, और फिर पेशवा को उनका पता नही लगा।

उधर रोज को पहली जून के दिन ही, खबर मिल गई कि 'वलवाई' ग्वालियर की ओर बढते जा रहे हैं। कालपी की जीत के उपरान्त वह छुट्टी लेकर बम्बई जा रहा था। इस खबर के पाते ही उसने अपनी छुट्टी काट दी और जगह जगह से दलपतियो को ग्वालियर की ओर बढने का आग्रह-समाचार भेज दिया। चार जून को उसे समाचार मिला कि

ग्वालियर का पतन हो गया और राजा तथा दिनकरराव आगरा भाग गये। सन्नाटे में आ गया। कालपी की इतनी बडी और बुरी पराजय के उपरान्त भी ग्वालियर हस्तगत करने का विचार और साहस कौन कर सकता था ? कौन इतना बडा मन्सूबा गाठ सकता था ? किसमें इतना बडा हौसला था ?

रोज़ ने सोचा, 'झाँसी की रानी के सिवाय और कोई नही हो सकता। जब तक रानी को नही पकडा या मारा तब तक हिन्दुस्थान में हमारे राज्य की खैरियत नही।'

दृढता के साथ रोज अपने काम में जुट गया।

[८६]

इन उत्सवो का प्रतिरोध करने के लिये रानी ने पेशवा से भेट करने का प्रयत्न किया, परन्तु वहाँ नाच से छुट्टी मिली तो भग और निद्रा, और भग निद्रा से निस्तार पाया तो नाचरग। तात्या इस नाचरंग में डूब तो गया ही, उसको यह घमड भी हो गया कि कोई भी अङ्गरेज़ जनरल उसका मुकाबिला नही कर सकता।

निदान एक दिन तीसरे पहर रानी को ऐश्वर्य प्रमत्त पेशवा से थोडी देर की भेट प्राप्त हो गई। रानी उदास थी और क्षुब्ध। पेशवा सोकर उठा था। रात की खुमारी और सवेरे की भग की छाया अब भी शेष थी। आखे लाल थी और शरीर अङ्गडाइयां चाहता था। अभिवादन के बाद उसने रानी से कहा,

'बड़ी गरमी पड रही है। न दिन चैन, न रात।'

'कभी कभी बदली हो जाती है दस, पाच दिन मे वर्षा हो उठेगी।'

'अभी तो नक्षत्र तप रहे हैं।'

'परन्तु इन्ही दिनो में छत्रपति और पत प्रधान सबसे अधिक पराक्रम दिखलाया करते थे।'

'आपने भी तो इन्ही दिनो वह कर दिखलाया जो ग्वालियर के महाराज और अङ्गरेज कभी न भूलेगे।'

'और इन्ही दिनो हमारे आपके ऊपर विपद के वे बादल उठ रहे हैं, जो थोडे दिनो में कष्टो की मूसलाधार बरसावेगे।'

'हमारी सेना डटकर लडेगी। तब तक पानी बरस पडेगा। नदी नाले ऐसे चढेगे कि दुश्मन हमारा कुछ भी न कर सकेगे।'

'ये ही नदी नाले हम लोगो को भी निरुपाय और असमर्थ कर डालेगे। सेना में वैसे ही काफी अव्यवस्था है। फिर तो वह अकर्मण्य होकर निस्तेज ही हो जायगी।'

'अपने पास इतना बडा किला तो है, बाईसाहब।'

'और यदि किला छिन गया तो ?'

'तब निस्सन्देह हम लोग सब व्यर्थ हो जायेगे ।'

अङ्गरेजो की पल्टने सब दिशाओ से अपने ऊपर टूटने के लिये आ रही हैं । थोडा-सा ही समय रह गया है । अपनी सेना को छावनी—बन्द कीजिये । कायदा बर्तिये । किले मे बन्द होकर लडने की बात मत सोचिये । अँग्रेजी फौज का आगे वढकर सामना कीजिये । और सबसे प्रथम सिन्धिया की इस सेना को अपने सरदारो में बाटकर कडा अनुशासन जारी कर दीजिये ।'

'हो जायगा बाईसाहब, सब हो जायगा । इस समय भी कुछ आवश्यक काम ही हो रहा है । धर्म की नीव पर ही सब कुछ टिकता है । धर्म ही विजय का कारण होता है । इसलिये धर्म कराया जा रहा है । ब्राह्मण भोजन से विजय का आशीर्वाद मिलेगा । दूर दूर के ब्राह्मण, भोजन और दक्षिणा के लिये उमडे चले आ रहे हैं । इनका आशीर्वाद क्या विफल जायगा ?'

'मैं नही कहती कि ब्राह्मण भोजन मत करवाइये, परन्तु सेना के सुप्रबन्ध और आगे बढकर अग्रेजो से मोर्चे ले लेने के सगठन को उतना ही महत्व तो दीजिये ।'

'आप हैं । तात्या है । बादा के नवाब साहब हैं । आप लोगो के रहते अँग्रेज हमारा क्या बिगाड सकते हैं ?'

अँग्रेज अत्यन्त चालाक और उद्योग शील हैं । जो समय आप नाच रग को देते हैं, उस समय को वे लोग अपनी योजनाओ के सृजन में व्यस्त करते हैं ।'

'अपनी योजनाये तो बनी बनाई रक्खी हैं । और क्या करना है ? एक बात शेष थी, वह हो गई । जनता और फौज राजा के सिवाय और किसी का नायकत्व ग्रहण नही करती, सो मैने पेशवाई स्वीकार कर ली है । जब तक ऐसा न करता तब तक जनसामान्य मुझको एक साधारण जन समझता और हम लोगो के नायकत्व को मानता ही नही ।'

'आप में ये बडे परिवर्तन देखकर मुझको अचम्भा होता है ।'

कौन से परिवर्तन ?'

'भग, नाच रग, दिन में दीर्घ निद्रा ।'

'बाईसाहब. पेशवाई स्वीकार करने के बाद उत्सवो का, दरबारो का करना अनिवार्य हो गया । अन्यथा लोग कहते, ये कैसे राजाओ के राजा, जो चुपचाप सिंहासन पर बैठकर, चुपचाप महल में जा बैठे ! यहा के सरदार नृत्यगान के लालची हैं । उनका मन भरना आवश्यक था । करना पडा । इन सरदारो की सहानुभूति के बिना काम नही बनता ।'

'कितने दिन और चलेगा यह सब ?'

'बस थोडे दिन, बहुत थोडे दिन । परन्तु ब्राह्मण भोजन दान पुण्य निरन्तर जारी रहेगा । धर्म के आशीर्वाद से जो स्वराज्य स्थापित होगा वह अक्षय होगा । छत्रपति भी कर्मकाड को बहुत मानते थे, सो आप भी जानती हैं, और धर्म के विषय में आपसे बात करने का मै अधिकारी ही क्या हूँ ?'

'धर्म की गति को तो महात्मा लोग ही जानते हैं । मै तो केवल यह कह सकती हू कि ब्राह्मण भोजन दान पुण्य इत्यादि के साथ सेना का तुरन्त अच्छा प्रबन्ध करिये । उन्हे कुछ काम दीजिये और उत्सव इत्यादि तुरन्त बन्द कर दीजिये ।'

[८७]

रानी के समझाने पर भी रावसाहब न माना। भङ्ग और नाचरङ्ग का वही क्रम जारी रहा। लड्डुओ और श्रीखण्ड के लिये इतनी शकर खर्च होने लगी कि सिपाहियो को भँग के लिये उसका मिलना दुर्लभ हो गया। श्रीखण्ड के लिये दही की इतनी माग हो गई कि मट्ठा अप्राप्य हो गया।

ब्राह्मण भोजन और दान-पुन्य की आड में बेहिसाब भिखमगी बढ गई। कोई प्रतिबन्ध या प्रबन्ध न था, इसलिये अनेक सिपाही भी इस मुफ्तखोरी में सन गये।

रानी लक्ष्मीबाई ने देखा कि जब वे अपने किले में घिर गई थी तब स्वतन्त्र थी, और ग्वालियर में स्वच्छन्द होते हुये भी उनकी दशा एक कैदी की सी है।

रानी का स्वभाव था कि वे जहा जाती थी, उसके चोगिर्द का बारीकी के साथ निरीक्षण करती थी। इस निरीक्षण से उनको युद्ध के लिये मोर्चे बनाने में बडी सुविधा होती थी। उनकी रणनीति में इस क्रिया का विशेप स्थान था।

उन्होने देखा कि ग्वालियर का किला और पश्चिम-दक्षिण की पहाडिया ग्वालियर की बस्ती और लश्कर के नगर की अच्छी रक्षा कर सकती हैं। पूर्व की ओर पहाडियो का सिलसिला लश्कर से लगभग दो मील पडता था—यह भी रक्षा का साधन हो सकता था, परन्तु उत्तर-पूर्व में मुरार की ओर दिशा खुली पडी थी। उसको ढकने के लिये सोनरेखा नाम का केवल एक नाला था, जो लश्कर को तीन ओर से घेर कर कनराता हुआ मुरार की ओर चला गया था। परन्तु यह कोई बडा साधन न था, उल्टे कुछ अडचन डाल सकता था। इसके सिवाय दक्षिणवर्ती पहाडियो का क्रम, जिसके अगले भाग पर दुर्गा का मन्दिर था, शत्रुओ के लिये भी लाभदायक हो सकता था, और, पूर्व की ओर की पहाडिया यदि शत्रु की तोपो के लिये मिल जायें तो लश्कर का नगर और

ग्वालियर तथा मुरार की बस्तियां पूरे सङ्कट में आ जायँ। उनकी इच्छा थी कि यदि पेशवा की सेना के दस्ते सब ओर से बढती हुई आने वाली अंग्रेजी सेनाओं का आगे जाकर मुकाबिला न करे तो कम से कम इन पहाडियों पर यथास्थान तोपखाने तो लगा लें। परन्तु वहाँ भङ्ग की तरङ्ग और श्रीखण्ड की अखण्डता में उनकी सुनता ही कौन था ?

इस निरीक्षण के सिलसिले में उनको एक बाबा गङ्गादास का पता चला। इनकी कुटी सोन रेखा नाले से उत्तर की ओर कुछ दूरी पर हटकर थी—किले के दक्षिणी छोर से पूर्व की दिशा में। बाबा गङ्गादास की कुटी फूस और लकड़ी छान-छप्पर की थी। निरीक्षण करते करते रानी को प्यास लगी। बाबा ने पानी पिलाया। उस समय उनको मालूम हुआ कि झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई हैं। उन्होंने बाबा की आँखों में शान्ति का एक अद्भुत आकर्षण देखा।

पेशवा के अनसुनी कर देने के दिन से उनका मन खिन्न सा रहने लगा था। निरीक्षण करती थी, लडाई के नक्शे बनाती थी, अपने सिपाहियों की कवायद-परेड करती थी, और समय पर पूजन ध्यान करती थी, परन्तु मन का अनमनापन नहीं जाता था।

सन्ध्या होने में विलम्ब था। लू तेज चल रही थी। रानी मुन्दर के साथ स्त्री-वेश में बाबा गङ्गादास की कुटी पर पहुँची। घोडे एक पेड से बाध दिये गये। बाबा के सामने पहुच कर नमस्कार किया। बाबा ने आसन दिया। ठण्डा पानी पिलाया।

रानी ने कहा, 'मै आपसे कुछ पूछने आई हू। मेरा मन अशान्त है। आपके उत्तर से शान्ति मिलने की आशा है।'

बाबा बोले, 'मैं रामभजन के सिवाय और कुछ जानता ही नही हूं।'

रानी—'आप ब्राह्मण-भोजन में गये ?'

बाबा—'नही गया। यहीं बहुत खाने को मिल जाता है।'

रानी—'इसीलिये आपके पास आई। आप टाल नही सकेंगे।

बतलाना होगा। आपने अकेले अपने मन को शान्त कर लिया तो क्या हुआ ? हम लोगो को भी शान्ति दीजिये।'

बाबा—'पूछो बेटी। यदि समझ में आ जायगा तो बतला दूगा।'

रानी—'यहा थोडे दिनो में युद्ध होने वाला है। आपकी कुटी का स्थान रक्षित नही है। किसी सुरक्षित स्थान में चले जाइये।'

बाबा—'सुरक्षित है। बात पूछो।'

रानी—'इस देश को स्वराज्य कैसे प्राप्त होगा ?'

बाबा—'इस प्रश्न का उत्तर तो राजा लोग दे सकते हैं।'

रानी—'नही दे सकते, तभी आपसे पूछने आई हूँ।'

बाबा—'जैसे प्राप्त होता आया है, वैसे ही होगा।'

रानी—'कैसे बाबा जी ?'

बाबा—'सेवा, तपस्या, बलिदान से।'

रानी—'हम लोग कैसे स्वराज्य स्थापित कर पावेगे ?'

बाबा—'गड्ढे कैसे भरे जाते हैं ? नीव कैसे पूरी जाती है ? एक पत्थर गिरता है, फिर दूसरा, फिर तीसरा और चौथा, इसी प्रकार और। तब उसके ऊपर भवन खडा होता है। नीव के पत्थर भवन को नही देख पाते परन्तु भवन खडा होता है उन्ही के भरोसे—जो नीव में गडे हुये है। वह गड्ढा या नीव एक पत्थर से नही भरी जाती। और, न एक दिन में। अनवरत प्रयत्न, निरन्तर बलिदान आवश्यक है।'

रानी—'हम लोगो के जीवनकाल में स्वराज्य स्थापित हो जायगा ?'

बाबा—'यह मोह क्यो ? तुमने आरम्भ किये हुये कार्य को आगे बढा दिया है। अन्य लोग आयेंगे। वे इसको बढाते जायंगे। अभी कसर है। स्वराज्य स्थापना के आदर्शवादी अपने अपने छोटे छोटे राज्य बनाकर बैठ जाते हैं। जनता और उनके बीच का अन्तर नही मिटता—घटता ही बहुत कम है। जनता त्रस्त बनी रहती है। जब जनता का पूरा सहयोग राज्य को प्राप्त हो जाय और राजा टीमटाम तथा विलासिता का दासत्व छोडकर प्रजा का सेवक बन जाय तब जानो स्वराज्य की नीव भर

गई और भवन वनना आरम्भ हो गया। शाश्वत धर्म का रूप विगड गया है। इसके सुधार के विना वह भवन खडा न हो पायगा।'

रानी—'हम लोग प्रयत्न करते रहे?'

वावा—'अवश्य। तुम तो भगवान कृष्ण और गीता की भक्त हो।'

रानी—'आपने कैसे जाना?'

वावा मुस्कराये।

वोले, 'सब कहते हैं।'

रानी—'मै पाठ करती हूँ, परन्तु समझते तो आप महात्मा लोग ही है।'

वावा—'गृहस्थ से वढकर और कोई साधू नही। मुझसे कुछ और नही हो सका, इसलिये कुटी वना ली।'

सूर्यास्त होने को आया। रानी को सन्ध्या-ध्यान का स्मरण हुआ। कहा, 'वावा जी, फिर कभी दर्शन करूँगी। 'आपकी इतनी वात से चित्त को बहुत शान्ति मिली।' और नमस्कार करके चली गईं।

मार्ग में मुन्दर ने कहा, 'सरकार भी इन्ही वातो को वतलाया करती हैं।'

'परन्तु' रानी वोली, 'वावा के समान होने में वहुत देर है।'

[८८]

रावसाहब पेशवा का ऐश-आराम और ब्राह्मण-भोजन जारी रहा। जनरल रोज़ के उद्योग ने पहले की अपेक्षा और अधिक सबलता पकडी।

रोज़ ने अपनी सेना के कई भाग करके अनुभवी अफसरो के सुपुर्द किया। ब्रिगेडियर स्मिथ को ग्वालियर के पूर्व की ओर पाच मील पर कोटे की सराय भेजा। एक अफसर को ग्वालियर और आगरे के मार्ग पर स्वय एक प्रबल दल लेकर कालपी से ग्वालियर की ओर ६ जून को बढा। मार्ग में उसको ब्रिगेडियर स्टुअर्ट ससैन्य मिल गया। १६ जून को जनरल रोज़ बहादुरपूर ग्राम पर आ गया, जहा जयाजीराव की हार हुई थी। जनरल रोज़ के साथ मध्यभारत और ग्वालियर के पोलिटिकल एजेट भी थे। इन्होने इस बीच में एक चाल खेली—जयाजीराव और दिनकरराव को आगरे से बुलवा लिया।

मुरार में पेशवा की सेना काफी थी, बाकी इधर उधर बिखरी हुई पडी थी। इनमें से अधिकाश सैनिक सिन्धिया की सेना के ही नौकर थे। यदि ये बारह तेरह दिन नष्ट न किये गये होते और यदि इन सैनिको को विभक्त करके अपने विश्वसनीय दलपतियो की अधीनता में, शुरू से ही उनका अनुशासन मय ससर्ग स्थापित कर दिया गया होता, तो बात न बिगडती।

जनरल रोज ने दो घटे की कडी लडाई में पेशवा की मुरार वाली सेना को हरा दिया और मुरार को कब्जे में कर लिया। पेशवा की यह पराजित सेना भाग कर ग्वालियर आई। अब रावसाहब पेशवा का नशा फरार हुआ।

रोज़ जयाजीराव द्वारा पेशवा के उन सैनिको को, जो उनकी ग्वालियर फौज के थे, माफी का आश्वासन दिलवाया और यह लिखित घोषणा प्रकाशित करवाई कि अंग्रेज ग्वालियर के राजा को पुनः गद्दी दिलवाने के लिये ही लडने आये हैं। सरदारो और सैनिको में फूट पड गई। उनके मन फिर गये। उत्सवो की रिश्वत बेकार गई।

पेशवा, बांदा के नवाब किंकर्तव्य विमूढ़ हो गये। कुछ भी समझ में नही आ रहा था कि क्या करे।

तब झाँसी की रानी की याद आई, परन्तु उनके पास जाने की हिम्मत नही पड़ रही थी—कैसे मुँह दिखलाएँ?

तात्या को भेजा।

तात्या कलेजा साधकर उनके सामने गया। उस समय उनके पास जूही और मुन्दर थी। तात्या नमस्कार करने के उपरान्त हाथ जोड कर खड़ा हो गया।

'क्या बात है, सरदार साहब?' रानी ने व्यङ्ग किया, 'ये तोपें कहाँ चल रही थी?'

तात्या ने विनीत भाव से कहा, 'अब क्षमा प्रार्थना तक का समय नही है, बाईसाहब।'

रानी बोली, 'क्या भंग छानने का भी समय नही? एक तान भी सुनने के लिये समय नही?'

तात्या उनके पैरो पर गिरने को हुआ, 'रक्षा करो देवी।'

रानी ने उसको बीच में ही पकड लिया।

जूही बोली, 'सरकार क्षमा कर दीजिये।'

रानी मुस्कराईं।

'तात्या,' उन्होने कहा, 'तुम से मुझको बडी-बडी आशाएँ थी। अब भी बहुत कुछ कर सकोगे, परन्तु दृढ हो जाओ तो।'

तात्या बोला, 'जो जो आज्ञा होगी उसका तनमन से पालन करूँगा। आपको कभी उलहने का अवसर न दूँगा।'

रानी ने उठती हुई सास को दबाकर कहा, 'मेरा कदाचित् यह अन्तिम युद्ध होगा। क्यो मुन्दर, स्मरण है बाबा गङ्गादास ने क्या कहा था?'

जूही बोली, 'कदापि नही सरकार।'

रानी ने गभीर स्वर में कहा, 'स्वराज्य के भवन की नीव एक दो पत्थरो से नही भरेगी।'

तात्या अधीर होकर कातरता के साथ मुँह ताकने लगा।

रानी फिर मुस्कराई। तात्या को आश्वासन दिया, 'घबराओ नही। पेशवा से कहो कि धैर्य से काम ले। जो योजना बतलाती हू, उसके अनुसार काम करे। कदाचित् विजय प्राप्त हो जाय। न भी हो तो युद्ध सामग्री और सेना को दक्षिण की ओर ले चलने का प्रबन्ध रखना। तुम इस क्रिया के आचार्य हो।'

रानी ने तात्या को थोडे समय में भी अपनी योजना, विस्तार पूर्वक समझादी और फिर अपने पाचो सरदारो की बुद्धि में बिठलादी।

ग्वालियर की पूर्वीय ओर की रक्षा का भार रानी ने स्वय लिया। पूर्वीय पहाडियो पर जहा तक अग्रेजो का अधिकार नही हो पाया था, तोपखाने, पीछे पैदल और रिसाले का यत्र तत्र क्रमिक मोर्चा रक्खा गया। सबसे आगे और बीच बीच में अपनी लालकुर्ती के सवार। अगल बगल की पहाडियो पर तोपे—दक्षिण दिशा तक। उत्तर का भार तात्या के जिम्मे किया गया। उसने रुहेली और अवधी सेना के भग्नावशेष पर अपना दस्ता बनाया था। इस दस्ते को तोपो सहित तात्या ने जमाया। पश्चिम का भार रावसाहब के ऊपर रक्खा गया। इसके साथ अधिकाश सिन्धिया वाली फौज थी। शहर के भीतर बाहर की रक्षा का प्रबन्ध बादा के नवाब के हाथ मे दिया गया। किले की खास रक्षा के लिये ज्यादा चिन्ता में नही पडना पडा। तोपें गोलन्दाज़ और कुछ सिपाही काफी समझे गये, क्यो कि बिना किसी बडे और विशेष कारण के किले में बन्द होकर लडना मराठी युद्ध प्रणाली के विरुद्ध था।

रानी ने अपने सवारो की कवायद ली, और उनको काम की सब बातें समझा दी।

१७ जून को सवेरे ब्रिगेडियर स्मिथ ने लडाई का बिगुल बजाया। लडाई आरम्भ होगई। ब्रिगेडियर स्मिथ का आक्रमण कोटा की सराय

से शहर पर होना था, पूर्व दिशा से, जहां लक्ष्मीबाई का मोर्चा था। जैसे ही अंग्रेजी सेना रानी की तोपो की मार के भीतर आई, रानी ने गोलन्दाजो को सकेत दिया। गोलाबारी होते ही अंग्रेजी सेना की दुर्गति हुई और वह पीछे हटी। रानी के लालकुर्ती सवारो ने तुरन्त छापा मारा। स्मिथ ने एक चतुर चाल खेली—उसने अपनी उस टुकडी को और अधिक पीछे खीचा और रानी के सवारो को आगे बढने दिया। इन सवारो के ज्यादा आगे निकल जाने से उनका स्थान खाली हो गया। स्मिथ ने कई दिशाओ से रानी के मोर्चों पर आक्रमण किया। घमासान युद्ध हुआ। तलवार चली। लोहे ने लोहे से चिनगारिया छुटकाई। स्मिथ ने रानी के पार्श्व पर अपनी दो पल्टने और फेकी जो अभी तक चुपचाप खडी थी। रानी के सवारो को पीछे हटना पडा। ब्रिगेडियर स्मिथ ने अपने सामने की पातो को फोड कर रिसाले समेत बढने का सकल्प किया। उद्देश्य था फूल बाग पर अधिकार करने का।

अपने सवारो को पीछे हटता देख कर रानी घोडे को तेज करके तुरन्त उनके समीप पहुची। गुलमुहम्मद दिखलाई दिया। उसके पास घोडा दौडा कर बढते हुये अंग्रेजो की ओर तलवार की नोक करके बोली, 'खान, आज हाथ ढीला क्यो पड रहा ?'

गुलमुहम्मद चिल्लाकर बोला, 'हुजूर अमारा हाथ अब मुलाहिजा करे।'

पठान सरदार चिल्लाता हुआ, रेलपेल करता हुआ, लालकुर्तियो को बढावा देता हुआ, आगे फिका। रानी साथ में।

गुलमुहम्मद ने प्रखर स्वर मे रानी से प्रार्थना की, हुजूर जूही सरदार का तोपखाना ठीक करे।'

रानी लौट पडी। एक टौरिया के पीछे जूही तोपखाना की मार को जारी किये थी, परन्तु लालकुर्ती को पीछे हटा देख कर हडबडा गई थी। गोरा रिसाला उसकी ओर बढ रहा था।

'जूही,' रानी ने आदेश किया, 'तोप का मुहरा एक अंगुल नीचा कर।'

'जो आज्ञा उसने उत्साहित होकर कहा, और अपने साथियो की सहायता से तुरन्त वैसा ही किया।

'मार,' रानी ने दूसरा आदेश दिया। तोप ने धायँ किया। गोरे सवार बिछ गये। लौट पडे।

रानी दूसरे स्थल पर पहुँची। वे जहाँ पहुचती वही अपने सिपाहियो पर तेज छिटक देती।

यद्यपि उनके योधाओ की सख्या कम थी, परन्तु वे उनके प्रति अटल विश्वास रखते थे। फिर बढे। उनकी रानी उनके साथ। दोनो हाथो एक समान कौशल और शक्ति के साथ तलवार चलाने वाली।

अँग्रेज वीरता के साथ लडे और बहुत मरे। रानी के उन थोडे से लालकुर्ती सवारो ने तो कमाल ही कर दिया। यथावत् आज्ञा का पालन करते हुये उन लोगो ने अँग्रेजो के छक्के छुटा दिये। ब्रिगेडियर स्मिथ को रानी ने उस दिन की चालो में और शूरवीरी में मात दी। स्मिथ उनके व्यूह को न भेद सका। उसको लक्ष्मीबाई के मुकाबिले में हार कर लौटना पडा। अग्रेजो ने उस दिन का युद्ध बन्द करके दम ली।

रानी ने उस दिन निरन्तर परिश्रम किया था और उनके सरदारो ने भी। इस पर भी उन्होने रात को काफी समय तक अथक परिश्रम किया—योजनाये सुधारी, परिवर्तित की, सलाह सम्मित दी, उनके जिन योधाओ ने उस दिन के युद्ध में कोई विशेष कार्य किया था, उनको शाबाशी दी, और पुरस्कार दिये। और गुलमुहम्मद को कुँवर की उपाधि प्रदान की।

ग्वालियर की सेना पर जयाजीराव की उस घोषणा के कारण प्रभाव पड चुका था, परन्तु उस दिन उस सेना ने कोई ऐसा स्पष्ट काम नहीं किया जिससे उस पर तात्या या पेशवा को अविश्वास होता परन्तु रानी को सन्देह था। तात्या और रावसाहब ने निवारण किया। अविश्वास करने से अब होता भी क्या था? लाचार होकर दूसरे दिन के युद्ध में वे ही साधन काम में लाने पडे जो उनको उपलब्ध थे।

[८९]

अठारह जून आई। ज्येष्ठ शुक्ला सप्तमी। शुक्रवार। सफेद और पीली पौ फटी। ऊषा ने अपनी मुस्कान बिखेरी। रानी स्नान-ध्यान और गीता के अठारहवे अध्याय के पाठ से निबट चुकी। झीगुरो की झंकार पर एक एकाध चिडिया ने चहक लगाई। रानी ने नित्यवत अपने रिसाले की लालकुर्ती की मर्दाना पोशाक पहिनी। दोनो ओर एक एक तलवार बाधी और पिस्तौले लटकाई। गले में मोतियो और हीरो की माला--जिससे सग्राम के घमासान मे उनके सिपाहियो को उन्हे पहिचानने में सुविधा रहे। लोहे के कुले पर चन्देरी का ज़रतारी लाल साफा बाधा। लोहे के दस्ताने और भुजबन्द पहिने। इतने में उसके पाचो सरदार आ गये।

मुन्दर ने कहा, 'सरकार घोडा लँगडाता है। कल की लड़ाई में या तो घायल हो गया है या ठोकर खा गया है।'

रानी ने आज्ञा दी, 'तुरन्त दूसरा अच्छा और मजबूत घोड़ा ले आ।'

मुन्दर घोड़ा लेने गई और उसने अस्तबल में से एक बहुत तगड़ा और देखने में पानीदार घोडा चुना।

अस्तबल के प्रहरी ने कहा, 'हमारे सिन्धिया सरकार का यह खास घोड़ा है।'

मुन्दर बोली, 'खास ही चाहिये। हमारी सरकार की सवारी में आवेगा।'

प्रहरी—'झाँसी की रानी साहब की सवारी में ?'

मुन्दर—'हाँ।'

प्रहरी—'खैर ठीक है। हमारे सरकार जब इस पर बैठते थे बहुत ऊबते थे। इसके जाने से कुछ रञ्ज होता है।'

मुन्दर—'क्यो ?'

प्रहरी—'जब सरकार इसको न पावेगे दुखी होगे।'

मुन्दर जल्दी में थी। घोडा लेकर चली गई।

रानी ने अपने सरदारो को हिदायते दी।

रानी ने कहा, 'कुंवर गुलमुहम्मद, आज तुमको अपने जौहर का जौहर दिखलाना है। कल की लडाई का हाल देखकर आज जीत की आशा होती है। परन्तु यदि पश्चिम या उत्तर का मोर्चा उखड जाय तो उसको सँभालना और दक्षिण चल पडने की तैयारी में रहना।'

'सरकार,' गुलमुहम्मद बोला, 'अम सब पठान आज कट जाने का कसम खाया हे। जो बचेगा वो दखन जायगा। आप दखन जाना सरकार। अमारा राहतगढ लेना। अमारा भौत पठान वहा मारा गया। उनका यादगार बनवाना।'

'नही कुवर साहब हम जीतेगे', रानी ने कहा, 'दक्षिण जाने की बात तो तब उठेगी जब यहा कुछ हाथ न रहे। फौजदार के विचार में जीतने की बात पहले उठनी ही चाहिये, परन्तु दूसरी बात जो तै की जावे वह बच निकलने और फिर कही जमकर युद्ध करने की है।'

मुन्दर बोली, 'सरकार कुछ जलपान करले। इसी समय से हवा में कुछ कुछ गरमी है। दिखता है लू बहुत चलेगी।'

रानी ने कहा, 'तुम लोग कुछ खालो। दामोदरराव को खूब खिला-पिला लो। पीठ पर पानी का प्रबन्ध रखना। मैं केवल शर्बत पियूंगी।'

जूही—'मै भी शर्बत पियूगी।'

रानी—'देशमुख, तुम ?'

देशमुख—'मैं तो कुछ खा-पी आया।'

रानी—'रघुनाथसिह ?'

रघुनाथसिह—'मै कुछ खाऊँगा।'

रानी—'तुम और मुन्दर कुछ खा-पीकर झटपट शर्बत बना लाओ।'

मुन्दर और रघुनाथसिह गये। दामोदरराव आ गया। रानी ने उसको खिलाया-पिलाया।

रानी ने जूही से कहा, 'आज तेरी सुगन्ध ऐसी बरसे कि बैरी बिछ जायँ।'

जूही प्रसन्न होकर बोली, 'आज मैं जो कुछ कर सकूँ, कह नही सकती, परन्तु आख खुलते ही जो कुछ प्रण किया है उसके अनुसार अवश्य काम करूँगी।'

रानी--'परन्तु जो कुछ करे, ठडक के साथ करना। केवल उत्तेजना से बहुत सहायता नही मिलेगी।'

जूही--'तभी तो सरकार मै हँस रही हूँ। एक हसरत मन में रही जाती है--आपको गाना न सुना पाया।'

रानी--'किसी दिन सुनूँगी।'

जूही--'हाँ सरकार, अवश्य।' जूही जरा ज्यादा हँस पड़ी।

रानी--'तेरी हँसी आज कुछ भीपरण है।'

जूही--'काम इससे अधिक भीषरण होगा सरकार।'

[६०]

मुन्दर और रघुनाथसिंह ने कुछ भी न खाकर जेबो में कलेवा डाला और पीठ पर पानी का वर्तन कस लिया। झटपट शर्बत बनाया।

मुन्दरबाई', रघुनाथसिंह ने कहा, 'रानी साहब का साथ एक क्षण के लिये भी न छूटने पावे। वे आज अंतिम युद्ध लडने जा रही हैं।'

मुन्दर—'आप कहा रहेये ?'

रघुनाथसिंह—'जहा उनकी आज्ञा होगी। वैसे आप लोगो के समीप ही रहने का प्रयत्न करूंगा।'

मुन्दर—'मैं चाहती हूँ आप बिलकुल निकट रहे। मुझे लगता है मैं आज मारी जाऊँगी। आपके निकट होने से शान्ति मिलेगी।'

रघुनाथसिंह—'मैं भी नही बचूंगा। रानी साहब को किसी प्रकार सुरक्षित रखना है। मै तुम्हे तुरन्त ही स्वर्ग मे मिलूंगा। केवल आगे पीछे की बात है।' वह जरा सूखी हँसी हँसा।

मुन्दर ने रघुनाथसिंह की ओर आँसू भरी आखो से देखा। कुछ कहने के लिये होठ हिले। रघुनाथसिंह की आँखे भी धुधली हुईं।

दूर से दुश्मन के बिगुल के शब्द की झाई कान में पडी। मुन्दर ने रघुनाथसिंह को मस्तक नवाकर प्रणाम किया और उस ओट मे जल्दी आसू पोछ डाले। रघुनाथसिंह ने मुन्दर को नमस्कार किया फिर तुरन्त दोनो शर्वत लिये हुये रानी के पास पहुँचे।

मुन्दर ने जूही को पिलाया, रघुनाथसिंह ने रानी को। अङ्गरेजो की बिगुल का साफ शब्द सुनाई दिया। तोप का धडाका हुआ, गोला सन्ना-कर ऊपर से निकल गया। रानी ने दूसरा कटोरा नही पी पाया।

रानी ने रामचन्द्र देशमुख को आदेश किया, 'दामोदर को आज तुम पीठ पर बाधो। यदि मैं मारी जाऊँ तो इसको किसी तरह दक्षिण सुरक्षित पहुचा देना। तुमको आज मेरे प्राणो से बढकर अपनी रक्षा की चिन्ता करनी होगी। दूसरी बात यह है कि मारी जाने पर ये विधर्मी मेरी देह को न छूने पावे। बस। घोडा लाओ।'

मुन्दर घोडा ले आई। उसकी आखे छलछला रही थी। पूर्व दिशा में अरुणिमा फैल गई। अबकी बार कई तोपो का धडाका हुआ।

रानी मुस्कराई। बोली, 'यह तात्या की तोपो का जवाब है।'

मुन्दर की छलकती हुई आखो को देखकर कहा, 'यह समय आसुओ का नही है, मुन्दर। जा, तुरन्त अपने घोडे पर सवार हो।'

अपने लिये आये हुये थोडे को देखकर बोली, 'यह अस्तबल को प्यार करने वाला जानवर है। परन्तु अब दूसरे को चुनने का समय ही नही है। इसी से काम निकालू गी।'

जूही के सिर पर हाथ फेर कर कहा, 'जा जूही अपने तोपखाने पर। छका तो दे इन बैरियो को आज।'

जूही ने प्रणाम किया। जाते हुये कह गई, 'इस जीवन का यथोचित अभिनय आपको न दिखला पाया। खैर।'

अङ्गरेज़ो के गोलो की वर्षा हो उठी। रानी के सब सरदार और सवार घोडो पर जम गये, जूही का तोपखाना आग उगलने लगा।

इतने में सूर्य का उदय हुआ।

सूर्य की किरणो ने रानी के सुन्दर मुख को प्रदीप्त किया। उनके नेत्रो की ज्योति दुहरे चमत्कार से भासमान हुई। लाल वर्दी के ऊपर मोती-हीरो का कठा दमक उठा और, चमक पडी म्यान से निकली हुई तलवार।

रानी ने घोडे को एड लगाई। पहले ज़रा हिचका फिर तेज हो गया। रानी ने सोचा कई दिन का बँधा होगा, थोडी देर में गरम हो जायगा।

उत्तर और पश्चिम की दिशाओ में तात्या और रावसाहब के मोर्चे थे। दक्षिण में बादा के नवाब का, रानी ने पूर्व की ओर झपट लगाई।

गत दिवस की हार के कारण अङ्गरेज जनरल सावधान और चिंतित हो गये थे। इन लोगो ने अपनी पैदल पल्टने पूर्व और दक्षिण के बीहड में छिपा ली और हुज़र* सवारो को कई दिशाओ से आक्रमण करने

---

*Hussars

की योजना की। तोपे पीठ पर रक्षा के लिये थी ही हुजूर सवारो ने पहला हमला कडाबीन बन्दूको से किया। बन्दूको का जवाब बन्दूको से दिया गया। रानी ने आक्रमण पर आक्रमण करके हुजर सवारो को पीछे हटाया। दोनो ओर के सवारो की बेहिसाब दौड से धूल के बादल छा गये। रानी के रणकौशल के मारे अगरेज जनरल थर्रा गये। काफी समय हो गया, परन्तु अङ्गरेजो को पेशवाई मोर्चो में निकल जाने की गुन्जायश न मिली।

जूही की तोपे गज़ब ढा रही थी। अङ्गरेज नायक ने इन तोपो का मुँह बन्द करना तै किया। हुजर सवार बढते जाते थे, मरते जाते थे, परन्तु उन्होने इस तरफ की तोपो को चुप करने का निश्चय कर लिया था। रानी ने जूही की सहायता के लिये कुमुक भेजी। उसी समय उनको खबर मिली कि पेशवा की अधिकाश ग्वालियरी सेना और सरदार 'आने महाराज़' की शरण मे चले गये।

मुन्दर ने रानी से कहा, 'सवेरे अस्तबल का प्रहरी रिस रिस कर अपने 'सरकार' का स्मरण कर रहा था। मुझे सन्देह हो गया था कि ग्वालियरी कुछ गडबड करेंगे।'

'गाठ में समय न होने के कारण कुछ नही किया जा सकता था,' रानी बोली, 'अब जो कुछ संभव है वह करो।'

इनकी लालकुर्ती अब तलवार खीचकर आगे बढी। उस धूल धूरसित प्रकाश में भी तलवारो की चमचमाहट ने चकाचोध लगा दी।

कुछ ही समय उपरान्त समाचार मिला कि ग्वालियरी सेना के परपक्ष में मिल जाने के कारण रावसाहब के दो मोर्चे छिन गये और अङ्गरेज उनमे से घुसने लगे हैं। रानी के पीछे पैदल पल्टन थी। उसको स्थिति सँभालने की आज्ञा देकर वह एक ओर आगे बढी। उधर हुज़र-सवार जूही के तोपखाने पर जा टूटे। जूही तलवार से भिड गई। घिर गई और मारी गई। मरते समय उसने आह तक नही की। चिर गई थी। परन्तु शत्रु की तलवार चीरने में, जिस बातमें असमर्थ रही—वह थी

जूही की क्षीण मुस्कराहट जो उसके ओठो पर अनन्त दिव्यता की गोद मे खेल गई।

वर्दी के कट जाने पर हुजरो ने देखा कि तोपखाने का अफसर गोरे रङ्ग की एक सुन्दर युवती थी। और उसके ओठो पर मुस्कराहट थी !!

समाचार मिलते ही रानी ने इस तोपखाने का प्रबन्ध किया।

इतने में ब्रिगेडियर स्मिथ ने अपने छिपे हुये पैंदलो को छिपे हुये स्थानो से निकाला। वे संगीने सीधी किये रानी के पीछे वाली पैंदल पल्टन पर दो पार्श्वों से झपटे। पेशवा की पैंदल पल्टन घबरा गई। उसके पैर उखडे। भाग उठी। रानी ने प्रोत्साहन, उत्तेजन दिया। परन्तु उनके और उस भागती हुई पल्टन के बीच में गोरो की सगीनें और हुज़रो के घोडे आचुके थे।

अङ्गरेजो की कडाबीने, सगीनें और तोपें पेशवाई सेना का सहार कर उठी। पेशवा की दो तोपे भी उन लोगो ने छीनली। अङ्गरेजी सेना बाढ पर आई हुई नदी की तरह बढने और फैलने लगी।

रानी की रक्षा के लिये लालकुर्ती सवार अटूट शौर्य और अपार विक्रम दिखलाने लगे। न कडाबीन की परवाह, न सगीन का भय और तलवार तो मानो उनकी ईश्वरीय देन थी। उस तेजस्वी दल ने घन्टो अङ्गरेजो का प्रचंड सामना किया। रानी धीरे धीरे पश्चिम–दक्षिण की ओर अपने मोर्चे की शेष सेना से मिलने के लिये मुडी। यह मिलान लगभग असंभव था, क्योकि उस भागती हुई पैंदल पल्टन और रानी के बीच में बहुसंख्यक हुज़र सवार और सगीन बरदार पैदल थे। परन्तु उन बचे खुचे लालकुर्ती वीरो ने अपनी तलवारो की आड़ बनाई।

रानी ने घोडे की लगाम अपने दातो में थामी और दोनो हाथो से तलवार चलाकर अपना मार्ग बनाना आरंभ कर दिया। दक्षिण–पश्चिम की ओर सोनरेखा नाला था। आगे चलकर बाबा गङ्गादास की कुटी थी। कुटी के पीछे दक्षिण और पश्चिम की ओर हटती हुई पेशवाई पैंदल पल्टन।

मुन्दर रानी के साथ थी। अगल-बगल रघुनाथसिह और रामचन्द्र देशमुख। पीछे कुवर गुलमुहम्मद और केवल बीस-पच्चीस अवशिष्ट लाल सवार। अङ्गरेजो ने थोडी देर में इन सबके चारो तरफ घेरा डाल दिया। सिमट सिमटकर उस घेरे को कम करते जा रहे थे।

परन्तु रानी की दुहत्थू तलवारे आगे का मार्ग साफ करती चली जा रही थी। पीछे के वीर सवारो की सख्या घटते घटते नगण्य हो गई। उसी समय तात्या ने रुहेली और अवधी सैनिको की सहायता से अङ्गरेजो के व्यूह पर प्रहार किया। तात्या कठिन से कठिन व्यूह में होकर वच निकलने की रणविद्या का पारङ्गत पण्डित था। अङ्गरेज थोडे से सवारो को लालकुर्ती का पीछा करने के लिये छोडकर तात्या की ओर मुड गये। सूर्यास्त होने में कुछ बिलम्ब था।

लालकुर्ती का अंतिम सवार मारा गया। रानी के साथ केवल चार सरदार और उनकी तलवारे रह गई। पीछे कडावीन और तलवार वाले दस-पन्द्रह गोरे सवार। आगे सङ्गीन वाले कुछ घोरे पैदल।

रानी ने पीछे की तरफ देखा—रघुनाथसिह और गुलमुहम्मद तलवार से अङ्गरेज सैनिको की सख्या कम रहे हैं। एक ओर रामचन्द्र देशमुख दामोदरराव की रक्षा की चिंता में बरकाव कर करके लड़ रहा था। रानी ने देशमुख की सहायता के लिये मुन्दर को इशारा किया, और वह स्वय सगीनबरदारो को दोनो हाथो की तलवारो से खटाखट साफ करके आगे बढने लगी। एक सगीनबरदार की हूल रानी के सीने के नीचे पडी। उन्होने उसी समय तलवारो से उस सगीनबरदार को खतम किया। हूल करारी थी, परन्तु आतें बच गई।

रानी ने सोचा, 'स्वराज्य की नीव का पत्थर बनने जा रही हू।' रानी के खून वह निकला।

उस सगीनबरदार के खतम होते ही बाकी भागे। रानी आगे निकल गई। उनके साथी भी दायें, बायें और पीछे। आठ-दस गोरे घुडसवार उनको पछियाते हुये।

रघुनाथसिंह पास था। रानी ने कहा, 'मेरी देह को अङ्गरेज़ न छूने पावे।'

गुलमुहम्मद ने भी सुना—और समझ लिया। वह और भी जोर से लड़ा।

एक अङ्गरेज सवार ने मुन्दर पर पिस्तौल दागी। उसके मुँह से केवल ये शब्द निकले: 'बाईसाहब, मै मरी। मेरी देह...भगवान्।' अन्तिम शब्द के साथ उसने एक दृष्टि रघुनाथसिंह पर डाली और वह लटक गई।

रानी ने मुस्काकर देखा।

रघुनाथसिंह से कहा, 'संभालो उसे। उसके शरीर को वे छूने पावे।' और वे घोडे को मोड़कर अङ्गरेज सवारो पर तलवारो की बौछार करने लगी। कई कटे। मुन्दर का मारने वाला मारा गया।

रघुनाथसिंह फुर्ती के साथ घोडे से उतरा। अपना साफा फाडा। मुन्दर के शव को पीठ पर कसा और घोडे पर सवार होकर आगे बढा।

गुलमुहम्मद बाकी सवारो से उलझा। रानी ने फिर सोनरेखा नाले की ओर घोडे को बढाया। देशमुख साथ हो गया।

अङ्गरेज सवार चार पाच रह गये थे। गुलमुहम्मद उनको बहकावा देकर रानी के साथ हो लिया। रानी तेजी के साथ नाले की ढीपर आ गईं।

घोडे ने आगे बढने से इनकार कर दिया—बिलकुल अड गया। रानी ने पुचकारा। कई प्रयत्न किये, परन्तु सब व्यर्थ।

वे अङ्गरेज़ सवार आ पहुँचे।

एक गोरे ने पिस्तौल निकाली और रानी पर दागी। गोली उनकी बाई जघा में पडी। वे गले में मोती-हीरो का दमदमाता हुआ कठा पहिने हुई थी। उस अङ्गरेज सवार ने रानी को कोई बडा सरदार समझ कर विश्वास कर लिया कि अब वह कण्ठा मेरा हुआ। रानी ने बाये हाथ की तलवार फेंक कर घोडे की अयाल पकड़ी और दूसरी जाघ तथा हाथ की सहायता से अपना आसन सँभाला इतने में वह सवार और भी निकट

आया। रानी ने दाएँ हाथ के वार से उसको समाप्त कर दिया। उस सवार के पीछे से एक और आगे निकल पडा।

रानी ने आगे वढने के लिये फिर एक पैर की एड लगाई।

घोडा वहुत प्रयत्न करने पर भी अडा रहा। वह दो पैरो से खडा हो गया। रानी को पीछे खिसकना पडा। एक जाँघ काम नही कर रही थी। वहुत पीडा थी। खून के फव्वारे पेट और जाघ के घाव से छूट रहे थे।

गुलमुहम्मद आगे वढे हुये अङ्गरेज़ सवार की ओर लपका।

परन्तु अङ्गरेज सवार ने गुलमुहम्मद के आ पहुँचने के पहले ही तलवार का वार रानी के सिर पर किया। वह उनकी दाई ओर पडा। सिर का वह हिस्सा कट गया और दाईं आख बाहर निकल पडी। इसपर भी उन्होने अपने घातक पर तलवार चलाई और उसका कधा काट दिया।

गुलमुहम्मद ने उस सवार के ऊपर कसकर भरपूर हाथ छोडा। उसके दो टुकडे हो गये।

वाकी दो तीन अंगरेज सवार बचे थे। उनपर गुलमुहम्मद बिजली की तरह टूटा। उसने एक को घायल कर दिया। दूसरे के घोडे को लगभग अधमरा। वे तीनो मैदान छोडकर भाग गये। अब वहा कोई शत्रु न था। जब गुलमुहम्मद मुडा तो उसने देखा—रामचन्द्र देशमख घोडे से गिरती हुई रानी को साधे हुये है।

दिन भर के थके मादे, भूखे-प्यासे, धूल और खून में सने हुये गुलमुहम्मद ने पश्चिम की ओर मुँह फेर कर कहा, 'खुदा, पाक परवर-दिगार, रहम, रहम!'।

उस कट्टर सिपाही की आँखे आसुओ को मानो बरसाने लगी और ह बच्चो की तरह हिलक हिलक कर रोने लगा।

रघुनाथसिह और देशमुख ने रानी को घोडे पर से सभाल कर उतारा। वेश में आकर उस अडियल घोडे को एक लात मारी। वह अपने ...वल की दिशा में भाग गया।

रघुनाथसिंह ने देशमुख से कहा, 'एक क्षण का भी विलम्ब नही होना चाहिये। अपने घोडे पर इनको होशियारी के साथ रक्खो और बाबा गङ्गादास की कुटी पर चलो। सूर्यास्त हुआ ही चाहता है।'

देशमुख का गला रुँधा हुआ था। बालक दामोदरराव अपनी माता के लिये चुपचाप रो रहा था।

रामचन्द्र ने पुचकार कर कहा, 'इनकी दवा करेंगे, अच्छी हो जायेगी, रोओ मत।'

रामचन्द्र ने रघुनाथसिंह की सहायता से रानी को सँभालकर अपने घोडे पर रक्खा।

रघुनाथसिंह ने गुलमुहम्मद से कहा, कुँवर साहब, इस कमज़ोरी से काम और बिगडेगा। याद करिये, अपने मालिक ने क्या कहा था। अङ्गरेज अब भी मारते काटते दौड धूप कर रहे हैं। यदि आ गये तो रानी साहब की देह का क्या होगा ?

गुलमुहम्मद चौक पडा। साफे के छोर से आँसू पोछे। गला बिलकुल सूख गया था। आगे बढने का इशारा किया। वे सब द्रुतगति से बाबा गङ्गादास की कुटी पर पहुँचे।

[६१]

बिसूरते हुये दामोदरराव को एक ओर बिठला कर रामचन्द्रराव ने अपनी वर्दी पर रानी को लिटा दिया और बचे हुये साफे के टुकडे प उनके सिर के घाव को बाधा। रघुनाथसिंह ने अपनी वर्दी पर मुन्दर के शव को रख दिया। गुलमुहम्मद ने घोडे को जरा दूर पेडो से जा अटकाया।

बाबा गगादास ने पहिचान लिया। बोले, 'सीता और सावित्री के देश की लडकिया हैं ये।'

रानी ने पानी के लिये मुँह खोला। बाबा गगादास तुरन्त गगाजल ले आये। रानी को पिलाया। उनको कुछ चेत आया।

मुँह से पीडित स्वर मे धीरे से निकला, 'हर हर महादेव।' उनका चेहरा कष्ट के मारे बिलकुल पीला पड गया। अचेत हो गई।

बाबा गगादास ने पश्चिम की ओर देखकर कहा, 'अभी कुछ प्रकाश है। परन्तु अधिक विलम्ब नही। थोडी दूर घास की एक गञ्जी लगी हुई है। उसी पर चिता बनाओ।

मुन्दर की ओर देखकर बोले, 'यह इस कुटी में रानी लक्ष्मीबाई के साथ कई बार आई थी। इसका तो प्राणान्त हो गया है।'

रघुनाथसिंह के रुद्ध कण्ठ से केवल 'जी' निकला।

उसके मुँह में भी बाबा ने गगाजल की कुछ बूँदें डाली।

रानी फिर थोडे से चेत में आई कम से कम रघुनाथसिंह इत्यादि को यही जान पडा। दामोदरराव पास आ गया। उसको अवगत हुआ कि मा बच गई और फिर खडी हो जायगी। उत्सुकता के साथ उनकी ओर टकटकी लगाई।

रानी के मुँह से बहुत टूटे स्वर में निकला, 'ओ३म् वासुदेवायनम

इसके उपरान्त उनके मुँह से जो कुछ निकला वह अस्पष्ट था। होठ हिल रहे थे। वे लोग कान लगाकर सुनने लगे। उनकी समझ में केवल तीन टूटे शब्द आये • '

।'' द ह ' ति'''नै ''य'''पावक.'मुख मडल प्रदीप्त हो गया।

सूर्यास्त हुआ। प्रकाश का अरुण पुञ्ज दिशा की भाल पर था। उसकी अगणित रेखाये गगन में फैली हुई थी।

देशमुख ने बिलख कर कहा, 'झासी का सूर्य अस्त हो गया।'

रघुनाथसिह बिलख बिलख कर रोने लगा।

दामोदरराव ने चीत्कार किया।

बाबा गगादास ने कहा, 'प्रकाश अनन्त है। वह कण कण को भासमान कर रहा है। फिर उदय होगा। फिर प्रत्येक कण मुखरित हो उठेगा।'

[९२]

बाबा गंगादास ने सचेत किया, 'झाँसी की रानी के सिधार जाने को अस्त होना कहते हो! यह तुम्हारा मोह है। वह अस्त नही हुई। वह अमर हो गई। कायरता का त्याग करो। उस घास की गन्जी पर इन दोनो देवियो के शवो का दाह संस्कार करो अंग्रेज इन लोगो की खोज में आते होगे। शीघ्रता करो।'

वे दोनो सँभले।

देशमुख ने कहा, 'घास की गन्जी बडी है?'

बाबा गंगादास ने उत्तर दिया, 'गन्जी तो छोटी सी है।'

देशमुख कष्टपूर्ण स्वर में बोला, 'झाँसी की रानी के दाह के लिये आज लकडी भी सुलभ नही! घास की अग्नि तो इन दो शवो को केवल झोंस देगी। सवेरे शत्रु इनके अर्धदग्ध शरीर देखेंगे, हँसेगे और शायद कही फेंक देंगे।'

बाबा ने सिर उठाकर अपनी कुटिया को देखा।

बोले, 'इस कुटिया में काफी लकड़ी है। उधेड़ डालो। अन्त्येष्टि का आरम्भ करो।'

रघुनाथसिंह ने प्रार्थना की, आपकी कुटी की लकडी! आप एक कृपा करें तो।'

बाबा ने पूछा, 'क्या?'

रघुनाथसिंह ने उत्तर दिया, 'फिर से कुटी बनाने में आपको असुविधा होगी, इसलिये कुछ भेंट ग्रहण करली जावे।'

बाबा मुस्कराये।

बोले, 'यह लकडी मेरी नही है। जिन्होने पहले दी थी वे फिर दे देंगे। देर मत करो। कुटिया को उधेडो।'

देशमुख ने कहा, 'उसमें का सामान बाहर निकाल लिया जाय।'

बाबा भीतर से एक कम्बल, तूंबी, चटाई और लंगोटी उठालाये।

बोले, 'बस और कुछ नही है। जल्दी करो।'

दोनो शवो को बाहर रखकर, दामोदरराव को एक ओर बिठलाया और वे तीनो सिपाही कुटी को उधेडने में लग गये। बात की बात में कुटी को तोडकर लकडी इकट्ठी करली।

गन्जी की कुछ घास घोडो को डाल दी और कुछ से चिता का काम लिया।

रानी का कठा उतार कर दामोदरराव के पास रख दिया। मोतियो की एक छोटी कठी उनके गले में रहने दी। उनका कवच और तवे भी।

चिता पर देशमुख ने रख दिया और अग्नि संस्कार कर दिया। अपनी और रघुनाथसिंह की वर्दिया भी चिता पर रखदी।

आधी घड़ी में चिता प्रज्वलित हो गई।

उस कुटी की भूमि पर रक्त वह गया था। उसको देशमुख ने धो डाला।

परन्तु उन रक्त की बूंदो ने पृथ्वी पर जो इतिहास लिख दिया था वह अमिट रहा।

[१३]

कुछ दूरी पर रिसाले की टापो का शब्द सुनाई पडा। वह रिसाला अंग्रेजो का था।

देशमुख—'रानी साहब की तलाश में बैरी घूम रहे हैं।'

रघुनाथसिंह—'आप दामोदरराव को लेकर तुरन्त निकल जाइये।'

देशमुख—'आप दीवान साहब क्या झाँसी की ओर जायेगे ?'

रघुनाथसिंह—'झासी में मेरा अब क्या रक्खा है। मै इन सवारो को मार कर मरूँगा। ये लोग चिता की ओर आयेंगे। इसे उसेलेंगे। जाइये तुरन्त जाइये। रात को कही छिप जाना . विश्राम करना।'

देशमुख—'कठे का क्या होगा ?'

रघुनाथसिंह—'मृत सिपाहियो के बाल बच्चो मे बाट देना या कुछ भी करना।' देशमुख ने दामोदरराव को पीठ पर बाधा और घोडे पर सवार होकर चल दिया।

रघुनाथसिह ने गुलमुहम्मद से कहा, 'कुँवर साहब आप भी जाइये। मेरे घोडे को छोड दीजिये, उस विचारे को कोई न कोई रख लेगा। आवरे में से मेरी बन्दूक और गोली बारूद का झोला लाने की कृपा करिये।'

गुलमुहम्मद घोडे के पास गया। दोनो के आवरो में से गोली बारूद और बन्दूकें निकाल ली। और, दोनो घोडो को जीन सहित छोड दिया।

गुलमुहम्मद ने रघुनाथसिह को बन्दूक और गोली बारूद देते हुये कहा, 'दीवान साहब, अम कहा जायगा ? अम राहतगढ से जब चला तब पाचसौ पठान था। अब एक रह गया। अकेला कहा जायगा ? अम भी मारेगा और मरेगा। बाई, अमको मत हटाओ।'

रघुनाथसिह ने कहा, 'मै चाहता हू आप जिन्दा रहे, और इनकी पवित्र हड्डियो और भस्म को किसी गैर को न छूने दे। रहा मै सोजाने की बहुत जल्दो पड रही है। वे अभी रास्ते में होगे उनसे जल्दी मिलना है, और बन्दूकें भरने लगा।

रघुनाथसिह पागलो का सा हँसा।

गुलमुहम्मद ने एक क्षण सोचा। बोला, 'यह फकीर साहब हड्डियो की हिफाजत करेगा।'

रघुनाथसिह ने कहा, 'फकीर नही करेगा। आप चाहे तो कर सकते है।'

'अच्छा,' गुलमुहम्मद बोला, 'अम जिन्दा रहेगा। खाक और हड्डियो पर चबूतरा बना देगा।'

'अपनी बन्दूक भी मुझको देदो कुवर साहब, रघुनाथसिह ने प्रस्ताव किया।'

गुलमुहम्मद ने प्रतिवाद किया, 'अब कुँवर साहब नही। अम फकीर बनकर रहेगा। गुलसाई नाम होगा।'

उसने अपनी बन्दूक दे दी।

'इसको भर दीजिये', रघुनाथसिंह ने अनुरोध किया।

'बस बाई। अब बन्दूक या कोई हथियार नही छुयेगा अम खुदापाक की याद में बाकी जिन्दगी खतम करेगा।'

एक तरफ जाकर गुलमुहमम्द ने अपनी वर्दी जलती हुई चिता पर फेककर खाक कर दी—केवल साफा रक्खा। उसके एक टुकडे की लँगोटी लगाई। बाकी ओढने बिछाने को रख लिया।

खूब हँसकर बोला, 'अब अम बिलकुल आज़ाद हो गया बाई।'

रघुनाथसिह ने दोनो बन्दूके भर ली। गोली बारूद के, झोले लटकाये गुलमुहम्मद के पास गया उसको देखकर विस्मित हुआ।

बोला, आप तो सचमुच फकीर हो गये! अच्छा सलाम कुँवर, साईं स़ाहब। भूल चूक गलती माफ कीजिये।'

'सलाम,' गुलमुहम्मद ने कहा।

जिस ओर से टापो का शब्द आ रहा था रघुनाथसिह उसी दिशा में गया। पास जाकर एक आड ली। लेट गया। प्रतीति करली कि अग्रेजो का रिसाला है और कुटी की ओर आ रहा है।

'धाय धाय' बन्दूक चलाई।

'धाय धाय' अँग्रेजी रिसाले का जवाब आया।

काफी समय तक रिसाले के सैनिको को हताहत करता रहा। फिर ? एक गोली से मारा गया।

चिता 'साय–साय' जलती रही।

गुलमुहम्मद चिता से कुछ दूर जाकर लेट गया। साफे के टुकडे से अपने को ढका। बेहद थका हुआ था, सो गया। सवेरे जब आख खुली देखा कि चिता के स्थान पर कुछ जली हड्डिया बाकी रह गई हैं।

उसके मुँह से निकल पडा, 'ओफ रानी साहब का सिर्फ यह हड्डी रह गया है। और उस हसीन लडकी का !'

फिर तुरन्त उसने अपने मन में कहा, 'ओ कबी नही। वो मरा नहीं। वो कबी नई मरेगा। वो मुर्द्रों को जान बख्शता रहेगा।'

चिता के ठडे हो जाने पर गुलमुहम्मद ने उस स्थान पर एक चबूतरा बाधा और कही से फूल लाकर उस पर चढाये।

अ ग्रेजी सेना का एक दल रानी की ढू ढ खोज में वहा पर आया।

चबूतरा अभी सूखा न था। उस दल के अगुआ का कुतूहल जागा। गुलमुहम्मद से उसने पूछा, ' यह किसका मजार है साई साहब ?'

गुलमुहम्मद ने उत्तर दिया, 'अमारे पीर का, वो बौत बडा वली था।'

परिशिष्ट

[१]

कई दिन तक अङ्गरेज़ो को रानी के शरीरान्त का पता न लगा। जब लगा तब जनरल रोज़ ने कहा था, 'यह थी उनमें सर्वश्रेष्ट और सर्वोत्कृष्ट वीर।*

अठारह जून के सूर्यास्त के पहिले ही रावसहाब के मोर्चे छीन लिये गये थे। थोडी देर तक तात्या ने विगडे को बनाने का अथक परिश्रम किया, परन्तु अन्त में दोनो को रणक्षेत्र छोडना पडा। रावसाहब छिपते भटकते चार वर्ष बाद साधु वेश में पकडा गया और उसको बिठूर मे फासी दी गई। उसके सम्पूर्ण जीवन में उसका परिणाम ही महान् था, और अङ्गरेजो की प्रति हिंसा की विराटता थी उसको बिठूर में ले जाकर फासी पर चढाया। तात्या ने निस्सन्देह कभी हार नही मानी। वह लक्ष्मीबाई के ऊँचे राजनैतिक आदर्श तथा रणपाडित्य का सच्चा अनुयोगी और उत्तराधिकारी था। जब अङ्गरेजो ने १८५८ के अन्त तक सारे हिन्दुस्तान को अपने फोजी शिकञ्जे में जकड लिया, तब भी तात्या आधी और विजली की तरह तडपता और तडकता रहा और अङ्गरेजो को भूल भुलैया खिलाता रहा। तात्या को आशा थी कि इतना सब खोजाने पर भी मैं देश को जगा दूँगा और खडा कर लूँगा, परन्तु जैसे कि इस अभागे देश में होता चला आया था, राजपूताने के एक उसके मित्र राजा ने विश्वासघात करके पकड़वा दिया। तात्या को शिवपुरी में अप्रैल सन् १८५९ में, फासी दी गई।

तात्या का मरण उसके जीवन से भी बढकर ज्वलन्त था। फांसी पर चढने के समय वह योगियो की तरह शान्त था। उसने कहा था,

---

*She was the best & the bravest of them all.

मैंने जो कुछ किया अपने स्वामी पेशवा की आज्ञा से किया, और कुछ बुरा नही किया।' नाना साहब का कोई पता नही चला। पहली नवम्बर सन् १८५८ को विक्टोरिया का विख्यात घोषणा पत्र जारी किया गया। बादा के नवाब ने आत्मसमर्पण किया और उनको कुछ पैन्शन मिल गई। कम्पनी का, थोड़े से अङ्गरेज पूंजीपतियो और व्योपारियो का, राज्य समाप्त हुआ, और यह पुराना देश नये इंगलैंड के समग्र पूंजीपतियो और व्योपारियो के केन्द्रस्थ शासन के समक्ष हो गया।

झांसी के हृदय में झासी की रानी का राज्य सदा बना रहा—लावनियो में, फागो में, गांवो और शहरो में किसान और मजदूर उनके सम्बन्ध में अपने निजत्व को प्रकट करते रहे हैं। उनकी एक स्मृति झासी नगर में आज भी जनता को पकडे हुये हैं—होली जलने के बाद की प्रथमा के दिन झासी वाला होली नही मनाता, वह दिन उसके लिये सूतक का है।

यदि हैदराबाद के निजाम और ग्वालियर के सिन्धिया अङ्गरेजो का पक्ष न लेते, तो अङ्गरेज १८५८ के बाद इस देश मे बिलकुल नही ठहर सकते थे।

उनके उस समय चले जाने के पश्चात् यहा क्या होता यह देश के विवेक और अविवेक के लिये एक बहुत बडी समस्या होती।

उसी समय से अंग्रेजो ने समझ लिया कि हिन्दुस्थानी सेना में चुने हुये लोग भर्ती किये जाने चाहिये, मारके ऊँचे पदो से उनको दूर रखना, सारे देश को निश्शस्त्र कर देना और मृग-मरीचिकाएँ दिखलाते रहना चाहिये।

परन्तु राजाओ और नवाबो को हाथ में रखना सदा आवश्यक समझा गया।

गोद का कानून स्वीकार किया गया। धार्मिक स्वतन्त्रता मानली गई। मानो हिन्दुस्थान को बडी गनीमत मिली।

झासी की रानी, तात्या, बहादुरशाह इत्यादि के पीछे जो लोग हुये,

भारतीय आत्मा की अमरता के साथ उनका अटूट क्रम रहा है। केवल थोडो के ही नाम वतलाये जा सकते हैं ....।

'परमहस रामकृष्ण, स्वामी दयानन्द, विवेकानन्द, महात्मा...और, और......

(२)

झासी में जनेऊ का आन्दोलन घोर रूप पकडता, परन्तु बिठूर के मिहमानो का लिहाज कर के राजा गङ्गाधरराव थोडे नरम पड गये थे। तमेरो ने जनेऊ पहिने थे और वे अपने जनेऊ की आन पर मिटने को तैयार थे। उपन्यास में जाति का नाम नही दिया गया।

(३)

पजनेश ने जिस स्त्री को प्रेम से वशीभूत होकर रख लिया था, उसकी जात उन्होने अपनी कविता में लिख दी थी। उनका छन्द कवि की स्वच्छन्दता और उस समय की अवस्था का द्योतक है। पूरा छन्द इस प्रकार है —

सिवि चूके सची से अप्सरा से इन्द्र चूके
कृष्ण चूके कुब्जा सें सुरत न सभारी है।
वडे वडे देव और दानव से चूक जात
तुमहू न चूको तो सकल का तुम्हारी है ?
भनपजनेस एक खत्रानी से हमहु चूके
चूक जात जग में बिना सक नरनारी है।
कोमल तन ललित नैंन वसत निसि वासर मन
प्यारी हमारी की लाज गङ्ग धारी है।

(४)

हृदयेश ने अपनी कविता जितनी लिख पाई थी वह पूरी की पूरी नीचे दी जाती है। मेरे पास हृदयेश की कविता उन्ही के हाथ की लिखी है, जो मुझको भाई श्री भगवानदास सेठ की कृपा से प्राप्त हुई —

बड़े बड़े असराफ गरद कर ऐसौ कलजुग झाला
विभचारिन बिस्वन के उर में वर मुक्तन की माला
भन हृदेश पण्डित गुनमण्डित ते धारे मृगछाला
गानतान वारे धनवारे ओढे फिरे दुसाला ।१।

महावीर वीरन के बेटा बैठे गहे किनाला
खसिया भँड़ुआ राड मिलावे बाधे फिरे तिपाला
कींमखाब के पैरन वारे भोगे अन्न कसाला
घोडिन की खिजमित कर तिनके परे कानमें बाला ।२।

पतिव्रता लरकन को तरसे बिभचारिन घर लाला
झूठे के मुख लाली देखी साचे के मुख काला
सत्य बचन परमान चलन को परे दुष्ट के जाला
चुगलखोर धानचोर मसखरा परे सेज सुखसाला ।३।

देवमदिरिन दिया न बाती गोरन पै उजियाला
भूमदेव विप्रन के देखो कोडी देत कसाला
रडिन को भोजन को सिन्नी ऊपर पान मसाला
साधुन को नहि चून चनन को सेवे देव दिवाला ।४।

चतुर नरन को बदसूरत की कूरन के घर बाला
मूरख बैठे मौज उडावे परबीनन पग छाला
भूपत कृपा करत नीचन पै कर अनीत प्रतिपाला
जबर ज़ोर कलिकाल काल को गुन को चलै न चाला ।५।

मुसलमान सीतापति सुमरे हिन्दू मुख हकताला
मुसलमान मौसी कर टेरे हिन्दू टेरें खाला
साची कहे सुनै को बिनती भयो नीच बल वाला
अधरम प्रगट भयो भूतल पै धसगो धरम पताला ।६।

जगतगुरू विप्रन को निन्दत बनिक पुत्र घर वाला
मुछमुण्डन की दच्छा लै लै फेरे तुलसीमाला ।७।

मालपुआ हलुआ भोजन दै गुप्त खिलावत लाला
अधरम नाम जपत सीतापत डार गोमुखी माला
दीसे भक्त बडे ठाकुर के तिलक सरसरे भाला
जाचत देख विप्र साधुन को होत क्रोध को जाला ।८।
कासीपुरी अजुध्या मथुरा इनको जात कसाला
दोम दोम कर जात मदारन दाब काख में लाला
पूजत प्रेत गुरैया बाबा छोडे देव बिसाला
निजपति मुच्छ तुच्छ कर जारत उपपति हित प्रतिपाला ।९।
विछिया दृगन कोर भर कारज अग आभरन जाला
मुलकट कचुक कसत कुचन पै उर धारे बनमाला
अधरम............

यही तक कवि ने लिख पाया।

(५)

नारायण शास्त्री की प्रेमका छोटी का असली नाम लोग मछरिया बतलाते हैं। उपन्यास में जितने नाम आये हैं सब वास्तविक हैं। मैंने केवल मछरिया का नाम बदलकर छोटी कर दिया है। झांसी में नारायण शास्त्री में तत्रबल को जो रूप जनपरम्परा में मिला है वह बडा संकेतपूर्ण है। कहते हैं कि एक रात नारायण शास्त्री काली का पूजन करके मास और मदिरा का सेवन करना ही चाहते थे कि राजा गगाधरराव टोह लगाकर आ पहुचे। राजा ने पूछा, 'बोतल में क्या है?'

शास्त्री ने उत्तर दिया, 'दूध।'

'और कटोरे में क्या है शास्त्री जी?'

'गुलाब के फूल।'

राजा ने बोतल और कटोरे का निरीक्षण किया तो बोतल में दूध और कटोरे में गुलाब के फूल पाये। जब नव्वे वर्ष के भीतर ही जन–परम्परा ने एक वास्तविकता को यह रूप दे दिया तो अपने बडो के स्वा–

भाविक किन्तु लोकाचार विरुद्ध कृत्यो को, उसने गाथाओ मे जो रूप दे दिये हैं उनको, समझने में बहुत बाधा नही रहनी चाहिये।

(६)

गंगाधरराव अत्यन्त क्रोधी थे। उनके अत्याचारो की बहुत सी कहानिया प्रसिद्ध हैं। उनके प्रति जनता की घृणा रानी लक्ष्मीबाई के नाम के कारण नरम पड गई थी और अब भी नरम है।

(७)

झासी मे हरदी कूंकू उत्सव महाराष्ट्रो में बहुत उत्साह के साथ मनाया जाता था। झासी की साधारण जनता भी उसको मनाया करती थी। अब भी यह सुन्दर उत्सव मनाया जाता है, परन्तु उसमे अब वह ओज नही रहा। जीवन के सघर्षो और वर्तमान उदासीनता में वह घिस गया है। रानी लक्ष्मीबाई इस उत्सव को कितनी उमंग के साथ मनाती थी उसका व्योरेबार वर्णन विष्णुराव गोडशे के 'माझा प्रवास' मे है।

(८)

पेशवा के साथ अङ्गरेजो ने सन् १८०२ में जो सन्धि की थी उसको पारसनीस ने अपनी पुस्तक में उद्धृत किया है।

(९)

भग्गी दाउजू जाति के सुनार थे। वे झाँसी के गदीगर मुहल्ले में रहते थे। नत्थेखा की लडाई पर उन्होने तीन चार पृष्ठो में एक रायसा लिखा था। वह श्री नारायणदास श्रृङ्गीऋषि के पास है। उन्ही की कृपा से रायसा मुझको प्राप्त हुआ। मन्जु छन्द में है। प्रत्येक छन्द का चौथा चरण है—

'झासी की जो लटी तकै तिहिं खाये कालका माई।'

भग्गी ने 'रानी की जो लटी तकै' नही लिखा है; उन्होने 'झासी' शब्द प्रयुक्त किया है और उसकी सार्थकता बहुत द्योतक है। झासी १८५७ के विप्लव के ज़माने में जोश से उमड पडी थी। किसी जाति के लिये भी नही कहा जा सकता कि उसमें लड़ाई के लिये कम जोश था।

यह ऐतिहासिक सत्य है कि उनाव दरवाजे पर कोरियो की तोप थी और तोपखाने का सचालक पूरन कोरी था। उसके पौत्र ने मुझको सारी घटनायें बतलाई और झलकारी के बिकट और निर्भीक पराक्रम का हाल सुनाया। जनरल रोज ने अपनी डायरी में झलकारी की घटना का वर्णन नही किया है, परन्तु कोरियो में वह घटना विख्यात है—४ एप्रिल १८५८ की रात को रानी के निकल जाने पर, पाच के बडे सवेरे झलकारी घोडे पर बैठकर रोज के सामने पहुची और उससे कहा, 'रानी को कहा ढूढते फिरते हो ? मैं हूँ रानी, पकडलो मुझको।' झलकारी बहुत उमर पाकर मरी। मुझको उसके दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त नही हो पाया। उसके मरने का पता तब लगा, जब रानी की बातो का पता लगाते लगाते मैं कोरियो के सम्पर्क में आया। झाँसी में ऊँची जाति के कहलाने वाले लोग कोरियो के हाथ का पानी पीते हैं, घर तो उनके इतने स्वच्छ हैं कि जान पडता है कि अभी अभी किसी यज्ञ को समाप्त करके निबटे हो। कोई आश्चर्य नही यदि रानी ने हरदी कूकू के उत्सव में झलकारी को अपने अङ्क में भर लिया हो।

(१०)

अग्रेज इतिहासकारो ने रानी के वाक्य को, जिसका उच्चार उन्होने अंग्रजो द्वारा झासी अपहरण के समय किया था, यह रूप दिया है—

'मेरा झासी देगा नही।'

इसकी नकल बहुत से भारतीय लेखको ने की है। रानी हिन्दी और मराठी दोनो ज़ानती थी। इतनी कुशाग्र बुद्धि थी कि झासी आकर उन्होने बुन्देलखण्डी भी सीख ली थी। उनके वाक्य का तोड मरोड एलिस ने अपने लेख में किया और भारतीय लेखको ने बिना जाने बूझे उसकी नकल करदी। १८५७ के लगभग अङ्गरेज खासी हिन्दी भाषा को बोल लेते थे, परन्तु हिन्दी भाषा को कुरूप करना उनकी राष्ट्रीय और स्वभावनिहित उपेक्षा का एक उदाहरण है वे आज भी फ्रेन्च, जर्मन और रूसी शब्दो का तोडमरोड करते हैं। यहा तक कि एमेरिका में बोली

और लिखी जाने वाली अंग्रेजी तक पर नाक भोह सिकोड लेते हैं। रानी के मुह से निकले हुये हिन्दी के प्रतिवाद वाक्य को सुरक्षित रखने में एलिस या किसी भी अग्रेज को रुचि हो ही क्यो सकती थी ?

(११)

रानी ने सूरमाओ की एक कुंवर मडली स्थापित की थी। वे स्त्री–पुरुषो की सूक्ष्म जांच करने की बडी क्षमता रखती थी। झाँसी की रक्षा के लिये उनको ऐसे लोगो की जरूरत थी जो अपने को होम देने के लिये सदा तैयार रहते हो। जिसको उन्होने सुपात्र समझा उसको 'कुंवर' का सम्बोधन मिल जाता था रानी ने जितनो को यह उपाधि दी, उनमें से किसी ने भी अपने बलिदान में कसर नही लगाई।

(१२)

रानी ने जो स्त्री सेना बनाई थी वह भारत का एक अचम्भा है। जनरल रोज, जनरल स्टुअर्ट, डाक्टर लो इत्यादि ने जो रानी के मुकाबले मे लडने वाली अ ग्रेजी सेना में झासी आये थे दूरबीनो द्वारा इस सेना का नियम संयम, शौर्य पराक्रम, और दुश्मन का होश ठिकाने लगाने वाली दृढता को देखा था। इस सेना मे महाराष्ट्र स्त्रिया बहुत कम थी। बुन्देलखण्डी स्त्रिया ज्यादा और विविध जातियो की। यदि लक्ष्मीबाई स्वराज्य स्थापना के प्रयत्न मे सफल हो जाती तो भारत की नारी उस गिरी हालत में कदापि न होती जिसमें उसका एक अंश आज है। माझा प्रवास का लेखक विष्णुराव गोडशे जब झासी आया तव झासी की स्त्रियो की स्वाधीनता को देखकर विस्मित हो गया—उसको तो गुस्सा भी आया। स्त्रिया शान और हेकडी के साथ सन्ध्या समय मन्दिरो में जाती थी, यह बात विष्णुराव को बहुत खटकी, क्योकि उसने अन्यत्र न देखी थी। पर क्या अन्यत्र स्त्रियो की कोई बैटालियन थी ? कोई रेजीमेंट था ? उनमें से कोई कर्नल या कप्तान थी ? सवेरे परेड में मर्दों को सवक सिखलाने वाली, और घुडसवारी में मर्दो का कान पकडने वाली स्त्रिया, क्या शाम को मन्दिर जाने के समय झेपती, शरमाती और घूंघट डालकर

नयिका भेद को प्रोत्साहन देती ? परन्तु 'माझा प्रवास' का लेखक असली बात समझा न था।

मेरी दादी परदादी कहा करती थी कि रानी जिस मिट्टी के ढेले को छू देती थी वह सोना हो जाता था, जिस काठ के टुकडे को स्पर्श कर देती थी वह फौलाद बन जाता था। मुझको आश्चर्य होता था। पर बात लगती बहुत अच्छी थी। सोचता था यदि मै उस ज़माने में होता तो डलियो ढेले उनके पास ले जाता और उनसे स्पर्श करवाकर सोना बनवा लेता, फिर दादी परदादी से पैसे मागने की ज़रूरत ही न रहती। और वे काठ के टुकडो को फौलाद बना देती थी। यह उतना अच्छा नही लगता था। और आज ? आह। उस रानी का स्पर्श तो प्राप्त नही है, पर नाम ने मिट्टी के ढेलो को स्वर्ण बना दिया और काठ के टुकड़ो को वज्र—और जब तक भारत भारत है वह नाम यह काम करता ही रहेगा।

यही कारण है कि अङ्गरेज पल्टन के बलवाइयो के सामने लक्ष्मीबाई महल के झरोखे पर चिनोती देती हुई अकेली खडी हो गई ! यही कारण है कि सदाशिवराव नेवालकर के झाँसी नरेश बन जाने की घोषणा पर कोई भी सीखी सिखाई सेना हाथ में न होते हुये भी लक्ष्मीबाई कुछ मिट्टी के ढेलो और काठ के टुकडो को लेकर करेरा में भिड गई और सदाशिवराव को परास्त कर दिया। यही कारण है कि लक्ष्मीबाई नत्थेखा के बीस-हजार सिपाहियो का मुकाबिला झाँसी के अधकचरे स्त्री पुरुष सिपाहियो को लेकर कर गई। और उसको मार भगाया ।।

सागरसिंह डाकू से जनरल बना और खडेराव फाटक की रक्षा में मरकर अनन्त गौरव पागया।

(१३)

जान रसल ने जो आवेदन पत्र दिल्ली १७१२ में भेजा था उसका अनुवाद पारसनीस की पुस्तक में है। उसका साराश मैने इस उपन्यास में दे दिया है।

(१४)

सर जान मालकम सन् १८२५ के लगभग मध्यदेश का प्रधान सेनापति और गवर्नर था। उसने एक पुस्तक Memois of Central India लिखा है। अब यह पुस्तक अप्राप्त है! मुझको कलकत्ते की Imperial Library से उधार मिल गई थी। मालकम ने लिखा है कि वह जमाना चाहे दूर हो, पर आवेगा अवश्य, जब हमको हिन्दुस्थानियो का देश उन्हे वापिस करना पडेगा।

(१५)

ग्वालियर से नाटक मडली लगभग जनवरी सन् १८५८ में आई थी। रानी यदि फौज को विकट तैयारी और पराक्रम देसकती थी तो कलाओ को प्राण देने की भी साध रखती थी।

ग्वालियर से आई हुई नाटक मडली को हरिश्चन्द्र नाटक का अभिनय करने के उपलक्ष में उन्होने चार हजार रुपया पुरस्कार में दिया था। गवैये, बीनकार, पखावजी इत्यादि सब उनका आश्रय पाये हुये थे। सुखलाल चित्रकार जाति का काछी था। उसकी चित्रकला को वे पुरस्कृत करती रहती थी। मुखपृष्ट पर दिया गया रानी का, और गङ्गाधरराव का चित्र उसका ही बनाया है।

(१६)

विष्णुराव गोडशे पूना की दिशा से, ग्वालियर होता हुआ आया था। वह भट्टभिक्षुक था। रानी ने जब झासी में यज्ञ किया तब वह मौजूद था और युद्ध के दिनो मे किले में ही था। उसने उन दिनो का आखो देखा हाल अपने 'माझा प्रवास, में लिखा है, उपन्यास की कुछ घठनाएं 'माझा प्रवास' के आधार पर हैं। उनके सत्यका निर्धार किम्वदन्तियो और जनरल रोज के खरीतो से होता है। पारसनीस ने अपनी पुस्तक में बहुत सामग्री विष्णुराव की पुस्तक से ली है। परन्तु पारसनीस ने विष्णुराव की पुस्तक का कोई हवाला नही दिया है। कम से कम हिन्दी के अनुवाद में मुझको नही मिला।

यज्ञ के समय यज्ञ विधान की एक समस्या खडी हो गई। समस्या का जिक्र उपन्यास में है। उसको विष्णुराव ने अपने शास्त्र ज्ञान से सुलझाया था। उसने ज़रा दम्भ से—और शायद वह दम्भ गलत भी न था—अपने पाडित्य का वर्णन 'माझा प्रयास' में किया है।

(१७)

रानी लक्ष्मीवाई का महल १८५८ में पुस्तकालय के साथ जलाया गया था। पुस्तकालय तो बिलकुल खाक हो गया था, परन्तु महल बच गया था। इसमें सन् १८९६ के लगभग फिर आग लगी। मैं उस समय पाच छ वर्ष का था। मेरे सामने जल रहा था और न जाने मैं क्यो वहा खडा खडा रो रहा था। शायद मेरे आसुओ की जिम्मेदारी परदादी की बतलाई हुई कहानियो पर थी; ऐसी रानी की कहानिया जिसके छूने से मिट्टी के ढेले सोना हो जाते थे और काठ के टुकडे फौलाद!

बख्शी की हवेली का पता मुझको १९१६ में लगा था, परन्तु उसका इतिहास १९३२ के उपरान्त मालूम हुआ। बख्शी का नाम उसकी जाति में अब तक इतना प्रिय है कि बच्चो के नाम भाऊ रख दिये जाते हैं! बख्शी की हवेली अच्छी हालत में है और श्री जिनदास कोचर के अधिकार में है।

(१८)

अभी हाल में श्री सी० ए० किंकेड, पैन्शन प्राप्त आई० सी० एस० ने एक पुस्तक अग्रेजी में लिखी है Lakshmi Bai, Rani of Jhansi. पुस्तक में कुल १०२ सफे हैं, परन्तु लक्ष्मीबाई को कुल १४ सफे दिये हैं, और, नाम है 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई!' इन १४ पृष्ठो में भी अनेक गलतिया हैं। उन्होने जहां जनरल रोज़ के लिये कहा है कि वह बेहद, शक्ति वाला और अत्यन्त चतुर सेनापति था तहा रानी की प्रशसा में भी कुछ शब्द कहे हैं—He (General Rose) was a man of boundless energy and of the highest military talent रानी के लिये श्री किंकेड ने कहा है—वह शिक्षित और सस्कृतिमयी थी

(She was an educated and polished lady.) श्री किंकेड की कल्पना है कि न तो लक्ष्मीबाई हत्यारी थी और न उन्होने गदर किया। उनका कहना कि वह एक Lost Cause—हारी पाली—के लिये लडी अग्रेज को भले ही कबूल हो, पर मुझको मान्य नही।

रानी स्वराज्य के लिये लड़ी, स्वराज्य के लिये मरी और 'स्वराज्य की नीव का पत्थर बनी।'

उनके देश वाले यही मानते आये हैं और जब तक भारत में नारीत्व और नरत्व रहेगा यही माना जायगा। परिशिष्ठ का यह खण्ड प्रतिकूल इतिहासकारो और श्री किंकेड सरीखे अनुकूल लेखको की आलोचना के लिये नही लिख रहा हू। जिनको वास्तव में भ्रम निवारण करना हो वे इस उपन्यास को पढे।

(१६)

दहेज में दासियो का दिया जाना राजपूताने की विशेषता है। यह जहर मध्यभारत का नही है। बुन्देलखण्ड में तो इसका नाम भी नही। 'माझा प्रवास' के लेखक ने उज्जैन के एक यज्ञ का जिक्र करते हुये लिखा है कि एक ब्राह्मण को १३ दासिया दी गई थी और वे उस ब्राह्मण के साथ अपना अञ्चल बाँधकर चल दी थी! झासी की रानी को भी कई दासिया मिली थी, परन्तु उन्होने इनके साथ सदा सखी-भाव बर्ता।

(२०)

सुन्दर जिस बुर्ज पर काम कर रही थी वह अब भी टूटी फूटी हालत में है। उसके पराक्रम का प्रमाण ओर्छे दरवाजे बाहर उन अग्रेजो की कब्रे हैं जिनको कर्नल सुन्दरबाई की तोपो का मुकाबला करना पड़ा था।

(२१)

जूही की कोई कब्र नही बनी और न काशीबाई का कोई चैत्य। झांसी वालो के हृदय में जो आसीन हो उनको कब्र या चैत्य की क्या जरूरत? सौन्दर्य और शौर्य का सम्मेलन संसार में बहुत नही दिखलाई पड़ता, परन्तु उनमें बहुत था।

(२२)

रानी घोडे की अद्भुत पहिचान रखती थी। एक बार एक सौदागर दो घोडे लाया। दोनो का दाम एक एक हज़ार बतलाया। रानी ने जल्दी जाच कर ली। जाच पडताल करने के बाद एक का दाम उन्होने एक हज़ार रुपये कूता और दूसरे का पचास रुपया। दोनो घोडे एक से थे। देखने वाले दङ्ग रह गये। सौदागर तो अपने घोडो को जानता ही था, परन्तु उसने कुतूहल शान्ति के लिये रानी से प्रश्न किया।

'इस घोडे का दाम एक हज़ार और दूसरे का पचास क्यों, श्रीमन्त ?'

उत्तर मिला, 'जिसके दाम पचास रुपये बतलाये हैं उसकी छाती के भीतर एक पुरानी चोट है।'

सौदागर ने स्वीकार किया।

(२३)

दामोदरराव को रामचन्द्र देशमुख ग्वालियर से लेजाकर कुछ दिनों जगलो में छिपाये रहा। जब रानी विक्टोरिया की क्षमा-घोषणा होगई तब देशमुख उसको लेकर इन्दौर में प्रकट होगया। दामोदरराव का देहान्त कुछ वर्ष हुये तब हुआ था और रामचन्द्र देशमुख का लगभग १८८५ में। मैं दामोदरराव से मिला हू और बातचीत भी की है।

(२४)

रानी लक्ष्मीबाई के भाई की प्रपौत्री श्रीमती शेवडे नागपूर में हैं। वे कर्वे यूनिवर्सिटी की ग्रेजुयेट हैं। उन्होने इस उपन्यास का अनुवाद मराठी में किया है।